प्रेमपत्र जिल्द सोयम के बचनौं का सूचीपत्र

॥ इति ॥

राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय ॥

प्रेमपत्र राधास्वामी

जिल्द तीसरी

बचन १

राधास्वामी मत के मानने वालों और उनकी जुगत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करने वालों का सहज में बग़ैर कष्ट और कलेश और मिहनत और मशक़्क़त के पूरा उद्धार मुमकिन है, जो वे राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करें और उनके हुक्म के मुवाफ़िक़ अपनी रहनी और रोज़मर्रा का अभ्यास दुरुस्त करें ॥

१—जो कि अनेक पदार्थ और भोग इस रचना में मालिक ने पैदा किये, वे दया करके अपने प्रेमी और भक्त जनों के वास्ते रचे, ताकि वे उसकी कुदरत को

काररवाई को देखें और दया की परख कर के मगन होकर शुकराना बजा लावें, और उन भोगों और पदार्थों के साथ मुवाफ़िक़ हुक्म मालिक के और साथ उन क़ायदों के (जोकि उसने संत सतगुरु रूप धारन करके वास्ते समझौती जीवों के जारी फ़रमाये) होशयारी से बर्ताव करें ताकि उन भोगों का ज़हर असर न करे, यानी नशा अहंकार और ग़फ़लत का पैदा करके उनको भूल और भरम में न डाले और सच्चे मालिक से बेमुख न करे ॥

२—इस दुनियाँ में जो काररवाई कि जीव कर रहे हैं, वह तीन क़िसम की हैं, एक स्वार्थ दूसरी स्वार्थ परमार्थ तीसरी निर्मल यानी ख़ालिस परमार्थ ॥

३—स्वार्थ उस काररवाई को कहते हैं कि जो वास्ते अपने गुज़ारे के इस दुनियाँ में, और परवरिश और सम्हाल अपनी देह और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा की, और सम्हाल और तरक्क़ी दुनियाँ के भोग बिलास और नामवरी की, कीजावे ॥

४—स्वार्थ परमार्थ उस काररवाई को कहते हैं, कि जो वास्ते प्राप्ती सुख और मान बड़ाई के इस लोक में ख़्वाह परलोक में, चाहे इस जनम में ख़्वाह आइंदा के जनम में, या वास्ते राज़ी और खुश करने किसी

देवता के, या हासिल करने किसी क़िसम की सिद्धी और शक्ती वग़ैरा के, या वास्ते प्राप्ती स्वर्ग या बैकुँठ या मुक्ती या ब्रह्मलोक वग़ैरा के, की जावे ॥

५—निर्मल परमार्थ उसको कहते हैं कि भक्ती और अंतर अभ्यास की कमाई प्रेम सहित इस मतलब से की जावे, कि जिससे मन और सुरत (जो कि अब माया के घेर में फसे हुये हैं) दिन २ उस घेरे से निकलते जावें और त्रिकुटी के परे सुरत मन से न्यारी होकर सच्चे मालिक के चरनों में पहुँच कर उसके दर्शन का बिलास देखे, और परम आनंद के भंडार में पहुँच कर परम शान्ती को प्राप्त होवे, और काल कलेश और जनम मरन के दुक्खों से क़तई छुटकारा हो जावे, यानी पिण्ड और ब्रह्माण्ड के पार चढ़ कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचे, और उस भक्ती और प्रेम की काररवाई में सिवाय प्राप्ती दर्शन अपने प्रीतम कुल्लमालिक राधास्वामी दयाल के और कोई चाह किसी क़िसम की न रहे, और दिन २ उस मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीति बढ़ती रहे ॥

६—कसरत से जीव स्वार्थ की कारंवाई में लगे हैं और असली स्वार्थ परमार्थ भी बहुत थोड़े जीव

समझ बूझ के साथ करते हैं, और निर्मलपरमार्थ कोई बिरले जीव जिन पर ख़ास दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की है कमाते हैं ॥

७—स्वार्थी जीव हमेशा नीची ऊँची जोनों में भरमते रहेंगे, और स्वार्थ परमार्थ वाले ऊँचे देशों में सुख और आनंद पावेंगे, और कोई २ ब्रह्म पद में पहुँचेंगे, लेकिन सच्चे और कुल्ल मालिक का दर्शन सिर्फ़ निर्मल परमार्थियों को मिलेगा, और उन्हीं का सच्चा छुटकारा जनम मरन और काल कलेश से होवेगा ॥

८—निर्मल परमार्थ बग़ैर मदद सच्चे और पूरे गुरू के हासिल नहीं हो सक्ता है, इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो सच्चे मालिक की भक्ती करना चाहते हैं, लाज़िम और मुनासिब है, कि पहिले खोज सतगुरु का करें और उनसे मिल कर भेद निज धाम और उसके रास्ते का और जुगत चलने की दरयाफ़्त करके अभ्यास शुरू करें, और जिस क़दर बन सके उनका सतसंग करके करम भरम और संशय वग़ैरह अपने दूर करावें क्योंकि जब तक भरम और संशय मन में रहे आवेंगे, तब तक अभ्यास दुरुस्ती से नहीं बनेगा, और न सतगुरु और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रेम जागेगा, और बिना प्रेम के रास्ता आसानी से ते नहीं

होगा, और न अभ्यास में रस और आनंद जैसा चाहिये प्राप्त होगा ॥

९—सतगुरु के बचन सुन कर और उनका कोई दिन संग करके जीवों को वह क़ायदा कि जिस तरह उन को संसार में बर्तना चाहिये मालूम होवेगा। और निर्मल भक्ती की रीत भी वेही सिखावेंगे कि जिससे ग्रहस्त में रह कर इस तौर से परमार्थ की कमाई करसकें, कि माया के जाल में न फसैं और इन्द्रियों के भोगों में बंधन न होवे, और दिन दिन देह और दुनियाँ से अन्तर में न्यारे होते जावें, और कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत प्रतीत बढ़ती जावे, और दर्शन का शौक़ तेज़ होता रहे ॥

१०—जो सच्चे परमार्थी हैं वही सतगुरु के सतसंग में ठहरेंगे और उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ काररवाई करके अपना कारज आहिस्ता २ बनावेंगे, और जिन के मनमें दुनियाँ और उसके सामान का भाव और प्यार ज़बर है उनसे संत सतगुरु का उपदेश कम माना जावेगा, और उनकी जुगत यानी सुरत शब्द की कमाई भी दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगी, लेकिन जो उन के चित्त में सच्ची अभिलाखा राधास्वामी धाम में पहुँचने की है, तो उनका मन भी आहिस्ता २ निर्मल

होकर, उसमें प्रीत सच्चे मालिक के चरनों की ज़बर हो जावेगी, और फिर संसार के भोग उनको अपनी तरफ़ खैंच और बाँध नहीं सकेंगे ॥

११—जो आसान जुगत जीवों के छुटकारे के वास्ते बग़ैर छोड़ने ग्रहस्त आश्रम और उद्यम के कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों पर अति दया करके इस वक़्त में फ़रमाई है उसका शुकराना किसी तरह अदा नहीं होसक्ता। वह जुगत (सुरत शब्द जोग की) ऐसी असर वाली है, कि जो कोई थोड़ी अहतियात के साथ बर्ताव करे, तो उस पर संसार और उसके भोगों का असर बहुत कम पहुँचेगा, बल्कि दिन २ निर्मल होकर कोई काल में अपने निज धाम में पहुँच जावेगा, और दुनियाँ का भी भोग बनिस्बत दुनियाँदारों के ज़्यादा रस और स्वाद के साथ उसको हासिल होवेगा, और उसका ज़हर उस पर असर नहीं करेगा। गुरू नानक ने कहा है। पूरा सतगुरु पाइया और पूरी पाई युक्त ॥ हसंदियाँ खिलंदियाँ खवंदियाँ पिवंदियाँ विच्चे पाई मुक्त ॥ यानी ग्रहस्त में रह कर और ग्रहस्त आश्रम के सर्व ब्योहार और भोगों में अहतियात के साथ बर्तते हुये संतों की जुगत की कमाई करने से सच्ची मुक्ती हासिल हो सक्ती है ॥

१२—उस अहतियात की थोड़ी शरह बतौर हिदायत अभ्यासियों के इस जगह लिखी जाती है, और वह यह है कि फ़ज़ूल कामना यानी इच्छा संसार और उसके मान बड़ाई और भोगों की मन में न उठावें, क्योंकि इच्छा के उठाने से जतन यानी करम करना पड़ेगा, और जो वह जतन दुरुस्त बैठा यानी इच्छा पूरन हुई, तो उसके भोगों में ज़रूर बंधन पैदा होगा, और मन उसके रस में लिपट कर मलीन होगा, और जो इच्छा पूरन न हुई तो दुख और कलेश प्राप्त होगा; और उस हालत में किसी से विरोध और किसी से सरोध अपनी मूर्खता से पैदा करके मुफ़्त भार अपने सिर पर चढ़ावेगा, कि जो इसके अभ्यास में निहायत दरजे का ख़लल डाल कर भक्ती और प्रेम को सुखा देगा ॥

१३—भोग तीन किसम के हैं—इच्छित अनिच्छित और पर इच्छित—इच्छित उसको कहते हैं कि किसी काम या पदार्थ या इन्द्रियों के भोगों की यह शख़्स चाह उठावे, और जो वह चाह तेज़ है तो ज़रूर जतन करावेगी और जतन करने में कष्ट और कलेश भी ज़रूर होगा, और जो वह जतन पूरा न हुआ तो दूना दुख होगा, और जो पूरा हुआ तो उसकी

चाह के पदार्थ या भोग प्राप्त होने पर उसमें ज़रूर आसक्ती होगी, और विशेष करके भोगने में भी आख़िर को तकलीफ़ पैदा होगी। और जो किसी ने सिर्फ़ इच्छा उठाई और उसका अपने अंतर में बिस्तार किया, लेकिन फिर समझ बूझ कर उसके पूरा करने के वास्ते जतन नहीं किया, तौभी जब कभी वह भोग मौज से प्राप्त होगा, तब मगन होकर और दया समझ कर उसमें ज़्यादा शौक़ के साथ बर्तेगा और पकड़ भी उसमें ज़बर होगी, फिर वही नुक़सान जो कि जतन सिद्ध होने पर वाक़े होगा, इस सूरत में भी आयद होगा। इस सबब से समझना चाहिये कि इच्छा उठाने में, चाहे उसके पूरा करने के वास्ते जतन किया जावे या नहीं हर तरह नुक़सान है, और राधास्वामी मतके सतसंगी को मुनासिब और लाज़िम है कि किसी काम या पदार्थ के वास्ते फ़ज़ूल और ना मुनासिब इच्छा न उठावे। अन-इच्छित उसको कहते हैं कि कोई पदार्थ या भोग बग़ैर इस जीव की ख़्वाहिश या चाह के मौज से अना-सुर्त प्राप्त होवे, अगर वह ना मुनासिब और नाजायज़ नहीं है, तो उसको अहतियात के साथ यानी थोड़ा भोगने या काम में लाने में कोई हर्ज नहीं है।

परइच्छित उसको कहते हैं कि जो कोई अपना रिश्ते-दार या दोस्त या सतसंगी भाई, भाव और प्यार के साथ कोई पदार्थ या भोग इस शख़्स के वास्ते तइयार करके सनमुख रक्खे या उसके पास भेजे तो जो वह नामुनासिब और नाजायज़ नहीं है तो उसी अहतियात के साथ जैसा कि अनइच्छित भोग के वास्ते ऊपर लिखा गया है उसमें बर्ताव करे। और जो वह मामूली भोग नहीं है, तो बाद उसके भोगने के थोड़ी देर भजन या ध्यान करना भी मुनासिब होगा, ताकि उसका असर उलटा पैदा न होवे॥

१४—फ़ज़ूल इच्छा से मतलब यह है कि जिस बात या काम या चीज़ या पदार्थ की ज़रूरत, वास्ते अपने औसत दरजे के गुज़ारे के नहीं है, उसके वास्ते इच्छा उठाना ऐसी ख़्वाहिश परमार्थी को हिर्स करके या मान बड़ाई के वास्ते उठाना मना है। बल्कि जो इच्छा ज़रूरी काम या पदार्थ वग़ैरह की उठावे, और उस की प्राप्ती के निमित्त जतन करे, तो वह राधास्वामी दयाल की मौज के आसरे और उनकी दया के भरोसे पर करना चाहिये। और जो इत्तफ़ाक़ से वह जतन सिद्ध न होवे, तो समझना चाहिये कि इसी में कुछ मसलहत है, और जैसे बने तैसे ऐसी मौज के साथ मुवाफ़क़त करनी मुनासिब है॥

१५—जितने मैं कि इस जीव का गुज़ारा औसत दर्जे पर अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़ बख़ूबी होवे उस क़दर चाह उठानी और उसके निमित्त मौज के आसरे जतन करने मैं कोई नुक़सान नहीं होगा, पर उसमैं इस क़दर अहतियात ज़रूर है, कि अपने मतलब के पूरा करने के वास्ते, किसी को नुक़सान पहुंचाना या उसकी हक़ तलफ़ी करना नहीं चाहिये, और इस क़दर सामान की प्राप्ती के वास्ते राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं जब तब प्रार्थना करने मैं भी दोष नहीं है जैसा कि इस कड़ी मैं कहा है। कड़ी। मालिक एता माँगहूं जामैं कुटम्ब समाय ॥ मैं भी भूखा ना रहूं साध न भूखा जाय ॥

१६—और मालूम होवे कि राधास्वामी मत के सतसंगी को यह भी हुक्म है, कि जिस क़दर आमदनी उसकी होवे, उसमैं से दसवाँ अंश यानी दसवाँ हिस्सा मालिक के नाम पर निकाले, और उसको वास्ते ख़र्च ख़ैरात और परमार्थी कामौं के अलहदा रक्खे। और जो इस क़दर आमदनी न होवे कि दसवाँ हिस्सा आसानी से निकाल सके तौ सोलहवाँ हिस्सह यानी फ़ी रुपया एक आना ज़रूर मालिक के नाम का अलहदा करे और परमार्थी कामौं मैं ख़र्च

करता रहे, इसमें उसकी कमाई सुफल होगी और जो धन कि बाद निकालने परमार्थी हिस्सा के वास्ते उसके घर के ख़र्च के बचेगा वह शुद्ध हो जावेगा और परमार्थी ख़र्च के निभाने में उसको आसानी रहेगी, और जब फ़ुरसत और मौक़ा पाकर वास्ते दर्शन या सतसंग के सफ़र करना पड़े तो सफ़र ख़रच भी इसी यानी परमार्थी रुपये में से दे सक्ता है ॥

१७—जो कोई सतसंगी सच्चे मन से कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेवेगा, और अपने परमार्थी और स्वार्थी कामों को उनकी मौज और दया के आसरे करेगा, और जो जुगत अभ्यास की उसको बताई गई है, जैसे भजन और स्वरूप का ध्यान और नाम का सुमिरन और पोथी का पाठ और सतसंग वग़ैरह नेम से दो बार तीन बार या चार बार थोड़ा बहुत बिरह और प्रेम अंग लेकर रोज़मर्रा बिला नाग़ा अपनी फ़ुरसत के मुवाफ़िक़ करेगा, और ऊपर के लिखे हुये क़ायदे और अहतियात के साथ अपनी रहनी दुरुस्त करेगा, और संसारी ब्योहार और अपने उद्यम के कारोबार में जहाँ तक बने सचौटी के साथ बर्ताव करेगा, और फ़ज़ूल वक़्त संसारियों के संग फ़ज़ूल बात चीत में ख़र्च नहीं करेगा, तो राधास्वामी दयाल

सब तरह से उसकी रक्षा और सहायता अपनी दया से करेंगे और अभ्यास में भी उसको थोड़ा बहुत रस देते जावेंगे, और दिन २ उसकी प्रीत और प्रतीत अपने चरनों में और बिरह और उमंग अभ्यास और भक्ती के व्योहार में बढ़ाते जावेंगे, और आहिस्ता २ एक दिन उसको माया के घेर से निकाल कर निज धाम में पहुंचावेंगे जैसा कि उनके हुकम से जो इन कड़ियों में लिखा है ज़ाहिर है—

वह तो रूप दिखा कर छोड़ूं ।
तुम जल्दी क्यों करो पुकारा ॥
तुम्हरी चिन्ता मैं मन धारी ।
तुम अचिन्त रह धरो पियारा ॥
संसय छोड़ करो दृढ़ प्रीती ।
और परतीत सवाँरा ॥
यह करनी मैं आप कराऊँ ।
और पहुंचाऊँ धुर दरबारा ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
जब जब जैसी मौज बिचारा ॥

१८—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है, कि जो जीव को सच्ची दीनता उनके चरनों में आजावे, और वह उनकी सरन दृढ़ करे यानी उनकी

पनाह और ओट में कारवाई परमार्थ की शुरू करे तो चाहे उसका मन किसी क़दर चंचल भी रहे और अभ्यास भी जैसा चाहिये पूरा २ न बन आवे तो भी राधास्वामी दयाल अपनी दया से उसका बेड़ा पार करेंगे। यानी अपना बल देकर उससे जो करनी ज़रूर और मुनासिब होगी देर अबेर आप करालेंगे और उसका कारज जैसा मुनासिब होगा आप बनावेंगे॥

१९—दीनता से मतलब सिर्फ़ यही नहीं है कि आदाब बजा लावे, बल्कि इसके अर्थ यह हैं कि सच्ची ग़रज़मन्दी वास्ते अपने जीव के कल्यान के और नरकों और दुक्खों से बचाव के लिये राधास्वामी दयाल के चरनों में लेकर भक्ती करे—और ग़रज़मंदी का, स्वरूप यह है, कि जैसे बीमार डाक्टर या हकीम की तवज्जह और दवा का मुहताज है, और नौकरी का चाहनेवाला हाकिम की मेहरबानी और तवज्जह का और निरधन वक़्त भारी ज़रूरत के धन के लिये साहूकार का॥

२०—अब जीवों को समझना चाहिये कि किस क़दर भारी दया कुल्ल मालिक ने उनके ऊपर इस वक़्त में फ़रमाई है, कि निहायत सहज तौर से उन के उद्धार का रास्ता जारी किया है, और बग़ैर अलहदा

करने घरबार और रोज़गार से उनको परम पद बख़्शिश करता है, पर शर्त यह है कि वे सच्ची चाह लेकर जिस क़द्र बन सके थोड़ा बहुत अभ्यास संतों की जुगती का दुरुस्ती के साथ करैं, और अपना व्यौहार संसार मैं, और अपनी रहनी परमार्थ मैं, मुवाफ़िक़ उन क़ायदों के जिन का ज़िक्र ऊपर लिखा गया है दुरुस्त करैं, और चरनों मैं प्रीत और प्रतीत बढ़ाते रहैं ॥

२१—ऐसे जीवों का स्वार्थ और परमार्थ यानी दुनियाँ और दीन, राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से आप संवारैंगे—यानी दुनिया मैं भी उन की सम्हाल और रक्षा फ़रमावैंगे, और जो कुछ सामान उसका मुनासिब है बख़्शैंगे, और परमार्थ मैं अपने चरनों की प्रीत और प्रतीत का दान देकर उसको बढ़ाते रहैंगे, और ऐसी दया उन जीवों के संग रहेगी कि संसार के भोगों मैं गिरफ़्तारी और बन्धन नहीं होगा, और मन और सुरत उनके दिन दिन निर्मल होकर चरनों मैं लौलीन रहैंगे और अंत को चरनों में बासा देवैंगे और बिना उनकी माँग के अपनी तरफ़ से परमार्थ की करनी जिसमैं उनके जीव का कारज पूरा बन जावे, अपनी दया का बल देकर उनसे करा लेवैंगे जैसा कि इन कड़ियों मैं हुक्म है:—

अन धन और संतान भोग रस।
जगत भोग और मिला जोग रस ॥
पर किरपा सतगुरु अस रहई।
मोह न ब्यापे जग नहिं फँसई ॥
रहे सुरत निर्मल गुरु साथा।
शब्द मिले रहे चरनन माथा ॥
अपनी दया से गुरु दियो दाना।
सेवक तो कुछ माँग न जाना ॥
नाम अनाम पदारथ न्यारा।
सो सतगुरु दीना कर प्यारा ॥

२२— अब ख़्याल करो कि किस क़दर भारी दया जीवौं पर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने फ़रमाई है और किस क़दर आसान जुगती, कि जो लड़का जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द सहज मैं जिसका अभ्यास कर सकते हैं, जारी फ़रमाई, सिर्फ़ सच्ची लगन यानी सच्चा शौक़ या प्रेम राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं दरकार है, उसी की दिन २ तरक़्क़ी होती रहेगी, और उसी से एक दिन पूरा कारज बन जावेगा, और जो जीव कि थोड़ा बहुत शौक़ लेकर उनके सतसंग मैं आवेगा उसको ऐसी लगन वे अपनी दया से आप बख़्शेंगे, और थोड़ी बहुत करनी कराकर

उसको आप बढ़ाते जावेंगे, और एक दिन कुल्ल मालिक यानी अपने धाम में पहुंचा देंगे और दुनिया की भी सब कैफ़ियत दिखला देंगे ॥

२३—इस भारी दया का शुकराना कौन अदा कर सक्ता है, क्योंकि पिछले वक्तों में बसबब जारी होने अष्टाङ्ग योग यानी प्राणायाम के (जो कि गृहस्तो से और ख़ास कर औरतों से मुतलक़ नहीं बन सक्ता और विरक्तों से भी जिसका दुरस्ती से बन पड़ना मुशकिल है) किसी गृहस्ती जीव का उद्धार नहीं हुआ, और विरक्त भी थक कर रह गये और अब दोनों का सहज में कारज बनना मुमकिन है, जो वे राधास्वामी दयाल की सरन में आ जावें और थोड़े बहुत शौक़ और प्रेम के साथ जैसा तैसा उनकी जुगत के मुआफ़िक़ अभ्यास शुरू कर देवें

२४—जो कुछ कि ऊपर लिखा गया वह आम सतसंगियों के वास्ते है, लेकिन जो कोई सतसंगी तेज़ शौक़ वाला है, और सच्चे हृदय से चाहता है, कि इसी जनम में उसको जल्वह सच्चे मालिक के दर्शन का नज़र आवे, और जल्द उसके जीव का पूरा उद्धार हो जावे, उसको चाहिये कि संसार और उसके भोगों से सच्ची नफ़रत यानी उदासीनता लावे, और तन

मन और इन्द्री और धन और संतान में आशक्ती कम करे, और जगत के पदार्थों की चाह दूर करे, और सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत करे, और जो जुगत कि बताई जावे उसको प्रेम और उमंग के साथ कमावे, तो सतगुरु राधास्वामी दयाल उसको प्रेम की दात देकर और उसको दिन २ बढ़ा कर जल्द अपने चरनों में खींचेंगे, और दिन २ सहारा देकर एक दिन अपने दर्शनों का परम आनंद बख्शेंगे ॥

२५—मालूम होवे कि राधास्वामी मत में मुख्यता तीन बातों की है, पहिले पूरे सतगुरु, दूसरे शब्द यानी धुन्यात्मक नाम और तीसरे सतसंग अंतर और बाहर का, यानी बाहर से सतगुरु और उनकी बानी और प्रेमी जन का संग, और अंतर में शब्द का संग, बग़ैर प्राप्ती सतगुरु के कुछ काम नहीं बन सक्ता, क्योंकि सच्ची लगन और सच्चा प्रेम बग़ैर उनके संग और उनकी मदद के कभी हासिल नहीं हो सक्ता और न शब्द का भेद और किसी से मिल सक्ता है, उनके संग से अस्थूल बंधन जगत के और करम काटे जावेंगे, और संसय और भरम दूर होवेंगे, और नाकिस करम और कुसंग से बचाव होगा, और

अन्तर में शब्द यानी नाम के अभ्यास से झीने कर्म और बन्धन चित्त के काटे जावेंगे, और दिन २ घाट बदलता जावेगा, यानी मन और सुरत ऊँचेकी तरफ़ चढ़ते जावेंगे, और रस और आनन्द पाकर प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी, और दिन २ अभ्यास में तरक़्क़ी होकर एक दिन पूरा काम बन जावेगा॥

॥ बचन २ ॥

वक़्त के सन्त सतगुर और साधकी ज़रूरत वास्ते हासिल होने सच्चे उद्धार के और उन की महिमा और पिछली टेकों का निषेध ॥

१—संत और सतगुरु उनको कहते हैं जो धुर पद तक यानी सत्तपुर्ष राधास्वामी देश तक पहुंचे हैं, और साध गुरू उनको कहते हैं जो संतों के दसवें द्वार तक पहुंचे हैं और धुरपद में पहुंचने का यतन कर रहे हैं, साध या सतसंगी उनको कहते हैं कि जो कुछ रास्तह तै कर चुके हैं, और प्रेम पूर्वक साधना कर रहे हैं, और दसवें द्वार और सत लोक में पहुंचन हार हैं ॥

२—जो कोई अपना सच्चा और पूरा उद्धार चाहे वह जब तक कि अभ्यास करके सत्तलोक और राधास्वामी धाम में न पहुंचेगा, तब तक पूरा काज नहीं बनेगा; यानी जनम मरन और देहियों के दुख सुख से छुटकारा नहीं होगा ॥

३—यह अँतरमुख अभ्यास और चढ़ाई मन और सुरत की बग़ैर संतों की जुगत यानी सुरत शब्द मारग के इस समय में ख़ास कर मुमकिन नहीं है, क्योंकि प्राणों का साधन बहुत कठिन है, और हर एक से दुरस्ती से बनना उसका नामुमकिन है, और फिर भी उसके वसीले से धुरपद में पहुंचना किसी तरह नहीं हो सक्ता, और सिवाय इसके और जो कोई साधन हैं, वह प्राणपुर्ष के अस्थान से नीचे ही रह जाते हैं ॥

४—इस वास्ते लाज़िम और ज़रूर है, कि संतों की जुगत यानी सुरत शब्द योग का, जिसकी तरकीब राधास्वामी दयाल ने अब बहुत सहज और निर्विघ्न कर दी है अभ्यास किया जावे, और इसका भेद सिर्फ़ संत सतगुरु या साधगुरु या उनके मेली सतसंगी से मालूम हो सक्ता है, और राधास्वामी मत में यह अभ्यास आम तौर पर जारी है ॥

५—अब सब जीवों को जो अपना सच्चा कल्यान चाहें और जनम मरन और चौरासी के चक्कर से बचना चाहें, तो संत सतगुरु या साधगुरू और जब तक यह न मिलें, तो उनके मेली सतसंगी से जो प्रेम सहित साधना कर रहा है और रास्तह ते करता जाता है मिल कर उपदेश सुरत शब्द मारग का और भेद धुर धाम का लेकर, जिस क़दर बन सके उसकी कमाई शुरू कर दें, रफ़्तह २ उनको (जो उनकी लगन सच्ची और तेज़ है) संत सतगुरु भी मिल जावेंगे और अपनी मेहर और दया से उनका कारज सहज में बना देंगे॥

६—जब तक संत सतगुरु मिलें तब तक उन अभ्यासियों की, जिन्होंने संतों के सतसंगी से उपदेश लिया है, सफ़ाई और पिंड में चढ़ाई होती जावेगी, लेकिन पिंड के पार चढ़ना बग़ैर मदद और दया संत सतगुरु के मुमकिन नहीं है, सो जब उनका अधिकार इस क़दर बढ़ जावेगा, तब संत सतगुरु भी ज़रूर मिल जावेंगे और आगे को उनका रास्तह चलावेंगे, उन जीवों को चाहिये कि संतों के मेली सतसंगी से, उसको प्रेमी भक्त समझ कर प्रीत भाव से बर्ताव करें, और उसका और संतों की बानी का

जिस क़दर बने संग करते रहैं और उसके संग अभ्यास करके रास्तह तै करते रहैं ॥

७—संत सतगुरु इस दुनिया मैं बहुत दुर्लभ रतन हैं, और जिस किसी को वे मिल जावैं और थोड़ी बहुत अपनी दया से पहिचान उसको देवैं, वही जीव बड़ा बड़भागी समझना चाहिये, निज रूप यानी शब्द स्वरूप से वे हर वक्त हर एक के घट मैं निकट मौजूद हैं, पर जब तक कि वे बाहर नर स्वरूप से न मिलैं, तब तक पूरा २ भेद नहीं मिल सक्ता है, और न बग़ैर थोड़े बहुत अभ्यास के उनके निज स्वरूप की पहिचान हो सक्ती है, इस वास्ते सच्चे परमार्थियौं को खोज संत सतगुरु का बहुत ज़रूर है ॥

८—जब से कि जीव संतमत मैं उपदेश लेकर शामिल होवे, तब से उसको लाज़िम है कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की टेक बाँधे, और जिस क़दर कि पिछली टेकैं होवैं उनको छोड़ देवे, और जिस २ का कि इष्ट और भाव मन मैं पहिले से धरा होवे उन सब को साखा जान कर राधास्वामी के चरनौं मैं समा देवे, यानी मूल की धारना इख्तियार करे और साखाऔं मैं न अटके, क्यौंकि जब तक ऐसा नहीं करेगा, तबतक उसकी निर्मल प्रीत प्रतीत राधा-

स्वामी दयाल के चरनौं मैं नहीं आवेगी और न अंतर अभ्यास मैं मदद मिलेगी ॥

९-इसी तरह सुरत शब्द मारग की महिमा (जिसकी चाल जानकी धार पर सवार होकर चलती है और जान की धार सब धारौं पर भारी है) समझ कर शौक़ और ज़ौक़ के साथ उसका अभ्यास शुरू करे, और जितने अभ्यास कि दुनियाँ मैं जारी हैं उनको ओछा और करम धरम वग़ैरह को भरम समझ कर त्याग देवे, और उनमैं किसी तरह का भाव और उनसे किसी तरह की आसा न रक्खे, नहीं तो सुरत शब्द का अभ्यास जैसा चाहिये दुरुस्ती से नहीं बनेगा, और संसय और भरम मन मैं जब तब पैदा होकर उसकी काररवाई मैं बिघन डालते रहैंगे ॥

१०-संतौं का मत प्रेमा भक्ती का है, और यह भक्ती अंतर मैं सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं सच्चे मन से करनी चाहिये, यानी उनके चरनौं का प्रेम सहित ध्यान, और उनके शब्द का उमंग सहित स्रवन करना चाहिये, और जो संत सतगुरु मिल जावैं तो बाहर से उनकी भक्ती प्रेम और उमंग के साथ करनी चाहिये, यानी चित्त से उनके बचन सुनना और समझना और दृष्ट जोड़ कर उनके स्व-

रूप का दर्शन करना, और तन मन धन से जिस क़दर बन सके उनकी और उनके भक्तों की सेवा करना ॥

११—सतगुरु और उनके भक्तों की सेवा ऐन राधास्वामी दयाल की भक्ती समझनी चाहिये, क्योंकि इस भक्ती करने से मतलब यही है कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु (जो असल में उन्हीं का रूप हैं) प्रसन्न होकर प्रेमदान देवें, यानी मन और सुरत को जो तन और इन्द्री और संसार के भोगों में (जो जड़ पदार्थ हैं) अटके हुये हैं उन से आहिस्तह २ न्यारा करके, घट में निज धाम की तरफ़ चढ़ाते हुये एक दिन राधास्वामी के चरनों में पहुंचावें ॥

१२—यही यानी संत सतगुरु का भक्ती कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल को मंज़ूर और क़बूल है, और किसी की भक्ती पसंद नहीं है और न उससे वह फ़ायदह और फल जो ऊपर लिखा गया हासिल हो सक्ता है ॥

१३—और जिस किसी को संत सतगुरु अभी नहीं मिले हैं और वह उनके मिलने की आसा में उनके मेली सतसंगी या सतसंगिनों से भाव और प्यार और

थोड़ी बहुत उनकी सेवा करे, तौ वह भी संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की भक्ती मैं दाखिल होगी, क्यौंकि उस शख्श का मतलब इस काररवाई से यही होगा, कि राधास्वामी दयाल अंतर मैं दया करैं और अपने चरनौं मैं खींचैं, और संत सतगुरु का भी दर्शन और सतसंग प्राप्त होवे, फिर यह भक्ती खुद राधास्वामी दयाल कोही सेवा और भक्तीमैं शामिल होगी, इसका भी फल रफ्तह २ यही मिलेगा कि अंतर शब्द और स्वरूप मैं भाव और प्यार बढ़ता जावेगा ॥

१४–मालूम होवे कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्व समर्थ घट २ मैं मौजूद यानी हाज़िर और नाज़िर हैं और जो कोई उनके दर्शन और निज धाम की प्राप्ती के निमित्त अंतर और बाहर सेवा कर रहा है, उसको वे आप देख रहे हैं, और उसकी निष्काम भक्ती का फल यानी प्रेम की तरक्क़ी आप देते हैं और उसके मन और सुरत का आहिस्तह २ सिमटाव और चढ़ाव करते हुये अपने चरनौं मैं लगाते हैं, और थोड़ा बहुत रस और आनंद अभ्यास का आप अपनी दया से देते जाते हैं, क्यौंकि जिस क़दर काररवाई मेहर और दया की होती है,

वह सब निज रूप से जो कि हर एक के घट २ मैं मौजूद यानी अंग संग है, की जाती है, इस वास्ते हर एक को राधास्वामी दयाल के चरनों मैं प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ाना, और अंतर मैं सेवा यानी अभ्यास दुरुस्ती से करना वास्ते प्राप्ती मेहर और दया रोज़ अफ़ज़ूँ के मुनासिब और ज़रूर है ॥

१५—राधास्वामी के प्रेमी भक्तों को किसी दूसरे मैं परमार्थी भाव, उनकी बराबर या उनसे ज्यादह किसी हालत मैं नहीं रखना चाहिये, जितने पद कि राधास्वामी धाम से नीचे हैं उनके धनी का अदब करना दुरुस्त है, पर मन और सीस राधास्वामी के चरनों मैं अर्पन करना चाहिये, जैसे स्त्री खातिर और ज़रूरत पड़े तो सेवा सब की, यानी अपने माँ बाप और कुटुम्ब और अपने पति के कुटुम्ब की करती है, लेकिन अपनी निज प्रीत और सर्व कारज के पूरन करने की आसा अपने पति मैं रखती है, और वक्त पर उसी का संग देती है, बल्कि अपने पुत्रों से भी मामूल से ज्यादह सरोकार नहीं रखती है, इसी तरह राधास्वामी के इष्ट वालों के हिरदे मैं सिवाय राधास्वामी दयाल के दूसरे का भाव और प्यार (सिवाय मामूली तौर के) नहीं होना चाहिये, नहीं

तो भक्ती में भारी नुक़सान पैदा होगा, चाहे स्वार्थ चाहे परमार्थ दोनों कामों में भरोसा और दया की आसा राधास्वामी दयाल के चरनों में रखना चाहिये ॥

१६—हर हालत और हर काम में राधास्वामी के भक्तों को उनकी मेहर और दया का भरोसा रख कर उनकी मौज के साथ जब जब जैसी होवे मुवाफ़क़त करना चाहिये, यानी चाहे कभी आराम मिले और चाहे कि तकलीफ़ आयद होवे, दोनों हालत में मसलहत समझ कर शुकरानह करना वाजिब है, और जो किसी हालत की बरदाश्त न हो सके, तो उस वक़्त राधास्वामी दयाल के चरनों में वास्ते प्राप्ती ताक़त बरदाश्त के प्रार्थना करना मुनासिब है, वे अपनी मेहर से या तो ताक़त बख़्शेंगे, या उस तकलीफ़ को किसी क़दर कम कर देंगे, ख़ुलासह यह कि जिसने उनकी सच्चे मन से सरन ली है, और हर बात में उन्हीं का आसरा और भरोसा रखता है उसकी सम्हाल हर तरह से जैसा मुनासिब होगा वे आप फ़रमावेंगे, लेकिन तन मन और इन्द्रियों से और पाँचों दूतों से जिस तरह मुनासिब होगा उस का खूँट छुड़ावेंगे, यह काम वास्ते जीव के सच्चे और

पूरे उद्धार के, निहायत ज़रूरी और मुख्य समझा जाता है सो ऐसी काररवाई में किसी जीव को घबराना और उनसे बेमुख होना नहीं चाहिये, नहीं तौ उसके परमार्थी कारज की दुरस्ती में फ़र्क पड़ेगा यानी देर लगेगी ॥

१७—हर एक सच्चे परमार्थी को इस बात का ख़्याल रखना चाहिये, कि वह किस मतलब से सरन में आया और जब वह मतलब जीव के सच्चे उद्धार, यानी माया के घेर से पार होने का है, तो हर एक परमार्थी को लाज़िम और फ़र्ज़ है, कि जहाँ तक बन सके आपही सतसंग के बचन सुन कर और समझ कर, मन और माया और उसके भोगों से बचता चले, और पाँचों दूतों की काररवाई से होशियार रहे, क्योंकि यह सब उसके परमार्थी कारज में बिघन डालने वाले हैं, जिस क़दर इनसे होशियारी के साथ अपना बचाव रक्खेगा, उसी क़दर तकलीफ़ कम होगी, और जिस क़दर प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ावेगा, और एकाग्र होकर अभ्यास करेगा, उसी क़दर अंतर में रस और आनंद मिलता जावेगा, और हर तरह की ताक़त बढ़ती जावेगी, यानी प्रेम और उमंग जागते जावेंगे ॥

१८—जो हिदायत कि इस मुआमले में सच्चे परमार्थी को की गई है, और जिस पर उस को हमेशा नज़र रखना और उसके मुवाफ़िक़ जहाँ तक बन सके काररवाई करना मुनासिब और लाज़िम है, वह इस शब्द में जो नीचे लिखा जाता है, खोल कर बर्णन की है ॥

॥ शब्द ॥

गुरू की मौज रहो तुम धार ।
गुरू की रज़ा सम्हालो यार ॥ १ ॥
गुरू जो करें सो हित कर जान ।
गुरू जो कहें सो चित धर मान ॥ २ ॥
शुकर की करना समझ बिचार ।
सुख दुख देंगे हिकमत धार ॥ ३ ॥
ताड़ और मार करें सोइ प्यार ।
भोग सब इन्द्री रोग निहार ॥ ४ ॥
कहूँ क्या दम २ शुकर गुज़ार ।
बिना उन और न करने हार ॥ ५ ॥
दुखी चित से न हो दुख लार ।
सुखी होना नहीं सुख जार ॥ ६ ॥
बिसारो मत उन्हें हर बार ।
दुक्ख और सुक्ख रहो उनधार ॥ ७ ॥

गुरू और शब्द यह दोउ मीत ।
नहीं कोई और इन घर चीत ॥ ८ ॥
यही सतपुर्ष यही करतार ।
लगावें तोहि इक दिन पार ॥ ९ ॥
बिना उन कोई नहीं संसार ।
देवो मन सूरत उन पर वार ॥ १० ॥
करें वह नित्त तेरी सार ।
तेरे तन मन के हैं रखवार ॥ ११ ॥
शुकर कर राख हिरदे धार ।
मिटावें दुक्ख सबही झाड़ ॥ १२ ॥
करें क्या मन तेरा नाकार ।
नहीं तू छोड़ता विष धार ॥ १३ ॥
भोग में गिरे बारम्बार ।
न माने कहन उनकी सार ॥ १४ ॥
इसी से मिले तुझ कोदंड ।
नहीं तू मानता मति मंद ॥ १५ ॥
सहो अब पड़े जैसी आय ।
करो फ़र्याद गुर से जाय ॥ १६ ॥
पकड़ फिर उनहीं को तू धाय ।
करेंगे वोही तेरी सहाय ॥ १७ ॥
बिना उन और नहीं दरबार ।

रहो उन चरन मैं हुशियार ॥ १८ ॥
गुनह तुम कीये दिन और रात ।
गुरू की कुच्छ न मानी बात ॥ १९ ॥
इसी से भोगते दुख घात ।
बचावैंगे वही फिर तात ॥ २० ॥
रहो राधास्वामी के तुम साथ ।
लगे फिर शब्द अगम तुम हाथ ॥ २१ ॥

बचन ३

बर्णन हाल सुरत के उतार और चढ़ाव का और गुरु स्वरूप की महिमा और भजन की तरक़्क़ी का जतन और संसारी ब्योहार और परमार्थी बर्ताव की दुरस्ती ॥

१—मालूम होवे कि सुरत का उतार असल मैं निज धाम यानी राधास्वामी दयाल के चरनौं से हुआ है, और पिंड के नाके पर यानी छटे चक्र के मुक़ाम पर कि जो अँदर की तरफ़ दोनौं आँखौं के मध्य मैं वाक़े है इसकी निज बैठक है। और वहीं से दोनौं नेत्रौं मैं धार आई, और वहाँ ठहर कर काररवाई देह और दुनियाँ की जारी हुई, और देह

और कुटुम्ब और भोगों और पदार्थों में बँधन और आशक्ती हो गई, कि जिसके सबब से दुख सुख सहना पड़ता है। यानी जहाँ मन की प्रीत है या जहाँ इसका ममत्व है या जिसको अपना समझा है, वहीं बँधन पैदा होगया, और उसकी हालत बदलने में इसकी भी हालत बदलती है, यानी दुख सुख का चक्कर चलता रहता है॥

२—जब तक कि निज घर का भेद पाकर और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके चलना यानी उलटना शुरू नहीं किया जावेगा, और दृढ़ आसा पहुंचने निज धाम की बाँधी नहीं जावेगी, तब तक यह गिरफ़्तारी सुरत और मन की, जिसका ज़िकर ऊपर हुआ नहीं छूटेगी, और जनम मरन भी बारम्बार देह धर कर जारी रहैगा। यह भेद और जुगत पहुंचने निज धाम की संत सतगुरु या साध गुरू से मालूम हो सक्ती है। पर शर्त यह है कि यह शख़्स सच्चे मन से यानी सच्चे शौक़ के साथ अभ्यास शुरू करे, तब उलटना मन और सुरत का और चढ़ाई निज घर की तरफ़ मुमकिन है॥

३—मन और इन्द्रियाँ अपने असली झुकाव और पुरानी आदत और स्वभाव के मुवाफ़िक़ इस काररवाई

में बिघन कारक होंगे, सो उनके बिघनों के हटाने का जतन यही है, कि संसारी तरंगें और इच्छा को जिस क़दर मुमकिन होवे रोके यानी फ़ज़ूल और बग़ैर ज़रूरत के अपनी सुरत की धार को इन्द्री द्वारे से बाहर की तरफ़ न बहावे, और इन्द्रियों के भोगों में आशक्ती कम करता जावे, तब अभ्यास किसी क़दर दुरुस्ती के साथ बन पड़ेगा, और कुछ रस भी अँतर में मिलेगा, और फिर वही रस जो अभ्यास नेम से जारी रहा, दिन दिन बढ़ता जावेगा ॥

४—जो अभ्यासी को सतगुरु के चरनों में किसी क़दर परमार्थी भाव और प्यार है, और वक़्त ध्यान और भजन के उनके स्वरूप को अगुवा करके अभ्यास शुरू करेगा, तो अंतर में मन और इन्द्रियों का ज़ोर किसी क़दर घटता नज़र आवेगा, और प्रेम और उमँग की थोड़ी बहुत तरक्क़ी होती जावेगी ॥

५—कुल्ल मालिक जो कि घट २ में अंतरजामी है सच्चे सेवक को अपने चरनों में प्रीत और प्रतीत दिलाने और उसके बढ़ाने के निमित्त, मौज से जब तब गुरु स्वरूप धारन करके, अंतर में वक़्त अभ्यास या स्वप्न अवस्था के (जब कि मन और सुरत का सिमटाव अंदर की तरफ़ होता है और देह और इन्द्रियों

की तरफ़ झुकाव नहीं रहता) दर्शन देता है। यह दर्शनी स्वरूप हाड़ मास का नहीं है, बल्कि चैतन्य यानी रूहानी है, और सेवक को पहिचान कराने के मतलब से धारण किया जाता है, नहीं तो वह कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल अरूप तौर से भी अंतर में दया फ़रमा सक्तै हैं, पर सेवक को उसकी पहिचान नहीं होगी। और इस सबब से उनकी महिमा और मेहर और दया की ख़बर नहीं पड़ेगी॥

६—जब कि कभी २ सेवक को ऐसे दर्शन अपने घट में मिल गये, तो उसी स्वरूप का जब अभ्यास के समय या और किसी वक़्त ध्यान या ख़्याल करेगा, तब ज़रूर थोड़ा बहुत प्रेम जागेगा, और मन और इन्द्री भी उस वक़्त नीचे पड़ जावेंगे, यानी अभ्यास में विघन नहीं डालेंगे॥

७—इसी सबब से सतगुरु स्वरूप और उसके ध्यान की महिमा और फ़ायदा ज़बर है, कि मालिक अंतरजामी सेवक पर दया करने के वास्ते और उसकी प्रीत और प्रतीत बढ़ाने के लिये, आप उस स्वरूप को धारन करके घट में दर्शन देता है, और यह स्वरूप सेवक के साथ जहाँ तक कि रूप रँग रेखा है सूक्ष्म से सूक्षम होता हुआ सँग रहेगा और अंतर में मदद देगा,

और फिर यही स्वरूप अरूप की भी पहिचान कराता जावेगा, इस वास्ते हर एक प्रेमी अभ्यासी को चाहिये कि जब कभी ऐसे दर्शन अँतर में वक़्त अभ्यास या सुपने में मिलें, तो उनको दर्शन मालिक का समझ कर उस स्वरूप में प्रीत और भाव लावे, यह दर्शन आसानी से या जब जी चाहे तब नहीं मिलते हैं, बल्कि किसी क़दर ऊँचे देश में, जब मन और सुरत सिमट कर वक़्त अभ्यास या सोने के वहाँ पहुंचें, तब मौज से प्राप्त होते हैं, और इसी को ख़ास निशान राधास्वामी दयाल की दया का समझना चाहिये ॥

८—यह दस्तूर आम है कि जिस किसी ने जो कोई सूरत या चीज़ देखी है, वह जब उसका ख़याल करे वह सूरत थोड़ी बहुत उसकी आँखों में आ जाती है, लेकिन सतगुरु स्वरूप का ख़याल इस तौर से जब चाहे तब नहीं आता है, सबब इसका यह है कि आम सूरतों का जब कोई आदमी ख़याल करता है उसके मन या आँखों में अक्स या छाया नज़र आ जाती है, लेकिन सतगुरु स्वरूप का जब दर्शन होता है, वह ऊँचे देश में असली या सच्चा होता है, और जब कभी होता है तब राधास्वामी दयाल की दया और मेहर से होता है, वास्ते बढ़ाने प्रीत और प्रतीत सेवक के ॥

९—लेकिन इस क़दर समझना चाहिये, कि जब तक सेवक को बाहर सतगुरु के स्वरूप में भाव और प्यार न होगा, और अंतर स्वरूप की महिमाँ न जानेगा, तब तक मालिक अंतरजामी गुरुस्वरूप में दर्शन बहुत कम देवेंगे। यानी बाज़े लोग इस क़िसम के हैं, कि उन के मन में विद्या और बुद्धी के संबंध से स्वरूप में भाव नहीं आता, और उसको महदूद (हद्दवाला) और अल्पज्ञ और ओछा समझ कर ऐसा ख़याल करते हैं, कि मालिक तो अरूप और अपार है वह स्वरूप धारी कैसे हो सक्ता है। सो जब कभी उन को इत्तफ़ाक़ से ऐसा दर्शन भी (उनके मन की हालत के जाँच की नज़र से) मिल जाता है, तो उनको उसमें मुतलक़ भाव नहीं आता, और उसको ख़्वाब व ख़याल समझते हैं, ऐसे लोगों को मालिक अंतरजामी गुरु स्वरूप में दर्शन नहीं देते हैं, और जो कि अरूप की उनको जाँच और पहिचान जबतक कि सुरत उनकी ज़्यादह ऊँचे देश में न पहुंचें नहीं आसक्ती, इस वास्ते वे इस क़िसम की दया से अर्सह तक ख़ाली रहते हैं और मन और इन्द्रियों के विघन भी ज़्यादा सताते रहते हैं॥

१०—इन लोगों को इस बात की समझ अच्छी तरह नहीं आती, कि आदि स्वरूप (जहाँ से रूप

रंग रेखा खड़े हुए) उस कुल्ल मालिक ने ही धारन किया, और फिर वही आकार नीचे की रचना में कमी बेशी के साथ उतरता आया, और वह आदि स्वरूप ऐसाही अपार है जैसा कि अरूपी स्वरूप बल्कि नीचे के दरजों में भी स्वरूप ऐसाही अपार है कि जिस का कोई अन्दाज़ और हिसाब नहीं कर सक्ता, लेकिन अफ़सोस यह है कि यह लोग अपनी ओछी समझ के मुआफ़िक़ स्वरूप के लफ़्ज़ और नाम को हमेशह हद्दार और ओछा समझते हैं, सबब इसका यह है कि इनकी नज़र अस्थूल रचना में बँधी हुई है, और सूक्ष्म से सूक्ष्म रचना का इन को अनुमान नहीं होता, इस वास्ते यह शुरू से अरूप की तरफ़ दौड़ते हैं, और हाल यह है कि जब तक रूपवान रचना की हद्द के पार न जावेंगे, इन को उस अरूप का जिसकी कि यह महिमाँ समझते हैं, कभी दर्शन प्राप्त नहीं हो सक्ते, और इस नादानी का इनको यह फल मिलता है कि प्रेम और उमंग से; जो कि रस्तह के जल्दी काटने वाले और अभ्यास में रस और आनन्द प्राप्त कराने वाले हैं ख़ाली रहते हैं और अभ्यास में मन और इन्द्रियों के बिघनों से झटके खाते रहते हैं, और इस सबब से चाल भी इन

की सुरत रहती है और रूखा फीकापन हमेशह इन के मन और सुरत पर थोड़ा बहुत छाया रहता है, और जब तब रस न मिलने की शिकायत करते रहते हैं, और कभी २ प्रीत प्रतीत भी डिगमिग हो जाती है ॥

११—एक भारी नुक़सान ऐसे अभ्यासियों में यह है कि वे अक्सर अपना बल लेकर अभ्यास करते हैं, और अपने बैराग वग़ैरह का ज़्यादह भरोसा रखते हैं, और स्वरूप के प्रेमियों को अक्सर ओछा देखते हैं, और अपने से अभ्यास और बैराग में उनको कम ख़्याल करते हैं, और हाल यह कि प्रेमियों को थोड़े अभ्यास में रस और आनन्द बहुत मिल जाता है, और गुरु स्वरूप को अगुवा रखने से उनके मन और इन्द्री किसी क़िसम का बिघन नहीं डालते, और यह लोग हरचन्द ज़्यादह अभ्यास करते नज़र आते हैं और अपना बल लेकर मन और इन्द्रियों से हर रोज़ जूझते हैं, फिर भी उनको प्रेमियों के बराबर रस नहीं मिलता, और जब २ मौज से रस मिलता है, तो किसी क़दर उसका अहंकार भी उनके मन में आ जाता है ॥

१२—लेकिन जो भाग से इन लोगों को सतगुरु का सतसंग प्राप्त होता रहा, तो इनकी समझ भी आहि-

सता आहिस्ता बदलती जावेगी और कोई दिन के अभ्यास के बाद जब उनकी सुरत सिमट कर किसी क़दर ऊँचे देश मैं चढ़ने लगेगी, तब गुरु स्वरूप की महिमाँ उनके चित्त मैं समाती जावेगी, और फिर वेही प्रेमियों के मुवाफ़िक़ अभ्यास मैं थोड़ी बहुत गुरु स्वरूप की मदद लेकर चलने लगेंगे, और फिर उनका रास्तह भी आसानी से तै होता जावेगा, इन लोगों को बमुक़ाबलह प्रेमी अभ्यासियों के, जो विवेक अंग वाले अभ्यासी कहा जावे तो यह कहना दुरुस्त है ॥

१३—खुलासह यह है कि चाहे कोई प्रेम अंग लेकर चले, या विवेक और वैराग अंग पर ज़ोर देकर रास्तह तै करना शुरू करे, दोनों को पिंड देश से आहिस्तह आहिस्तह न्यारे होकर, अपने निज धाम की तरफ़ चलना और चढ़ना ज़रूर है, क्योंकि जब तक कि सुरत माया के घेर के पार न जावेगी, तब तक काम पूरा नहीं बनेगा यानी जब तक कि सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल के धाम मैं न पहुंचेगी, तब तक निर्भय और निःचिन्त नहीं हो सक्ती, और न परम आनन्द प्राप्त हो सक्ता है, और वहीं पहुंच कर जनम मरन और काल के कलेश से सच्चा छुटकारा होगा ॥

१४–इस वास्ते कुल्ल परमार्थी जीवों को जो अपना सच्चा उद्धार चाहते हैं और जीते जी अपनी भक्ती और अभ्यास का थोड़ा बहुत फल देखते चलना मंज़ूर है, तो उनको चाहिये कि सतगुरु खोज कर, उनका सतसङ्ग भाव और प्रीत के साथ करें, और संसय और भरम दूर करके सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर, उमंग और प्रेम के साथ उसकी कमाई करें, और सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ कर के और उनकी मेहर और दया का आसरा और भरोसा रख कर रास्तह तै करना शुरू करें, और प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते जावें, तब दिन दिन उनको अभ्यास में थोड़ा बहुत रस मिलता जावेगा, और आहिस्तह २ तरक़्क़ी करके एक दिन राधास्वामी दयाल की दया से धुरधाम में पहुँच कर, परम और अमर आनन्द को प्राप्त होंगे ॥

१५–प्रेमी अभ्यासियों को इस क़दर जता देना मुनासिब मालूम होता है, कि अभ्यास के समय चाहे उनका दर्शन गुरु स्वरूप का प्रत्यक्ष होवे या नहीं, उनको अपने मन और सुरत को स्वरूप का ख्याल करके अस्थान पर जमाना चाहिये, और जो उनके मन में थोड़ा स्वरूप में भाव और प्रेम है, तो यह

काररवाई उनसे दुरुस्त बन पड़ेगी, यानी मन और सुरत उन के स्वरूप के आसरे स्थान पर किसी क़द्र ठहरने लगेंगे, और ऊँचे देश में ठहरने का रस थोड़ा बहुत ज़रूर मालूम पड़ेगा, और ज्यादह ठहराव या ऊँचे स्थान पर चढ़ाव के साथ वह रस और आनन्द बढ़ता जावेगा ॥

१६—जो कोई अभ्यासी यह चाहते हैं कि पहिले हम को दर्शन मिलें तब ध्यान करें, यह चाह उनकी नाजायज़ तो नहीं है, पर कमी शौक़ और बिरह और प्रेम की इससे पाई जाती है—क्योंकि ऐसी मौज मालूम नहीं होती है, कि हर किसी को दर्शन स्वरूप के अन्तर में, मुवाफ़िक़ उसके इरादह के जब चाहे जब मिल जावें, इस वास्ते कुल्ल सतसंगियों को मुनासिब है, कि अपने २ शौक़ के मुवाफ़िक़ स्वरूप अनुमान करके अभ्यास शुरू करें, और दर्शनों की प्राप्ती मौज पर छोड़ दें, राधास्वामी दयाल जब जब और जैसे २ जिस २ जीव के वास्ते मुनासिब होगा, वक़्तन् फ़वक़्तन् दया फ़रमावेंगे, यानी किसी को अवसर और किसी को कभी २ स्वरूप का दर्शन देते रहेंगे ॥

१७—मुवाफ़िक़ ख़्वाहिश के हररोज़ और हर वक़्त जब मन चाहे दर्शन मिलने में बड़ी आसानी

अभ्यास की होती है, और प्रेम भी जल्द बढ़ता है पर यह हालत थोड़े दिन रह सक्ती है, क्योंकि रस्तह दूर व दराज़ है, और वास्ते उसके काटने के बिरह और शौक़ की तरक्की ज़रूर चाहिये, और मन में बेकली और घबराहट का जब तब पैदा होना वास्ते उसकी सफ़ाई और चढ़ाई के ज़रूर है, और यह बात जब तक कि दर्शन हर वक्त मिलते रहैंगे हासिल न होगी ॥

१८—और यह बात भी सतसंगियों को जानना ज़रूर है, कि सच्चे परमार्थ के हासिल करने के वास्ते, सच्चे गुरू का संग चाहिये । जो सन्त सतगुरु न मिलैं तो जो कोई प्रेमी सतसंगी उनसे मिला हुआ मिल जावे, और वह साधना कर रहा है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का मंज़ूर नज़र है, यानी उस पर उनकी मेहर और दया है, तो उसके संग से भी कारज बनना मुमकिन है, यानी जब कोई सच्चा प्रेमी उस सतसंगी से, भेद और जुगत दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करेगा, तो उसको राधास्वामी दयाल अपने चरनों में लगावैंगे, और अन्तर और बाहर परचे देकर उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ावैंगे, इससे उस सच्चे प्रेमी को

यक़ीन हो जावेगा, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने उसको मंज़ूर और क़बूल फ़रमाया, यानी अपना कर लिया, और दिन २ उसकी दुरुस्ती करते जाते हैं, फिर उसको मुनासिब होगा कि उसी प्रेमी सतसंगी का सतसंग करे जाय और जो ज़ाहरी समझ बूझ और मदद दरकार होवे उस्से लिये जावे, वह आप चल रहा है और उसको भी संग २ चलाता जावेगा, और एक दिन दोनों धुर घर में पहुंच जावेंगे ॥

१९—अक्सर सतसंगी अभ्यासी इस बात की जल्दी करते हैं, कि हमारी सुरत एक दम चढ़ा दी जावे, या कि कोई मुक़ाम हमको खुल जावे—यह चाह तो अच्छी है, लेकिन इसके पूरे होने के लिये जल्दी और इज़्तराबी और घबराहट नहीं चाहिये क्योंकि यह काम आहिस्तह २ दुरस्त बनेगा, और जल्दी में नुक़सान होगा ॥

२०—मालूम होवे कि सुरत की धार से तमाम बदन चेतन्य है, और जिस क़दर वह धार सिमट कर ऊपर की तरफ़ चढ़ती जावेगी, उसी क़दर पिंड ख़ाली होता जावेगा, या आँकि उसमें कमी होती जावेगी, सो ऐसी कमी की बरदाश्त यकायक नहीं होगी, लेकिन जो आहिस्तह २ चढ़ाव और उतार

होगा, तौ उसमें किसी क़िसम का हर्ज देह की काररवाई और उसकी सम्हाल में वाक़े नहीं होगा, और जो मुख्य अंग मन और सुरत का एकदम या जल्दी खिंच जावेगा, तौ देह की सम्हाल जैसी चाहिये वैसी नहीं हो सक्ती, और न दुनियाँ के कारोबार में मन लगेगा, यानी ऐसे अभ्यासी का बर्ताव यकतरफ़ी हो जावेगा, बल्कि परमारथ भी आइन्दः दुरुस्ती से नहीं बनेगा, और बेहोशी ज़ियादा ग़ालिब होकर आगे का रस्ता बन्द हो जावेगा, फिर वह शख़्श न स्वार्थ के काम का रहा और न परमार्थ का, दोनों कामों में भारी हर्ज और नुक़सान हो गया। इस वास्ते ऐसी चाल सन्त नहीं चलाते, उनको जीव का आहिस्ता २ चलाकर धुर मंज़िल में पहुंचाना मंज़ूर है, न कि रस्ते में अटका कर छोड़ देना॥

२१—इस वास्ते कुल्ल अभ्यासी सतसंगियों को मुनासिब है, कि ऐसी जल्दी कि जिसमें उनका काम बिगड़े न करें, और जैसे २ उनको राधास्वामी दयाल कभी २ रस और आनन्द और कभी २ बिरह और बेकली देकर चलावें उसी तरह चलते जावें और अपनी तरक्क़ी के वास्ते जब २ दिल चाहे अर्ज़ मारूज़ भी करते रहें, पर निरास होकर अभ्यास में सुस्त और ढीले न हो जावें, और अपने प्रेम को रूखा फीका न होने दें॥

२२—यह मन अपने निज घर को जुगान जुग से भूल कर माया और उसके पदार्थों में लिपट कर उलटी चाल और ढाल में बर्त रहा है, सो जब तक इसकी पूरी सफ़ाई न होगी, तब तक अन्तर में आँख नहीं खोली जावेगी, लेकिन गौन यानी समान अंग से सुरत की चढ़ाई बराबर कराई जाती है, और इसी तौर से रास्ता खुलता और साफ़ होता जाता है, और जब मन की पूरी गढ़त हो जावेगी, और सुरत को ताक़त बरदाश्त रस और आनन्द ऊँचे देश की आ जावेगी, तब राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से थोड़ी बहुत अन्तर में आँख खोलेंगे, और ताक़त भी देवेंगे, यानी प्रेम बहुत बढ़ा देंगे, कि जिस से यह सुरत अंतर में बहुत तेज़ चलने लगेगी, और आसानी के साथ रास्ता जल्द तै होता जावेगा। और तबही इसको पूरी २ महिमा सन्तपुर्ष राधास्वामी दयाल और उनके शब्द और उनके जुगत की ज्यों का त्यों समझ में आवेगी, और फिर शान्ती और निःचिन्ती और गहरा आनन्द भी हासिल होगा॥

२३—जब तक कि ऐसी गत और हालत हासिल होवे तब तक अभ्यासी सतसंगी को मुनासिब है कि अपना अभ्यास धीरज धर कर प्रीत और प्रतीत के साथ

करे जावे, और आहिस्ता २ अपनी तरक्क़ी देखता जावे, और तरक्क़ी का निशान यह है, कि अभ्यासी के मन में दिन २ प्रीत और प्रतीत राधास्वामी दयाल और उनके शब्द और जुगत की बढ़ती जावे, और दुनियाँ और उसके भोगों और कुटुम्ब परिवार की मुहब्बत कम होती जावे ॥

२४—प्रेमी सतसंगी को इस बात का भी लिहाज़ रखना चाहिये, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से, सिवाय उनके और उनके चरनों की प्रीत और प्रतीत के और कुछ न माँगे, वाजबी ज़रूरत के वास्ते जो सामान दरकार है, उसके माँगने में कुछ हर्ज नहीं है, मगर और मुआमलों में अपनी ख़्वाहिश या माँग का पेश करना मुआफ़िक़ क़ायदे भक्ती के ना मुनासिब है, लेकिन जो मन किसी वक़्त और किसी हालत में धीरज और सबर न लावे तो बाद करने मामूली अभ्यास के, जो कुछ कि चिन्ता या फ़िकर या चाह दिल में होवे, उसको बेतकल्लुफ़ चरनों में राधास्वामी दयाल के अर्ज़ करके प्रार्थना करे, और ज़हूर उसके नतीजे का उनकी मौज पर छोड़ दे, और जो उसकी भक्ती सच्ची है तो किसी ख़ास मुआमला में अगर वह हठ के साथ अर्ज़ करे तो भी कुछ मुज़ायक़ा नहीं।

राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से जो मुनासिब समझैं तो उसकी हठ को भी पूरा कर सक्ते हैं, और मामूली अर्ज़ को भी मंज़ूर कर सक्ते हैं। इस वास्ते माँगना क़तई मना नहीं किया गया, लेकिन इस क़दर अहतियात चाहिये, कि जो माँग पूरी न होवे या सतसंगी की ख़्वाहिश के मुआफ़िक़ काम न बने तो उनसे बेमुख न हो जावे, और जो कुछ कि मौज से होवे उसी में मसलहत और अपना असली फ़ायदा समझ कर धीरज और सबर और सन्तोष के साथ बरदाश्त करे ॥

२५—जब कभी कोई चिन्ता या तकलीफ़ पेश आवे तो उस वक़्त मुनासिब है कि ध्यान या भजन में बैठ कर पहिले अपनी चिन्ता या तकलीफ़ का हाल अर्ज़ करे, और फिर अपने मन और सुरत को समेट कर जिस क़दर बन सके स्वरूप या शब्द या दोनों में लगा देवे, तो उसको थोड़ी बहुत शान्ती या सबर या ताक़त बरदाश्त की ज़रूर हासिल होगी ॥

२६—उत्तम दरजे की भक्ती का क़ायदा यह है कि भक्त यानी प्रेमी सतसंगी की किसी क़िसम की अपनी चाह या किसी चीज़ में गहरा बन्धन न रहे। और अपने भगवन्त यानी कुल्ल मालिक को सर्ब समरत्थ

और अन्तरजामी और अपना सच्चा हितकारी और हर वक़्त का मददगार समझ कर निःचिन्त रहे, और अपने मालिक के चरनों के प्रेम में हर वक़्त मगन रहे, और जब तब चरन रस लेता रहे। लेकिन यह हालत हर एक की एकदम नहीं हो सक्ती आहिस्ता २ सतसंग और अभ्यास और भक्ती करके दुनियाँ के ख़्याल और चाहें और बंधन और चिन्ता कम और हलके होते जावेंगे, और उसी क़दर राधास्वामी दयाल की सरन पक्की होती जावेगी, और उनकी दया का भरोसा मज़बूत होता जावेगा, सो जब तक कि हालत पूरन प्रेम की हासिल होवे, तब तक जब २ अभ्यासी भक्त के मन में जो चाह ज़रूरी सामान की उठे, या कोई तकलीफ़ या चिन्ता सतावे, उस वक़्त जो वह अपना हाल चरनों में अर्ज़ करे, या कोई माँग माँगे तो कुछ मुज़ायका नहीं है, राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से कच्चे लेकिन सच्चे भक्त की सम्हाल जिस क़दर मुनासिब है आप फ़रमावेंगे, और जब २ मुनासिब समझेंगे, उसकी अर्ज़ और माँग भी मंज़ूर करेंगे, और जो मंज़ूर करना मुनासिब नहीं होगा, तो (जो मुनासिब होगा) उसकी वजह यानी मसलहत भी उसको जतावेंगे, जिससे उसको ताक़त बरदाश्त की हासिल

होवेगी, और किसी वक्त और हालत में अधीर और बे ख़बर नहीं होगा, पर शर्त यह है कि जब से वह राधास्वामी दयाल की सरन में आया, कोई नाक़िस यानी पाप कर्म जान बूझ कर न करे, और अपना व्यौहार और बर्ताव उनके हुकम के मुवाफ़िक़ जहाँ तक बन सके दुरुस्त करे ॥

२७—और मालूम होवे कि बहुत सी तकलीफ़ों और बलाओं को, जो कि अभ्यासी सतसंगी के पिछले करमों के असर से आयद होती हैं, बाला २ अपनी मेहर और दया से टाल देते हैं, या सूली का काँटा कर देते हैं, जिन की उसको ख़बर भी नहीं होती, और बहुत से कर्मों को सहज में बाहर या अन्तर अभ्यास में भुगतवा देते हैं, कि जिनको बहुत थोड़ी झड़प इस को मालूम होती है, और उन कर्मों के पूरे असर की ख़बर भी नहीं होती, इस सबब से हरदम सतसंगी अभ्यासी को उनकी दया का शुकराना वाजिब है। इसी तरह सिर्फ़ सतसंगी अभ्यासी के नहीं, बल्कि उसके प्यारों और नज़दीक के रिश्तेदारों के भी करम बहुत रियायत के साथ काटे जाते हैं, कि जिससे उनको और सतसंगी अभ्यासी को बहुत कम तकलीफ़ व्यापती है, और बहुत रफ़ाइयत यानी बचाव और

सम्हाल उन करमों के भुगताने में राधास्वामी दयाल अपनी दया से फ़रमाते हैं ऐसी दया का हाल हर एक सतसंगी को मालूम भी नहीं होता यानी जताया नहीं जाता है, लेकिन जो कोई अपने रोज़मर्रह के हाल, और मन और इन्द्रियों की चाल और दया की सम्हाल की निरख परख करते रहते हैं, उनको थोड़ा बहुत हाल दया और रक्षा का मालूम होता रहता है, और वे ही तहेदिल से शुकराना बजा लाते हैं॥

२८—प्रेमी सतसंगी को मुनासिब और लाज़िम है, कि जो वह भजन की तरक्क़ी और रस चाहे, तो अपना संसारी व्यौहार और परमार्थी बर्ताव, दोनों को मुवाफ़िक़ हुक्म के जिस क़दर बन सके दुरुस्त करे, और इस बात की होशियारी रक्खे कि जहाँ तक मुमकिन होवे उस के हाथ से अपने मतलब के लिये किसी को दुख और तकलीफ़ न पहुंचे, और आम तौर पर प्रीत और दया भाव का बर्ताव सब के साथ रहे, जो लोग कि राज दरबार में नौकरी करते हैं, और वहाँ उनको लोगों को दंड और सज़ा देना पड़ता है, या किसी के साथ नरमी और किसी के साथ सख़्ती से बर्ताव करना पड़ता है, तो मुवाफ़िक़ क़ानून के अमल दरामद करने में कुछ मुज़ायक़ा नहीं है, लेकिन जो मुना-

सिब तौर पर थोड़ा दया का अंग उस बर्ताव में संग रहे तो बेहतर है ॥

२९—इसी तरह परमार्थ के बर्ताव में मुख्यता मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत की है, वग़ैर इसके न तो सरन दुरुस्त हो सक्ती है और न अभ्यास थोड़े बहुत प्रेम के साथ बन सक्ता है, इस वास्ते हर एक काम में राधास्वामी दयाल की दया और मौज का आसरा रखना मुनासिब और ज़रूर है, और फ़ज़ूल तरंगों संसारी भोग और बिलास और नामवरी वग़ैरह से जहाँ तक बन सके अपना बचाव रखना लाज़िम है, कि जिससे अपने हिरदे में मलीनता न बढ़े और भजन में बिघन वाक़े न होवें ॥

३०—जो इन दो शब्दों का पाठ रोज़ मर्रह थोड़ी होशियारी के साथ एक दफ़े नेम से कर लिया जावे, तो यक़ीन होता है कि राधास्वामी दयाल की दया से ग़फ़लत और भूल कम होवेगी, और बहुत से कामों में अहतियात बन आवेगी, और जो कोई क़सर का काम इत्तिफ़ाक़ से या अनजाने बन पड़ेगा तो उसकी ख़बर जल्द हो जावेगी, और पछताने और प्रार्थना करने से उसका नाक़िस असर जल्द दूर हो जावेगा, और आइन्दा को होशियारी बढ़ती जावेगी, और इन

शब्दों में जहाँ लफ़्ज़ गुरू का आया है, उससे मतलब सिर्फ़ देहधारी गुरू से नहीं, बल्कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से है, यानी गुरू लफ़्ज़ से मतलब कुल्ल मालिक और नरस्वरूप गुरू से है, और वह दोनों शब्द यह हैं ॥

शब्द १

चेतो मेरे प्यारे तेरे भले की कहूँ ॥ १ ॥
गुरु तो पूरा ढूँढ तेरे भले की कहूँ ॥ २ ॥
शब्द रता गुरु देख तेरे भले की कहूँ ॥ ३ ॥
तिस गुरु सेवा धार तेरे भले की कहूँ ॥ ४ ॥
गुरु चरनामृत पी तेरे भले की कहूँ ॥ ५ ॥
गुरु परशादी खाव तेरे भले की कहूँ ॥ ६ ॥
गुरु आरत कर ले तेरे भले की कहूँ ॥ ७ ॥
तन मन भेंट चढ़ाव तेरे भले की कहूँ ॥ ८ ॥
वचन गुरू के मान तेरे भले की कहूँ ॥ ९ ॥
गुरु को कर परशन्न तेरे भले की कहूँ ॥ १० ॥
नित्त भजन कर नेम तेरे भले की कहूँ ॥ ११ ॥
जीव दया तू पाल तेरे भले की कहूँ ॥ १२ ॥
दुक्ख न दे तू काय तेरे भले की कहूँ ॥ १३ ॥
वचन तान मत मार तेरे भले की कहूँ ॥ १४ ॥
कड़ुवा तू मत बोल तेरे भले की कहूँ ॥ १५ ॥

सब को सुख पहुंचाव तेरे भले की कहूँ ॥ १६ ॥
नाम अमी रस पीव तेरे भले की कहूँ ॥ १७ ॥
सील क्षमा चित राख तेरे भले की कहूँ ॥ १८ ॥
संतोष बिवेक बिचार तेरे भले की कहूँ ॥ १९ ॥
काम क्रोध को त्याग तेरे भले की कहूँ ॥ २० ॥
लोभ मोह को टार तेरे भले की कहूँ ॥ २१ ॥
दीन ग़रीबी धार तेरे भले की कहूँ ॥ २२ ॥
संतों से कर प्रीत तेरे भले की कहूँ ॥ २३ ॥
भोजन बहुत न खाव तेरे भले की कहूँ ॥ २४ ॥
सतसंग में तू जाग तेरे भले की कहूँ ॥ २५ ॥
मान बड़ाई छोड़ तेरे भले की कहूँ ॥ २६ ॥
भोग बासना जार तेरे भले की कहूँ ॥ २७ ॥
सम दम हिरदे धार तेरे भले की कहूँ ॥ २८ ॥
बैराग भक्ति ना छोड़ तेरे भले की कहूँ ॥ २९ ॥
गुरु स्वरूप धर ध्यान तेरे भले की कहूँ ॥ ३० ॥
गुरु ही का जप नाम तेरे भले की कहूँ ॥ ३१ ॥
गुरु अस्तुत कर नित्त तेरे भले की कहूँ ॥ ३२ ॥
गुरु से प्रेम बढ़ाव तेरे भले की कहूँ ॥ ३३ ॥
तीरथ मूरत भर्म तेरे भले की कहूँ ॥ ३४ ॥
ज़ात अभिमान बिसार तेरे भले की कहूँ ॥ ३५ ॥
पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूँ ॥ ३६ ॥

वक्त गुरू को मान तेरे भले की कहूँ ॥ ३७ ॥
तीरथ गुरु के चरन तेरे भले की कहूँ ॥ ३८ ॥
गुरु की सेवा बर्त तेरे भले की कहूँ ॥ ३९ ॥
विद्या गुरु उपदेश तेरे भले की कहूँ ॥ ४० ॥
और विद्या पाषंड तेरे भले की कहूँ ॥ ४१ ॥
लीक पुरानी छोड़ तेरे भले की कहूँ ॥ ४२ ॥
जो गुरु कहैं सो मान तेरे भले की कहूँ ॥ ४३ ॥
मारग ज्ञान न धार तेरे भले की कहूँ ॥ ४४ ॥
भक्ती पंथ सम्हार तेरे भले की कहूँ ॥ ४५ ॥
सुरत शब्द मत ले तेरे भले की कहूँ ॥ ४६ ॥
सुरत चढ़ा नभ माहिं तेरे भले की कहूँ ॥ ४७ ॥
गगन त्रिकुटी जाव तेरे भले की कहूँ ॥ ४८ ॥
दसवें द्वार समाव तेरे भले की कहूँ ॥ ४९ ॥
भँवर गुफा चढ़ आव तेरे भले की कहूँ ॥ ५० ॥
सत्त लोक धस जाव तेरे भले की कहूँ ॥ ५१ ॥
अलख अगम को पाव तेरे भले की कहूँ ॥ ५२ ॥
राधास्वामी नाम धियाव तेरे भले की कहूँ ॥ ५३ ॥
भटक अटक सब तोड़ तेरे भले की कहूँ ॥ ५४ ॥
टेक पक्ष गुरु बाँध तेरे भले की कहूँ ॥ ५५ ॥

शब्द २

गुरू की मौज रहो तुम धार ॥
गुरू की रज़ा सम्हालो यार ॥ १ ॥
गुरू जो करें सो हित कर जान ॥
गुरू जो कहें सो चित धर मान ॥ २ ॥
शुकर की करना समझ बिचार ॥
सुक्ख दुख देंगे हिकमत धार ॥ ३ ॥
ताड़ और मार करें सोई प्यार ॥
भोग सब इन्द्री रोग निहार ॥ ४ ॥
कहूँ क्या दम् दम् शुकर गुज़ार ॥
बिना उन और न करने हार ॥ ५ ॥
दुखी चित से न हो दुख लार ॥
सुखी होना नहीं सुख जार ॥ ६ ॥
बिसारो मत उन्हें हरबार ॥
दुक्ख और सुक्ख रहो उन धार ॥ ७ ॥
गुरू और शब्द यह दोउ मीत ॥
नहीं कोइ और इन घर चीत ॥ ८ ॥
यही सतपुर्ष यही करतार ॥
लगावें तोहि इक दिन पार ॥ ९ ॥
बिना उन कोई नहीं संसार ॥
देव मन सूरत उन पर वार ॥ १० ॥

करैं वह निस्त तेरी सार ॥
तेरे तन मन के हैं रखवार ॥ ११ ॥
शुकर कर राख हिरदे धार ॥
मिटावैं दुक्ख सब ही झाड़ ॥ १२ ॥
करैं क्या मन तेरा नाकार ॥
नहीं तू छोड़ता बिष धार ॥ १३ ॥
भोग में गिरे बारम्बार ॥
न माने कहन उनकी सार ॥ १४ ॥
इसी से मिले तुझ को दंड ॥
नहीं तू मानता मति मन्द ॥ १५ ॥
सहो अब पड़े जैसी आय ॥
करो फ़र्याद गुरु से जाय ॥ १६ ॥
पकड़ फिर उनहीं को तू धाय ॥
करैंगे वोही तेरी सहाय ॥ १७ ॥
बिना उन और नहीं दरबार ॥
रहो उन चरन में हुशियार ॥ १८ ॥
गुनह तुम किये दिन और रात ॥
गुरू की कुछ न मानी बात ॥ १९ ॥
इसी से भोगते दुख घात ॥
बचावैंगे वोही फिर तात ॥ २० ॥

रहो राधास्वामी के तुम साथ ॥
लगे फिर शब्द अगम तुम हाथ ॥ २१ ॥

बचन ४

शब्द की महिमाँ और हर जगह रचना में उसकी काररवाई का बर्णन, और यह कि उसी के वसीले से जीव का सच्चा और पूरा उद्धार संत सतगुरु की दया से मुमकिन है, और किसी तरह से धुरपद में पहुंचना और जनम मरन से सच्चा छुटकारा मुमकिन नहीं है ॥

१—इस दुनियाँ में जो नज़र ग़ौर से देखा जाता है, तो मालूम होता है कि कुल्ल कारखाई सुरत चेतन्य की है, जो एक २ पिंड में बैठ कर उस पिंड की सम्हाल और भी दुनियाँ का कारज और व्यौहार कर रही है ॥

२—हरचंद जीवों की चाह और प्रीत अनेक क़िसम के जड़ पदार्थों में, जैसे खाने पीने पहिरने ओढ़ने और और आरायश (सजावट) और नुमायश (दिखावट) के सामान वग़ैरह में है, लेकिन मुख्यता सब की चेतन्य स्वरूपों में है, यानी सुरत चेन्य से सब कोई प्रीत करते हैं, और इनमें से बिशेष चेतन्य यानी मनुष्यस्वरूप में अधिक भाव और प्यार किया जाता है, यानी उसी का अदब और हुकम बरदारी

और उसी से अपनी बहुत सी काररवाई में मदद की आसा रखते हैं, और उसी को सब से बड़ा [जैसे बादशाह और महाराजा वग़ैरः] समझ कर उसकी निहायत दरजे की तावेदारी करते हैं, और इसी मनुष्य स्वरूप में [जैसे इस्त्री और पुत्र और दोस्त] निहायत दरजे की मुहब्बत करते हैं ॥

३—जड़ पदार्थों में और सिवाय मनुष्य शरीर के और जानदारों में प्रीत कारज मात्र होती है, यानी जो काम उनसे निकलता है या उनसे लेना है या उनके वसीले से बनता है, उसी मुवाफ़िक़ उन पदार्थों और जानदारों की ख़ातिरदारी और सम्हाल और रक्षा की जाती है, लेकिन मनुष्य स्वरूप में प्रीत भी जैसा २ मौक़ा है गहरी की जाती है और मन में उसका भय और भाव भी ज़ियादा रहता है, और जहाँ कोई अपने से बड़ा या बहुतेरों से बड़ा शुमार किया जाता है, उसकी हुकुम बरदारी और रज़ामन्दी का ख़्याल बहुत भारी दिल में रहता है ॥

४—अब ख़्याल करो जो आम जानदार हैं और मनुष्य स्वरूप चेतन्य का निज रूप कहा है, जो ग़ौर किया जाय तो मालूम होगा, कि इन सब का निज रूप शब्द स्वरूप है, यानी शब्द उस चेतन्य सुरत का

जो इन सब में मौजूद है, सिर्फ़ ज़हूराही नहीं बल्कि निशान और सबूत सुरत चेतन्य की मौजूदगी का है, तो इससे साबित हुआ कि सुरत चेतन्य जो जौहर है, और कुल्ल पिंड का जिस में वह आन कर बैठी है, मुतहर्रिक यानी प्रेरक है, उसका ज़ाहरी रूप शब्द है, और सब कोई शब्द को ही मान रहे हैं, और शब्द ही की सेवा और ख़ातिरदारी और हुकुम बरदारी कर रहे हैं, और शब्द ही के साथ प्रीत और शब्द ही का भय और भाव कर रहे हैं, और शब्द ही के वसीले से आराम और तकलीफ़ पाते हैं, और शब्द ही के संजोग और बियोग में सुखी दुखी होते हैं॥

५—खुलासा यह कि इस रचना में कुल्ल काररवाई शब्द की है, यानी जितने काम कि हो रहे हैं या जारी किये जाते हैं, सब शब्द के वसीले से होते हैं, और शब्द ही उन सब का करता है, यानी जितने इल्म और हुनर और कारीगरी और सब तरह का सामान और असबाब और कलें वग़ैर: जो दुनिया में मौजूद हैं, सब शब्द स्वरूपी सुरत चेतन्य के बनाये हुये और पैदा किये हुये हैं, और ज़ाहरी सम्हाल और इन्तज़ाम इस दुनियाँ का शब्द स्वरूपी चेतन्य सुरतें कर रहीं हैं, और असल में उसी शब्द स्वरूप को सब मान रहे हैं, और आप भी सब जानदार शब्द स्वरूप हैं॥

६—अब समझना चाहिये कि जैसे इस लोक की रचना में शब्द की ही मुख्यता है, और कुल्ल काररवाई उसी के आसरे चल रही है, ऐसे ही ऊँचे लोकों में बल्कि कुल्ल रचना में भी शब्द स्वरूपी चेतन्य के वसीले से कुल्ल काररवाई हो रही है, और जहाँ जिस का मेला होता है या हो रहा है, शब्द स्वरूप के ही वसीले से होता है, और कुल्ल चेतन्य रचना शब्द स्वरूप है, और सर्ब शक्ती और ज्ञान और समरत्थता, उसी शब्द स्वरूप में धरी हुई है, और शब्द ही कुल्ल रचना का जौहर और करतार और रक्षक है॥

७—जोकि हर एक लोक और कुल्ल रचना में शब्द स्वरूपी सुरत चेतन्य ही की काररवाई है, और यह मुवाफ़िक़ रूपों यानी पिंडों के बे शुमार हैं, तो जो कि इन सब का भंडार है, यानी जहाँ से कि सब आई हैं, वह सर्ब समरत्थ और सर्ब ज्ञानी और सर्ब करता और सर्ब रक्षक हुआ, उसको संत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल कहते हैं, और जो कि सर्ब सुख और आनंद और रस सुरत चेतन्य की धार के वसीले से हासिल होते हैं, तो वही कुल्ल मालिक सर्ब सुख और सर्ब आनंद और सर्ब रसों का भंडार हुआ, और सब सुरतें जहाँ २ जैसे २ पिंड में बैठ कर काररवाई

कर रही हैं, वे उस कुल्ल मालिक की जिसको महा सिंध और महा सूरज कहना चाहिये बूँदें और किरनें हैं, इस वास्ते उनका ज्ञान और शक्ती और समरत्थता और आनन्द भी अल्पज्ञ यानी थोड़ा है, और वह कुल्ल मालिक इन सब बातों का अथाह और अपार ख़ज़ाना और भंडार है ॥

८—अब जो कोई सुरत चेतन्य इस हक़ीक़त को समझ कर चाहे कि परम आनंद और पूरन सुख और परम ज्ञान को प्राप्त होवे, और रूप यानी पिंड की तकलीफ़ों और उसके वक़्न फ़वक़्न भाव और अभाव, यानी जनम मरन के दुख सुख से बच जावे, तो उसको चाहिये कि चेतन्य धार को जोकि शब्द की डोरी है पकड़ कर अपने भंडार यानी कुल्ल मालिक के चरनों की तरफ़ चलना शुरू करे, तो आहिस्ता २ एक दिन धुरपद में पहुंच कर अपना काम पूरा बना-लेगी, और इस शब्द की डोरी को पकड़ कर चलने की जुगत, संत सतगुरु से जो धुरधाम के भेदी हैं, और आप रास्ता तैं करके यानी शब्द की धार पर सवार होकर वहाँ पहुंचते हैं, या साध गुरू से जिन्हों ने संत सतगुरु से मिल कर और भेद और जुगत चलने की उनसे लेकर कुछ रास्ता तै किया है, और

आगे चल रहे हैं, और पहुंचनहार हैं हासिल होगी ॥

९—उस कुल्ल मालिक को अरूप और अपार और अनन्त कहते हैं, और उससे जो शब्द की धार आदि में प्रघट हुई, उसी ने नीचे उतर कर किसी अस्थान पर रंग रूप और रेखा धारन की, और फिर वहाँ से नीचे रूपवान रचना होती चली आई, और ज़्यादा नीचे उतर कर रूपों में बिचित्रता यानी अनेक क़िसमें इस क़दर हो गईं, कि जिनका बख़ूबी शुमार नहीं हो सक्ता, अब जो कोई कि रूप धारी है और इस तरफ़ से निज धाम को चलना और वहाँ पहुंचना चाहे, तो दरजे ब दरजे रूपों के आसरे आसानी से शब्द की धार पर सवार होकर रास्ता तै कर सक्ता है, और इस रूप से मतलब उस स्वरूप से है, कि जो हर एक दरजे या मंडल में उस मंडल और नीचे की रचना का धनी और मालिक है, इस तरह एक मंडल से दूसरे मंडल में चढ़ाई यानी पहुंचना मुमकिन है और जब आख़िरी स्वरूप के मंडल में पहुंच जावेगा, तब वही स्वरूप अरूप पद को लखावेगा और उसमें पहुंचावेगा ॥

१०—जो कि अरूप पद अथाह और अपार है, और वह ऊँचे से ऊँचे या गहरे से गहरे देश में बिराजमान है, और उसके नीचे या बाहर की तरफ़ किसी

अस्थान स रूपवान रचना शुरू होकर दूर तक बढ़ती और फैलती चली गई है, और वह अरूप चेतन्य स्वरूपों में गुप्त होकर सब जगह मौजद है, और शब्द स्वरूप से सब जगह प्रघट हो रहा है, इस वास्ते जो कोई नीचे या दूर की रचना से इरादा पहुंचने अरूप पद का करे, तो जब तक वह शब्द को पकड़ कर जितने परदे या स्वरूप जो बीच मैं हायल हैं, उनसे मिल कर रास्ता तै करता हुआ न चलेगा, तब तक उस कुल्ल मालिक से जो अरूप और अपार और अनन्त है नहीं मिल सक्ता, और न उस पद मैं और किसी तरह से पहुंच सक्ता है ॥

११—जिन लोगों ने कि कुल्ल मालिक के अरूप और स्वरूप की महिमा सुन कर और स्वरूप का हद्दार और एक देशी होना समझ कर उसका निरादर किया, और अरूप मैं ही एक दम पहुंचने का इरादा करके किसी क़िसम का जतन शुरू किया, तो उन्हों ने धोखा खाया, और जिस देश मैं कि वे रूप धर कर पैदा हुये, उसी मंडल के स्वरूप के पीछे जो अरूप है, उस मैं समाये, और वह अरूप माया के गिलाफ़ से ढका हुआ है, यानी उसी मैं से सब रचना का मसाला जो उस मंडल मैं हो रही है निकलता है, इस वास्ते जो

सुरतें कि इस स्वरूप में समाईं, वे देर या अवेर फिर देह धर कर प्रघट यानी पैदा होती हैं, इसी तरह जहाँ तक कि रूपवान रचना है, वहाँ के स्वरूप और स्वरूप में थोड़ी बहुत माया, चाहे लतीफ़ है या कसीफ़ खोल या ग़िलाफ़ होकर मिली है, और निर्मल अरूप सिर्फ़ निरमाया देश में प्रघट है, और बाक़ी सब जगह जैसा कि ऊपर कहा गया, थोड़ी या बहुत लतीफ़ माया से ढका हुआ है॥

१२–खुलासा यह कि जब तक कोई एक मंडल के स्वरूप से दूसरे मंडल के स्वरूप तक और इसी तरह से सब मंडलों को जहाँ स्वरूप मौजूद है, तै करके यानी कुल्ल माया के घेर के पार न पहुंचेगा, तब तक सच्चे स्वरूप का दर्शन नहीं पावेगा, इस वास्ते जिन्हों-ने अरूप को सर्व व्यापक मान कर जिस मंडल में कि वह पैदा हुये, वहीं के रूप का अभाव करके अरूप में समाये, तो वह उस परदे में रहे जहाँ से रचना उस मंडल की जारी है, और इस सबब से जनम मरन से उनका छुटकारा नहीं हुआ, और इस वास्ते उनका सच्चा उद्धार भी नहीं हुआ। जितने ज्ञानी और सूफ़ी और वेदान्ती और फ़ैलसूफ़ हुये या अब मौजूद हैं, उन सब का यही हाल समझना चाहिये, और उनका

यही मत है कि जहाँ वे हैं वहीं के नाम रूप को मायक और मिथ्या समझ कर और उसकी तरफ़ से चित्त को हटा कर, वहीं के अरूप में जोड़ते हैं और उसी को सिद्ध करते हैं, और उसी को आत्मा यानी अपना स्वरूप कहते हैं, और परमात्मा यानी कुल्ल मालिक से उसकी एकता करते हैं ॥

१३–यह बात अब ज़्यादा खोल कर कही जाती है, कि असली अरूप पद से जो आदि धार आई वही सब रचना की करता है, और उसी से अरूपी और स्वरूपी पद और सूक्ष्म और अस्थूल रूपवान रचना दरजे बदरजे उतार होकर पैदा हुई, और हरचंद वह असली अरूपी चेतन्य सब जगह मौजूद है, पर सिवाय निज धाम के और सब जगह दरजे बदरजे गिलाफ़ों से ढका हुआ है, सो जब तक कि कोई नीचे के दरजे से अभ्यास करके, निज मुक़ाम तक नहीं पहुंचेगा, तब तक उसको निज स्वरूप यानी असली अरूप चेतन्य स्वरूप का दर्शन किसी जगह नहीं हो सक्ता, इस सबब से जिन्हौंने कि प्रथम ही नाम और रूप का निरादर करके अरूप की तरफ़ लगना चाहा उन्हौंने बहुत धोखा खाया, कि जहाँ वे थे वहीं के गिलाफ़ी अरूप में समाये, और जनम मरन के चक्कर

से उनका बचाव नहीं हुआ, यानी उन का सच्चा उद्धार नहीं हुआ, क्योंकि जिस सिलसिले से ऊपर से नीचे तक रचना होती चली आई उसी सिलसिले से उलटना यानी चढ़ाई मुमकिन है, और तरह से काम दुरुस्त और पूरा नहीं बन सक्ता ॥

१४—देखो इस लोक की ही रचना में सब में उत्तम स्वरूप मनुष्य का है, और इससे नीचे की रचना में इसी के स्वरूप का ख़ाकह यानी आकार कमी बेशी यानी कुछ २ फ़र्क़ के साथ पशू और पखेरू और कीड़े मकोड़े वग़ैरः में चला गया है, अब दरियाफ़्त करना चाहिये कि यह मनुष्य के आकार का उतार किस स्थान से हुआ है, यानी आदि स्वरूप कहाँ है, और कितने दरजे बीच में हैं, सो जब तक यह दरजे तै करके कोई आदि स्वरूप के अस्थान तक न पहुंचेगा, तब तक असली अरूप पद में उसका पहुंचना मुमकिन नहीं है ॥

१५—खुलासा यह कि जो कोई रूपवान रचना के मंडल में है वह जब तक कि कुल रचना के मंडल जो उस के ऊपर यानी सूक्षम से सूक्षम हैं तै न करेगा, तब तक उस पद में जहाँ से कि प्रथम रूप प्रघट हुआ नहीं पहुंच सक्ता, इस वास्ते हर एक शख़्स को चाहिये जो नाम और रूप के मुक़ाम से हट कर अनाम और

अरूप से मिलना चाहे तो भेद रास्ता और मंज़िलों का और जुगत चलने की भेदी से दरियाफ़्त करके चलना और चढ़ना शुरू करे, तो एक दिन निज घर में पहुंच जावेगा, और जो कहते हैं कि असली स्वरूप चैतन्य हर जगह मौजूद है, और जो परदे कि बीच में उसके और इस शख़्स के अस्थान यानी बैठक के हायल हैं, उनसे बे ख़बर हैं, और न जुगत उनके फोड़ने यानी तै करने की जानते हैं, और चलने चढ़ने को भरम मानते हैं, वह भारी भूल और मूर्खता में पड़े हुये हैं उनका छुटकारा यानी सच्चा उद्धार कभी नहीं होवेगा॥

१६—मालूम होवे कि ऊँचे से नीचे देश तक जो कुछ कि लतीफ़ और कसीफ़ यानी सूक्ष्म और स्थूल रचना हुई, वह जगह २ असली मौजूद है, इसमें कुछ शक नहीं कि जो रचना माया के घेर में है वह हमेशा बदलती रहती है और नाशमान है, लेकिन जब तक कि उस रचना का सिलसिला क़ायम है, जो जीव कि उस रचना में पैदा हुये हैं, वे वहाँ के भोगों और पदार्थों में और तन मन और इन्द्रियों के संग हमेशा बँधे रहेंगे, और जनम मरन के चक्कर में दुख भोगते रहेंगे, जब तक कि उस माया की रचना के घेर से बाहर न जावेंगे॥

१७—जो कोई कहे कि हमने सब भेद रचना का समझ लिया, और माया और उसके भोग और पदार्थ और भी उस रचना को जो उसके घेर मैं हुई है मिथ्या जान कर अपना निज रूप असली अरूपी चेतन्य समझ लिया, तो ऐसे जानने और समझने से माया के घेर से पार होना मुमकिन नहीं है, यह समझ बूझ लेकर उसको मुनासिब है, कि जैसे निर्मल सुरत चेतन्य की धार माया के घेर मैं उतर कर और गिलाफ़ौं के अंदर बैठ कर, मन और इन्द्रियौं के वसीले से इस लोक मैं काररवाई कर रही है, उसको उसी तरह अभ्यास करके हर एक परदे को फोड़ कर उलटावे, और माया के मंडल के पार पहुंचावे, क्यौंकि बिना भेद और अभ्यास के यह परदे फूट नहीं सक्के, और न सुरत अपने निज घर की तरफ़ उलट सक्ती है ॥

१८—और जिन लोगौं ने स्वरूप की महिमाँ समझ कर उसकी उपाशना की ज़रूरत, वास्ते पहुंचने असली अरूप पद के क़रार दी, लेकिन बजाय दरियाफ़्त करने भेद असली स्वरूप या स्वरूपौं के, जो रास्ते मैं हर एक मंडल मैं वाक़े हैं, किसी एक या दो अस्थान के स्वरूप की या उस पद के औतारौं के स्वरूप की

नक़ल पत्थर या धात की बना कर, उसी की पूजा में अटक रहे, और असली स्वरूप का भेद और उसके अस्थान और उस में पहुंचने की जुगत का खोज करके जतन न किया, वह भी जहाँ के तहाँ रहे और एक क़दम भी रास्ता तै न किया, इस सबब से उन का भी उद्धार नहीं हुआ ॥

१९—इसी तरह कुल्ल जीव भूल और भरम और ग़लती में पड़ गये, और रास्ता सच्चे उद्धार का बन्द हो गया, और बाज़े जीव तन और मन या और २ अस्थूल अंगों की सफ़ाई के जतन में, जो कि सिर्फ़ संजम थे, और निज घर का रास्ता तै करने की जुगत उनमें नहीं थी, लग गये, और हरचंद कि उन्होंने तकलीफ़ और कष्ट बहुत उठाई पर जीव के सच्चे उद्धार की करनी उनसे कुछ न बनी, बल्कि और उलटे अहंकारी और रोज़गारी हो गये ॥

२०—ऐसी हालत जगत की देख कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल जीवों पर अति दया करके संत सतगुरु रूप धार कर प्रघट हुये, और कुल्ल भेद रास्ते का और हर एक अस्थान के स्वरूप का और तरीक़ा चलने का निहायत सहज करके जो कि लड़का जवान बूढ़ा और औरत और मर्द आसानी से कमा सकते हैं,

आम तौर पर समझाया, और सच्चे उद्धार का रास्ता जारी किया, अब जो कोई उसके मुवाफ़िक़ काररवाई करे, वह हर एक मंडल के स्वरूपी और अरूपी मालिक का दर्शन करता हुआ, धुर अरूप पद में पहुंच कर, पूरन और अमर आनंद को प्राप्त हो सक्ता है, और जनम मरन की फाँसी सहज में काट कर, अपना सच्चा उद्धार हासिल कर सक्ता है ॥

२१–इस काररवाई के अंजाम देने के लिये, सिर्फ़ संत सतगुरु या साध गुरू का मिलना और उनसे उपदेश लेकर, राधास्वामी दयाल की दया और मेहर के बल से प्रेम अङ्ग लेकर अभ्यास करना दरकार है, फिर आहिस्ता २ अपने मन और सुरत की चढ़ाई ऊँचे देशों में और अपना सच्चा निरवाह होता हुआ, अभ्यासी जीव आप देख सकता है, और आहिस्ता २ कारखाई करके आसानी के साथ एक दिन धुर पद में पहुंच सक्ता है ॥

२२–इस क़दर बयान करना इस जगह ज़रूर है, कि संतों ने कुल्ल रचना के तीन दरजे मुक़र्रर किये,। अव्वल दरजा निर्मल चेतन्य यानी दयाल देश जहाँ माया बिल्कुल नहीं है, और जहाँ कुल्ल रचना रूहानी यानी सुरत चेतन्य की है। दूसरा निर्मल चेतन्य और शुद्ध

माया देश, जहाँ माया प्रघट हुई, और जहाँ ब्रह्माण्डी रचना यानी ब्रह्मसृष्टी है, तीसरा दरजा जहाँ निर्मल चेतन्य और मलीन माया है, और जहाँ देवता और मनुष्य और चार खान की अस्थूल रचना है। जो रूपवान रचना दूसरे या तीसरे दरजे में है, उसका अबेर सबेर अभाव यानी नाश होगा, और इस वास्ते वह दरजा क़ाबिल ठहरने अभ्यासी जीव के जो सच्चा उद्धार चाहता है नहीं है, क्योंकि वहाँ ठहरने में चाहे वह ठहराव स्वरूप के आसरे होय, या अरूप में मिलकर होवे, हमेशा क़ायम नहीं रह सक्ता, यानी कुछ अर्से बाद फिर उत्थान होकर जनम लेना पड़ेगा, और देह धारन करनी पड़ेगी, और उसके साथ दुख सुख जो लाज़मी हैं सहने पड़ेंगे, इस वास्ते राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है, और कुल्ल संतों का भी यही मत है, कि जब तक सुरत यानी जीव निर्मल चेतन्य देश सत्तपुर्ष राधास्वामी पद में न पहुंचेगी, तब तक पूरा उद्धार नहीं होगा, यानी जनम मरन नहीं छूटेगा॥

२३—इस वास्ते प्रेमी सतसंगी को मुनासिब है, कि मुआफ़िक़ हुक्म कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के भक्ती अंग लेकर हर एक अस्थान के स्वरूप की (जो दूसरे दरजे में वाक़ै हैं) उपासना यानी ध्यान

करता हुआ, शब्द की धार यानी डोरी को पकड़ कर चलना शुरू करे, तब दयाल देश में पहुंचना मुमकिन है, और पहिले ही से अरूप और अशब्दी स्वरूप मालिक से मिलने का इरादा करके, और उसको हर जगह मौजूद यानी सर्व व्यापक मान कर कुछ अभ्यास करेगा, या सिर्फ़ समझौती लेकर अपने तईं पहुंचा हुआ ख़्याल करेगा (जैसे कि विद्यावान और बाचक ज्ञानी करते हैं), तो वह जहाँ का तहाँ यानी माया के पेट में जहाँ कि हरदम रचना होती है और बिग-ड़ती है पड़ा रहेगा, और जनम मरन के बंधन में गिर-फ़्तार रहेगा, यानी उसका सच्चा उद्धार हरगिज़ नहीं होवेगा ॥

२४—अव्वल दरजा यानी निर्मल चेतन्य देश में भी चंद अस्थान यानी मंडल हैं, और सिवाय सबसे ऊँचे के पद के जो अनन्त और अपार और अगाध है बाक़ी के मंडलों में रचना है, लेकिन वह रचना हंसों की ऐन रूहानी है, यानी वहाँ माया की मिलौनी और मलीनता जिसमानी नहीं है, इस वास्ते वह रचना अमर और अजर और ऐन आनंद स्वरूप है, और काल कलेश और किसी क़िस्म का कष्ट और दुख वहाँ नहीं है, वहाँ निहायत सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप है,

पर वह असल में दूसरे दरजे के अरूप से भी ज़्यादा सूक्ष्म है, और रूप का लफ़्ज़ उसकी निस्बत कहना सिर्फ़ समझाने के वास्ते यानी कहने मात्र है, सो जब प्रेमी सतसंगी दूसरे दरजे को तै करके आगे बढ़ेगा, तो उसका रूप भी वैसाही सूक्ष्म से सूक्ष्म रूहानी स्वरूप हो जावेगा, और उसी रूहानी स्वरूप से अव्वल दरजे के स्वरूपों से जो असल में नीचे के अरूप से ज़्यादा अरूप हैं, मिलेगा, इस तरह पर राधास्वामी मत में प्रेमाभक्ती दयाल देश यानी अव्वल दरजे तक जारी रहेगी, और उसको भेद भक्ती कहते हैं, यानी स्वामी सेवक का भाव बराबर जारी रहेगा, और जब धुर पद यानी असली अरूप से मिलेगा, तब उसको अभेद भक्ती कहते हैं, और वहाँ पहुँचने पर प्रेमी अभ्यासी को ऐसी ताक़त हासिल हो जावेगी कि जब चाहे जब अरूप पद में मिल कर अभेद हो जावे, और जब चाहे जब उससे न्यारा होकर उसके दर्शन का आनन्द और बिलास करे, ऐसी भारी गत राधास्वामी मत के प्रेमी अभ्यासी को हासिल हो सक्ती है, यह ताक़त और किसी मत के अभ्यासी को नीचे के दरजों में जहाँ कि वे अरूप में लै हो गये, कभी हासिल नहीं हुई, और न जब तक कि वे

राधास्वामी दयाल की जुक्ती लेकर अभ्यास करें, हासिल हो सक्ती है ॥

२५—इस क़दर भारी महिमाँ राधास्वामी मत यानी संत मत की, और उसके उपदेश सुरतशब्द मारग की है, कि जिसको अब तक यानी पिछले वक्तों में किसी ने न जाना और न अब इस वक्त में कोई बग़ैर दया और सतसंग संत सतगुरु या साधगुरु या उनके मेली प्रेमी सतसंगी के जान और समझ सक्ता है—ऐसा आसान मारग आज तक किसी ने प्रघट नहीं किया और हक़ीक़त में किस की ऐसी ताक़त हो सक्ती है, कि सिवाय कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के इस उपदेश को जारी करता, और अब भी बावजूदे कि निहायत दरजे की आसानी इस अभ्यास में रक्खी गई है, और ऊँचे से ऊँचे और गहरे से गहरे पद का भेद और रास्ते के मंजिलों का हाल जो किसी को मालूम नहीं हुआ, खोल कर प्रघट किया गया है, लेकिन बिना दया राधास्वामी दयाल के किसी की ताक़त नहीं कि उस अभ्यास को कर सके, या उस रास्ते पर चल सके। वही जीव बड़भागी हैं कि जिन को रधास्वामी मत का उपदेश और रास्ते का भेद मिल गया है, और राधास्वामी

दयाल की दया का बल लेकर, उस की कमाई में लगे हुये हैं, और दिन २ अपनी हालत बदलती हुई, और माया के घेर से अपना निरवार होता हुआ देखते जाते हैं, और प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते हुये, आहिस्तह २ रास्तह ते करते जाते हैं। वे ही एक दिन धुर पद में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होकर अमर और अजर हो जावेंगे, और अपने सच्चे मालिक और सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के दर्शन का आनंद और बिलास देखकर अपने निज भागों को सरावेंगे।

२६--जो कोई अपनी नर देह जो कि निहायत दुर्लभ और अनेक जनम नीच ऊँच जौनों में धारन करके प्राप्त हुई है सुफल करना चाहे, यानी इसी देह में अपना सच्चा उद्धार होता हुआ देखना चाहे, और धुर पद में जिस का भेद किसी मत में नहीं है पहुंच कर जनम मरन से सच्चा छुटकारा चाहे, उस को चाहिये कि राधास्वामी मत में शामिल होकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास बिरह और प्रेम अंग लेकर शुरू करे, तब चौरासी के चक्कर से उसका सच्चा बचाव हो जावेगा, और एक दिन अपने निज घर में पहुंच कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनंद को प्राप्त होगा।

बचन महात्माओं के ५७

अगर्चेह मन में अनेक तरंगें और गुनावनें उठती रहती हैं और उनका रोकना और समेटना एक बारगी बहुत मुशकिल है मगर बराबर रोज़ मर्रह अभ्यास करने से कोई दिन में मन किसी क़दर सिमट आवेगा, और तरंगें और गुनावनें बे फ़ायदह नहीं उठेंगी, इस वास्ते अभ्यास बिला नाग़ह नेम से हर रोज़ करना चाहिये, अगर फ़ुर्सत नहीं मिले तो ग़ैर ज़रूरी काम मुलतवी करदे, मगर अपना नित्त-का अभ्यास न छोड़े, यानी थोड़ी देर भजन और ध्यान रोजमर्रह ज़रूर करता रहे।

बचन ५८

जो सेवक कि किसी से ईर्षा और बिरोध नहीं रखता और सब से मित्रभाव और नम्रता के संग बर्तता है और किसी शख़्स या चीज़ में उसके मन की पकड़ नहीं है और मन का अहंकार और मान जिसने बिल्कुल छोड़ दिया है, या छोड़ता जाता है, और आराम और मिहनत जिसके नज़दीक बराबर हैं, और क्षमा यानी बरदाश्त और सबर करना जिसकी आदत में दाखिल है, और हमेशह मालिक के चरनों में मिलने की जिसके दिल में अभिलाषा रह-

ती है, और मन को जिसने ज़ेर किया है यानी थोड़ा बहुत क़ाबू में लाया है, और सच्चे मालिक के चरनों में जिसकी प्रतीत दृढ़ और मज़बूत है, और मन और बुद्धी दोनों को मालिक के चरनों पर नेछावर कर दिया है, ऐसा सेवक मालिक का निज प्यारा है॥

बचन ५९

जब तक धुर की दया न होगी पूरे सतगुरु नहीं मिलेंगे। पूरे सतगुरु एक फलदार दरख़्त के मुवाफ़िक़ हैं, कि फल भी देते हैं और साया भी करते हैं। जिस ज़मीन में ऐसा दरख़्त न हो, वह ज़मीन ऊसर है—वहाँ नहीं रहना चाहिये।

बचन ६०

पूरे सतगुरु जो तवज्जह न करें तौ उनकभी संग नहीं छोड़ना चाहिये, जो सतगुरु दूसरे शख़्स से बात करें तौ इसको यही समझना चाहिये कि मुझ से बोल रहे हैं, और उस बचन को अपने हिरदे में लिख ले क्योंकि ऐसे सतगुरु का सतसंग महा दुर्लभ है। अगर यह बराबर उनका सतसंग करता रहेगा तौ एक दिन अजर और अमर देश में बासा पावेगा।

बचन ९१

प्रमार्थ का हासिल होना बग़ैर सतगुरु के मुमकिन नहीं है, पर सेवक भी अधिकारी होना चाहिये, कि उन के बचन को चित्त देकर सुने और निर्मल बुद्धी से समझे और उसके मुआफ़िक़ थोड़ी बहुत करनी करे॥

बचन ९२

मालिक का तख़्त अंतर में है, जो कोई मालिक का अपने अंतर में खोज करैगा, उसे मालिक का दर्शन प्राप्त होगा, और जो कोई बाहर ढूंढ़ता फिरेगा, उसे मालिक हरगिज़ २ नहीं मिलेगा इसकी मिसाल ऐसी है कि बग़ल में लड़का और शहर में ढंढोरा॥

बचन ९३

मन की ख़ासियत है कि जो काम शौक़ से करता है उस का रूप हो जाता है, इस वास्ते चाहिये कि सिवाय मालिक के किसी चीज़ में सच्ची प्रीत न करे॥

बचन ६४

सवाल व जवाब

(१) सवाल—सतगुरु से क्या माँगना चाहिये—

जवाब—भक्ती और प्रेम मालिक के चरनों का ॥

(२) सवाल—सतगुरु के संग क्या फ़र्ज़ है—

जवाब—उनके हुकम में चलना ॥

(३) सवाल—उमर क्योंकर गुज़रानी चाहिये—

जवाब—मालिक की याद में और जहाँ तक मुमकिन होवे सब को राज़ी रखिये—क्योंकि मालिक का बचन है कि जो कोई मेरे जीवों को राज़ी रखता है, मैं उस से राज़ी रहता हूँ ॥

(४) सवाल—आदमी को कौन काम करना बेहतर है

जवाब—परमार्थ का कमाना ॥

(५) सवाल—परमार्थ से क्या फल मिलता है—

जवाब—पशु से आदमी और आदमी से देवता बन जाता है—इससे ज़्यादह और बहुत बड़े दरजे हैं, फिर वह हासिल होते हैं। ग़रज़ कि रफ़्तह २ मालिक के सन्मुख पहुंच कर उस का निज पयारा हो जाता है ॥

(६) सवाल—सच्चे मालिक की क्योंकर पहिचान हो सक्ती है—

जवाब—संतों की सरन लेने और उनकी जुगत के अभ्यास से ॥

(७) सवाल—दुनियाँ किस को कहते हैं—

जवाब—जो अंत में काम न आवै और मालिक की तरफ़ से बेमुख रक्खे ॥

(८) सवाल—मालिक की प्रसन्नता क्योंकर हासिल हो सक्ती है—

जवाब—सतगुरु की प्रसन्नता से ॥

(९) सवाल—सतगुरु की प्रसन्नता कैसे हासिल हो सक्ती है—

जवाब—उनके चरनों में गहरी प्रीति और प्रतीत करने से, और जहाँ तक मुमकिन होवे उन की आज्ञा में बर्तने से, और उनकी सेवा में तन मन धन का सोच बिचार न करे ॥

(१०) सवाल—सब कामों से बेहतर कौन काम है—

जवाब—सतसंग करना और भजन करना और उससे फ़ायदह उठाना ॥

(११) सवाल—सब कामों में बुरा काम कौनसा है—

जवाब—मालिक को भूलना और धन और भोगों की चाह उठाना ॥

(१२) सवाल—सेवक किस को कहते हैं—

जवाब—जो अपने तईं सब से नीच और छोटा जाने ॥

कड़ी

दीन हीन जानो अपने को,

निपट नीच मानो अपने को ।

और मालिक के चरनौँ के प्रेम मैँ लौलीन रहै—

(१३) सवाल—यह सिफ़त क्यौँकर हासिल हो सक्ती है

जवाब—संत सतगुरु और साध के सतसंग और दया से, पर जो कोई सच्चा होकर लगे ॥

(१४) सवाल—जीव मालिक की याद मैँ क्यौँकर लग सक्ता है—

जवाब—मौत की याद रखने और चौरासी के डर से—

(१५) सवाल—मंज़िल पर क्यौँ कर पहुंचना चाहिये—

जवाब—धीरज के साथ अभ्यास करना, तब कोई अर्से मैँ रास्ता तै होगा ॥

(१६) सवाल—गुनाह का इलाज क्या है—

जवाब—क़सूर करने पर झुरना और पछताना और आइंदह को होशियार रहना ॥

(१७) सवाल—ऐसा कौन शख़्स है जो जहाँ जावें उसे सब प्यार करैँ—

जवाब—जो हर एक से दीनता करता है ॥

(१८) सवाल—हिम्मत वाला कौन है—

जवाब—जो संसारी सुक्खों को छोड़ कर परमार्थ की कमाई करता होवे ॥

(१९) सवाल—सच्चा हितकारी कौन है—

जवाब—सतगुरु जो बुराई से तुझ को बचाते हैं और भलाई सिखाते हैं, और सख़्ती और तकलीफ़ में तेरी सहायता और मदद करते हैं ॥

(२०) सवाल—जो कोई सतसंगी बेजा हरकत करें तो उससे क्यों कर बचना चाहिये—

जवाब—उससे कम मिलने और बात चीत न करने से ॥

(२१) सवाल—क्या जतन करूँ कि हकीम का मोहताज कम होऊँ—

जवाब—कम खाओ और कम सोवो और भजन करते रहो ॥

(२२) सवाल—क्या करूँ कि सब मुझको दोस्त रक्खें—

जवाब—झूँठ मत बोलो और वादह ख़िलाफ़ी मत करो और किसी को हाथ और ज़बान से मत सताओ चित में सब से प्यार और दीनता रक्खो ॥

(२३) सवाल—सेवा की कै क़िसमें हैं—

जवाब—सेवा की तीन क़िसमें हैं, अव्वल तन

की सेवा दूसरे धन की सेवा, और तीसरे मन की सेवा ॥

(२४) सवाल—फल सेवा का क्या है—

जवाब—निश्चलता मन की और निर्मलता अंतःकर्ण की और प्राप्ती मेहर और दया सतगुरु की ॥

(२५) सवाल—जवाँमर्द कौन है—

जवाब—जो संसार के बिगड़ने से आज़ुर्दह ख़ातिर और तँगदिल न होवे ॥

बचन ६५

एकान्त मैं बड़ा फ़ायदा है, बशर्ते कि सिवाय मालिक के दूसरे का ख़ियाल दिल मैं न आवे, और जो बाहर से एकान्त हुआ, और दिल मैं दुनियावी ख़ियालात भरे रहे, तो वह शख़्स मन और शैतान के सँग रहेगा है ॥

बचन ६६

पाँच शख़्सौं का संग नहीं करना चाहिये, (१) एक जो झूँठ बोलता है और अहङ्कारी है, (२) दूसरा नादान कि जो तुम्हारे फ़ायदह के वक़्त तुम्हारा नुक़सान करा देवे (३) तीसरा सूम कि मुनासिब वक़्त पर तुम को नेक काम मैं ख़र्च न करने दे, (४) चौथा नाक़िस तबीअत यानी ओछा और कमीना आदमी कि जो वक़्त ज़रूरत पर तुम्हारे काम न आवे, (५)

पाँचवाँ धोखे बाज़ कि अपना लालच देख कर तुम को नुक़सान पहुंचावे ॥

बचन ६७

जो कोई औरौं को बचन सुनाने का शौक़ ज़्यादह रक्खे और अन्तर अभ्यास कम करता होवे, तौ उसकी समझ ओछी है, और मन अंधा और नादान है और वह वक़्त अपना मुफ़्त खोता है ॥

बचन ६८

जो कोई दुनियाँ को प्यार करता है उसको भजन का रस कभी नहीं मिलेगा, और जो कोई कामी है उससे काल निचिंत रहता है, क्योंकि उससे निर्मल परमार्थ की काररवाई कम बनेगी ॥

बचन ६९

ज़बान का सम्हाल कर रखना बहुत मुश्किल है बनिस्बत सम्हाल धन के, यानी ना मुनासिब और बेजा बचन ज़बान से नहीं निकालने चाहियें और न किसी की निंदा करनी चाहिये—

दोहा ।

बोली तौ अनमोल है, जो कोइ जाने बोल ।
हिये तराज़ू तोल कर, तब मुख बाहर खोल ॥

बचन ७०

एक औरत भक्त इस तौर पर प्रार्थना किया करती थी कि हे मालिक जो कुछ सामान दुनिया का मुझ को दिया चाहे, वह उनको दे जो तुझ से भूले हुये हैं, और जो स्वर्ग और बैकुंठ के सुख दिया चाहे वह उनको दे जो उन सुखौं को तुझ से चाहते हैं मुझ को तो तूही चाहिये है ॥

बचन ७१

किसी ने शाह इब्राहीम से कहा कि मुझ को कुछ उपदेश कीजिये, जवाब दिया कि जब तक यह छः बातें न बनैंगी, तब तक भक्ती पूरी न होगी, (१) पहिली दुनियाँ के सुख और आराम की चाह छोड़ो और परमार्थ मैं मिहनत करो, (२) दूसरी दुनियाँ का मान और आदर छोड़ो और निंद्या और निरादर सहो (३) तीसरी सोना कम करो और जागते रहो, (४) चौथी धन और माल की चाह छोड़ो और संतोष इख़्तियार करो, (५) पाँचवीं आसा और तृश्ना दुनियाँ की दूर करो और उससे अचाह हो, (६) छठी जहाँ तक बने क़सूर न करो और मालिक के चरनौं मैं प्रार्थना करते रहो, कि कोई

क़सूर न बन पड़े और ऐसी करतूत बन आवे कि जिस मेँ उसकी प्रशन्नता होवे ॥

बचन ७२

दूसरे ने उससे नसीहत चाही।

जवाब दिया कि अगर यह पाँच बातेँ माने तो फिर तुझे इख़्तियार है कि जो चाहे सो कर, (१) अव्वल अपने मन से कह कि हे मन मेरे मालिक का भजन बंदगी कर, नहीँ तो उसका दिया हुआ रिज़्क़ यानी अन्न मत खा, (२) दूसरी हे मन मेरे जिन कामोँ को मालिक ने मना किया है उन को मत कर नहीँ तो उसके मुल्क के बाहर निकलजा (३) तीसरी जो तू पाप करम करना चाहता है तो ऐसी जगह जा कि जहाँ मालिक तुझ को न देखे नहीँ तो पाप मत कर, (४) चौथी हे मन मेरे जो तू मालिक की दात मेँ राज़ी न होवे, तो और मालिक ढूंढ जो तुझ को बहुत देवे, (५) पाँचवीं हे मन मेरे पहिले इससे कि मौत आवे, मालिक की भक्ती करले, और यह काम इसी वक्त से शुरू कर ताकि धरमराय के पास न जाना पड़े और नरकोँ के दुख से बचाव होवे ॥

बचन ७३

जो कोई अपने तईं सब से उत्तम जानता है, वह नीच है और जो कोई अपने को सबसे ओछा जानेगा उस की सब बड़ाई करेंगे ॥

बचन ७४

जो दिल में मालिक के मिलने का शौक़ पैदा करो तो उस मालिक का ख़ौफ़ भी रक्खो, और सब से बढ़ कर काम मन के बरख़िलाफ़ अमल करना है ॥

कड़ी

सत गुरु कहें करो तुम सोई ।
मनके कहे चलो मत कोई ॥

बचन ७५

जो कोई मालिक को पहिचानना चाहे, तो चाहिये कि पहिले जिस क़दर बने मन को दुनियाँ के ख़ियालों से ख़ाली करे, और उसकी याद में मशग़ूल रहे और उसकी सेवा में ठहरा रहे और अपनी भूल चूक पर रोवे और पछतावे ॥

बचन ७६

जब अन्तर की आँख खुलेगी बाहर यानी लिफ़ाफ़े से नज़र हट जावेगी, तब सिवाय मालिक के और कुछ नहीं दीखेगा ॥

बचन ७७

जीवों के मन तीन तरह के हैं, मन मुरदह, मन ग़ाफ़िल और बीमार, और मन सही और दुरुस्त ।

मन मुरदह संसारियों का है जो कि मालिक का भजन नहीं करते हैं, मन ग़ाफ़िल और बीमार गुनह गारों का है, जो पाप करम करते हैं, और मन सही और दुरुस्त उनका है, जो हमेशा होशियार और चेतन्य रहते हैं यानी अपने मालिक से डरते हैं और उस का भजन करते हैं ॥

बचन ७८

मालिक की बंदगी और भजन से एक छिन ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये, क्योंकि यह मन बड़ा मक्कार और दग़ाबाज़ है, हर वक्त इस जीव की घात में रहता है, ज़राभी क़ाबू पाने पर इस का बेशुमार नुक़सान कर देता है ॥

बचन ७९

जो कोई तुझ से बदी करे तो उस पर गुस्सह मत कर और न उससे बदला लेने का इरादह कर क्योंकि परमार्थी का छिमा करने में फ़ायदह है और बुराई करने वाले के साथ गुस्सह करना या बुराई के बदले में बुराई करने में नुक़सान है—

दोहा ।

भलयन से भला करन, यह जग का व्यौहार ।
बुरयन से भला करन, ते बिरले संसार ॥

बचन ८०

एक अभ्यासी जब मरने लगा तौ उसने मालिक से अर्ज़ किया, कि अचरज मालूम होता है कि दोस्त की जान दोस्त लेवे, मालिक ने फ़रमाया तअज्जुब मालूम होता है, कि दोस्त दोस्त के दीदार और दर्शन से भागे, यह सुन कर वह ख़ुशी से मरने को तइयार होगया ॥

बचन ८१

हज़ारौं जीवौं में से बहुत थोड़े परमार्थ में क़दम रखते हैं और सैकड़ौं परमार्थियौं में से कोई बिरले अपने सच्चे मालिक को पहिचानैंगे ॥

सवाल व जवाब

बचन ८२

(१) सवाल—हमारे सच्चे मालिक और निज पिता कौन हैं—

जवाब—तुम्हारे सच्चे मालिक और निज पिता सत्त पुर्ष राधास्वामी हैं ॥

(२) सवाल-हमें क्योंकर यक़ीन हो कि हमारे सच्चे मालिक और निज पिता सत्त पुर्ष राधास्वामी हैं।

जवाब-वे आप इस संसार में जीवों पर अति दया करके संत सतगुरु रूप धारन करके प्रघट हुये, और अपना भेद उन्होंने आप गाया। उनकी बानी और बचन के पढ़ने और सुन्ने से प्रतीत आ सक्ती है, जैसा कि परमेश्वर और ख़ुदा का यक़ीन लोग वेद पुरान क़ुरान और अंजील के पढ़ने से करते आये हैं॥

(३) सवाल-हमें क्योंकर यक़ीन हो कि सत्तपुर्ष राधास्वामी का दर्जा परमेश्वर और ख़ुदा से ऊँचा और बड़ा है॥

जवाब-उनकी बानी को वेद पुरान क़ुरान अंजील वग़ैरह कुल्ल आसमानी किताबों से मिलान करने से॥

(४) सवाल-मालिक का खोज हम कहाँ करें, क्योंकि कहते हैं कि मालिक सब जगह मौजूद है।

जवाब-मालिक का खोज तुम अपने घट में करो, क्योंकि जो मालिक सब जगह है तो तुम में भी है, फिर तुम में तुम से ज़्यादह नज़दीक है बनिसबत दूसरी जगह के॥

(५) सवाल-मालिक हम में किस तरह है।

जवाब-मालिक तुम मेँ इस तरह है जैसे फूल मेँ खुशबू और दूध मेँ घी, और काठ मेँ अगनि ॥

(६) सवाल-मालिक का दर्शन हम को किस तरह से हो सकता है ॥

जवाब-मालिक का दर्शन तुम को सतगुरु से जुगत लेकर, अपना घट मथन करने से हो सक्ता है-जैसा कि घी का दर्शन दूध को तरकीब के साथ बिलोने से होता है और इतर ख़ालिस फूल मेँ है कई बार खीचने से निकलता है ॥

(७) सवाल-मालिक के दर्शन की हम को क्या ज़रूरत है ॥

जवाब-मालिक तुम्हारा मिसल सूरज के है, और तुम को रोशनी यानी ज़िंदगी उसी से मिलती है-जोँ २ तुम उसके निकट जाओगे तुम्हारी रोशनी बढ़ैगी, और जिस क़दर उससे दूर हटोगे अँधेरे मेँ गिरोगे वह रोशनी महा चैतन्य और महा आनन्द स्वरूप है, और सब सुखोँ का भंडार है, और तारीकी यानी अँधेरा दुख रूप और चौरासी का घर है ॥

(८) सवाल-मालिक हममेँ कहाँ है ॥

जवाब-मालिक का तख़्त तुम्हारे मस्तक मेँ है ॥

(९) सवाल-हमारे मालिक का क्या स्वरूप है ॥

जवाब-तुम्हारे मालिक का शब्द यानी चेतन्य और प्रकाश और प्रेम स्वरूप है ॥

(१०) सवाल-हमारा क्या स्वरूप है ॥

जवाब-तुम्हारा भी शब्द यानी चेतन्य और प्रकाश और प्रेम स्वरूप है ॥

(११) सवाल-फिर हम में और हमारे मालिक में क्या भेद है ॥

जवाब-तुम में और तुम्हारे मालिक में ऐसा भेद है कि जैसे किरन और सूरज में और जैसे बूँद और सिंध में ॥

बचन-५

बर्णन हाल सच्चे खोजी और परमार्थी और भी माया और उसकी रचना और घेर का और ज़रूरत सतगुरु और उनके सतसंग की और महिमा कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की जिनके चरनों में सब को प्रीत और प्रतीत लानी चाहिये, और बिना जिनकी मेहर और दया के

किसी का कुछ काम नहीं बन सका, और हाल उपदेश करताओं का और नसीहत उनको और कुल उपदेशियों यानी राधास्वामी मत के सतसंगियों को ॥

पहिला भाग-१

सच्चे खोजी और प्रेमी का हाल ।

१—सच्चे परमार्थ की कमाई दुरुस्ती से जब बन पड़ेगी जब सच्चा दर्द यानी प्रेम सच्चे मालिक से मिलने का दिल में पैदा होगा, और यह दर्द या प्रेम दो सूरतों में पैदा हो सक्ता है ॥

२—पहिली सूरत यह है कि दुनियाँ के हाल पर नज़र करके, और उसकी और उसके सब सामान की नाशमानता देखकर दिल उसकी तरफ़ से उदास हो जावे, और खोज करे कि अमर स्थान और अमर सुख कहाँ है और कैसे मिले, और जब तहक़ीक़ात करके मालूम होवे कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम जो ऊँचे से ऊँचा और गहरे से गहरा है, अमर और अजर है, और वहीं पूरन आनंद मिल सक्ता है, और वहीं निर्माया यानी निर्मल चेतन्य देश है, और उसके नीचे

जितने देश हैं उन सब में शुद्ध यानी लतीफ़ और सूक्ष्म और मलीन यानी कसीफ़ और स्थूल माया व्यापक है, और निर्मल चेतन्य का गिलाफ़ हो रही है। इन देशों में पूरन आनंद नहीं है, दरजे बदरजे ऊँचे की तरफ़ आनंद बढ़ता गया है, और दुख और कलेश कम होता गया है, और मलीन माया के देश में सुख बहुत कम और दुख विशेष है, और कुल्ल माया के देश में अबेरे सबेरे जनम मरन का चक्कर भी चल रहा है, यानी कुछ अर्सह बाद गिलाफ़ (जिसको देह कहते हैं) बदलते रहते हैं-यह बात समझ कर कुल्ल मालिक के मिलने का और उसके धाम में पहुंचने का शौक़ दिल में पैदा हो आवे॥

२—दूसरी सूरत यह है कि कोई इस शख्स को महिमाँ कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी और उनके धाम की जो कि अविनाशी और सर्ब आनंद और प्रेम का भंडार है सुनावे, और इस दुनियाँ की नाशमानता और इसके सामान का तुच्छ और दुखदाई होने का हाल समझावे, और जुगत इस माया देश को छोड़ कर अपने निज घर में जाने की बयान करे, और इस हाल को सुनकर मन इस दुनियाँ से उदास और बरदाश्तः होकर घर की

तरफ़ चलने और अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल से मिलने का जतन करने को इरादा करे ॥

४—ऐसे खोजी को तलाश संत सतगुरु या साधगुरू की, जो कि कुल्ल भेद से कुल्ल मालिक और निज घर और उसके रास्तह से वाक़िफ़ हैं, और जुगत चलने की समझा कर उसकी काररवाई करा सक्ते हैं, ज़रूर करनी पड़ेगी, क्योंकि और किसी जगह या किसी मत में या विद्यावान और बुद्धिवानों के बचन से उसको तसल्ली हरगिज़ नहीं आवेगी ॥

५—ऐसे शौक़ीन और खोजी की हालत ऐसी होगी, कि जैसे कोई बालक अपने मा बाप से बिछड़ कर किसी ग़ैर देश और ग़ैर आदमियों में जा पड़ता है, और वहाँ उसको किसी तरह से चैन नहीं आता, चाहे कैसी ख़ातिरदारी उसकी की जावे, और मा बाप के बिजोग का दर्द सताता रहता है, और उनसे मिलने के वास्ते तड़प और बेकली मन में रहती है ॥

६—जब ऐसा खोजी तलाश करके संत सतगुरु या साधगुरू के सनमुख आवेगा, उस को उन के बचन सुनतेही और दर्शन करतेही निहायत प्रेम उनके चरनों में पैदा होगा, और उनके बचन जो सच्चे मा बाप यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम

की महिमाँ से भरे हुए होंगे, और रास्तह का भेद और चलने की जुगत का उनमें बराबर ज़िकर होगा, उसको निहायत प्यारे लगेंगे, क्योंकि उसके दिल में फ़ौरन यक़ीन हो जावेगा, कि वे ज़रूर एक दिन उसको निज धाम में पहुंचा कर सच्चे मालिक से मिलावेंगे ॥

७—ऐसे खोजी के मन में संसार और उसके सामान और कुटुम्ब परिवार की तरफ़ से किसी क़दर बैराग खोज की हालत में पैदा हो जावेगा, और जब संत सतगुरु या साधगुरू के बचन चित्त देकर सुनेगा, तब वह बैराग तेज़ और क़ायम हो जावेगा, और अभिलाषा दुनियाँ की तरफ़ से हटती और कुल्ल मालिक के चरनों में पहुँचने की दिन २ बढ़ती जावेगी ॥

८—ऐसा खोजी संत सतगुरु के बचनों को सुन कर और उनके मुवाफ़िक़ अपनी और दुनियाँ की हालत की जाँच करके फ़ौरन उनके चरनों में प्रतीत और जब उनकी जुगत का कोई दिन अभ्यास कर के अपनी हालत अंतर में बदलती हुई देखेगा, तब दिन दिन प्रीत उनके चरनों में बढ़ाता जावेगा, और तन मन धन से उमंग के साथ सेवा करेगा, और शौक़ के साथ सतसंग उनका, जो कि उस के अंतर अभ्यास में मदद देने वाला है, जारी रक्खेगा ॥

९—जगत के जीव और भी विद्यावान और बुद्धि-वान असल में अजान हैं, उनको सच्चे मालिक और उसके धाम के और उससे मिलनें की जुगत की बि-लकुल ख़बर नहीं है, रास्तह में आत्मा परमात्मा या ब्रह्म में अटक रहे हैं, और उसका भी भेद पूरा पूरा नहीं जानते, और मिलनें की जुगत ऐसी कि जिसका अभ्यास सब कोई कर सके इन के पास नहीं है, पर यह सब संत मत का हाल सुन कर अपनी मूर्खता से उसकी निंदा करते हैं, और संतों पर तान मारते हैं, और आप तीरथ बरत और मूरत वग़ैरह में भरम रहे हैं, सच्चा खोजी ऐसे लोगों की निन्द्या और तान पर ज़रा भी तवज्जह नहीं करेगा, क्योंकि जब उसने थोड़े दिन सतसङ्ग करके संत मत को बख़ूबी समझ लिया है तो उसको सब मतों का हाल और उनका ओछापन ज़ाहर हो जावेगा, और उन लोगों के भरमाने और भुलाने से नहीं भरमेगा, बल्कि उनको नादान और अभागी समझ कर उनसे परमार्थी मेल नहीं रक्खेगा॥

१०—दुनियाँ के भोग बिलास और नामवरी वग़ैरह की चाह उसके दिल में बहुत कम हो जावेगी, या बिल्कुल नहीं रहेगी, क्योंकि उसको कोई दिन सतसंग और अंतरी अभ्यास करके साफ़ मालूम हो जावेगा, कि बस

चीज़ैं रास्तह मैं अटकाने वाली और निज घर से हटाने वाली हैं, वह किसी के भरमाने और उन चीज़ौं का लोभ दिलाने से नहीं भरमेगा, और अपनी भक्ती से नहीं डिगेगा ॥

११—ऐसे खोजी भक्त के मन मैं दिन २ चाव कुल्ल मालिक के दर्शन और उसके धाम मैं पहुंचने का बढ़ता जावेगा, और जिस क़दर कि नित्त अभ्यास करके उसको अंतर मैं रस मिलता जावेगा, उसी क़दर उसकी प्रीत प्रतीत चरनौं मैं मज़बूत होती जावेगी, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया उस पर दिन २ बढ़ती जावेगी, और अंतर मैं उसको परचे मिलते जावैंगे, और इस तरह कमाई करके वह एक दिन माया के घेर के पार हो कर और धुर धाम मैं पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

भाग दूसरा—२

माया और उसके गिलाफ़ौं का हाल ।

१२—मालूम होवे कि इस देश मैं चेतन्य की धार यानी सुरत माया के गिलाफ़ौं मैं गुप्त होकर कारर-वाई मन और इन्द्रियौं के वसीले से कर रही है, और इन गिलाफ़ौं के संग अपनपौ बांध कर, और

बाहर के जड़ पदार्थों मैं मन लगा कर अनेक तरह के दुख सुख सह रही है, सो जब तक इन ग़िलाफ़ों से किसी क़दर छुटकारा नहीं होगा, तब तक दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से बचाव नहीं हो सक्ता, और इन ग़िलाफ़ों से छूटने की जुगत सिर्फ़ संत यानी राधास्वामी मत मैं आसान तरीक़े से खोल कर कही है, उसकी कमाई से यह जीव अपना आहिस्तह २ छुटकारा होता हुआ आप देख सकता है, और उसी क़दर अपना दुख सुख से बचाव भी परख सक्ता है, और किसी तरकीब से यह फ़ायदा पूरा २ और आसानी के साथ बग़ैर घरबार और रोज़गार के छोड़ने के हासिल नहीं हो सकता, और राधास्वामी मत मैं किसी का घरबार और रोज़गार छुड़ाया नहीं जाता, और जो जुगत कि बताई जाती है ऐसी भारी है, कि उसके अभ्यास करने से सहज मैं सब काम बन सकता है, लेकिन थोड़ा सच्चा शौक़ और प्रेम दरकार है फिर अभ्यास करके वही प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा, और एक दिन पूरा काम बना कर छोड़ेगा ॥

१३—यह बात सच्चे परमार्थियों को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये, कि इस दुनियां मैं दो पदार्थ हैं,

एक चतन्य और दूसरा जड़। चेतन्य वही सुरत की धार है कि जो इस देश में कुल्ल रचना की सम्हाल कर रही है, और जड़ पदार्थ की प्रेरक है, बग़ैर उसके जड़ पदार्थ कुछ काम नहीं दे सकता, यही चेतन्य धार सत्त और ज्ञान और आनंद स्वरूप है, और जड़ बरख़िलाफ़ इसके असत्त और तम और दुख रूप है, यानी इसका रूप रंग सुरत चेतन्य की सत्ता से क़ायम है, और जब उसकी सत्ता खिंच जावे, तब उस के रूप रंग का अभाव हो जाता है॥

१४—यह समझौती लेकर कुल्ल सच्चे परमार्थियों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जड़ पदार्थों से आहिस्तह आहिस्तह अपना नाता तोड़ते जावें, या रिश्ता ढीला करते जावें, और विशेष से विशेष चेतन्य से अपना मेल बढ़ाते जावें, तो दिन २ आनंद और सच्चा ज्ञान बढ़ता जावेगा, और दुख और भूल और भरम यानी तम घटता जावेगा, और यह काररवाई दुरुस्ती और आसानी के साथ सिर्फ़ सुरत शब्द मारग की कमाई से हो सकती है॥

क्योंकि और मतों में चलने और चढ़ने की आसान जुगत जारी नहीं है, वे सब या तो बाहर जड़ निशानों (जैसे तीरथ मूरत वग़ैरह) में अटक रहे

हैं, या चेतन्य की विद्या बुद्धी से समझौती लेकर और अपने तईं वही रूह समझ कर (यानी समान और विशेष चेतन्य का भेद न करके) जहाँ के तहाँ बैठ रहे हैं, इस सबब से उनकी निवृत्ती माया के घेर और देहियों के दुख सुख और जनम मरन से मुम-किन नहीं है ॥

१५—जिस क़दर ग़िलाफ़ यानी परदे सुरत चेतन्य की धार पर, निर्मल चेतन्य देश से उतार के समय चढ़े हैं, उनका भेद मुफ़स्सिल राधास्वामी मत में बयान किया गया है, और मतों में यह भेद साफ़ तौर पर बिलकुल ज़ाहिर नहीं किया है, और सबब उस का यही है, कि उन में सुरत के चलने और बढ़ने और निज धाम में पहुंचाने का बिलकुल ज़िकर नहीं है, चेतन्य को सर्ब व्यापक मान कर जहाँ के तहाँ उसकी समझौती (बजाय अभ्यास करने के) विद्या बुद्धी की मदद से हासिल करके तृप्त हो गये, यानी बुँद चेतन्य को पिंड में ही सिंध रूप मानकर निहचिन्त होगये ॥

१६—ग़िलाफ़ तीन क़िस्म के हैं, पहिले दरजे की रचना में रूहानी ग़िलाफ़ जहाँ कि चेतन्य ही चेतन्य है और माया नहीं है, दूसरे दरजे में शुद्ध माया के

मसाले के गिलाफ़ जहाँ ब्रह्मसृष्टी है, और तीसरे दरजे में मलीन माया के मसाले के गिलाफ़ जहाँ कि देवता और मनुष्य और चार खान की रचना है। और फिर हर दरजे में गिलाफ़ों की तीन २ क़िस्में हैं, अस्थूल सूक्षम और कारन, यानी एक दरजे का अस्थूल गिलाफ़ नीचे के दरजे के कारन गिलाफ़ से भी ज़्यादह सूक्षम है, और बाक़ी का हाल इसी तरह समझ लेना चाहिये ॥

१७—जब तक कि सुरत गिलाफ़ों में बर्त रही है, तब तक उसकी भक्ती मालिक के चरनों में भेद भक्ती कहलाती है, यानी सेवक और स्वामी और प्रेमी और प्रीतम यानी आशिक़ और माशूक़ का भाव क़ायम रहता है, और जब धुरपद यानी बे गिलाफ़ मुक़ाम में सुरत पहुंचे तब अभेद भक्ती जिस को सच्चा और पूरा ज्ञान कहना चाहिये कहलाती है, और इस जगह पर प्रेमी को संत मत में ऐसी ताक़त हासिल हो जाती है, कि जब चाहे अपने प्रीतम से मिल जावे और जब चाहे जब न्यारा होकर उस के दर्शन का आनन्द लेवे, यह अस्थान असली अरूप और अरंग और अनाम पद का है, बाक़ी नीचे के दरजों में जहाँ कहीं जिस किसी ने अनाम और अरूप पद थापा है, वह असली

अरूप और अनाम और अरँग नहीं है, इस सबब से और मत वालों ने धोखा खाया क्योंकि हर दरजे में हर एक अस्थान पर रूप और अरूप और लोक और अलोक मौजूद है, और दोनों मिलकर रचना की सम्हाल कर रहे हैं ॥

१८–चेतन्य बे गि़लाफ़ अपने में आप मगन रहता है। और जहाँ कि गि़लाफ़ में है, वहाँ वह औज़ार यानी इन्द्रियों के वसीले से बाहर की काररवाई करता है और भी अपने से बिशेष चेतन्य का रस और आनन्द लेता है, लेकिन गि़लाफ़ का संग करके यानी मेल के सबब से जो दुख सुख लाज़मी हैं उनका भी भोग करता है, और जब वह गि़लाफ़ पुराना और बेकार हो जाता है तब उसको छोड़ कर दूसरा गि़लाफ़ धारन करता है, इस सबब से जनम मरन और दुख सुख का चक्कर हमेशा जारी रहता है ॥

यह कैफ़ियत सिर्फ़ माया देश में है यानी रचना के दूसरे और तीसरे दरजे में वाक़े होती है। अव्वल दरजे में जहाँ कि रूहानी गि़लाफ़ हैं कभी तग़इय्युर और तबद्दुल * नहीं होता, और जो कि चेतन्य आनन्द स्वरूप है, इस वास्ते उसके गि़लाफ़ भी आनन्द रूप हैं, इस वास्ते संत फरमाते हैं कि जैसे बने

* अदल बदल।

तिसे माया के घेर के पार दयाल देश यानी अव्वल दरजे में जाना चाहिये, तब अमर और पूरन आनन्द प्राप्त होगा ॥

भाग तीसरा—३

अपने वक़्त के सतगुरु की ज़रूरत और उनके सतसंग का फ़ायदा ॥

१९—संत अथवा राधास्वामी मत में वक़्त के सतगुरु की निहायत ज़रूरत है, क्योंकि बग़ैर उनके मिलने के भेद कुल्ल मालिक और रास्ते का और जुगत चलने की और हाल उन सँजमों का, जिनकी निगहदाश्त प्रेमी अभ्यासी को ज़रूर है, मालूम नहीं हो सकता, यह भेद और हाल वही जानता है, कि जो अपने घट में रास्ता तै करके धुर मुक़ाम तक या किसी रास्तह के अस्थान तक पहुंचा है, या थोड़ा बहुत वह शख़्श जानेगा जिस ने पूरे गुरू से मिल कर कोई दिन उनका सतसंग किया है, और उनसे उपदेश लेकर अभ्यास कर रहा है। सिवाय इन तीन के जिनको (१) संत सतगुरु और (२) साधगुरू और (३) पूरे गुरू का सच्चा सतसंगी के और कोई यह भेद नहीं जान सकता, इस वास्ते जिस किसी के दिल में सच्चे मालिक का खोज और

उसके मिलने का शौक़ पैदा हुआ है, जब तक इन तीनों में से कोई नहीं मिलेगा तब तक उसको शान्ति नहीं आवेगी और न उसका रास्तह चलना शुरू होगा ॥

२०—जब खोजी प्रेमी ऐसे गुरु का सतसंग करेगा तब उस को सच्चा हाल इस रचना का मालूम पड़ेगा, और यह कि किस में उस को सच्ची प्रीत करनी चाहिये, और कहाँ २ उसका मन बे फ़ायदह बँध रहा है, और कैसे उसका छुटकारा सहज में हो सकता है, और जो सुख और रस यहाँ के भोगों में हैं वह तुच्छ और नाशमान हैं, और परम सुख और परम आनन्द का भण्डार अपने घट में मौजूद है, पर जुगती की कमाई से आहिस्ता २ मिल सकता है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त भी घट में मौजूद है, और किस तरह थोड़ा बहुत उनका जलवा अंतर में नज़र आ सक्ता है, और कैसे उनकी मेहर और दया वास्ते ते करने रास्ते और प्राप्ती आनन्द और उसकी दिन २ तरक़्क़ी के हासिल हो सकती है ॥

२१—सच्चे मालिक के चरनों में सच्ची प्रीत और प्रतीत सिर्फ़ संतगुरु ही के संग से पैदा हो सकती है, और दिन २ उसकी तरक़्क़ी उनकी मेहर और दया

और जुगती की कमाई से मुमकिन हैं, और संसार और उसके भोगों से सच्चे बैराग का दिल में पैदा होना और उसकी तरक़्क़ी भी सतगुरु ही के संग से होवेगी, और तरह से जो किसी के चित्त में किसी वक़्त थोड़ा बहुत बैराग पैदा भी हुआ तो वह क़ायम नहीं रहेगा और न उसकी तरक़्क़ी होगी ॥

२२—सच्चे मालिक की मौजूदगी और उसके हर वक़्त हाज़िर नाज़िर होने का यक़ीन भी संत सतगुरु ही के संग से हासिल होगा, और उनकी दया और जुगती की कमाई से वही यक़ीन बढ़ता जावेगा, और एक दिन पूरे दरजह तक पहुँचा देगा, ऐसा सच्चा और पूरा यक़ीन और किसी के संग से या पोथियाँ पढ़ कर हासिल नहीं हो सक्ता ॥

२३—संतों की जुगती की कमाई भी सतगुरु ही के संग से दुरुस्ती के साथ बन पड़ेगी, और जब तक कि काम पूरा न बने वह अभ्यास जारी रहेगा, और किसी तरह सुरत शब्द का अभ्यास बन पड़ना दुरु-स्ती से और तरक़्क़ी के साथ जारी रहना और रोज़ बरोज़ उसका फ़ायदा नज़र आना मुमकिन नहीं है, क्योंकि काल और करम और माया और उसके भोग बड़े ज़बरदस्त हैं, कभी न कभी अभ्यास में विघन

डाल कर, या भरम उठा कर, उसको छुड़वा देंगे, या अभ्यासी को ललचाकर भोगों में या मान बड़ाई में फँसा कर उसका रास्ता चलने का रोक देंगे। जिस किसी के सिर पर पूरे गुरु का पंजा रहे, उस से यह काम आख़िर तक दुरुस्त बनता चला जावेगा, नहीं तो थोड़े दिन अभ्यास करके और फिर किसी न किसी चक्कर में पड़कर और रास्तह में थक कर रह जावेगा ॥

२४–शब्द की महिमाँ और सुरत शब्द मारग की क़दर भी जैसी कि चाहिये सतगुरु ही के संग से आवेगी, और वैसे तो हर एक मत में शब्द की थोड़ी बहुत महिमा करी है, पर भेद रास्तह का और जुगत उसके अभ्यास की चढ़ाई के साथ किसी मत में नहीं पाई जाती ॥

२५–जो भाग से सतसंग सतगुरु का कुछ अर्सह तक प्राप्त हो जावे तो बहुत ग़नीमत है, नहीं तो जितने दिन बन सके एक दफ़े ज़रूर उनके सतसंग में हाज़िर रह कर फ़ायदा उठावे, यानी बचन उनके चेत कर सुने और समझे, और बिस्तार करके उनका मनन और बिचार करे ॥

भाग चौथा ४

बर्णन भेद जीवों की समझ और अधिकार का

२६—जीवों की तीन क़िस्में हैं उत्तम मध्यम और निकृष्ट और इसी तरह बुद्धी और समझ भी तीन क़िस्म की है, एक तेलिया, दूसरी मोतिया, तीसरी नमदा (मोटा ऊनी बिछौना) ॥

१—पहिली यानी तेलिया का ख़वास यह है कि जैसे तेल की एक दो बूँदें पानी में डालें तो वह फैल कर तमाम पानी को घेर लेती हैं, इसी तरह उत्तम अधिकारी बचन सुन कर उनका आप ही आप बिस्तार करके समझता है, और अपने फ़ायदह की बात को छाँट कर ग्रहन करता है ॥

(२) दूसरी मोतिया बुद्धी कि जैसे मोती में जिस क़दर सूराख़ किया जावे वह उस क़दर क़ायम रहता है, यानी मध्यम अधिकारी जिस क़दर बचन सुनता है उनको वैसा ही अपने मतलब के मुवाफ़िक़ छाँट कर याद कर लेता है, लेकिन बिस्तार नहीं कर सक्ता ॥

३—तीसरी नमदा बुद्धी, जैसे नमदे में सूये से सूराख़ किया गया, तो सूराख़ होता हुआ तो नज़र

आया पर फ़ौरन ही छिप गया, ऐसे ही निकृष्ट अधिकारी बचन सुनते और समझते मालूम होते हैं, पर उनको फ़ौरन ही भूल जाते हैं ॥

२७–उत्तम अधिकारी को थोड़े दिन के सतसंग से बहुत फ़ायदा हासिल हो सक्ता है, क्योंकि वह दो मूल बात को समझ कर उनका बिस्तार और अपनी सम्हाल थोड़ी बहुत हर सूरत और हर हालत में आपही अपना निर्मल बुद्धी से कर सक्ता है-और वह दो मूल बात यह हैं (१) सुरत की बैठक जाग्रत के समय नेत्रों में है और यहाँ से धार जिस क़दर अंतर में ऊँचे की तरफ़ को शब्द और स्वरूप के आसरे खिंचेगी यानी पुतली उलटाई जावेगी उसी क़दर देह और संसार से बंधन ढीला होता जावेगा, यानी इधर से बेख़बरी और उधर की तरफ़ होशियारी के साथ रस और आनन्द मिलता जवेगा, इस काम को ज़रूरी और मुफ़ीद समझ कर जिस क़दर बन पड़ेगा उत्तम अधिकारी हमेशह जारीरक्खेगा, बल्कि आहिस्तह आहिस्तह उसमें तरक्की करेगा ॥

(२) मन और इन्द्रियों की धारें बाहर मुख जारी हो रही हैं, और इच्छा यानी ख़्वाहश के साथ यह धारें पैदा होती हैं और पुतली के उलटाने यानी मन

और सुरत की धार को, अंदर में ऊपर की तरफ़ चढ़ाने में, वे तरंगों की धारें बिघन कारक हैं, इस वास्ते सिर्फ़ ज़रूरी और मुनासिब तरंगें उठानी, और इन्द्रियों की धारों को ज़रूरी कामों के वक़्त जारी रखना, और फ़ुज़ूल और ग़ैर ज़रूरी और ना मुनासिब ख़ियालों और कामों की तरंगें अंतर और बाहर रोकना, ख़ास कर अभ्यास के वक़्त और आम तौर पर हर वक़्त ज़रूर चाहिये ॥

इस बात को समझ कर उत्तम अधिकारी अपनी सम्हाल हर वक़्त मुनासिब तौर पर रख सक्ता है, जो मुवाफ़िक़ पुराने स्वभाव और आदत के भूल और चूक हो जावे तो कुछ मुज़ायक़ह नहीं, फिर होशियार होकर सम्हाल करना चाहिये, इसी तरह कोई अर्सह की कोशिश के बाद मन और इन्द्रियाँ दुरुस्ती के साथ बर्तने लगेंगी ॥

२८—मध्यम अधिकारी को सतसंग कुछ ज़ियादह अर्सह तक करना चाहिये, तब वह बचनों को सुन कर और समझ कर और थोड़ा बहुत अंतरी अभ्यास करके और भी उत्तम और मध्यम अधिकारियों का, जो सतसंग अर्सह से कर रहे हैं, या सतसंग में आते जाते रहते हैं, देख कर क़ाबिल

इसके हो जावेगा कि दूर रह कर और राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर अपनी सम्हाल थोड़ी बहुत कर सके, और जिस बात में कोई दिक़्क़त या बिघन या मुशकिल पेश आवे, तो चिट्ठी भेज कर सतगुरु से हिदायत मुनासिब वक़्तन् फ़वक़्तन् हासिल करता रहे ॥

२६—निकृष्ट अधिकारी को बहुत अर्से तक सतसंग करने और उत्तम और मध्यम अधिकारियों की हालत देखने से कुछ फ़ायदह होगा, जो वह थोड़ी होशियारी और शौक़ के साथ इस काम को करेगा, और दूरी में उत्तम या मध्यम अधिकारी के सतसंग और मदद से, उस का भी थोड़ा बहुत निरबाह हो जावेगा, और रफ़्तह २ मध्यम अधिकारी के दरजह पर आजावेगा ॥

३०—जो लोग कि सच्चा शौक़ परमार्थ का नहीं रखते पर सच्चे शौक़ीनों के साथ किसी लपेट से संतों के सतसंग में आगये हैं, तो उन को भी कुछ थोड़ा फ़ायदह होगा, लेकिन जब तक कि वे चेत कर होशियारी के साथ सतसंग और अंतर अभ्यास नहीं करेंगे तब तक उनकी हालत नहीं बदलेगी-इन लोगों को उत्तम या मध्यम अधिकारियों का संग काफ़ी होगा;

क्योंकि सतगुर के सतसंग की ताक़त और लियाक़त उनमें कम होगी ॥

३१—खुलासह यह है कि जब तक जीव का ज़बर झुकाव संसार की तरफ़ और मन में बासना भोग और बिलास और उसकी तरक़्क़ी की रहेगी, तबतक वह संतों के सतसंग और उन की जुगती के अभ्यास से गहरा फ़ायदह नहीं उठा सक्ता, कि जिस्से उसकी हालत जल्द बदले, और परमार्थ का रस बराबर अंतर में पावे ॥

३२—जो कोई सच्चा दर्दी परमार्थी है, वह राधास्वामी मत की पोथियों को ग़ौर से पढ़कर, बहुत फ़ायदह उठा सक्ता है—और चिट्ठी के वसीलह से उपदेश हासिल करके अभ्यास में राधास्वामी दयाल की दया से भजन और ध्यान का भी रस ले सक्ता है, और अपना हाल वक़्तन फ़वक़्तन् सतगुर या उत्तम अधिकारी को लिख कर और हिदायत मुनासिब लेकर अभ्यास में तरक्की भी कर सक्ता है—पर कितनी ही बातें राधास्वामी मत और उसके अभ्यास की बाबत ऐसी हैं, कि वे सिर्फ़ ज़बानी समझाई जा सक्ती हैं, और लिखने में किसी न किसी क़िसम की ग़लती या धोखा हो जाने का ख़ौफ़ है, इस वास्ते ऐसे

परमार्थी को भी ज़रूर और लाज़िम है, कि अगर ज़्यादह न हो सके, तो एक मर्तबह ज़रूर सतसंग में हाज़िर होकर और चंद रोज़ वहाँ ठहरकर जो कुछ कि शुभा और शक या किसी बात में समझ का फेर होवे, उसको दूर करावे, और जो बातें कि ज़बानी समझाई जासक्ती हैं, उनको बख़ूबी समझ लेवें, ताकि उस के अभ्यास की तरक्क़ी में दूरी की वजह से ख़लल न पड़े और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुर और सुरत शब्द मारग की प्रीत और प्रतीत मज़बूत हो जावे ॥

३३—और जो ऐसे परमार्थी का किसी सूरत से सतसंग में आना न बन सके, तो जो वह सतगुरु का हुकम लेकर किसी उत्तम अधिकारी परमार्थी से (जिसने कुछ अर्सह सतगुर का सतसंगकिया है) मिलेगा और कोई दिन उस का सतसंग करेगा, तो उसको थोड़ा बहुत उसी क़दर फ़ायदह हासिल हो सक्ता हैं, जैसे कि सतगुर के संग से ॥

३४—और जो उत्तम अधिकारी का भी सतसंग प्राप्त न होवे तो जब तक कि मौक़ा सतगुर या उत्तम अधिकारी सतसंगी से मिलने का न बने, तब तक जो मध्यम अधिकारी सतसंगी मिल जावे

(कि जिसने सतगुर का सतसंग किया है) तो उसी के संग अपनी परमार्थी काररवाई सतगुर से चिट्ठी के ज़रिये से उपदेश लेकर जारी करे। इस तरह से उसको किसी क़दर फ़ायदह हासिल होगा, और मुन्तज़िर रहे कि जब मौक़ा मिले तब उत्तम अधिकारी सतसंगी से या सतगुर से जाकर ज़रूर मिले, और कोई दिन उनका सतसंग कर के पूरा फ़ायदह हासिल करे ॥

भाग पांचवाँ ५

कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की महिमाँ, और फ़ायदह उनके चरनो में भाव के साथ प्रीत और प्रतीत करने का और बयान उन हुकमों का जो उन्हों ने ज़बान मुबारक से फ़रमाये ॥

३५—राधास्वामी नाम कुल्ल मालिक का है कि जिस का धाम ऊँचा से ऊँचा है, और जहाँ माया का नाम और निशान भी नहीं है, और वह धाम तीन लोक के परे है और जिस के चरनों से आदि शब्द की धार निकली, जिस से कुल्ल रचना पहिले दयालदेश और फिर तीन लोक की हुई, और यह पद यानी

राधास्वामी धाम और कुल्ल रचना का नमूना घट २ मैं मौजूद है, यानी हर एक सुरत का सूत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से अपने २ घट मैं शब्द यानी चेतन्य की धार के वसीलह से (जिस पर सुरत उतर कर पिंड मैं बैठी है) लग सक्ता है, और वह सुरत उनकी दया को अंतर मैं अभ्यास के समय और भी दूसरे वक्तों मैं परख सक्ती है ॥

३६—ऊपर के बयान का मतलब यह है कि हर एक सुरत शब्द की धार के वसीलह से उतर कर पिंड मैं बैठी है, और संत सतगुरु अथवा साधगुरू या उत्तम अधिकारी सतसंगी से भेद रास्तह और मंज़िलों का, और हर एक अस्थान के शब्द का, और जुगती चलने की दरियाफ़्त करके राधास्वामी दयाल की दया का भरोसा रखकर, अपने घट मैं उसी धार को पकड़ कर चरनों की तरफ़ चल सक्ती है, और जो कि कुल्ल जीव यानी सुरतैं कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस हैं (जैसे सूरज और सूरज की किरन) और उनको हर एक पर निहायत दरजे की दया और प्यार मंज़ूर है सो जब कोई बिरह और प्रेम अंग लेकर, सचौटी के साथ चरनों की तरफ़ भेद लेकर चलता है, वे उसपर अंतर मैं दया और मेहर फ़रमाते हैं, और मदद देते हैं ॥

३७—इस समय में ख़ास कर जीवों पर ज़्यादह दया करना मंज़ूर है, क्योंकि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल आप नर चोलह में संत सतगुरु रूप धारन करके प्रगट हुये, और भेद अपने निज धाम और उसके रास्तह और मंज़िलों का और सहज तरीक़ा चलने का कि जो आज तक किसी को मालूम नहीं हुआ, निहायत कृपा कर के आप प्रगट किया, और जीवों को समझा बुझा कर, और अपनी दया के बल से उनकी सुरत को चढ़ा कर, अपने देश में पहुंचाया और पहुंचाते हैं ॥

३८—और निहायत दया और मेहर करके हुक्म दिया कि जो कोई उनके चरनों में प्रेम और भक्ती धार कर उस तरीक़े का अभ्यास, यानी बिरह अंग लेकर ध्यान और भजन करेगा, तो वे अपने निज रूप से उसको अंतर में बराबर मदद देकर और उसकी सुरत को आहिस्ता आहिस्ता चढ़ा कर एक दिन धुर धाम में पहुंचा देंगे ॥

३९—और यह भी हुक्म दिया कि इस वक़्त में जिस क़दर कि पुराने तरीक़े अभ्यास के हैं, वह सब ख़ारिज हैं। पहिले तो वह सिर्फ़ संजम के तौर पर जारी किये गये थे, दूसरे जो किसी में थोड़ी चढ़ाई का भी फ़ायदा है, सो वह इस क़दर कठिन और ख़तरनाक

है, कि किसी जीव से दुरस्ती के साथ उसका बन पड़ना मुशकिल बल्कि नामुमकिन है, और जो जीव कि उन्हीं तरीक़ों में अटके रहेंगे, वह बे फ़ायदा अपना वक़्त और तन मन उस काम में ख़र्च करेंगे, और सच्ची मुक्ती और पूरा उद्धार उस काररवाई से हरगिज़ हासिल नहीं होगा, इस वास्ते कुल्ल जीवों को यही हुक्म फ़रमाया कि जो जुगत स्वरूप के ध्यान और नाम के अंतरी सुमिरन और शब्द के श्रवन की जारी फ़रमाई है, उसी के मुवाफ़िक़ बिरह और प्रेम अंग लेकर अभ्यास करो, तब सच्चा और पूरा उद्धार होगा, और किसी तरह जनम मरन और चौरासी के चक्कर से छुटकारा नहीं होगा ॥

४०—और वक़्त छोड़ने इस चोलह के यह भी फ़रमाया कि कोई यह न समझे कि हम जाते हैं—

नहीं हम हर एक अभ्यासी सतसंगी के अंग संग रह कर उसकी दुरस्ती और तरक़्क़ी बराबर करेंगे, बल्कि पहिले से ज़ियादा फ़रमावेंगे, इस वास्ते हर एक प्रेमी भक्त और सुरत शब्द के अभ्यासी को लाज़िम है, कि राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रीत करे, और उनके चरनों की सरन लेकर अपना अभ्यास दुरस्ती के साथ जिस क़दर बन सके, बराबर यानी बिला

नागह करता रहे, और उनकी दया मेहर अपने अंतर मेँ परखता चले ॥

४१—और यह भी राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया कि जिस किसी को सुरत शब्द मारग का उपदेश दिया जाता है, उस वक्त उसको सत्तपुर्ष राधास्वामी का दामन पकड़ा दिया जाता है, सो जो कोई सचौटी के साथ थोड़ा बहुत प्रेम अंग लेकर उस अभ्यास को बराबर करता रहेगा, और जहाँ तक मुमकिन है मन के बिकारोँ मेँ नहीँ बर्तैगा, तो उसपर सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल अपनी दया फ़रमाते रहैँगे, यानी उसके मन और सुरत को आहिस्ता २ घट मेँ ऊँचे की तरफ़ चढ़ाते जावैँगे, और माया और काल के बिघनोँ से उसकी रक्षा करते रहैँगे ॥

४२—सब जीव थोड़े बहुत काल के क़रज़दार हैँ, यानी उन पर पिछले अगले करम चढ़े हुये हैँ, सो जो कोई सचौटी के साथ राधास्वामी दयाल की सरन मेँ आया, और सर्ब अंग करके उनका सेवक हो गया यानी और किसी मेँ उसका परमार्थी भाव और इष्ट नहीँ रहा, और सतसंग करके राधास्वामी दयाल के चरनोँ मेँ प्रीत और प्रतीत शुरू करी है, तो ऐसे जीव को वे अपनी दया से अपनाते हैँ, और फिर उसकी

सब तरह से सम्हाल और रक्षा दया के साथ आप फ़रमाते हैं, और उसके करम जिस क़दर जल्दी होता है काटते हैं, और दिन २ प्रीत प्रतीत बढ़ाकर और अभ्यास में तरक्क़ी देकर एक दिन अपने निज धाम में बासा देंगे ॥

भाग छठवाँ–६

बर्णन हाल राधास्वामी दयाल की दया का वास्ते उद्धार जीवों के, और जारी करने उपदेश के आम तौर पर ॥

४३—जिस किसी को कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल अपनी दया से साध या उत्तम प्रेमी सतसंगी की गत बख़्शें, और उसके द्वारे और जीवों की परमारथी दुरस्ती करवावें, तो वे उनके परमसेवक होंगे, और बाहर से जिस क़दर काररवाई समझाने और बुझाने और अभ्यास में मदद देने, और भक्ती और प्रेम बढ़ाने की ज़रूर है, वह उन साध या प्रेमी सतसंगी के हाथों से करवाते हैं, और अंतर में जिस क़दर कि मन और सुरत की चढ़ाई के वास्ते, और काल और करम और माया वग़ैरह के बिघनों के दूर करने के लिये मदद दरकार है, वह मेहेर और दया से राधास्वामी दयाल अपने निज रूप से आप करते

हैं, क्योंकि वक्त उपदेश के हर एक सुरत का सूत यानी रिश्तह उसके घट में राधास्वामी दयाल के चरनों से लग जाता है, और उसी रिश्तह के द्वारे परमारथी अभ्यासी सुरत की प्रार्थना वग़ैरह की ख़बर चरनों में पहुँच सकती है, और जब मौज होती है, तब दया की धार उसी रास्ते से उतर कर और अभ्यासी को रस देकर, उसके प्रेम को बढ़ाती है ॥

४४—और जिस किसी को राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से संतगती बख़्शें, यानी अपने धाम में वासा देवें, तो उसका निज रूप वही हुआ जो उनका है, यानी शब्द स्वरूप करके एकता हो गई, और उसकी मौज वही होगी जो उनकी मौज है, और जो उसके द्वारे जीवों का कारज करना मंज़ूर है, तो वह अंतर और बाहर उनकी मौज के अनुसार, जो काररवाई जीवों के उद्धार के वास्ते मुनासिब और ज़रूर है, जारी करेगा ॥

४५—ख़ुलासा यह है कि कुल्ल कारवाई जीवों के उद्धार की कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मौज के मुवाफ़िक़ जारी होती है, और वे आप निगरानी उस कारवाई की फ़रमा रहे हैं, और अपनी ख़ास दया जिस २ जीव पर जब २ और जैसी २ मुनासिब

होती है करते हैं, और दिन २ उसकी प्रीत और प्रतीत चरनौं मैं अभ्यास के साथ बढ़ाते जाते हैं ॥

४६—इस वास्ते कुल्ल जीवौं को जो राधास्वामी मत मैं शामिल हैं, चाहिये कि उनके चरनौं का इष्ट मज़बूत बाँधैं, और उनके धाम मैं पहुंचने का इरादा ऐसा पक्का करैं, कि रास्तह मैं किसी स्थान पर थक कर या ललचा कर ठहरने की ख़्वाहिश न होवे, और जो जुगत चलने और चढ़ने की यानी ध्यान और भजन की उन्हौं ने जारी फ़रमाई है, उसका अभ्यास बराबर नेम और प्रेम के साथ हर रोज़ करते रहैं, और जब २ मौक़ा मिले सतसंग भी करते रहैं, और संसय और भरम दूर करके प्रीत और प्रतीत चरनौं मैं बढ़ाते रहैं, तो राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से आहिस्ता २ उनका कारज बन जावेगा ॥

भाग सातवाँ—७

बर्णन ज़ाहरी आदाब और क़ायदा भक्ती का राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं ॥

४७—कुल्ल जीवौं को जो राधास्वामी मत मैं शामिल हैं, मुनासिब और लाज़िम है, कि जहाँ तक बन सके

एक दफ़े आगरे में आकर राधास्वामी बाग़ में राधास्वामी दयाल की समाध और उनके निशानों का जैसे पलँग और कुरसी और भजन करने की चौकी का, भाव सहित दर्शन करें, और वहाँ मत्था टेक कर अपना भाग बढ़ावें, और समाध पर हार फूल चढ़ावें, क्योंकि इन सब चीज़ों में जोकि उनकी सेवा में रही हैं, उनके चरनों की निर्मल और अमृत की धारा मौजूद है। राधास्वामी बाग़ के कुए का जो जल है, वह राधास्वामी दयाल का मुख अमृत और चरनामृत है, उसको ज़रूर पान करें॥

४८—राधास्वामी दयाल ने ख़ुद अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया, कि जो कोई राधास्वामी बाग़ में आवेगा, उसको भजन करने के बराबर फ़ायदह होगा, और जो वहाँ बैठ कर भजन और ध्यान करेगा, उसको विशेष फ़ायदा हासिल होगा, यानी राधास्वामी दयाल की ख़ास दया और मेहर का अधिकारी होगा॥

भाग आठवाँ-८

बर्णन हाल उपदेश करताओं का और हिदायत मुनासिब उनके वास्ते॥

४९—जो कोई राधास्वामी दयाल के सेवकों में से

जीवों को राधास्वामी मत का उपदेश देता है, उसके साथ उसके उपदेशी जो साध भाव का बर्ताव करें, तो मुज़ायक़ह नहीं, पर गुरु और सतगुरु और संत भाव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लाना चाहिये ॥

५०—और जो कोई ब्रिलफ़र्ज़ किसी उपदेशक सतसंगी के साथ अपनी हठ से गुरु भाव का बर्त्ताव करे तो ख़ैर, लेकिन कुल्ल मालिक और परम पुर्ष पूरन धनी का भाव राधास्वामी दयाल के चरनों में ज़रूर लाना चाहिये, इसमें उसका कारज बहुत दुरस्ती के साथ और निर बिघन बनेगा, क्योंकि राधास्वामी दयाल की मेहर और दया उसकी सम्हाल और रक्षा करेगी ॥

५१—जो कोई सतसंगी अभी आप ही अभ्यासी हैं, और इजाज़त और हुक्म के साथ दूसरों को उन से उपदेश दिलवाया जाता है, तो उनको मुनासिब है कि किसी अपने उपदेशी को अपने साथ साध भाव का बर्त्ताव न करने दें, सिर्फ़ इस क़दर काफ़ी होगा कि वे उसको अपना बड़ा भाई समझें, और जो कोई उपदेशक सतसंगी ब नज़र अपने बचाव के इस क़दर बर्त्ताव भी न मंज़ूर करे, तो वह अपने उपदेशियों के साथ बराबरी यानी मित्र भाव का बर्त्तावा जारी रक्खे,

और जो कोई उपदेशक सतसंगी किसी क़िस्म की बड़ाई का बर्ताव न मंजूर करे, तो उसके उपदेशियों को चाहिये कि उसके साथ मित्र भाव बर्तें, और साध भाव या बड़े भाई का भाव न बर्तें, और संत सतगुरु और कुल्ल मालिक का भाव राधास्वामी दयाल के चरनों में लावें ॥

५२—राधास्वामी दयाल के किसी सेवक को जो जीवों को उपदेश राधास्वामी मत का देता है, किसी सूरत में अपने उपदेशियों पर दावा गुरुवाई का बाँधना नहीं चाहिये, यह स्वभाव और दस्तूर संसारी यानी लोभी और मानी उपदेश करताओं का है, जो यही हालत राधास्वामी दयाल के सेवक की हुई तो वह भी संसारी गुरुओं में दाख़िल हुआ, फिर उसके उपदेश से जीवों को असली फ़ायदा बहुत कम होगा, यानी उनके मन की गढ़त बिल्कुल नहीं होवेगी, और इस सबब से अभ्यास में तरक़्क़ी भी नहीं होगी, और करम भरम और संसय भी दूर नहीं होंगे, क्योंकि लोभी और मानी गुरू अपने सेवकों से आप डरता रहता है, कि कहीं उसको छोड़ न देवें जिस से उसकी आमदनी में ख़लल पड़े ॥

५३—राधास्वामी मत में गुरू सतगुरु और संत नाम

कुल्ल मालिक का है, और उपदेश करता का दरजा साध या बड़े भाई या मित्र के मुवाफ़िक़ होना चाहिये, और इस मैं भी उपदेश करता को लिहाज़ रखना चाहिये कि अपनी हालत को परखता चले, और मान बड़ाई और धन की चाह लेकर उपदेशियौं से साध भाव का बर्तावा मंज़ूर न करे, नहीं तो धोखा खावेगा, और उस के उपदेश से जीवौं को भी कुछ फ़ायदह हासिल न होगा ॥

५४—कोई अपने आप से गुरू नहीं बन सकता है, जब उपदेशियौं को उसकी निसबत ऐसा भाव आवे और वे उसके मुवाफ़िक़ उससे बर्तावा करना चाहैं, तो भी उसको मुनासिब है कि जहाँ तक बने अपना बचाव करे, और जो वे निहायत दरजे की हठ करैं, तो उनके प्रेम और भक्ती के बढ़ाने के वास्ते उनकी उमंग से कम दरजह की सेवा मंज़ूर करे, और होशियारी और अहतियान रक्खे, कि उसका मन फूलने न पावे, यानी गुरुवाई का अहंकार न लावे, और किसी बात मैं बे अहतियाती और बे परवाही और निडरता के साथ बर्ताव न करे, नहीं तो अपना अकाज करेगा, और जीवौं को भी उससे थोड़ा बहुत परमारथी और दुनियावी नुक़सान पहुँचेगा ॥

५५—जो उपदेश करता आप सच्चा परमारथी है, वह आप भी निरबंध होने का जतन करता रहेगा, और अपने उपदेशियों के भी बंधनों को सहज२ ढीला करता और काटता जावेगा, नकि उपदेशियों के संग अपने वास्ते नया बंधन पैदा करेगा, और उन पर दावा गुरुवाई का बाँध कर ज़ोर चलावेगा, या किसी तरह की उनकी तहक़ीक़ात और तलाश में (जो उनके मन में अभी पूरी प्रतीत राधास्वामी मत की नहीं आई है या किसी तरह के शक और शुभे बाक़ी हैं, या किसी और इष्टों में उन का मन अभी बँधा हुआ है) हर्ज और ख़लल डालेगा, इस ख़ौफ़ से कि कहीं वह उसको छोड़ न जावें, और उसकी मान बड़ाई और आमदनी में घाटा न होवे॥

यह हालत संसारी और नसली गुरुओं की है, और जो कोई ऐसा बर्ताव करेगा, उससे जीवों का कारज कुछ नहीं बन सकेगा, और न उनकी टेक पिछले इष्टों और करम धरम की काटी जावेगी, और न राधास्वामी मत की पूरी प्रतीत आवेगी, और न राधास्वामी दयाल के चरनों का पक्का और सच्चा इष्ट बँधेगा॥

५६—जो हाल कि ऊपर लिखा गया अभ्यासी

सतसंगियों का है। जिन्होंने मान बड़ाई और धन और भोगों के लालच से बग़ैर हुक्म और इजाज़त के उपदेश करना शुरू कर दिया है, या थोड़ी सी इजाज़त ख़ास शर्तों के साथ हासिल करके, और फिर उन शर्तों को भूल कर मन मुखता के साथ काररवाई उपदेश की आम तौर पर जारी कर दी है, इन लोगों को अपने परमारथी फ़ायदह का ख़्याल पेश नज़र रख कर ऊपर की हिदायत के मुवाफ़िक़ अमलदरामद करना चाहिये, और जो कोई उनको उनकी नाक़िस काररवाई से आगाह करके सलाह मुनासिब देवे, उसका बचन प्यार भाव से सुन कर, और अपने मन में ग़ौर और बिचार करके, मानना चाहिये, नकि उससे नाराज़ होकर और उसको ईर्षावान समझ कर अपने उपदेशियों का गोल जुदा बाँध कर, और सतसंग से अलहदा होकर अपनी गुरुवाई न्यारी चलाना॥

५७—जो कितने ही साधू या ग्रहस्त सतसंगी इस तरह की काररवाई करेंगे, तो बहुत से जुदे २ गोल हो जावेंगे, और एक दूसरे का आपस में इत्तफ़ाक़ न होगा, और जो वे साधू या ग्रहस्त सतसंगी अपने आप को गुरु और सतगुरु थाप कर अपनी पूजा और मानता जुदी जारी करेंगे, और राधास्वामी

दयाल की संगत और गुरुद्वारे से जो आगरे में है अपना तअल्लुक़ न रक्खेंगे, या मेल मिलाप छोड़ देंगे, तो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का इष्ट और उनके चरनों की भक्ती आहिस्ता २ कम या गुम हो जावेगी, इस में बड़ा भारी हर्ज राधास्वामी मत के प्रकाश में आके होगा, और यह भारी नुक़सान उनके सबब से पैदा होगा, जो ऐसी काररवाई मन हठ और अहंकार और खुद मतलबी की वजह से शुरू करेंगे, और समझौती पाने पर भी उस को अपने तौर से जारी रक्खेंगे ॥

५८—मुनासिब तो यह है, बल्कि हर एक राधास्वामी मत के सतसंगी पर फ़र्ज़ है, कि जो २ राधास्वामी दयाल का इष्ट रखते हैं, और राधास्वामी धाम में पहुँचना चाहते हैं, वे सब आपस में भाई चारे के तौर पर बर्ताव करें, और एक दूसरे से भाव और प्यार के साथ पेश आवें, नकि अपने २ उपदेशक की टेक बाँध कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का इष्ट भी ढीला करदें, और एक दूसरे की इर्षा करके आपस में विरोध पैदा करें, यह बड़ी लज्या की बात है, और इस मत पर जोकि आम भाई चारे का रिश्ता मज़बूत करने वाला है, भारी इल्ज़ाम लाती है, और

कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मौज के बर-खिलाफ़ है ॥

भाग नावाँ-९

हिदायत उपदेशियों को

क़िसम पहिली १

साधू और सतसंगियों के उपदेशियों को ॥

५९—जिस किसी के मन में सच्चे मालिक के मिलने और अपने पूरे उद्धार कराने की चाह है, उसको चाहिये कि जहाँ तक मुमकिन होवे, संत सतगुर या साधगुरू से उपदेश लेवे, और जो वे न मिलें तो उनके सच्चे प्रेमी सतसंगी से ग्रहस्त होवे या बिरक्त, उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे, और राधास्वामी दयाल का इष्ट बाँध कर उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ावे, वे अपनी मेहर से उसका संजोग संत सतगुर या साध गुरू से जब मुनासिब होगा, मिला दैंगे ॥

६०—जो उसके मन में उमंग पैदा होवे, तो तन और धन की सेवा राधास्वामी मत के साधू और सतसंगियों की भाव के साथ करे, लेकिन मन राधास्वामी दयाल के चरनों में लगावे ॥

६१—उपदेश करता को वक्त लेने उपदेश के अपना गुरू न बनावे, लेकिन उसको साधन करने वाला समझ कर उसका प्यार और भाव के साथ सतसंग करे, और जब २ उमंग होवे और वह मंजूर करे, तो तन धन की भी सेवा करे, और राधास्वामी दयाल के चरनौं का इष्ट बाँध कर अपना अभ्यास जारी रक्खे और संत सतगुर से मिलने की चाह मन मैं रक्खे, और जब मौज से वे मिल जावैं तब उन से गहरी प्रीत करे॥

६२—जब संत सतगुर से मेला होगा तब इसको घट मैं परचे मिलैंगे, और बाहर से भी सतसंग मैं इसको रस विशेष आवेगा, और संसय और भरम सहज मैं दूर होते जावैंगे, और प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं और भी सुरत शब्द मारग मैं बढ़ती जावेगी, इसी तरह आहिस्ता २ थोड़ी २ पहिचान संत सतगुर की होती जावेगी॥

६३—जो कोई उपदेश करता उपदेशी पर दावा गुरुवाई का बाँधे, या और किसी क़िसम का ज़ोर या हुक्म चलावे, या उसको खोज या तलाश से बाज़ रक्खे और उसके संग से सच्चे परमारथी की हालत थोड़ी बहुत न बदले, यानी प्रीत और प्रतीत राधास्वामी दयाल के

चरनों में बढ़ती न जावे, और संसार की तरफ़ से किसी क़दर बैराग या उदासीनता चित्त में न आवे, तो उस उपदेशक को सच्चा गुरू नहीं समझना चाहिये, उसके संग से उपदेशी का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा, ऐसी सूरत में उपदेशी को ऐसे उपदेशक के साथ सिर्फ़ साध भाव मानना चाहिये, और पूरे गुरू का खोज वास्ते अपने पूरे उद्धार के जारी रखना मुनासिब है, और जब तक पूरे गुरू से मेला नहीं होगा, तब तक कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल जिस क़दर मुनासिब होगा, ऐसे उपदेशी की सम्हाल फ़रमावेंगे, और रफ़्ता २ सतगुर से भी मेला करावेंगे ॥

६४—जब संत सतगुर मिल जावें, तो उपदेशी सतसंगी को मुनासिब है, कि पहिले उपदेश करता से भी मेल ब दस्तूर जारी रक्खे, लेकिन जो वे उसको संत सतगुर की भक्ती से हटावें या उसमें बिघन डालें तो संत सतगुर से अर्ज़ हाल करके, और उनकी आज्ञा लेकर उस पउदेश करता से आइंदा को मेल मिलाप ढीला कर दे, या जो मुनासिब होवे बिल्कुल मौक़ूफ़ कर देवे ॥

६५—जो वे उपदेश करता सच्चा शौक़ परमारथ का रखते होंगे, तो वह आप सतगुर से मिलेंगे और अपने

उपदेशी को भी मिलावेंगे, और इसमें सब की प्रीत परसपर बढ़ेगी, और राधास्वामी दयाल के चरनों में भक्ती ज़ियादा मज़बूत होगी, और जो वे उपदेशक मानी और लोभी हैं और अपने परमारथी नफ़े नुक़सान का कुछ ख़्याल नहीं करते, तो वे आप भी सतगुर से नहीं मिलेंगे, और न अपने उपदेशी को मिलने की इजाज़त देंगे, और जो वह उनका कहना नहीं मानेगा तो उससे विरोध और लड़ाई करने को तैयार होंगे, ऐसे उपदेशक से सच्चे परमारथी को मेल रखना मुशकिल होगा, और उनसे एक न एक दिन नाता मुहब्बत का तोड़ना पड़ेगा, और इस हालत में उसपर किसी क़िसम का दोष नहीं आ सकता ॥

भाग नवाँ-९

क़िसम दूसरी

नसीहत संतों के उपदेशियों को ॥

६१—जिन लोगों ने कि संत सतगुर या साध गुरू से उपदेश लिया है, उनको चाहिये कि संत सतगुर या साध गुरू से गहरी प्रीत करें, और होशियारी से उनका सतसंग करें, और जिस क़दर कि अंतर और बाहर के सतसंग और परचों वग़ैरह से पहिचान उनकी होती जावे उसी क़दर उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते

जावें, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पूरी प्रीत और प्रतीत लावें, तब कारज उनका दुरुस्त बनेगा, क्योंकि निज स्वरूप संत सतगुर और राधास्वामी दयाल का एक ही है ॥

६७—ज़ाहर है कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में सतसंग करके और राधास्वामी मत और उसके भेद का निरनय सुन कर पूरी प्रतीत आ सकती है, और फिर प्रीत भी उनके चरनों में यानी अंतर शब्द स्वरूप में (जो उनका निज रूप है) की जा सकती है और इस तरह अंतर अभ्यास और बाहर का सतसंग दिन २ शौक़ के साथ जारी रह सकता है ॥

६८—लेकिन संत सतगुर और साध गुरू के चरनों में एकाएक ऐसी प्रीत और प्रतीत (जब तक कि थोड़ी बहुत उनकी पहिचान न आवे) नहीं हो सकती, और यह पहिचान उनकी दया पर मौकूफ़ है, चाहे वे अंतर और बाहर परचे देकर, जल्द उपदेशी की हालत को (जो वह सच्चा और उत्तम अधिकारी है) बदल देवें, यानी उसको थोड़ा बहुत प्रेम बख़्श देवें या जो वह मध्यम और निकृष्ट अधिकारी है, तो बाहर सतसंग और अंतर अभ्यास कराके आहिस्ता २ उसकी हालत बदलें, पर इन दोनों सूरतों में उपदेशी को लाज़िम और

ज़रूर है, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पूरी प्रतीत और उनकी दया का भरोसा लावे, तो उसको हर हालत में अंतर और बाहर सहारा मिलता रहेगा, और जब २ संत सतगुर या साध गुरू के तरफ़ से उसका मन रूखा और फीका हो जावेगा, उस वक़्त राधास्वामी दयाल उसकी मदद फ़रमावेंगे, जो वह उनकी बानी का पाठ और अंतर अभ्यास यानी ध्यान और भजन करता रहेगा ॥

६९—सतगुर स्वरूप में पूरा २ भाव और पूरी प्रतीत एकबारगी आनी मुशकिल है, और फिर उसका बराबर एक रस क़ायम रहना निहायत कठिन है, इस वास्ते जो कोई दानाई के साथ चाल चलेगा, यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पूरी प्रीत और प्रतीत करेगा, तो वह किसी वक़्त सतगुर से क़तई बेमुख नहीं होगा, क्योंकि देह रूप से सतगुर और राधास्वामी दयाल जुदा मालूम होते हैं, लेकिन निज रूप यानी शब्द स्वरूप उनका एक ही है, तो जब कोई सतगुर से रूखा फीका हो गया, और राधास्वामी दयाल के चरनों में उसका भाव व दस्तूर रहा, तो वह असल में सतगुर से भी बेमुख नहीं हुआ, सिर्फ़ उनके देह स्वरूप की तरफ़ उसका भाव घट गया, और ज़ाहिरी बर्ताव में रूखा फीका हो गया, पर उनके शब्द स्वरूप

को जो राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं प्रीत और प्रतीत रही आई ब दस्तूर पकड़े रहा, और उससे बेमुखता नहीं हुई, इस सूरत मैं अंतर अभ्यास और बानी का पाठ करने से जल्द या थोड़ी देर के बाद उसकी प्रीत सतगुर के देह स्वरूप मैं राधास्वामी दयाल की दया से ब दस्तूर हो जावेगी ॥

७०—इस वास्ते कुल्ल उपदेशी यानी सतसंगियौं पर फ़र्ज़ है, कि अपने फ़ायदा के वास्ते कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं गहरी और पूरी प्रतीत और प्रीत करैं, और सतगुर स्वरूप मैं भी जहाँ तक बन सके पूरा प्यार और भाव लावैं, और उनके देह स्वरूप को ऐसा समझैं, कि राधास्वामी दयाल अपने निज पुत्र यानी निज धारा के वसीले से आप उस स्वरूप में प्रवेश करके उनका कारज जिस क़दर कि बाहर से सँवारना मंज़ूर है बनाते हैं, और अंतर मैं अपने निज रूप यानी शब्द स्वरूप से सम्हाल करते हैं॥

७१—और राधास्वामी दयाल के देह स्वरूप मैं जो उन्हौंने धारन करके राधास्वामी मत का प्रकाश किया, और सहज जुगत मन और सुरत के चढ़ाने की सुरत शब्द मारग से (जिस से जीव का सच्चा उद्धार मुमकिन है) प्रघट करी, पूरा भाव और प्यार लाना

चाहिये, और बारंबार उनका शुकरानह अदा करना चाहिये, कि अति दया करके वास्ते जारी रखने उपदेश और उद्धार जीवों के संत सतगुर और साध गुरू और प्रेमी सतसंगी बनाते और पैदा करते जाते हैं, अगर संत सतगुर के स्वरूप को पिता माना जावे तो राधास्वामी दयाल के स्वरूप को महा पिता मानना चाहिये, क्योंकि वे संत सतगुर और साधगुरू के बनाने वाले और पैदा करने वाले हैं, और उन्हीं की मौज और दया की ताक़त से यह दोनों अपनी कारंरवाई जारी करते हैं, और उन्हीं का भरोसा रख कर जीवों को उपदेश निज धाम में पहुंचने का करते हैं और आप भी उसी धाम के बासी हैं ॥

७२—संत सतगुर को कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का पुत्र मानना चाहिये, सो जब किसी को उन की थोड़ी बहुत पहिचान आवे उसको मुनासिब है कि संत सतगुर के चरनों में पिता का भाव लावे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में (जो संत सतगुर के पिता हैं) परम पिता या महा पिता का भाव लावे, इस तरह उसकी प्रीत दोनों स्वरूपों में (यानी देह स्वरूप और शब्द स्वरूप में) दुरस्ती के साथ क़ायम रहेगी और बढ़ती जावेगी ॥

७३–इस क़द्र भेद जो ऊपर किया गया उस हालत मैं मान्ना होगा, कि जब किसी को थोड़ी बहुत परख और पहिचान संत सतगुर की आई है, नहीं तो आम तौर पर कुल्ल सतसंगियों को, चाहे उन्होंने उपदेश संत सतगुर से लिया है, या किसी सतसंगी से, मुनासिब और लाज़िम है कि राधास्वामी दयाल को कुल्ल मालिक यानी परमपुर्ष पूरन धनी मान कर, उन्हीं के चरनों में प्रेम प्रीत करैं और उनके शब्द स्वरूप में भाव और प्यार लाकर, उमंग के साथ अन्तर अभ्यास में लगैं, तब आहिस्तह २ उनकी दया की परख आती जावेगी, और फिर जो उपदेशक संत सतगुर हैं, तो उनकी गत और महिमाँ की भी ख़बर पड़ती जावेगी और उनमें भी भाव और प्यार उस दरजे का, जो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के निज और प्यारे पुत्र में लाना चाहिये, आता जावेगा ॥

भाग नवाँ-९

क़िसम तीसरी

हिदायत कुल्ल उपदेशी यानी राधास्वामी मत के सतसंगियों को ॥

७४—कुल्ल जीवों को जब कि वे राधास्वामी मत में शामिल होवें, और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर

अंतर अभ्यास में लगें, लाज़िम है कि राधास्वामी दयाल को कुल्ल मालिक और कुल्ल करता और सर्व समरत्थ और प्रेम और ज्ञान का भंडार समझें और उनके देह स्वरूप को जो उन्हों ने धारन करके राधास्वामी मत को प्रगट किया और सहज जुगत सुरत शब्द-मारग की वास्ते चढ़ाने मन और सुरत के बताई, कुल्ल मालिक राधास्वामी का औतार स्वरूप समझें, और दोनों में गहरी प्रतीत और प्रीत लावें, और उनकी मेहर और दया का आसरा और भरोसा लेकर अभ्यास शुरू करें ॥

७५—और जोकि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल अपने निज स्वरूप से कुल्ल के करता और धरता हैं, और कुल्ल रचना उनके आधीन है, इस वास्ते सच्चे मन से उनके चरनों की ओट और सरन लेना, हर एक सतसंगी पर फ़र्ज़ है, यानी सब कामों में उनकी मौज और दया का आसरा और भरोसा रखना चाहिये, और उन्हीं को अपना सच्चा हितकारी और उद्धार करता समझ कर उन का इष्ट और उनके चरनों में यानी उन के निज धाम में पहुँचने का इरादा पक्का और मज़-बूत करना चाहिये, तब उससे अभ्यास दुरुस्ती से बनेगा और कुछ अंतर में रस भी आवेगा, और दिन २ तर-क्क़ी होती जावेगी, और शौक़ भी बढ़ता जावेगा ॥

७६—गुरुस्वरूप में जो कि देहधारी है गहराभाव और प्यार जैसे कि कुल्ल मालिक के चरनों में पैदा हो सकता है आना बहुत मुश्किल है जब तक कि सतसंग और अभ्यास करके उनकी थोड़ी बहुत परख और पहिचान न आवे इस वास्ते विना पहिचान के जो कोई उनकी महिमा करेगा वह सुनी हुई या पढ़ी हुई होगी, और जब तक कि अंतर हिरदे से भाव और प्यार न उपजेगा तब तक भक्ती के अंगों में जैसा कि चाहिये अंतर और बाहर दुरुस्ती और सचौटी के साथ नहीं बर्ता जावेगा ॥

७७—लेकिन जब किसी को अंतर में रस और आनन्द मिलेगा, और शुकरानह में सेवा की उमंग उठेगी, उस वक़्त जो वह राधास्वामी दयाल के साथ बर्ताव करना चाहे उसको मुनासिब है कि संत सतगुरु या साध और सतसंगी के साथ थोड़ा बहुत वही बर्तावा करे, क्योंकि राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है कि संत सतगुरु उनका निज रूप, और साध और सतसंगी, उन के देह स्वरूप हैं, जो कोई उनकी सेवा करेगा वह राधास्वामी दयाल की सेवा में शुमार की जावेगी, और उसका फल यानी भक्ती और प्रेम वे अपनी मेहर से आप देवेंगे ॥

भाग दसवाँ-१०

क़िसम पहिली

जवाब बाज़े सवालों और संदेहों का जो कि प्रेमी अभ्यासियों के मन में निस्बत बर्ताव भक्ती के सतगुरु स्वरूप और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में अक्सर पैदा होते हैं ॥

७८–जो कोई कहै कि राधास्वामी दयाल की बानी में जहाँ तहाँ महिमाँ संत सतगुरु स्वरूप की कही है, और यह कि जब तक कि गुरुस्वरूप में पूरा प्यार नहीं आवेगा तब तक शब्द यानी निज स्वरूप की प्राप्ती नहीं होगी, यह बचन सच्च है, लेकिन समझना चाहिये कि ऐसा भाव और प्यार गुरुस्वरूप में, जब तक कि सतसंग और अभ्यास करके कुछ अंतर में रस नहीं मिलेगा, और थोड़ी बहुत पहिचान नहीं आवेगी नहीं आवेगा, और जब तक कि ऐसी हालत न होवे तब तक बदस्तूर मुख्यता प्रेम और प्रीत की कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में करना चाहिये ॥

७९—संत मत में प्रेम की भारी महिमाँ है और सबब उसका यह है, कि जहाँ जिसका सच्चा और पूरा प्रेम है वहीं उसका तन मन धन सहित झुकाव होता है, और या तो वह आप चलके प्रीतम से मिलता है, या प्रीतम उसको आप बुला लेता है, या आप ही चल कर उस्से मिलता है ॥

८०—परमार्थ में जब किसी का सच्चा प्रेम महिमा सुन कर और जगत और उसके पदार्थों की नाशमानता देख कर, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में आया, तब राधास्वामी दयाल दया करके, अपने पुत्र यानी निज धारा के वसीले से, आप उस प्रेमी को चरनों में लगाते हैं, और रास्तह का भेद देकर उसको निज धाम में बुलाने और पहुंचाने के निमित्त जुगती के साथ अभ्यास कराते हैं, यह पुत्र यानी निज धारा का स्वरूप उन्हीं का देह स्वरूप है, और इसका और उनका निज स्वरूप एक ही है, लेकिन जो कि देह स्वरूप की पहिचान कठिन है, इस सबब से प्रथम निज रूप की महिमाँ प्रेमी के हृदय में बसा कर उसी में उस-की प्रीत और प्रतीत लगाते हैं, और उसी स्वरूप से मिलने का जतन यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास कराते हैं ॥

८१—निज स्वरूप की महिमाँ और बड़ाई हर हालत मैं ज़्यादह से ज़्यादह है, और प्रेमी का बग़ैर उस स्वरूप की प्राप्ती के कारज पूरा नहीं बन सकता है, इस वास्ते जो काररवाई मुवाफ़िक़ ऊपर की दफ़े के उससे शुरू कराई गई, वह हर हालत मैं दुरुस्त है ॥

८२—लेकिन जो कि प्रेमी संसारी रूपौं मैं पहिले से लगा हुआ और अटक रहा है, और कुल्ल मालिक के निज रूप को न तो देखा है और न उसका सतसंग के बचन सुन कर अच्छी तरह अनुमान कर सकता है, इस वास्ते जैसा चाहिये उसमैं प्यार नहीं आ सकता ॥

८३—पर उसी निज स्वरूप का जो देह स्वरूप यानी संत सतगुरु रूप है, वह उन्हीं रूपौं के मुवाफ़िक़ है जिन मैं प्रेमी अपने स्वभाव के मुवाफ़िक़ संसार मैं प्रीत लगाता आया है, इस सबब से जो थोड़ी बहुत भी पहिचान संत सतगुरु की आ जावे, तो यह प्रेमी उनके स्वरूप मैं विशेष प्यार आसानी से ला सकता है, और अनेक तरह की सेवा तन मन धन से करके उस प्यार को बढ़ा सक्ता है, और फिर उसी स्वरूप का अंतर मैं अस्थान २ पर ध्यान करके और जब तब मेहर और दया से दर्शन पाकर अपने मन और सुरत को उनके चरनौं के स्पर्श करने के निमित्त सहज मैं चढ़ा

सक्ता है, और आहिस्तह २ एक दिन धुर धाम मैं पहुंच सकता है ॥

८४—जिस वक्त कि ध्यान की मदद से मन और सुरत सिमट कर किसी अस्थान पर पहुंचैंगे, या जम जावैंगे, तब शब्द भी साफ़ सुनाई देवेगा, और उसकी धुन को पकड़ के सुरत जल्द चढ़ेगी ॥

८५—नीचे के अस्थानौं यानी षट चक्र मैं सिमटाव और चढ़ाई बग़ैर मदद और ध्यान गुरु स्वरूप के किसी क़दर मुमकिन है, यानी वहाँ ध्यान मुक़ामी स्वरूप का किसी क़दर काम दे सकता है, लेकिन ऊँचे मुक़ामौं की चढ़ाई सि-र्फ़ शब्द के आसरे बग़ैर मदद गुरुस्वरूप के मुशकिल है ॥

८६—जो कोई कहे कि गुरु स्वरूप नाशमान है, उस का ध्यान करना फ़ज़ूल है, और वह पूरा फ़ायदा नहीं देगा, उसका यह जवाब है, कि जो अकार गुरुस्वरूप का प्रेमी ध्यानी के अंतर मैं प्रघट होगा और होता है, वह स्वरूप चेतन्य अन्तरजामी आप धारन करता है, और जो कि चेतन्य अबिनाशी है, और प्रेमी ध्यानी के सदा संग है, इस वास्ते वह स्वरूप भी अबिनाशी और सदा ध्यानी के संग रहेगा, जहाँ तक कि रूप और अकार की रचना है, और जहाँ से कि अरूपी कारख़ाना शुरू हुआ है, वहाँ तक वही स्वरूप प्रेमी

को पहुंचा देगा, और अरूप से मिला देगा, और जिस क़दर कि चढ़ाई रास्ता में होती जावेगी, उसी क़दर वह अकारी स्वरूप झीना और सूक्ष्म और ज़्यादह से ज़्यादह नूरानी होता जावेगा, और एक दिन अरूप से मिला कर छोड़ेगा, और वहाँ पर सतगुरु का अकारी स्वरूप और उनका निजरूप (जो अरूप है) और प्रेमी सेवक का रूप भी जो ऊँचे देश में चढ़ाई के साथ सूक्ष्म और नूरानी होता चला गया है, सब एक यानी अरूप हो जावेंगे, और फिर निराकार यानी अरूपी स्वरूप से यह प्रेमी सेवक अपने कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों के आनंद और बिलास को प्राप्त होगा ॥

८७—इस तौर से सतगुर स्वरूप में प्रेम और प्रीत लगाने से बहुत जल्द प्रेमी का बंधन बाहर के रूपों से ढीला और कम हो जाता है, और अंतर में चढ़ाई निज रूप से चल कर मिलने के निमित्त आसान हो जाती है ॥

८८—लेकिन हर सूरत और हालत में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज स्वरूप की (जो कि अथाह और अपार और अनंत और प्रेम और ज्ञान का भंडार है) महिमाँ और बड़ाई और मुख्यता भक्ति भाव की अंतर और बाहर बर्ताव में बदस्तूर

जारी रहेगी, क्योंकि वही सतगुरु का निज स्वरूप है, और सेवक के पहुंचने का निजधाम है, यानी वहाँ जाकर उसकी भक्ती पूरन होगी, और वहाँ उसको पूरन और अमर आनन्द प्राप्त होगा ॥

भाग दसवाँ-१०

क़िस्म दूसरी

जवाब बाज़ तर्कों का जो कोई २ सतसंगी और दुनियाँ के लोग निसबत बर्तावे समाध और तसवीर राधास्वामी महाराज के करते हैं ॥

८९-कोई २ सतसंगी और मूरत पूजा वाले ऐसी तर्क करते हैं कि राधास्वामी बाग़ में जो समाध और तसवीर पर हार फूल चढ़ाये जाते हैं, और परशाद भेंट भी रक्खा जाता है, यह कारर्वाई मूरत पूजा वालों के मुवाफ़िक़ है, सो यह कहन और समझ उनकी बिल्कुल ग़लत है, यहाँ यह कारर्वाई निशान सिर्फ़ अदब और प्यार का है, क्योंकि जो नये सतसंगी राधास्वामी मत के आते हैं, वह बहुत शौक़ के साथ देखना चाहते हैं, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का कैसा स्वरूप था

और वे तसवीर का दर्शन करके बहुत ख़ुश होते हैं, और जो राधास्वामी दयाल के चरनों में भाव और प्यार के सबब से उमंग सेवा की उनके मन में पैदा होती है, तब वे हार और फूल और शीरीनी और नक़द वग़ैरह वहाँ पेश कश करते हैं, यानी सनमुख रखते हैं, हार और फूल उलट कर चढ़ाने वालों को दे दिया जाता है, और शीरीनी साधुओं और सतसंगियों को वहीं तक़सीम कर दी जाती है, और नक़द रुपया साधुओं और बाग़ के ख़र्च में आता है॥

१०—आम तौर पर मन का ख़्वास है कि जिस किसी की परमारथ में या दुनिया में बड़ाई और महिमा सुने तो उसके दर्शनों की उमंग और चाह उठाता है, और जो वे उस वक़्त मौजूद न होवें तो उनकी तसवीर या निशान के देखने को चाहता है, और उसको देख कर बहुत मगन होता है॥

११—अब ख़्याल करो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों को, या उनकी तसवीर या निशानों के देखने की, किस क़दर अभिलाषा सतसंगी के दिल में (कि जिसने उनके निज स्वरूप का इष्ट धारन किया है और उनके निज धाम में पहुँचना चाहता है) पैदा होनी चाहिये, और जब वह इस इरादा से

शहर आगरे में पहुँच कर राधास्वामी बाग़ में (जहाँ कि महाराज कुछ अर्सह तक रहे) जाता है, और उन की यादगार समाध और तसवीर और पलँग और भजन करने की चौकी और खड़ाऊँ वग़ैरह का दर्शन करता है, उस वक़्त उसका चित्त निहायत मगन होता है, और उसके मन में भाव और प्यार ज़्यादा पैदा होता है, और जैसे कि कोई अपने प्यारे से मिलने को जावे उस वक़्त कोई चीज़ उम्दा या तोहफ़ा उसके लायक़ ले जाता है, वैसे ही यह प्रेमी अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ भैंट और शीरीनी और हार फूल वग़ैरह पेश करता है, और जो उमंग ज़्यादा है तो जिस क़दर बन सके उस मकान की और भी साधुओं की जो वहाँ रात दिन रहते हैं; तन की सेवा करके अपना परमारथी भाग बढ़ाता है ॥

९२—क्योंकि जब राधास्वामी दयाल सर्ब समरत्थ और कुल्ल मालिक हैं, और वक़्त छोड़ने चोले के उन्हों ने अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया कि हम बराबर निगरानी सतसंगियों की रक्खेंगे, तो जो कोई उनके चरनों में भाव और प्यार लाता है, या उनकी महिमा सुनकर उमंग के साथ कोई सेवा करता है, तो वे ज़रूर उस पर थोड़ी बहुत दया फ़रमावेंगे, यानी उस को भक्ती और प्रेम दान देंगे ॥

६३-इस क़िस्म का बर्ताव मूरत पूजा में किसी तरह दाख़िल नहीं हो सकता। हर मुल्क में और हर शहर में हर एक अपने २ प्यारे रिश्तेदार या दोस्त की यादगार या निशान या तसवीर को बारम्बार देखना चाहता है, और उसकी समाध और क़बर पर वक़्त फ़वक़्त हार फूल और उम्दा चीज़ खाने पीने की पेश करता है यानी चढ़ाता है, फिर जो परमारथी लोगों ने अपने मत के आचार्य की तसवीर या निशान या समाध के साथ ऐसी काररवाई करी तो क्या अचरज है, और वह किस तरह मूरत पूजा में दाख़िल हो सकती है, ख़ास कर जब कि वहाँ बाग़ में सतसंग मौजूद है, और मूरत पूजा वग़ैरह का बराबर खंडन होता है, और भी बानी में जा बजा शब्द और सतगुर वक़्त की भक्ती का हुक्म है॥

६४—लोग अपनी अन समझता और अबिचारता से तर्क और तान और ठठोली की बातें करते हैं, और जो वे ज़रा भी ग़ौर करें और दुनियाँ के और मन के हाल पर नज़र करें तो उनको साफ़ मालूम होवेगा, कि वह कारस्वाई जो महाराज राधास्वामी की समाध और तसवीर और निशानी वग़ैरह की निस्बत जारी है वह ज़हूरा और निशान सिर्फ़ प्रेम और भाव और

अदब का है, और असली काररवाई परमारथ की यानी सतसंग और शब्द का अभ्यास और जो सतगुर या साध मिल जावैं, तो उनकी पूजा और सेवा और राधास्वामी दयाल की बानी का समझ २ कर पाठ और उनके बचनौं का मनन व दस्तूर जारी है, फिर ऐसी जगह मूरत पूजा का कहाँ दख़ल हो सकता है ॥

९५—मालूम होवे कि एक मकान ख़ासकर राधास्वामी मत के अचारज और प्रघट करनें वाले सहज जोग यानी सुरत शब्द अभ्यास के नाम से तइयार होना निहायत ज़रूर और मुनासिब मालूम हुआ, ताकि कुल्ल सतसंगी हर एक देश के (जो कि राधास्वामी मत मैं शामिल हावैं) एक जगह ख़ास पर, यानी सद्र मुक़ाम जहाँ कि राधास्वामी दयाल प्रघट हुये, किसी वक्त मुऐयनह पर जमा होकर आपस मैं मिलते रहैं, और एक दूसरे की हालत प्रेम और भक्ती और अभ्यास की देख कर परसपर फ़ायदा उठावैं, और राधास्वामी मत के तअल्लुक़ जो किसी को कुछ दरियाफ़्त करना या कहना होवे वह एक जगह बैठ कर उसका तज़्करह करैं, और अपनी २ आज़मायश और तजर्बह का हाल थोड़ा बहुत मुनासिब तौर से

ज़ाहर करके एक दूसरे की प्रीत और प्रतीत बढ़ावैं, और आपस में मुहब्बत और इत्तफ़ाक़ परमारथी भाई चारे का पैदा होवे, और सब कोई अपने अपने मुवाफ़िक़ इस भारी और सहज और अन उपमां जोग मत और अभ्यास के प्रकाश करने यानी अधिकारी जीवों के समझाने बुझाने में मदद देवें, और ऐसा मकान सिवाय राधास्वामी बाग़ के जहाँ राधास्वामी दयाल कुछ अर्सा तक आप रहे, और वहीं उनकी समाध बतौर यादगार बनाई गई है, और उनकी तसवीर और निशानात वग़ैरह मौजूद हैं, दूसरा नहीं हो सकता ॥

९६—इस वास्ते मुनासिब है कि कुल्ल सतसंगी वक़्त मेले के (जो बिलफ़ेल साल भर में एक मर्तबा होता है) या दो साल में एक मर्तबा या साल भर में चंद बार जब २ जिसको मौक़ा मिले आगरे में आकर, ज़रूर दर्शन समाध या तसवीर या निशान वग़ैरह का करें, और सतसंग में जो हर रोज़ जारी है शामिल होकर अपने संसय और भरम दूर करावें, और प्रीत और प्रतीत बढ़ावें और अभ्यास में मदद लेवें, क्योंकि बग़ैर सतसंग के अहंकार और मूर्खता और बिपरीत दूर नहीं हो सकते, और न अंतर अभ्यास में जैसा

कि चाहिये तरक़्क़ी मुमकिन है, और न आपस में हर मुल्क और शहर के सतसंगियों में भाव और प्यार पैदा हो सकता है ॥

भाग दसवाँ-१०

क़िसम तीसरी

बाज़े सतसंगियों की अनजानता की बोल चाल और समझौती का वर्णन और उनको नसीहत ।

१०—ऐसे सतसंगी कि जो संत सतगुर से मिलें, और उनके चरनों में थोड़ी बहुत पहिचान करके उनका भाव और प्यार आवे, बहुत कम होंगे, और जो उन में से कोई ऐसा कहें या ख़्याल करें कि हम को सतगुर वक़्त मिल गये, और अब कोई ज़रूरत किसी के मानने की नहीं रही, यह कहन उनकी अन समझता की है, क्योंकि जब वह पहिले सतसंग में आये और उपदेश लिया उस वक़्त तो उनको सतगुर में वैसा भाव (कि जो सतसंग और अभ्यास करके कोई दिन में पैदा हुआ) नहीं था, और उस वक़्त वे कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के निज स्वरूप में जो कि अपार और अनंत है, भाव और प्यार लाकर राधास्वामी मत में शामिल हुये ।

फिर रफ़्ता रफ़्ता सतसंग और अभ्यास करके और घट में परचे पाकर उनकी समझ बढ़ी, यानी सतगुर को राधास्वामी दयाल का निज पुत्र और मंज़ूर नज़र यानी प्यारा मानने लगे, और किसी २ ने ऐसी समझ धारन की कि सतगुर राधास्वामी दयाल के देहस्वरूप हैं. और राधास्वामी पद उनका निजरूप और निज धाम है, इन दोनों सूरतों में निज स्वरूप राधास्वामी दयाल की महिमा और बड़ाई बदस्तूर रही, यानी वह पिता और भंडार स्वरूप हुआ और देह रूप निज धार और पुत्र स्वरूप हुआ, फिर जब कि इन दोनों स्वरूप की महिमा और बड़ाई सतसंगी के हिरदे में समझ बूझ के साथ बस गई, और जो वह समझदार और विचारवान है तो राधास्वामी दयाल के उस देह स्वरूप की जो उन्हों ने प्रथम धारण करके राधास्वामी मत और उसकी नवीन और सहज जुगत को प्रघट किया वैसी ही महिमा और बड़ाई समझ कर प्रीत भाव उनके चरनों में लावेगा, जैसा कि अपने वक्त के सतगुर के देह स्वरूप में, लेकिन जो कि वह स्वरूप उसके सामने प्रघट नहीं है यानी गुप्त हो गया, इस वास्ते जो उसका याद-गार और बानी बचन या निशान या तसवीर मौ-

जूद है, तो उसको उसी नज़र भाव और अदब और प्यार से देखेगा, और उसके साथ वैसा ही बर्ताव करेगा, जैसे कि वक्त के सतगुर की तसवीर और उनके बैठने और पहिरने और बर्तने की चीज़ों से बर्तता है, क्योंकि निज रूप दोनों यह स्वरूपों का एक ही है, और वह अमर और अजर और सदा एक रस मौजूद है, देह स्वरूप जुदा २ होंगे पर जो शब्द कि उनमें व्यापक है वह हमेशा एक ही है फिर जो किसी देह स्वरूप का कोई निरादर करेगा या उसको ओछा समझेगा, तो गोया उसने निज रूप का निरादर किया और उसको ओछा समझा, फिर ऐसी समझ से दूसरा देह स्वरूप जिस में वही निज रूप यानी शब्द मौजूद है, कैसे उससे राज़ी होगा ॥

ऐसी समझ और ऐसा बर्ताव ज़ाहर करता है कि उस सतसंगी की पहिचान और समझ संत सतगुर और उनके निज रूप की जैसा कि चाहिये बिलकुल नहीं आई, नहीं तो वह एक देह स्वरूप का आदर और दूसरे देह स्वरूप का निरादर न करता, यानी दोनों स्वरूप में किसी तरह का भेद और फ़र्क़ न समझता, बल्कि जो संत सतगुर बनाये हुये उस आद स्वरूप या भेजे हुए निज रूप के हैं, तो वह आदि देह

स्वरूप और निज स्वरूप दोनों पिता के स्वरूप हुये, और मौजूदह स्वरूप संत सतगुर का पुत्र रूप हुआ, तो हर सूरत और हालत में पितारूप की महिमाँ और आदर ज़्यादह चाहिये, न कि कम, और जो कोई यकताई समझे तो भी दोनों में भाव और प्यार बराबर होना चाहिये, और जो कोई कमी करे तो उसकी समझ ओछी और ग़लत है ॥

९८—यह बात सही है कि ऐसा बर्ताव जैसा कि ऊपर लिखा गया, वक्त मौजूदगी दोनों स्वरूप के हो सक्ता है, और जब कि कोई स्वरूप गुप्त हो गया, तब उस के साथ बर्ताव भी बन्द हो गया, लेकिन उस स्वरूप के तसवीर या बानी बचन या कोई याद गार में वैसाही बर्ताव प्यार और अदब के साथ किया जावेगा; जैसा कि मौजूदह सतगुर के तसवीर और बानी बचन और कार आमद चीज़ों में किया जाता है ॥

९९—निज रूप की महिमाँ और बड़ाई भारी है और हमेशह एक सी रहेगी, और कुल्ल जीव पहिले उसी में प्रीत और प्रतीत लाकर राधास्वामी मत में शामिल होवेंगे, और पीछे आहिस्तह २ थोड़ी बहुत पहिचान सतगुर स्वरूप की करते जावेंगे, और उसी मुवाफ़िक़ उस में भाव और प्यार लाते जावेंगे, और

जब तक कि पूरी पहचान नहीं आवेगी तब तक पूरी प्रीत और प्रतीत बदस्तूर निज स्वरूप की कीजावेगी, और जो कि कुल्ल सतसंगियों का निशान और पहुँचने और बिसराम करने का धाम वही निज स्वरूप यानी राधास्वामी पद है, इस वास्ते उसकी प्रीत और प्रतीत कभी घट नहीं सक्ती और सतगुरुरूप की प्रीत और प्रतीत में मुवाफ़िक़ हर एक सतसंगी की समझ बूझ और पहिचान और परचों के हमेशह फ़र्क़ रहेगा, यानी कुल्ल सतसंगियों की प्रीत प्रतीत में बहुत से दरजे होंगे, फिर जो कोई अपनी प्रीत प्रतीत को सिर्फ़ सतगुर के स्वरूप पर ख़तम करे, यह मुनासिब नहीं है; निज स्वरूप और देह स्वरूप का भेद हमेशह रहेगा, और शब्दस्वरूप की महिमाँ देह स्वरूप से ज़ियादह समझनी चाहिये, और जब कोई पूरी समझ लेकर इन दोनों की एकताई करे तो भी उसकी बोल चाल ऐसी होनी चाहिये, कि जिस में किसी स्वरूप का निरादर या ओछापन न पाया जावे, और मुख्यता हरहालत में शब्द स्वरूप की रहेगी; पर जब तक कि देह स्वरूप मौजूद है ज़ाहर में उस की मुख्यता और अंतर में शब्द स्वरूप और भी देह स्वरूप की मुख्यता (जहाँ तक कि देह स्वरूप की पहुँच है) करे तो दुरुस्त है,

जैसा कि इस शब्द में राधास्वामीदयाल ने फ़रमाया है ॥

शब्द

गुरू मोहि अपना रूप दिखाओ ॥ टेक ॥
यह तो रूप धरा तुम सरगुन, जीव उधार कराओ ॥१॥
रूप तुम्हारा अगम अपारा, सोई अब दरसाओ ॥ २ ॥
देखूँ रूप मगन होय बैठूँ, अभय दान दिलवाओ ॥ ३ ॥
यह भी रूप पियारा मोको, इस ही से उसको समझाओ ॥४॥
बिन इस रूप काज नहिं होई, क्योंकर वाहि लखाओ ॥५॥
ताते महिमाँ भारी इसकी, पर वह भी लखवाओ ॥ ६ ॥
वह तो रूप सदा तुम धारो, याते जीव जगाओ ॥ ७ ॥
यह भी भेद सुना मैं तुमसे, सुरत शब्द मारग नित गाओ ॥८॥
शब्द रूप जो रूप तुम्हारा, वामें भी अब सुरत पठाओ ॥९॥
डरतारहूं मौत और दुख से, निरभय कर अब मोहि छुड़ाओ१०
दीन दयाल जीव हितकारी, राधास्वामी काज बनाओ११॥

१००—जो कि पूरे प्रेमी सतसंगी जिनको वक़्त के संत सतगुर स्वरूप में पूरा भाव आया है, बहुत कम होंगे, और बाक़ी दरजे बदरजे अपनी २ प्रतीत के मुवाफ़िक़ सतगुर में भाव और प्यार लावेंगे, और बाज़े नवीन सतसंगी उनको सिर्फ़ उपदेश करता और साधना करने वाले ख़्याल करके उसी मुवाफ़िक़

उनको बड़ा मानेंगे, और पूरा भाव निज स्वरूप यानी राधास्वामीदयाल के चरनों में लावेंगे, इस वास्ते अव्वल दरजे के सतसंगियों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपनी बोल चाल और ज़ाहरी बर्तावा, निसबत राधास्वामीदयाल के आदि स्वरूप और उसके निशान और यादगार वग़ैरह, और वक़्त के सतगुर के स्वरूप और सामान वग़ैरह में, इस तौर पर दुरस्त रक्खें जैसा कि ऊपर बयान हुआ है, और एकअंगीपन की बातें हर एक के रूबरू न करें, और ऐसा एकअंगीपन इख़्तियार न करें, जिस में किसी स्वरूप का निरादर या ओछापन पाया जावे ॥

अपने वक़्त के सतगुर स्वरूप में उनको इख़्तियार है, चाहें जिस क़दर भाव और प्यार लावें, और उमंग के वक़्त चाहें जैसी सेवा करें, मगर इस क़दर होशियारी रक्खें, कि किसी हालत और किसी सूरत में, आदि देह स्वरूप या निज स्वरूप राधास्वामी-दयाल के आदर भाव और महिमा में फ़र्क़ न आवे, और न किसी तरह पर उनका निरादर ज़ाहरी बर्ताव में पाया जावे; इस में उन सतसंगियों को निज स्वरूप और आदि देह स्वरूप और मौजूदह सतगुर स्वरूप की दया और मेहर बराबर प्राप्त होगी, नहीं

तो बेपरवाही और बेअदबी की बोल चाल और बर्ताव में वह किसी न किसी स्वरूप की दया से महरूम रहेंगे, और उन की भक्ती में भी थोड़ा बहुत खलल पड़ेगा, और समझ बूझ भी उन की किसी क़दर ओछी और ना दुरस्त रहेगी ॥

१०१—खुलासह यह है कि सच्चे प्रेमी सत संगी और कुल्ल सतसंगियों को चाहे वे जिस दरजे के होवें, आपस में मेल मिलाप रखना चाहिये, और सब को एकही इष्ट कुल्ल मालिक राधास्वामीदयाल के निज स्वरूप का धारन करना मुनासिब है, और सब को वक़्त के संत सतगुर में अपनी २ समझ और प्रतीत के मुवाफ़िक़ भाव और प्यार और अदब के साथ बर्ताव करना चाहिये, और जो ग्रहस्त या बिरक्त सतसंगी उपदेशक होवें (बशरते कि वे खुद मतलबी और मानी और अहंकारी न हो जावें) उन में भी मुवाफ़िक़ हर एक के दरजे के प्रीत भाव के साथ बर्ताव चाहिये, क्योंकि जो सब का इष्ट एकही यानी राधास्वामी दयाल हैं, और सब का निज घर भी एक ही यानी राधास्वामीधाम है, और सब का असली उपदेशक वही बानी और बचन राधास्वामीदयाल के हैं, तो सब का आपस में इत्तफ़ाक़ और दिली मुहब्बत और प्यार होना चाहिये ॥

ज़ाहिरी उपदेश चाहे जिससे हासिल किया होवे पर हिदायत और तालीम और जुगत और अभ्यास तो सब का एकही होगा, इस वास्ते कुल उपदेशक और उपदेशियों को राधास्वामीदयाल के दरबार में प्यार भाव के साथ मिलना चाहिये, और इसी तरह से जहाँ कहीं जिस किसी का इत्तफ़ाक़ से मेला हो जावे तो हर एक सतसंगी को मुनासिब है, कि एक दूसरे के साथ मुहब्बत से पेश आवे, और परमार्थी भाई चारे के मुवाफ़िक़ बर्ताव करे, और ईर्षा और विरोध और खुद मतलबी को अपने मन में दख़ल न देवे, क्योंकि यह दस्तूर और आदत संसारी जीवों की है, और सच्चे परमार्थियों का स्वभाव उन से जुदा होना चाहिये, यानी आमतौर पर उनके मन में सफ़ाई और प्यार और दया सतसंगी भाइयों पर ख़ास कर, और कुल्ल जीवों की तरफ़ आम तौर से, बग़ैर लिहाज़ क़ौम और मज़हब और देश और रंग रूप के, जारी होनी चाहिये ॥

भाग ग्यारवाँ-११

बर्णन कैफ़ियत कुल्ल मालिक के औतार स्वरूप की और उस की ज़रूरत

१०२—बाज़े अपनी अनजानता और ओछी समझ

के मुवाफ़िक़ ख़ियाल करते हैं, कि औतार स्वरूप कुल्ल मालिक नहीं हो सकता, या यह कि कुल्ल मालिक देहस्वरूप में नहीं समा सकता, यह समझ उनकी दुरुस्त नहीं है, जैसा कि इस दृष्टान्त से ज़ाहर होता है, दृष्टान्त—

जिस वक़्त कि समुद्र में जुवार भाटा आता है, यानी उसकी लहर उठ कर समुद्र से सौ २ कोस तक बराह दरिया बढ़ती चली जाती है, और कुछ अर्से ठहर कर फिर समुद्र में लौट आती है, तो जिस क़दर देर तक वह लहर सौ कोस में फैली रही, वह समुद्र की लहर कहलाती है, यानी ख़ुद समुद्र वहाँ मौजूद है, और अपने समुद्ररूप से (जो कि बहुत बड़े हिस्सह ज़मीन को घेरे हुये है) जुदा न हो और सिमट कर फिर वही समुद्र रूप हो जाती है, इसी तरह औतार स्वरूप कुल्ल मालिक की लहर हैं, कि जो उस अपार सिंध स्वरूप चेतन्य से निकल कर और ब्रह्मांड में होकर पिंड में आकर ठहरी, और जिस क़दर अर्से तक उस का पिंड में ठहराव रहा, वह लहर अपने सिंध स्वरूप से जुदा नहीं हुई, और रात दिन में चंद बार (अभ्यास के वक़्त) सिमट कर सिंध स्वरूप में उलट कर समा जाती है, और फिर

उत्थान करके और ब्रह्मांड में रवाँ होकर पिंड में ठहर जाती है, इस हालत में यह लहर रूप कभी पिंड के मुवाफ़िक़ महदूद नहीं होता, हमेशा सिंध के साथ उसका मेल और सिंध के मुवाफ़िक़ अपार और अनंत रहता है ॥

१०३—इस दृष्टान्त से साफ़ ज़ाहर है, कि लोगों की समझ निसबत महदूद होने कुल्ल मालिक सिंध स्वरूप के, बसबब फैलने यानी उतर आने उस की लहर के पिंड में, सही और दुरस्त नहीं है; यह कलाम आम जीवों की निसबत सही हो सकता है, कि उनकी धार जो सिंध से रवाँ होकर पिंड में आकर ठहरी, वह अपने आप से उलट नहीं सकती, यानी सिंध स्वरूप से मिलकर सिंध रूप नहीं होती; लेकिन औतार स्वरूप की निसबत ऐसा ख़्याल करना ग़लत है, क्योंकि उनके सब पट खुले होते हैं, और छिन भर में वह लहर या धारा सिंध स्वरूप, और कभी पिंड में धार रूप, होती रहती है, और कभी सिंध से जुदा नहीं होती; यानी उसके और सिंध के बीच में कोई पट या परदा हायल नहीं होता है ॥

१०४—ऐसा औतार स्वरूप जब कभी प्रघट हुआ वहाँ गोया कुल्ल मालिक ने आप नर रूप धारन किया

फिर उस स्वरूप की और कुल्ल मालिक की महिमाँ बराबर है, लेकिन इस औतार स्वरूप की पहिचान कठिन है, जीवों की क्या ताक़त है कि वे अपनी महदूद और ओछी समझ से इस औतार स्वरूप की गत मत जान सकें; यह पहिचान थोड़ी बहुत उसको आवेगी, कि जो उनका कोई काल प्रीत भाव के साथ संग करेगा, और उनकी जुगती का उन से उपदेश लेकर, उसकी थोड़ी बहुत अंतर में कमाई करके, उन की क़ुदरत और दया की अपने घट में परख करेगा, या उसको थोड़ी बहुत पहिचान आवेगी, कि जिसको वे अपनी दया से आप बख़्शिश फ़रमावें॥

आम तौर पर वे देह में बैठ कर जीवों के मुवाफ़िक़ बर्ताव करते हैं, और अपनी क़ुदरत और ताक़त का मुतलक़ दिखावा नहीं करते, और न किसी को जताते हैं कि वे कौन हैं, फिर जीवों की क्या ताक़त कि उनकी गत को जान सकें॥

१०५—जो कोई कहे कि मालिक को औतार लेने की क्या ज़रूरत और जो उसने औतार लिया यानी पिंड में आन समाया, तो क्या निज अस्थान ख़ाली हो गया॥

जवाब इसका यह है कि जुवार भाटे के वक्त जब समुद्र लहर रूप होकर सौ सौ कोस तक अपने किनारे से दूर चला गया, तो क्या उसका समुद्र रूप खाली हो गया, या कहीं जाता रहा; नहीं वह दोनों जगह एक ही वक्त में बराबर मौजूद है, उसका निज रूप न घटा न बढ़ा; इसी तरह औतार स्वरूप का हाल समझना चाहिये, कि उस का दोनों हालत में सिंध स्वरूप एकसां क़ायम रहता है ॥

१०६—और औतार स्वरूप की ज़रूरत की वजह यह है, कि कुल्ल मालिक का निज भेद कोई नहीं जान सक्ता, जब तक कि वह आप न जनावे, और जो भक्ती रीत कि उस मालिक ने संत रूप धर कर आप जारी फ़रमाई, उससे भी सब जीव बेख़बर हैं, वह रीत भी वह आपही जारी फ़रमाता है, और जो कि निज रूप से यह काररवाई दुरुस्त नहीं हो सक्ती, यानी उसकी अंतरी हिदायत और उपदेश को कोई नहीं सुन सकता है, या समझ सक्ता है, और न जीव को यह ख़बर पड़ सक्ती है, कि अंतर में कौन बोलता है, और न किसी बचन की (बग़ैर पहिले उपदेश और हिदायत ज़ाहरी स्वरूप से पाने के) समझ आ सक्ती है, क्योंकि जितने मत दुनिया

में जारी हैं उनके अचारज टटोलत्रों चले, यानी निज भेद से उस अस्थान और उसके धनी के, जहाँ तक कि उनकी पहुँच हुई वाक़िफ़ न थे; दुनिया में पैदा होकर और भेदी यानी गुरू से मिल कर उनको ख़बर पड़ी, और फिर अभ्यास करके और मन माया के बहुत से झकोले खाकर, उनको उस पद की प्राप्ती हुई, तब उन्होंने उसी पद की भक्ती और पूजा, या उसके ज्ञान यानी समझ बूझ का अपने साथियों को जिन्होंने उनका बचन माना उपदेश किया, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का देश और भेद किसी ने न जाना, क्योंकि सर्व मतों के अचारज किसी न किसी अस्थान पर माया की हद्द में रहे, और सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल का भेद और देश का हाल, और वहाँ पहुँचने का तरीक़ा, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप इस दुनियाँ में औतार स्वरूप धर कर प्रघट किया, और जिन जीवों ने उनका बचन माना, उन को अपने चरनों की भक्ती की रीत समझाई और उसकी काररवाई आप करवाई, और अपने चरनों के प्रेम की दात आप बख़्शिश करी ॥

१०७—जीवों की सुरत यानी रूह इस क़दर पिंड में नीचे उतर गई है, कि वे कुल्ल मालिक के निज

रूप का बचन नहीं सुन सक्के, और न समझ सकते हैं, और जो फ़र्ज़ किया कि किसी तरह से कोई बचन उतर कर सुनाया भी जावे, तो उसमें अनेक तरह के संसय और भरम पैदा करके उसकी प्रतीत नहीं करते, और न उसके मुवाफ़िक़ काररवाई करने को तइयार हो सकते हैं, इस वास्ते जब कि कुल्ल मालिक ने देखा कि सब जीव माया के घेर में कहीं न कहीं अटक रहे, और निज घर का भेद न पाकर उससे बिल्कुल बेख़बर रहे, और वहां कोई न जा सका और न रास्ता वहां पहुंचने का किसी को मालूम पड़ा, तब कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके आप संत रूप धारन किया, और अपना निज भेद और निज घर में पहुंचने का तरीक़ा आप प्रघट किया; अब जीवों को चाहिये कि राधास्वामी दयाल के बानी और बचन को अच्छी तरह समझ कर मानें, और उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास शुरू करें; और चरनों में निच्च सतसंग और अभ्यास करके प्रीत और प्रतीत बढ़ाते रहें, तो राधास्वामी दयाल की दया से एक दिन उनका कारज दुरुस्त बन जावेगा, यानी माया के घेर से निकल कर निज घर यानी दयाल देश में बासा पावेंगे, और अमर आनंद को प्राप्त होवेंगे,

और जो ऐसा न करेंगे तो माया के देश में बारम्बार किसी न किसी क़िसम की देह धर कर दुख सुख भोगते रहेंगे, और कभी सच्चा उद्धार उनका नहीं होगा, यानी दयाल देश में नहीं जाने पावेंगे, और न पूरन और अमर आनंद को प्राप्त होंगे ॥

१०८—जिन जीवों को कि संत सतगुरु अपनी दया से सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में पहुंचावे, वह जीव फिर उलट कर इस देश में नहीं आ सकते, क्योंकि वहां का आनंद और बिलास ऐसा गहरा और भारी है कि वह उन से छोड़ा नहीं जा सकता, और फिर माया देश की तरफ़ उनकी तवज्जह नहीं होती ॥

१०९—जो कोई पूछे कि ब्रह्म पद का भी औतार स्वरूप प्रघट होता है या नहीं, तो जवाब उस का यह है कि हाँ होता है, क्योंकि जो ऐसा न होता तो ब्रह्मपद का भी भेद पूरा २ किसी को मालूम न होता, जब २ ब्रह्म ने औतार जोगी और जोगेश्वर रूप धारन किया, तब २ उस पद का भेद और उस रचना का हाल, जो उसके नीचे है प्रघट किया और गुरवाई की चाल चलाई, और मालूम होवे कि, पूरन औतार ब्रह्म का कभी २ होता है, पर कलायें उस मुक़ाम से अक्सर प्रघट होती रहती हैं, और रचना की सम्हाल करती रहती हैं ॥

११०—और मालूम होवे कि संत अवसर रचना में प्रघट होते रहते हैं, पर गुप्त रहते हैं, और जब तक कि राधास्वामी दयाल की मौज न होवे सतसंग खड़ा नहीं करते, और न आम तौर पर उपदेश संत मत का करते हैं ॥

१११—संत सतगुरु को इख़्तियार है कि जिस को वे पसंद करें, सतसंग और भक्ती करा कर संत बना देवें, जिस पर ऐसी कृपा होवे वही बड़भागी है ॥

बचन ६

बर्णन इस बात का कि जब तक गुरमुखता नहीं आवेगी, यानी राधास्वामीदयाल के चरनों में गहरी और मुख्य प्रीत नहीं होगी, तब तक पूरा काम नहीं बनेगा ॥

१—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल बेपरवाह हैं यानी किसी से कुछ नहीं चाहते, पर जो कोई कि उनके चरनों में प्रीत करेगा, उस का भारी फ़ायदह होगा, यानी देह के दुख सुख और जनम मरन के कष्ट कलेश से छुटकारा हो जावेगा ॥

२—ज़ाहर है कि दुनियाँ में कुल्ल जीव किसी न किसी में प्रीत धर कर कारखाई कर रहे हैं, यानी जिस को जिस किसी चीज़ या काम का शौक़ है, उसी को वह तवज्जह और मिहनत के साथ करता है, और जिस किसी में उस का प्यार है, वहीं तन मन धन ख़र्च करता है, और उसी के संग में उस को सुख और आराम मिलता है ॥

३—इसी तरह जो कोई राधास्वामीदयाल के चरनों में, पता और भेद धुर धाम और उसके रास्ते का और जुगत चलने की, भेदी अभ्यासी से दरियाफ़्त कर के प्यार लावे, और मिलने के निमित्त शौक़ के साथ जतन शुरू करे, तो उसको भी अंतर में किसी क़दर सुख और रस मिलेगा, और जिस क़दर चाल बढ़ती जावेगी, उसी क़दर वह सुख और आनंद भी बढ़ता जावेगा, और अपने प्रीतम राधास्वामीदयाल की दया की भी परख होती जावेगी ॥

४—राधास्वामीदयाल के चरनों में प्रीत साथ प्रतीत के करना चाहिये, यानी ऐसा निश्चय धारन करे कि वे कुल्ल मालिक और सर्व समरत्थ और प्रेम और आनंद का भण्डार हैं ॥

और यह निश्चय सतगुर के सतसंग और उन

की जुगत की थोड़ी बहुत अंतरी कमाई करने से आवेगा ॥

५—यह प्रीत राधास्वामी दयाल की महिमाँ सुन कर और देह और दुनियाँ की नाशमानता का हाल देख कर आवेगी, यानी सतसंग के बचन सुन कर यह मालूम पड़ेगा, कि सिवाय राधास्वामीदयाल के और कोई जीव का सच्चा संगी और हितकारी नहीं है, कि जो दुख सुख में इस की सहायता करे ॥

और यह संसार और उसके भोग और सुख ठहरऊ नहीं हैं, और न जीव की देह ठहराऊ है, एक दिन ज़रूर सब को छोड़ना पड़ेगा, और उस वक्त का संगी और सहायक हर एक को ज़रूर दरकार है, और ऐसे संगी और सहायक कुल्ल मालिक राधास्वामीदयाल और उनके चरनों की धार है, और वह घट २ में मौजूद है ॥

६—जो कि कुल्ल मालिक राधास्वामीदयाल कुल्ल रचना के करता और प्रेरक और फिर सब से न्यारे हैं, इस वास्ते जो कोई उनके चरनों में सच्ची प्रीत करे, वह भी एक दिन सब से न्यारा होकर उन की मेहर और दया से उनके धाम में पहुंचेगा, और उन के दर्शनों के परम बिलास और आनंद को प्राप्त होगा ॥

७—पर शर्त यह है कि वह जैसे कि राधास्वामी दयाल को सब का करता और सब से बड़ा माना है, उसी मुवाफ़िक़ उन से सब से ज़्यादह प्रीत और भाव करो यह हालत जल्दी नहीं आ सक्ती है, लेकिन जो कोई उनके चरनों में प्रीत शुरू करेगा, और आहिस्तह २ सतसंग और अंतर मुख अभ्यास करके उसको बढ़ाता जावेगा, तो रफ़्तह २ एक दिन उसकी प्रीत की मुख्यता उनके चरनों में ज़रूर हो जावेगी, और तबही उसका काम पूरा समझना चाहिये ॥

८—ऐसी गहरी प्रीत जब आवेगी तब दिन २ अभ्यास करके इसकी राधास्वामी धाम की तरफ़ नज़दीकी होती जावेगी, और उनकी दया और मेहर और क़ुदरत नज़र में आती जावेगी, और जिस क़द्र कि प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी, उसी क़द्र इस की चाल भी तेज़ होती जावेगी, और रस और आनन्द भी बढ़ता जावेगा ऐसे प्रेमी अभ्यासी का नाम गुरमुख है, और वही निजधाम में पहुंच कर बासा पावेगा, यानी अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनन्द को प्राप्त होगा ॥

९—देखो दुनियाँ में स्त्री और पुरुष की कैसी गाढ़ी प्रीत होती है कि अपने पति के खातिर स्त्री कुल्ल कुटम्ब परवार को छोड़ कर चली आती है, और उसके सुख में सुख और उसकी सेवा और उसके संग में अपना आनंद और आराम मानती है हर चंद कि अपने और पति के कुटम्ब परवार में दरजे बद-रजे प्रीत उसकी रहती है, पर पति के साथ मुख्यता यानी सब से ज़्यादह भाव और प्यार रहता है, और ज़रूरत के वक्त अपने पुत्र का भी संग छोड़ कर पति के संग रहना ख़ुशी से मंज़ूर और क़बूल करती है, और विचार करो कि वह कभी पति का सुमिरन और ध्यान नहीं करती, लेकिन गहरी प्रीत के सबब से पति का स्वरूप उसके हिरदे में बसा रहता है, और हर वक्त उसके वास्ते मुहब्बत और सेवा का जोश उमंग के साथ उठता रहता है ॥

१०—परमार्थ में जिस किसी को गहरी प्रीत राधा-स्वामी दयाल के चरनों में आगई वही बड़भागी है, यानी कुटम्ब परवार और दुनियाँ के भोग और सामान से ज़्यादह भाव और प्यार जिस किसी का राधास्वामी दयाल के चरनों में आया, और वह

दिन २ बढ़ता जाता है, उसी का नाम गुरमुख है, और वही परम पद पावेगा ॥

११—ऐसी प्रीत का चरनों में पैदा होना ना मुमकिन या निहायत मुशकिल नहीं मालूम होता, क्योंकि देखने में आता है, कि दुनियाँ में लोग सिर्फ़ इस्त्री और पुत्र से नहीं, बल्कि और लोगों से, जो कि रिश्तेदार और बिरादरी और हम कौम भी नहीं हैं, ऐसी गहरी प्रीत करते हैं, कि जिसको एक जान दो क़ालिब कहना चाहिये, यानी कुल्ल अपने प्यारों और रिश्तेदारों और धन और सामान वग़ैरह से, ज़्यादह प्रीत अपने दोस्त के साथ करते हैं, और उसको जिन्दगी भर वैसाही निभाते हैं ॥

१२—इसी तरह बाज़े जीव एक २ इन्द्री के भोग में या किसी और शौक़ में बंध कर, अपने कुटम्ब परवार और धन और माल, बल्कि अपनी देह और जान तक की प्रीत का ख़्याल छोड़ कर, उसी एक भोग और शौक़ का रूप हो जाते हैं, और अपनी इज़्ज़त हुरमत का भी ज़रा ख़्याल नहीं करते, जैसे शराबी और जुआरी और सैलानी और तमाशबीन वग़ैरह ॥

१३—खुलासह यह कि जिसके मन में जिस बात

का गहरा शौक़ पैदा हो जाता है, फिर वह उस शौक़ के पूरा करने के वास्ते पूरी काररवाई करता है, और कुटम्ब परवार और ज़ात पाँत और इज़्ज़त और हुरमत, और अपने तन मन और धन का कुछ भी ख़्याल और सोच विचार नहीं करता, और न जगत की बदनामी से डरता है, और न किसी की शरम और लाज उसको उसके काम से रोक सक्ती है ॥

१४—फिर जो किसी ने परमार्थ में वास्ते अपने जीव के सच्चे कल्यान और उद्धार के कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और गुरू और प्रेमी और भक्त जन में बिशेष प्रीत करी, और मामूली चाल से ज़्यादह क़दम बढ़ा कर रक्खा, यानी सच्चे परमार्थ में ज़्यादह प्रीत करी, और तन मन धन ज़्यादह लगाया, तो कुछ मुशकिल और अचरज की बात नहीं है। दुनियाँ के लोगों को उसकी हँसी करना या उसकी चाल पर तान मारना नहीं चाहिये, बल्कि जो काररवाई वह करे उसको बजा और मुनासिब समझ कर उसकी तारीफ़ करना चाहिये, और जो बने तो आप भी उसी के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत

परमार्थी काररवाई, यानी सतसंग और सेवा और भजन करके अपना जनम सुफल करें। बरख़िलाफ़ इसके दुनियाँ के लोगों का यह हाल है कि परमार्थियों की निंदा बग़ैर समझे बूझे जल्द करते हैं, और उन के धमकाने को तइयार होते हैं, और जो कोई संसार में चाल कुचाल चले उसकी ख़बर भी नहीं लेते॥

१५—जो कोई कहे कि बग़ैर देखे या कुछ रस पाये गहरी प्रीत नहीं हो सक्ती, तो यह बात दुरुस्त है। सच्चे परमार्थी को मुनासिब है, कि पहिले सतसंग करके कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत लावे, और जो उपदेश ध्यान और भजन का उन्हों ने सहज जुगत से जारी फ़रमाया है उस के मुवाफ़िक़ कोई दिन अभ्यास करे, तो उस को वे अपनी दया से थोड़ा बहुत अंतर में ज़रूर रस देंगे, फिर प्रीति भी आहिस्तह २ पैदा होती जावेगी, और जैसा कि रस और आनंद अंतर में बढ़ता जावेगा और परचे मिलते जावेंगे, उसी क़दर प्रीति और प्रतीत भी बढ़ती जावेगी॥

१६—ज़ाहर में प्रेमी सतसंगी (जो राधास्वामी दयाल के उपदेश के मुवाफ़िक़ प्रीत सहित साधना

कर रहे हैं) चाहे वे विरक्त हैं या ग्रहस्त, वे राधास्वामी दयाल की देह हैं, सो जिस किसी को जब उमंग सेवा की उठे, तब उसको चाहिये कि इन की सेवा करे, उस सेवा का फल राधास्वामी दयाल बख़्शेंगे यानी प्रेम और भक्ती सेवक के हृदय में बढ़ावेंगे ॥

१७—जो किसी को भाग से संत सतगुर मिल जावें, तो उनको राधास्वामी का देह स्वरूप समझना चाहिये, और जो सेवा कि प्रेमी सतसंगी उमंग के साथ उनके चरनों में करेगा, वह ख़ुद राधास्वामी दयाल की सेवा समझी जावेगी, और उसका फल राधास्वामी दयाल संत सतगुर स्वरूप से देवेंगे, यानी अंतर में ज़्यादह प्रेम और अभ्यास में बिशेष रस बख़्शेंगे ॥

१८—जिस क़दर कि प्रेमी सेवक की प्रीत संत सतगुर के चरनों में पैदा होती और बढ़ती जावेगी, उसी क़दर उनके निज स्वरूप, यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती और पकती जावेगी, और सुरत और मन संत सतगुर स्वरूप को अभ्यास के समय अगुवा करके सहज में सिमटेंगे, और घट में आहिस्तह २ ऊँचे की तरफ़ को चढ़ेंगे ॥

१९—संत अथवा राधास्वामी मत में बाहरी पूजा प्रीत भाव के साथ संत सतगुर के चरनों में की जाती है, क्योंकि उनका स्वरूप जो कि अभ्यासी के अंतर में ध्यान करके प्रघट होगा, चैतन्य और अकाल रूप है, और जहाँ तक कि रूप रंग रेखा है, वहाँ तक वह स्वरूप दरजे बदरजे सूक्ष्म और नूरानी होता हुआ अभ्यासी के संग जावेगा, और सच्चे अरूप पद में जोकि रूप रंग रेखा से न्यारा है, पहुंचा देगा ॥

२०—और अंतर में सेवा संत सतगुर के निज रूप की है, जो कि शब्द और प्रकाश स्वरूप है, और वह सेवा यह है, कि चित्त देकर आवाज़ को घट में सुनना और उसके आसरे सुरत को चढ़ाना, सो जब तक कि संत सतगुर के ज़ाहरी स्वरूप में गहरा प्यार नहीं आवेगा, तब तक शब्द स्वरूप भी जैसा कि चाहिये प्रघट नहीं होगा, और न उसमें गहरी प्रीत आवेगी, यानी अंतर में चढ़ाई संत सतगुर के ज़ाहरी स्वरूप की मदद से होवेगी, जो उसमें गहरा प्रेम रहा है ॥

२१—खुलासह यह है, कि जब तक संत सतगुर नहीं मिलेंगे, तब तक पूरी और गहरी प्रीत और

प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरनों में नहीं हो सक्ती है, और न सुरत की चढ़ाई माया के घेर के पार मुमकिन है, लेकिन सच्चे परमार्थियों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जिस क़दर बन सके राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत लाकर अपना अभ्यास ध्यान और भजन का प्रेमी सतसंगी की मदद से जारी रक्खें, और जो उनके सच्चा दर्द है, तो संत सतगुर भी ज़रूर सवेर अवेर मिल जावेंगे, और फिर उनकी दया और मेहर से प्रीत और प्रतीत दोनों रूप, यानी ज़ाहरी और अंतरी में बढ़ती जावेगी और आहिस्तह २ एक दिन कारज पूरा बन जावेगा ॥

बचन ७

राधास्वामीदयाल के चरनों में गुरमुख अंग का बर्ताव और उस की बिधी का बर्णन ॥

१—जब कि होशियारी और समझ बूझ के साथ सतसंग करके ऐसा निश्चय हो गया, कि कोई कुल्ल और सच्चा मालिक रचना का ज़रूर है, और वह सतपुर्ष राधास्वामी दयाल हैं, और सब जीव उन की अंस हैं, जैसे सूरज और सूरज की किरन, और

उन्हीं के चरनों की धार से सब रचना प्रगट हुई और उसी के आसरे ठहरी हुई है ॥

२—और यह भी सतसंग करके तहक़ीक़ हो गया, कि रचना में तीन बड़े दरजे हैं ॥

(१) एक राधास्वामी दयाल देश जहाँ माया नहीं है, लेकिन सत्त कुद्रत है, यानी राधास्वामी धाम के (जहाँ किसी तरह का ग़िलाफ़ नहीं है) नीचे के चेतन्य पर सत्त लोक तक सत्त कुद्रत का ग़िलाफ़ है, अथवा सत्त चेतन्य का सत्त चेतन्य रूपी ग़िलाफ़ है, और इसी सबब से वहाँ की रचना अ-मर और अजर और महा आनंद स्वरूप है, और काल कष्ट और क्लेश का वहाँ नाम और निशान भी नहीं है ॥

(२) दूसरा दरजा जहाँ माया प्रगट हुई और शुद्ध है और उसी का ग़िलाफ़ इस दरजे के निर्मल चेतन्य पर चढ़ा हुआ है, और इसी सबब से वहाँ की रचना में सुख विशेष और दुख बहुत कम और जनम मरन बहुत देर से होता है, और रचना भी सूक्ष्म है, और सतोगुनी बतौर बहुत और रजोगुनी कम और तमोगुनी बहुत कम है, लेकिन रा-धास्वामी दयाल देश के जाने वाले को इस दरजे

मैं ठहरना और वहाँ के सुख और आनंद मैं लिपटना मुनासिब नहीं है, नहीं तो उसका अपने निज घर यानी राधास्वामी धाम मैं जाने का रास्ता बंद हो जावेगा ॥

(३) तीसरा दरजा चेतन्य पर मलीन माया का गिलाफ़ चढ़ा हुआ है, और इस सबब से इस दरजे की रचना मैं कष्ट और क्लेश ज़ियादह और सुख और आनंद कम और जनम मरन भी जल्द २ होता है। राधास्वामी देश के जानेवाले को इस दरजे की रचना मैं भी अपना बंधन और मोह नहीं करना चाहिये। सिर्फ़ गुज़ारह के मुआफ़िक़ मुनासिब तौर से बर्ताव जारी रखना चाहिये कि जिस्से उस की चाल मैं बिघन न पड़े, और आहिस्तह २ सब बंधन अंतरी और बाहरी ढीले होते जावैं, और किसी तरह का उन मैं अटकाव पैदा न होवे, या इस क़िसम का दुख सुख कि जो इसकी चाल और निज घर के पहुंचने के इरादे मैं ख़लल डाले, न व्यापे ॥

३—और सतसंग करके यह भी समझ मैं आ गया, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल या उन के चरनौं की धार, कुल्ल रचना की करता और प्रेरक और सम्हाल करनेवाली है, और सब रचना उन

के चरनों के आधीन है, तो उनकी ओट और सरन लेना कोई नई और अचरज की बात नहीं है, क्योंकि प्रेरक और सम्हाल करनेवाले असल में वेही हैं ॥

४—जबकि ऊपर की तीन बातें सही हो गईं, और उन का थोड़ा बहुत निश्चय हृदय में आगया, तब सच्चे और प्रेमी परमार्थी को जो (संसार और उस के भोग और सामान और अपनी देही को नाशमान देख कर) अपना सच्चा और पूरा उद्धार चाहता है, यानी देहियों के दुख सुख और जनम मरन से सच्चा बचाव चाहता है, मुनासिब है, कि राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रेम और प्रीत करें, और उनके धाम में पहुंचने का सच्चा और पक्का इरादा दिल में बाँधे; क्योंकि बिना प्रेम और शौक़ के कोई किसी से मिल नहीं सक्ता, और न उसकी तरफ़ चल सक्ता है, और जो धुर धाम में पहुंचने का इरादा पक्का और सच्चा न हुआ, तो रस्ते में थक जाने या अटक जाने का ख़ौफ़ रहेगा; और इस वास्ते काम पूरा नहीं बनेगा ॥

५—भक्ती यानी प्रेम प्रीत का बर्ताव राधास्वामी दयाल के चरनों में तीन प्रकार से हो सक्ता है; पहिला सेवक स्वामी भाव, दूसरा पुत्र पिता भाव

और तीसरा स्त्री पति यानी प्रेमी प्रीतम भाव ॥

६—पहिले भाव में सेवक के दिल में खौफ़ और अदब स्वामी के तेज और बड़ाई का ज़्यादह रहता है, और दूसरे भाव में स्वामी की दया का भरोसा भक्त के मन में विशेष रहता है, और तीसरे भाव में प्रेमी के मन में स्वामी के चरनों में प्रेम की मुख्यता रहती है, यह तीनों अंग तीनों भाव में वर्तते हैं, पर एक २ में एक ख़ास अंग की जैसा कि ऊपर बयान हुआ मुख्यता रहती है ॥

७—प्रेमी प्रीतम भाव कोई अर्सह के सतसंग और सेवा और अंतर अभ्यास के पीछे आवेगा, यानी जिस क़दर कि प्रेमी को अंतर और बाहर रस और आनंद मिलता जावेगा, और दया के परचे नज़र आते जावेंगे, इसी क़दर उसकी प्रीत और प्रतीत चरनों में ज़्यादह से ज़्यादह होती जावेगी, और उस हालत में प्रेमी को सब करतूत अपने प्रीतम की, चाहे आम तौर पर मन के मुआफ़िक़ है या नहीं, प्यारी लगेगी, और अभाव किसी वक़्त में नहीं आवेगा, यानी उस की हालत प्रेम की आराम और तकलीफ़ में यकसां रहेगा, और प्रेम दिन २ बढ़ता रहेगा, जैसा कि इन कड़ियों में कहा है ॥

अगर मेहर से शहद देवैं तुझे, मुनासिब समझ ज़हर देवैं तुझे; तू ख़ुश होके ले और सिर पर चढ़ा, तू चुप होके पी और कह यह सदा, कि धन २ हैं धन २ हैं सतगुर मेरे, उतारैंगे भौजल से बेशक परे ॥

८—पहिले और दूसरे भाव मैं सेवक के मन मैं थोड़ा बहुत झुकाव संसार और उसके भोग और सामान और कुटम्ब परवार की तरफ़ रहता है, और आराम और तकलीफ़ मैं थोड़ी बहुत हालत बदल जाती है, लेकिन बिल्कुल बेप्रतीत और प्रीत नहीं होता, और थोड़ी देर मैं सोच और विचार करके, अथवा बानी का पाठ करके, या कुछ अंतर अभ्यास करके फिर अपने घाट पर आ जाता है, और प्रीत और प्रतीत के बढ़ाने की कोशिश, उसकी बदस्तूर जारी रहती है, और अपनी कसरों को निहारता और अपनी हालत पर झुरना और पछताता, और दया के वास्ते प्रार्थना करता है ॥

९—ख़ुलासह यह है कि जिस किसी के दिल मैं परमार्थ की मुख्यता आ गई, और उसने कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल को सब से बड़ा, और सब से ज़्यादह प्रीत करने के लायक़ अच्छी तरह सोच और विचार करके समझ लिया और सब प्रीतों को

उनकी प्रीत के नीचे रक्खा, और संसार के भोग और पदार्थों को विघन कारक और रास्तह में अटकाने वाला जानकर, उनमें ज़रूरत के मुआफ़िक़ अपना बर्ताव रक्खा है, तो उसी का नाम गुरुमुख है, और वही एक दिन गुरुमुखताई का पूरा दरजह हासिल करके निहचिन्त हो जावेगा, यानी जब से कि गुरुमुख अंग आया, उसी वक्त से कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल सब तरह से उसकी रक्षा और बहाल और तरक़्क़ी अपनी मेहर और दया से आप फ़रमावेंगे, और एक दिन उसको धुरपद में पहुंचा कर निहाल कर देंगे ॥

१०—मालूम होवे कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम सब से ऊँचा और न्यारा और महा निर्मल और प्रेम और आनंद का भंडार है, और वहाँ वह स्वभाव और तरंगें जो पिंड और ब्रहमाण्ड में माया के मसाले के संग से पैदा हुये हैं, बिल्कुल नहीं हैं, इस वास्ते जो कोई उस धाम में पहुंचना चाहे, उस को ज़रूर है कि इन स्वभावों और चाहों और तरंगों से न्यारा हो जावे, और यह बात अंतर और बाहर के सतसंग से, जिससे मन और सुरत निर्मल होकर घट में चढ़ेंगे हासिल होगी, इस वास्ते प्रेमी अभ्यासी

को मुनासिब है कि जो काररवाई संतों ने बतलाई है, उसके मुआफ़िक़ अभ्यास करके और दया मेहर संत सतगुरु राधास्वामी दयाल की संग लेकर अपनी हालत बदलता जावे, यानी दिन २ सफ़ाई हासिल करे, और प्रेम बढ़ाता जावे, तब उस धाम में पहुंचने के क़ाबिल हो जावेगा ॥

११—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल सब रचना से न्यारे हैं, इस वास्ते जो कोई उनके धाम में पहुंच कर उनका दर्शन चाहे, उसको भी सब दुनियाँ की प्रीतें आहिस्ता २ कम करके एक उन्हीं की गहरी प्रीत दृढ़ करनी चाहिये, तब वहाँ पहुंचना और ठहराव होगा, और जो किसी क़िसम की बासना इस तरफ़ की रही आई, तो चलना और चढ़ना मुशकिल होगा, इस वास्ते सर्व बासना सिवाय उनके मिलने की आस के आहिस्तह २ घटानी और दूर करनी ज़रूर चाहिये, और यह काम सच्चे परमार्थी का राधास्वामी दयाल अपनी दया से आप बनावेंगे ॥

१२—इसवास्ते कुल्ल सच्चे परमार्थियों का ऊपर लिखी हुई समझौती को लेकर चाहिये, कि जहाँ तक बन सके अपनी सफ़ाई करें, और संसारी स्वभाव छोड़ते जावें, और दुनियाँ की चाह और तरंगें कम

उठावैं, और मुख्य प्रीत संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में लावैं, और सच्चा और पक्का इरादा उनके धाम में पहुंचने का करें, तो उनकी मेहर और दया से सहज २ काम बनता जावेगा और एक दिन सुरत निज धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगी।

बग़ैर दया और मदद राधास्वामी दयाल के यह काम दुरुस्त और पूरा नहीं बन सक्ता, क्योंकि जीव निबल है और पिंड में मन और माया का ज़ोर बहुत भारी है, इस वास्ते जो सच्चे प्रेमी का इरादा अपने सच्चे उद्धार कराने का पक्का और मज़बूत है, तो राधास्वामी दयाल ज़रूर अपनी मेहर और दया से उसकी आसा पूरन करेंगे, और मन और माया और काल और करम के बिघनों को हटाते और दूर करते जावेंगे; और अपने चरनों का प्रेम उसके हिरदे में दिन २ बढ़ाते जावेंगे, और माया के भोग और पदार्थों का भाव उसके मन से हटाकर, एक दिन उससे न्यारा कर देंगे॥

बचन ८

हाल सच्चे बेदान्ती यानी जोगी ज्ञानियों का जो कि षटचक्र बेध कर ब्रह्म पद में पहुँचे, और बर्णन इस बात का कि आज कल के ज्ञानी कसरत से बाचक हैं, और उनके संग से जीव का सच्चा कल्यान या उद्धार नहीं होगा ॥

१—जो कि आज कल बसबब ज़ियादा फैलने विद्या के बाचक ज्ञान का बहुत ज़ोर है, और बिरक्त और ग्रहस्त बग़ैर जाँचने अपने अधिकार के, थोड़े ग्रंथ ज्ञान के पढ़ कर कसरत से ज्ञानी और सूफ़ी होते जाते हैं, और असल में उनकी हालत बहुत कम बदलती है, बल्कि बहुतेरों के स्वभाव बदस्तूर संसारियों के मुआफ़िक़ बने रहते हैं, और अपने ज्ञान की समझ का अहंकार ज़ियादा हो जाता है, इस वास्ते मुनासिब मालूम हुआ कि सच्चे ज्ञानियों का हाल थोड़ा सा लिखा जावे, कि जिससे बाचक ज्ञान का मुक़ा-

अला करके, उसकी ओछी हालत की जाँच हो जावे, और सच्चे परमार्थी उससे बचे रहैं और उनका अकाज न होने पावे ॥

२—जोगी ज्ञानी उनको कहते हैं कि जो प्राणों की साधना करके षटचक्र को बेध कर ब्रह्मपद में पहुँचे, और वहाँसे ब्रह्म को नीचे के सर्व देश में व्यापक देख कर, उसके लक्ष रूप में समाये और अपने आपे को उसमें लै कर दिया ॥

३—इन जोगी ज्ञानियों ने पाँच उपासना मुक़र्रर करीं। पहिली गनेश की गुदा चक्र में, दूसरी बिश्नु की नाभी में, तीसरी शिवकी हिरदे में, चौथी आत्मा यानी शक्ती की कंठ में, और पाँचवी परमात्मा या सूरज ब्रह्म की छठे चक्र में, और उसके परे चिदाकाश में समाये ॥

४—और जोगेश्वर ज्ञानी सहसदल कँवल को पार करके त्रिकुटी यानी ओंकार पद में पहुंचे, और उस के लक्ष स्वरूप में जो अरूप है लीन हुये, और कोई २ पारब्रह्मपद में जो संतों का दसवाँ द्वार है समाये, और वहाँ से उस चेतन्य को सर्व नीचे के देशों में व्यापक देखा, और कुल्ल सूरतों में उसी का ज़हूरा और जलवा देख कर मगन और तृप्त हो गये ॥

५—इन जोगी और जोगेश्वर ज्ञानियों ने अपनी बानी और बचन में ब्रह्मपद की महिमा ज़ियादा से ज़ियादा गाई, और फ़रमाया कि वह ब्रह्म सर्व व्यापक है, और सब लोकों में उसी का जलवा और प्रकाश मौजूद है, और असल में सब उसी का ज़हूरा है॥

६—और उन्हों ने ब्रह्म की प्राप्ती प्राणायाम, यानी अष्टाङ्ग योग की साधना करके वर्णन करी, और उस अभ्यास का तरीक़ा मय उसके संजमों के मुफ़स्सिल तौर पर अपने ग्रंथों में बयान किया॥

७—और यह भी बयान किया कि पहिले उपाशना करनी ज़रूर चाहिये, और जब वह उपाशना पूरी होगी तब चार साधन यानी (१) बैराग (२) विवेक (३) षट सम्पति (सम, दम, उपरति, तितिक्षा, सरधा, समाधानता) और मुमुक्षता हासिल होंगे, तब वह उपाशक यानी मोक्ष ज्ञान के ग्रन्थों के पढ़ने का अधिकारी होगा॥

८—और इस बात को निहायत ज़ोर देकर कहा, कि जिस शख़्स को ऊपर के बयान किये हुये चारों साधन पूरी तौर से हासिल नहीं हुये, वह ज्ञान के ग्रन्थों के पढ़ने का अधिकारी नहीं है, और जो कोई बग़ैर हासिल हुये उन साधनों के ज्ञान के ग्रन्थों को

पढ़ेगा उसका अकाज होगा, यानी बगैर पूरी उपासना किये हुये ज्ञान के बचन सुनेगा या पढ़ेगा या कहेगा, उसके हक़ में वह ज़हर के मुवाफ़िक़ असर करेंगे, यानी वाचक ज्ञानी होकर अहंकारी हो जावेगा, और इस वास्ते उसकी मुक्ती नहीं होगी ॥

९—और उन्हीं जोगी ज्ञानियों ने यह भी बर्णन किया कि शरीर में पाँच कोश यानी परदे या गिलाफ़ हैं, और पाँचवें में या उसके परे आत्मा का बासा है, सो जब तक कि यह परदे या गिलाफ़ अंतर अभ्यास करके न फोड़े जावेंगे; तब तक अभ्यासी को अपने स्वरूप का दर्शन नहीं होगा; और वह कोश या गिलाफ़ यह हैं (१) अन्न मई कोश (२) प्राण मई कोश (३) मनोमई कोश (४) विज्ञान मई कोश (५) और आनंद मई कोश ॥

१०—इस से साफ़ ज़ाहर है कि जोगी ज्ञानियों ने आत्मा की प्राप्ती बादतें करने मन और बुद्धी के मुक़ाम के कही है, और वाचक ज्ञानी अस्थूल शरीर में इंद्रियों के मुक़ाम पर बैठे हुये, अपने आप को आत्मा और परमात्मा या ब्रह्म मानते और क़रार देते हैं; यह समझ उनकी ग़लत है और इसी समझ का सच्चे ज्ञानियों ने निषेध किया है ॥

११—इस में कुछ शक नहीं कि आत्मा अपनी धारों से कुल्ल शरीर में व्यापक है, और उसी की धारें मन और इन्द्री वगैरह को चेतन्य कर रही हैं, पर आत्मा का अस्थान जहाँ से कि यह धारें छूट रही हैं जुदा है, और जब तक कि अभ्यासी अभ्यास करके सब परदों को फोड़ कर उस मुक़ाम तक नहीं पहुंचेगा, तब तक अपने स्वरूप को नहीं पावेगा, और न उसका आनंद जैसा कि चाहिये उस को प्राप्त होगा, और न मन और इन्द्री उसके क़ाबू में आवेंगे फिर परमात्मा या ब्रह्म पद में उस की पहुंच कैसे हो सकती है ॥

१२—इस सबब से वाचक ज्ञानी कि जिन्हों ने सिर्फ़ सिद्धान्त के बचन ग्रंथों से छाँट कर पढ़ लिये हैं, और थोड़ी बहुत उनकी समझ हासिल की है, पर अंतरी अभ्यास किसी क़िस्म का नहीं किया, और जो कुछ अभ्यास किया तो अस्थूल या सूक्षम शरीर के पार नहीं गये, तो उनका अपने आप को आत्मा या परमात्मा या ब्रह्म मानना बगैर पहुंचे हुये उस पद के ग़लत है, और इसी वजह से वे ग्रंथों से समझौती लेकर और ऐसी ग़लत धारना धारन करके अहंकारी हो जाते हैं, और बर्ताव और रहनी उनकी संसारी जीवों के

मुवाफ़िक़ (जिन्हो ने ज्ञान के ग्रंथ नहीं पढ़े और सिद्धान्त के बचन नहीं सुने) रहती है, और यही सबब उन के नुक़सान और अकाज का हुआ ॥

१३—वाचक ज्ञानियों का क़ौल है कि जब कि ब्रह्म सब जगह व्यापक है, तो जाना आना कहाँ है, सिर्फ़ इस क़दर अभ्यास ज़रूर है, कि जिस से मन थोड़ा बहुत स्थिर हो जावे, और बाद उसके बिचार या अहंग्रह यानी अहंब्रह्म उपाशना करते हैं; बिचार से मतलब यह है कि सब रचना का निषेद करके कि हम यह नहीं वह नहीं केवल आत्मा ही आत्मा या ब्रह्म ही ब्रह्म हैं, और अपने तईं वही रूप ख़्याल करके अपने ख़्याल को पकाते हैं, और अहंग्रह उपाशना से मतलब यह है कि अपने तईं ब्रह्म रूप और बाक़ी सब रचना को मिथ्या समझ कर इसी समझ को दृढ़ करते हैं, और बाज़े दृष्टी का साधन करके जो रोशनी कि उनको नज़र आती है, उसी को आत्मा का प्रकाश समझ कर उसी में अपनी वृत्ती को लीन करते हैं, और समझते हैं कि आत्मा का दर्शन हमको होता है; और शुरू में मन के स्थिर करने के वास्ते कोई २ अजपा जाप यानी स्वाँसा के साथ ओहं सोहंग का सुमिरन थोड़े दिन के वास्ते करते हैं, और

कोई २ अपने तौर पर शब्द के सुनने का साधन चंद रोज़ करके फिर उसको छोड़ देते हैं, और ऐसा ख़्याल करते हैं कि शब्द मायक है, थोड़े दिन वास्ते ठहराने मन के उसका साधन मुनासिब है, पर जो कि माया और सब पसारा उसका मिथ्या है, इस वास्ते शब्द का अभ्यास भी छोड़ देना और सिर्फ़ ब्रह्म में अपनी वृत्ती को लै करना मुनासिब समझते हैं ॥

१४—अब मालूम होवे कि यह सब साधन जिनका ज़िकर ऊपर हुआ, वास्ते उद्धार जीव के काफ़ी नहीं है; और जब तक कि कोई ख़ास जतन चलने और चढ़ने जीवआत्मा यानी सुरत का न किया जावे, यानी माया को हद्द के पार जाने का अभ्यास अमल में न आवे, तब तक बिचार और अहंग्रह उपाशना (जो कि मन और इन्द्रियों के अस्थान पर बैठ के की जाती है) वास्ते पहुँचने निर्मल चेतन्य देश के कुछ फ़ायदह नहीं दे सकते हैं, क्योंकि निर्मल चेतन्य देश जो कि सुरत का निज अस्थान है, माया के घेर के पार और ऊँचे से ऊँचा है ॥

१५—इस में कुछ शक नहीं कि चेतन्य सब जगह मौजूद है, लेकिन बसबब हायल होने माया के परदों के वह सब जगह एक रस यानी यकसाँ नहीं है, इसी

वजह से पिछले जोगी ज्ञानियों ने चेतन्य में विशेष और सामान का भेद किया। विशेष चेतन्य से यह मतलब है कि वहाँ माया सूक्ष्म है या कम है, और सामान चेतन्य से मतलब यह है कि वहाँ माया अस्थूल है या ज़्यादह है, और ऐसा सामान चेतन्य बग़ैर मदद बिशेष चेतन्य के कुछ काररवाई नहीं कर सकता, यानी माया के परदों में ढका हुआ कुछ काम नहीं कर सकता॥

१६—अपने पिंड के हाल को जो कि ब्रहमान्ड का नमूना है मुलाहज़ा करने से मालूम होगा, कि जीव चेतन्य इस में भी सिर से पैर तक एक रस व्यापक नहीं है, यानी आला दरजे की कुव्वतें सिर में जो ऊँचे से ऊँचा और पहिला दरजा है मौजूद हैं, और गले से कमर तक जो कि दूसरा दरजा है कम दरजे की कुव्वतें काररवाई करती हैं, और जब किसी बीमारी में (जैसे सन्यपात में) सिर की तरफ़ खिंचाव रूह का ज़्यादह हो जाता है तो इस दूसरे दरजे की कुव्वतें बिलकुल बेकार हो जाती हैं, यानी उनकी कारवाई बंद हो जाती है, और सोते वक्त में भी जब की रूह का किसी क़दर खिंचाव दिमाग़ की तरफ़ मामूली तौर पर होता है, कुल्ल इन्द्रियाँ उस वक्त बेकार हो जाती हैं और तीसरे दरजे

में यानी कमर से नीचे २ कोई 'ख़ास क़ुव्वत सिवाय चलने फिरने की ताक़त के नहीं है, और वह ताक़त भी दिमाग़ से आती है। इन दोनों दरजों की कारर्वाई अव्वल दरजे की मदद से यानी, जब रूह की धार दिमाग़ से नीचे उतरती है, जारी होती है, और उस दरजे में विशेष चेतन्य है, और नीचे के दरजों में समान चेतन्य है॥

१७—इसी तरह इस पृथवी लोक में जो चेतन्य व्यापक है वह समान चेतन्य है, और जब तक सूरज से, जो उसका विशेष चेतन्य है, किसी क़िसम की किरनियों के वसीले मदद (यानी गरमी और रोशनी) न आवे तब तक यहाँ का चेतन्य कुछ काररवाई (यानी उतपत्ति करना रचना का और उसकी सम्हाल) नहीं कर सक्ता है, फिर ऐसे व्यापक चेतन्य से क्या काम निकल सक्ता है, और जो कि वह हर वक्त इस लोक की रचना की काररवाई में लिप्त हो रहा है, या उसका संगी और समीपी है, और माया से घिरा हुआ है, तो जो कोई उसमें लीन होगा या उससे मिलेगा, वह भी इसी रगड़े में पड़ा रहेगा यानी उतपत्ति प्रलय के चक्कर से बाहर नहीं जावेगा॥

१८—और मालूम होवे कि यह सूरज भी बनिस्बत

उस बड़े सूरज के जिसके गिर्द यह मय अपने तारागण के घूम रहा है समान चेतन्य है, और वह बड़ा सूरज इस का विशेष चेतन्य है—इसी तरह दो दरजे के ऊपर सत्तपुरुष और उसके परे राधास्वामी पद है, जिसको अगर महाविशेष चेतन्य कहो तो हो सक्ता है—यह दोनों पद निर्मल चेतन्य देश में हैं यानी माया के घेर के पार हैं, इनमें सदा आनन्द रहता है, क्योंकि सिवाय चेतन्य के वहाँ दूसरी चीज़ नहीं है, और चेतन्य ऐन आनन्द स्वरूप है ॥

१९—इस वास्ते जबतक कि कोई अभ्यास करके एक विशेष चेतन्य से दूसरे में और फिर महाविशेष चेतन्य में नहीं पहुंचेगा, तब तक उसका सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा, यानी जब तक कि माया के घेर के पार नहीं जावेगा, तब तक जनम मरन और दुख सुख से निवृत्ती नहीं होगी ॥

२०—अब ख़्याल करो कि जिस पद में जीव को समाना चाहिये या पहुंच कर वहाँ का आनन्द बिलास देखना चाहिये, वह हमारे तन में बैठक के मुकाम से बहुत दूर है, और रास्तह में कई मंज़िलें या ठेके हैं, सो जब तक कि शब्द अभ्यासी और शब्द भेदी गुरू से भेद लेकर और अभ्यास करके चढ़ कर दयाल देश में

नहीं पहुंचेगा, उसका सच्चा और पूरा उद्धार और जनम मरन से छुटकारा नहीं होगा ॥

२१—सिवाय इसके पिछले जोगी ज्ञानियों ने ब्रह्म के तीन स्वरूप या तीन दरजे बयान किये, यानी शुद्ध ब्रह्म और साक्षी ब्रह्म और माया सबल ब्रह्म— अब खियाल करो कि मुवाफ़िक़ इन दरजों के जो कोई शुद्ध ब्रह्म के पद में नहीं पहुंचेगा, तब तक वह जोगेश्वर ज्ञानी नहीं हो सक्ता और वास्ते प्राप्ती मुक्ती के माया देश को छोड़ कर शुद्ध ब्रह्म पद में पहुंचना ज़रूर है, फिर कई दरजे ब्रह्म में बसबब शामिल होने माया के हो गये, और सब दरजों में वही ब्रह्म व्यापक हुआ, पर वास्ते बचाव जनम मरन और काल कलेश और प्राप्ती परम आनन्द और मुक्ती के (मुवाफ़िक़ जोगी ज्ञानियों के मत के) नीचे के देशों को छोड़ कर ऊँचे देश यानी शुद्ध ब्रह्म में जाना ज़रूर हुआ ॥

२२—ऊपर के बयान से साफ़ ज़ाहर है कि वाचक ज्ञानियों का यह क़ौल, कि जब कि ब्रह्म सर्व व्यापक है तो जाना आना कहाँ है, बिल्कुल ग़लत है, और इस हिसाब से इन लोगों का उद्धार योगी ज्ञानियों के दरजे तक भी किसी सूरत में मुमकिन नहीं है ॥

२३—इसी तरह जोगी और जोगेश्वर ज्ञानियों ने चार अवस्था यानी जाग्रत स्वप्न सुषुपति और तुरिया बयान की हैं, और अभ्यास करके तुरिया और तुरियातीत अवस्था में पहुंचना लिखा है, लेकिन वाचक ज्ञानियों ने तुरिया अवस्था को काटकर, जो चेतन्य कि तीन अवस्था में व्यापक है, उसी को तुरिया क़रार दिया, यानी चलना और चढ़ना जिस से तीन अवस्थाओं के पार जाना मुमकिन था नहीं माना, और इस सबब से उस निर्मल गत की जो तुरिया और तुरीयातीत के दरजे में पहुंच कर हासिल होती उनको ख़बर भी नहीं हुई, यानी जाग्रत अवस्था के मुक़ाम पर उनका बासा रहा, और इस वास्ते मन और इंद्रियाँ उन पर ग़ालिब रहे, और उन का ज्ञान बाचक रहा ॥

२४—और यह लोग बातें सिद्धान्त की बनाते रहेंगे पर बसबब पड़े रहने मलीन माया के देश में इन की हालत नहीं बदलेगी, और सच्चा ब्रह्मानंद इन को कभी हासिल नहीं होगा ॥

२५—और एक भारी नुक़सान की बात वाचक ज्ञानियों में यह है, कि उपाशना यानी भक्ती से विरोध रखते हैं, और माया को मिथ्या कह कर कुल्ल नाम रूप की रचना को नाशमान समझ कर, उस

का निरादर करते हैं, और हरचन्द आप शरीर का ब्योहार जारी रखते हैं, और मेले तमाशे और देशान्तर की सैर वग़ैरह में हमेशह भरमते रहते हैं, और ज्ञान की पोथियाँ पढ़ते और पढ़ाते रहते हैं, और फिर इन सब कामों को भरम बताते हैं, और कहते हैं कि जब कि सिवाय ब्रह्म के और कोई वस्तु नहीं है, और हम आप वही ब्रह्म स्वरूप हैं, तो फिर उपाशना किस की करें, और उपाशना की क्या ज़रूरत है, जब कि सिवाय ब्रह्म के कोई दूजा असल में नहीं है ॥

२६—बलकि बाज़े ज्ञानी इस क़दर बढ़ कर बोलते हैं कि रचना असल में हुई नहीं और न मौजूद है, और जो कुछ कि देखते हैं और कहते सुनते हैं सब भरम है, और फिर बर्ताव में अपने शरीर रूप और कुल्ल संसार को सत्त देखते और समझते हैं, सिर्फ़ भक्ती न करने के वास्ते ऐसी बातें कि जो उन के ब्योहार और बर्ताव के बिलकुल बरख़िलाफ़ है (यानी कुल्ल रचना और कुल्ल काररवाई को भरम समझना) बताते हैं ॥

२७—नतीजा ऐसी बातों का यह होता है कि इन वाचक ज्ञानियों के हृदय से भय और भाव यानी अदब और ख़ौफ़ और प्रेम गुरू और मालिक के

चरनों का बिलकुल जाता रहता है, और निरभय हो कर संसार में बर्तते हैं, यानी मन और इंद्रियों के कहने में चलते हैं, और अपने आप को ब्रह्म रूप मान कर समझते हैं, कि किसी काम का असर उन पर नहीं पहुँचता, और जो ग़ौर करके देखा जाता है तो मालूम होता है, कि रहनी इन लोगों की मुवाफ़िक़ संसारी विद्यावानों के बल्कि अक्सर उन से भी कम दरजे की है, और धनवान और हुकूमतवान लोगों को हमेशा ढूँढ़ते रहते हैं, कि कोई उनका बचन माने और ख़ातिर दारी करे और जब ऐसा मौक़ा मिल जावे तब भोगों में बेतकल्लुफ़ बर्तते हैं ॥

२८—अब ग़ौर करने की बात है कि जो इन वाचक ज्ञानियों को थोड़ा भी आत्मानंद आया होता, तो इन का बर्तावा ऐसा नहीं होता, जैसा कि आम तौर पर देखने में आता है, और जिसका थोड़ा हाल ऊपर लिखा गया ॥

२९—यह सब कसरें बसबब न करने उपाशना या भक्ती के गुरू और मालिक के चरनों में पैदा होती हैं—यानी जो चार साधन कि मुमुक्षू को पेश्तर पढ़ने ज्ञान के ग्रंथों के हासिल होने चाहियें, वह इन लोगों में नहीं पाये जाते, क्योंकि वे ईश्वर की दात हैं, और

बग़ैर उपासना किये और उपास्य से मिलने के वे प्राप्त नहीं हो सक्ते, और यह वाचक ज्ञानी नाम रूप को पहिले ही मिथ्या समझ कर भक्ती को उड़ा देते हैं, और ईश्वर और गुरू दोनों की इनकी नज़र में बेक़दरी हो जाती है, और ब्रह्म को सर्व व्यापक मान कर कोई अन्तरी अभ्यास चलने और चढ़ने का (जिस से उनका संसारी स्वभाव और मनकी हालत बदले) नहीं करते, इस सबब से सिर्फ़ सिद्धाँत के बचन सुन कर और याद करके अहंकारी और बे परवाह हो जाते हैं, और अपनी कसरों पर ज़रा निगाह नहीं करते और जो कोई जतावे तो क्रोध करने को तइ-यार हो जाते हैं ॥

२०—अब ख़्याल करो कि इन वाचक ज्ञानियों ने किस क़दर धोखा खाया, और किस क़दर ग़लती में पड़े हैं, कि जिसके सबब से उनका भारी नुक़सान हुआ, यानी ब्रह्म पद की प्राप्ती से महरूम रहे, और बर-ख़िलाफ़ उसके अपने आप को ब्रह्मरूप मानकर इस क़दर अहंकारी हो गये कि अब जो कोई उनको उन की ग़लती बतावे, और सीधा और सच्चा रास्ता उद्धार का समझावे, तो बिलकुल नहीं सुनते, और उल्टा समझाने वाले को भूला हुआ और भरमा हुआ ख़्याल

करके उस से क्रोध और बिरोध करने को तइयार होते हैं, जिसके सबब से इनकी दुरुस्ती यानी उद्धार किसी तरह से मुमकिन नहीं है ॥

३१—मालूम होवे कि जोगी और जोगेश्वर ज्ञानियों का सिद्धाँत (यानी ब्रह्म और पारब्रह्म पद) माया की हद्द में रहा, इस सबब से उन्हों ने ज्ञान की मुख्यता की, यानी ब्रह्म के लक्ष स्वरूप अथवा अरूप में समाये, क्योंकि उन्हों ने देखा कि ब्रह्म का बाच्य स्वरूप हमेशह क़ायम नहीं रहता, यानी जब रचना का अभाव होता है (परलै और महापरलय के वक्त) तब वह भी सिमट जाता है और उसके लोक की रचना भी सिमट जाती है, और इस सबब से ब्रह्म उपाशकों की मुक्ती की हालत हमेशह और यकसाँ क़ायम नहीं रह सक्ती और रचना में आवागवन भी नहीं बंद हो सक्ता, इस वास्ते उपाशना की सिर्फ़ इस क़दर ज़रूरत समझी गई, कि जिस में मुमुक्षू भक्ती करके अस्थूल सूक्षम और कारन रचना के पार चल कर अपने उपाश्य के सन्मुख यानी ब्रह्म लोक में पहुंचे और इसी तरह अभ्यास करके निर्मल होकर क़ाबिल समाने ब्रह्म के लक्ष स्वरूप यानी अरूप पद के हो जावे, यानी ज्ञान पद को प्राप्त होवे, क्योंकि जो ज्ञान पद में रसाई न

हुई और उपाशना करता रहा या उपाश्य के लोक में पहुंच कर वहीं ठरह गया, तो आवागवन दूर नहीं हुआ ॥

३२—वास्ते दुरुस्ती उपाशना के उपाश्य के नाम रूप लीला और धाम की ज़रूरत है, और जब कि नाम और रूप का मायक होना, और उसका समय २ पर प्रघट होना और खिमट जाना मालूम किया गया, तब उपाशना करने वालों का पूरा उद्धार यानी आवागवन से रहित होना नहीं माना गया, इस सबब से भक्ती की ज़रूरत सिर्फ़ वास्ते तै करने रूपवान रचना की हद्द के मुनासिब समझी गई, और बाद उसके लक्ष स्वरूप की महिमाँ विशेष मानी गई, कि वहाँ पहुंचने से (ज़ाहरी तौर से) आवागवन दूर हो गया, क्योंकि ममोक्षू नाम और रूप के परे पहुंच कर ब्रह्म के लक्ष यानी सिंध स्वरूप में समाया, और इसी का नाम ज्ञान यानी सच्ची मुक्ती या उद्धार रक्खा गया ॥

३३—इस क़ायदे के मुवाफ़िक़ ज्ञान (यानी अपने निज अरूप पद को प्राप्त होना) अव्वल नम्बर क़रार दिया गया, और उपाशना यानी भक्ती का दरजा दूसरा रक्खा गया, और इस से यह मतलब समझा गया कि उपाशक ब्रह्म के लोक में पहुंच कर अपने उपाश्य

या भगवंत के समीप या सनमुख रह कर और दर्शन के आनन्द और बिलास को प्राप्त हो कर बहुत काल के वास्ते सुखी हो जावे, लेकिन प्रलय या महा प्रलय के समय ब्रह्म और ब्रह्म लोक का सिमटाव और अभाव ज़रूर होगा, और उस वक्त ब्रह्म उपाशकों की भी हालत बदल जावेगी और फिर रचना में आना पड़ेगा, इसी सबब से ज्ञान के मुक़ाबले में भक्ती की महिमाँ कम ठहरी, और ज्ञानियों की नज़र में उस का आदर घट गया, लेकिन अभ्यासियों के वास्ते उस को क़ायम रक्खा, और जब उपाशना पूरी हो गई यानी उपाशक उपास्य के लोग में पहुंच गया, और उसका दर्शन करके चारों साधन उस को प्राप्त हो गये, फिर भक्ती की ज़रूरत नहीं रही, फिर ज्ञान के हासिल करने का जतन बाक़ी रहा, यानी सिद्धान्त के बचन सुन कर और समझ कर, दिन २ अभ्यास ब्रह्म के लक्ष स्वरूप में यानी अरूप पद में समाने का करके अपना आपा जिस क़दर कि बाद भक्ती के बाक़ी रहा सिद्धान्त पद में पहुंच कर निज अरूप में लीन कर दिया ॥

२४—बाचक ज्ञानियों ने जब सिद्धान्त के बचन सुने और ऊपर का लिखा हुआ हाल उनको मालूम हुआ

तो उन्हों ने शुरू ही से भक्ती का निरादर किया और ब्रह्म बन बैठे, और कहने लगे कि भक्ती में त्रिपुटी (यानी उपास्य उपासक और उपासना) कायम रहती है, और इस सबब से दूजा भाव बना रहता है, और आवागवन दूर नहीं होता, और ज्ञान में सिर्फ़ ब्रह्म ही ब्रह्म रहता है और दुनिया का अभाव है, और इस वास्ते जनम मरन भी नहीं रहता, इस सबब से उन्हों ने बग़ैर अभ्यास करके तै करने नाम रूप की रचना के पहिले ही से नाम और रूप का अभाव और निरादर कर दिया, यानी ब्रह्म के वाच्य स्वरूप से लेकर नीचे से नीचे की रचना तक सब को नाश मान और मिथ्या कह कर उपासना को फ़ज़ूल समझा, और इस सबब से वे जहाँ के तहाँ रहे, यानी अस्थूल मन और इंद्रियों के घाट पर बैठे हुये सिद्धान्त की बातें और ब्रह्म के वाच्य और लक्ष स्वरूप का बुद्धी से निरनय करके लक्ष रूप की धारना करने लगे, और सच्चे और प्रेमी परमार्थियों पर जो भक्ती और अंतर अभ्यास करके निज अरूप पद में पहुंचने का जतन कर रहे हैं तान मारने लगे, कि इनका जनम मरन नहीं छूटेगा और ब सबब न होने ज्ञान (वाचक) के उन का पूरा उद्धार नहीं होगा ॥

३५—जो कोई इन वाचक ज्ञानियों के क़ाल और हाल यानी बोली और रहनी पर ग़ौर से नज़र करे तो उस को साफ़ मालूम हो जावेगा कि इन लोगों ने अपने आचारजों के यानी जोगी और जोगेश्वर ज्ञानियों के सिद्धाँत के बचन सुन कर जल्दी की, और जो बचन कि उन्हों ने निसबत उपाशना और अंतर अभ्यास के फ़रमाये उन पर मुतलक़ तवज्जह नहीं करी, यानी बग़ैर तीन लोक की रचना के (अभ्यास करके) पार जाने के पारपद को (जो उनको सिद्धाँत था) सही करके उसी की धारना सिर्फ़ अक़ली बिचार करके शुरू की, और ऐसा यक़ीन किया कि उस रचना का ज़बानी या मानसी निषेध करके पारपद में पहुँचना या अपने तईं वही (लक्ष रूप) समझ कर पूरे बन जाना मुमकिन है, यह बड़ा भारी धोखा इन वाचक ज्ञानियों ने खाया और अपना भारी अकाज किया, यानी चौरासी के चक्कर से नहीं बचे, और न इधर के रहे और न उधर के हुये, यानी न तो भक्ती करके ब्रह्म लोक के आनन्द और विलास को प्राप्त हुये, और न ज्ञान करके ब्रह्म के लक्ष स्वरूप में समाये ॥

३६—सबब इस धोखे का यही हुआ कि वाचक ज्ञानियों ने मुवाफ़िक़ क़ौल और बचन अपने आचारजों

के ब्रह्म को सर्ब ब्यापक माना और माया और उसकी रचना को मिथ्या समझा बल्कि यहाँ तक कि तीन काल रचना हुई ही नहीं और है भी नहीं और वही ब्रह्म स्वरूप आप को और कुल्ल को माना और चेतन्य का तन मन और इंद्रियों के साथ बंधन और संसार में झुकाव को भरम समझा और इस भरम के दूर करने का इलाज यह क़रार दिया, कि सिद्धान्त यानी ज्ञान के बचन सुन कर और समझ कर अपने आप को निर्मल और निरलेप चेतन्य समझे और इस ख़्याल को बिचार और अहंग्रह उपाशना करके पकावे फिर ज़रूरत भक्ती और दूसरे अभ्यास करने की नहीं रहेगी, क्योंकि आना जाना उन्हों ने नहीं माना, लेकिन जो कि माया और उसकी रचना जब तक कि जहाँ तहाँ मौजूद है सच्ची है, और माया के देश यानी घेरे में बराबर जारी है और रहेगी, और सिर्फ़ ज़बानी जमा ख़र्च से बग़ैर उसकी हद्द के पार पहुंचने के उस से छुटकारा मुमकिन नहीं है, इस सबब से उसको पहिले ही से मिथ्या और ग़ैर मौजूद और भरम समझने से इन बाचक ज्ञानियों ने धोखा खाया, यानी माया के घेर में ही रहे, और इस सबब से जनम मरन से बचाव नहीं हुआ, और जो कोई

इन को खुद जोगेश्वरों के बचन के बमूजिब समझावें कि षटचक्र बेध कर पिंड के परे ब्रह्मांड में जाना चाहिये तो उनका मन (जो कि अपने स्वभाव के मुवाफ़िक़ ऊँचे से ऊँचे और बढ़ से बढ़े की बात बग़ैर मिहनत और तकलीफ़ के हासिल करना चाहता है) ऐसी समझौती को क़बूल नहीं करता, फिर संतों के बचन को जो कि पिंड और ब्रह्मण्ड के पार दयाल देश में जाने की जुगत बतलाते हैं किस तरह मानें, इस वास्ते संतों के सतसंगियों से इन बाचक ज्ञानियों का मेल किसी तरह नहीं हो सक्ता है ॥

३७—संत सतगुरु जो सच्चे और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के धाम में पहुंचे फ़रमाते हैं, कि निरंजन जोत सत्तपुर्ष की किरनें यानी बूँदें हैं और यह दोनों धारें सत्तलोक यानी सत्तपुर्ष के चरनों से निकल कर पहिले संतों के दसवें द्वार में ठहरीं और उनका नाम पुर्ष प्रकृति हुआ, यही अस्थान तिरलोकी का मूल पद है, यहाँ माया बीज रूप थी इस सबब से जोगेश्वर ज्ञानियों को नज़र न आई, और उन्हों ने उस पद को शुद्ध और पारब्रह्म क़रार दिया, फिर वहाँ से उतर कर दोनों धारें त्रिकुटी में ठहरीं, और यहाँ उनका माया ब्रह्म नाम हुआ, इसी अस्थान

से सूक्षम मसाला तीन लोक की रचना का प्रगट हुआ फिर यहाँ से उतर कर यह दोनों धारें सहसदल कंवल के मुकाम पर ठहरीं, और दोनों का रूप जुदा २ प्रघट हुआ, और शिव शक्ति और जोत निरंजन इन का नाम हुआ, यहाँ से पाँचों तत्त और तीनों गुन की धारा प्रघट होकर निकलीं, और इन्हों ने नीचे के देश में देवताओं और मनुष्यों और चारों खान की रचना करी। संतों का देश पारब्रह्म से बहुत ऊँचा रहा जहाँ माया का नाम और निशान भी नहीं है, यानी जो कुछ कि उस का सूक्षम से सूक्षम बीजा था वह निकाल कर नीचे उतार दिया गया। उस देश को निर्मल चेतन्य और महा शुद्ध धाम समझना चाहिये, वहाँ एक चेतन्य ही चेतन्य है, और किसी तरह की मिलौनी दूसरे की नहीं है, और जो कि चेतन्य महा आनन्द स्वरूप है इस वास्ते वहाँ की रचना भी ऐन चेतन्य और आनन्द स्वरूप है, और हमेशा एक रस क़ायम रहती है, और यहाँ ही सत्तपुर्ष राधास्वामी सच्चे कुल्ल मालिक का निज धाम है॥

३८—संतों का उपास्य और भगवंत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल हैं, वह निर्मल चेतन्य और प्रेम और अमृत के निज भंडार हैं, और सुरत चेतन्य (यानी

आत्मा) उन्हीं की अंस हैं; इस तरह संतों को भगवंत यानी कुल्ल मालिक और उसका धाम (यानी दयाल देश) और उसके चरनों की भक्ती (जो कि ऐन प्रेम की धार है) अमर और अजर हैं और उसकी अंस सुरत भी अमर और अजर है, पर वह माया के देश में उतर कर और देही और मन और इन्द्रियों के साथ बँध कर और माया के पदार्थों (यानी भोगों की) चाह उठाकर इस संसार में दुख सुख भोगती है। और जो कि देही जो माया के मसाले की बनी हुई है और हमेशा उसका अंग अंग बदलता रहता है, और भाव अभाव होता रहता है, सदा एक रस क़ायम नहीं रहती, इस सबब से सुरत भी उस के साथ बंधन करके जनम मरन के चक्कर में पड़ी रहती है यह चक्कर जब तक कि सुरत अपने निज मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का भेद पाकर अपने घर की तरफ़ नहीं उलटेगी और जैसे २ देही उतार के वक़्त हर एक मंडल में धारन करती आई है उन से चढ़ाई के वक़्त अपना तअ़ल्लुक़ और बंधन छोड़ती न जावेगी, नहीं मिटेगा। इस चक्कर का ज़ोर दयाल देश के नीचे नीचे जहाँ माया की मिलौनी चेतन्य के साथ हुई है रहता है, और जब सुरत अभ्यास करके माया की

हद्द के पार पहुंचती है, तब ही काल के कष्ट और कलेश क़तई दूर हो जाते हैं, और निज देश में पहुंच कर परम आनन्द को प्राप्त होती है, और अपने सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर हमेशा को मगन हो जाती है ॥

३९—जबकि संतों का भगवंत और उसका धाम अमर और अजर है, और उसकी प्रेमा भक्ती भी हमेशा क़ायम है, इस सबब से संतों ने भक्ती की महिमा विशेष की है, और शुरू से अख़ीर तक उसको क़ायम रक्खा, यानी जब तक कि सुरत अभ्यास करती हुई निज धाम में पहुंच कर, अपने भगवंत राधास्वामी दयाल का दर्शन पावे, तब तक भेद भक्ती, और जब कि राधास्वामी दयाल के चरनों में रल मिल जावे तब उसको अभेद भक्ती कहते हैं, क्योंकि निज धाम में पहुंच कर सुरत की यह गत हो जाती है, कि जब चाहे जब अपने मालिक के चरनों में मिल जावे, और जब चाहे जब न्यारी होकर उनके दर्शन का बिलास करे। इस वास्ते संतों ने ज्ञान का लफ़्ज़ अपनी बानी में इस्तेमाल नहीं किया, क्योंकि उनके मत में सुरत का चेतन्य रूपी आपा हमेशा क़ायम रहता है, या उसको ऐसी गत हासिल हो

जाती है, कि जब चाहे जब उस आपे को अपने मालिक के चरनों में लीन कर दे, और जब चाहे जब न्यारी होकर उस के दर्शनों का आनंद लेवे। बरख़िलाफ़ इसके ब्रह्मज्ञानी जब कि ब्रह्म के लक्ष स्वरूप में लीन हो गये तब अपना आपा खो बैठे यानी फिर न्यारे नहीं हो सक्के, और न उन को फिर अपने आपे या ब्रह्म के लक्ष स्वरूप की ख़बर रहती है, क्योंकि उनका आपा बिलकुल गुम हो जाता है॥

४०—संत कहते हैं कि जब कि सच्चे जोगी और जोगेश्वर ज्ञानी माया के घेर में रह गये, तो उनका पूरा उद्धार नहीं हुआ, चाहे उनको इस बात की ख़बर पड़ी या नहीं, क्योंकि जहाँ तक माया की हद्द है, वहाँ तक भाव अभाव रचना का और उसके साथ जनम मरन जीवों का बराबर जारी रहेगा, चाहे वह नित प्रति होवे या कुछ काल देर करके या बाद परलय महा परलय के। फिर बाचक ज्ञानियों का उद्धार किसी दरजे का भी मुमकिन नहीं है, क्योंकि उनकी बैठक पिण्ड में मन और इन्द्रियों के मुक़ाम पर रही, और चारों साधन उनको असल में पूरे २ प्राप्त नहीं हुए और न ब्रह्म के वाच्य और लक्ष

स्वरूप में उनकी प्रीत या लगन जैसा कि चाहिये आई, और न जीते जो उन्होंने माया के परदे, जो माबैन उनके और ब्रह्म के हायल हैं फ़ोड़ कर उनके पार गये, इस सबब से वे (जो कोई संसारी या परमार्थी बासना उनके दिल में ज़बर नहीं रही) मनाकाश में समाते हैं, और वहाँ से कुछ अर्से बाद नीचे को उत्थान होकर फिर देह धरते हैं और सिलसिला आवा गवन का बदस्तूर क़ायम रहता है ॥

बरख़िलाफ़ इस के संतों का सतसंगी भक्ती करके और दया का बल लेकर सुरत शब्द जोग का अभ्यास करता हुआ माया की हद्द के पार दयाल देश में पहुंच कर अपने प्रीतम भगवंत यानी राधास्वामी दयाल के सन्मुख पहुंच कर अमर आनन्द और विलास को प्राप्त होता है, और जनम मरन के कष्ट और देहियों के कलेश से हमेशह को छूट जाता है, और ज़्यादह बढ़की बात यह है कि उसका सुरत रूपी निज आपा हमेशा क़ायम रहता है कि जिससे वह अपने सच्चे कुल्ल मालिक की अपार कुदरत को देख कर मगन होता है, और दर्शनों का आनंद सदा लेता है ॥

४१—अब समझना चाहिये कि संतों ने जो प्रेमा भक्ती की महिमाँ बिशेष करी, और शुरू से अख़ीर तक उसको क़ायम रक्खा, उसका सबब यही है कि उन का उपास्य और उसका निज धाम अमर और अविनाशी है, और जोगी और जोगेश्वर ज्ञानियों का उपास्य और उसका धाम चलायमान और नाशमान है, इस सबब से उनकी भक्ती हमेशह क़ायम नहीं रह सक्ती, और बग़ैर ज्ञान यानी लक्ष या अरूपपद में समाने के, कोई सूरत रिहाई और बचाव की उनको नज़र न आई, इस सबब से उन्हों ने ज्ञान पर ज़्यादह ज़ोर दिया यानी उसकी मुख्यता की, और भक्ती को थोड़े दिन का यानी ओछा साधन समझ कर उसका निरादर रक्खा और अख़ीर में उड़ा दिया, और बाचक ज्ञानियों ने सच्चे ज्ञानियों के इस बचन को सुन कर या पढ़ कर, शुरू से ही भक्ती का निरादर करके और सिद्धान्त के बचनों को पकड़ के, बिचार वग़ैरह के साथ अमल दरामद किया, कि जिस्से वे जहाँ के तहाँ रहे, क्योंकि उन्होंने ब्रह्म को सर्व व्यापक मान कर चलने और चढ़ने की ज़रूरत न समझी, और इस काररवाई में उनको

अपने बल यानी पुरुषार्थ का भरोसा रहा, और समरथ पुर्ष की ओट या सहारा नहीं लिया ॥

४२—अब ख़्याल करो कि इस देश और पिंड में किस क़दर माया और उसके मसाले का ज़ोर शोर है, और काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार और मन और इन्द्रियाँ किस क़दर बली हो रहे हैं, और कुल्ल जीवों बल्कि देवताओं को भी नाच नचा रहे हैं, फिर जीव की जो कि महा निबल है क्या ताक़त है, कि बग़ैर सहारे और मदद समरथ पुर्ष के, और बग़ैर कमाई ऐसे अभ्यास के, कि जिससे माया देश यानी पिंड और ब्रह्माण्ड से आहिस्ता २ न्यारे होकर, सुरत ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ती जावे, और कुल्ल वैरियों को जीत कर दया के बल से माया की हद्द के पार, संतों के निज देश में, पहुंचे और हमेशह को महा सुखी हो जावे, यानी सच्चा और पूरा उद्धार और अमर देश में अमर आनंद का प्राप्त होना, बग़ैर दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और बग़ैर मदद संत सतगुर के किसी तरह मुमकिन नहीं है ॥

फिर बिचारे बाचक ज्ञानियों की कहाँ ताक़त (कि जिन को असल में चारों साधन बल्कि उन

मैं से एक भी साधन, यानी सच्चा और पूरा बैराग हासिल नहीं हुआ) कि अपने मन और इंद्रियों पर ग़ालिब आवैं और कुछ भी साधन अपने जीव के कल्यान यानी उद्धार का कर सकैं, अलबत्तह बातैं बनाना और ज़बानी वाच्य और लक्ष स्वरूप ब्रह्म का निरनय करना खूब आजाता है, और अपने आप को ब्रह्म स्वरूप मान्ने से अहंकार खूब बढ़ जाता है, और बसबब न हासिल होने ब्रह्मानंद के मेले और तमाशों में देश बिदेश भरमते रहते हैं, यह हालत उनकी प्रघट नज़राई देती है, और बिचारवान और समझ दार लोग उन की चाल ढाल को देख कर, आसानी से दरियाफ़्त कर सक्ते हैं, कि वे बाचक ज्ञानी ब्रह्मानंद से ख़ाली हैं फिर ग्रंथों के पढ़ने और पढ़ाने और ख़ाली निरनय, और बिचार करने का, उनको सिवाय तरक़्क़ी मान और अहंकार के, और निरभय होकर बर्तने मन और इन्द्रियों की तरंगों में क्या फ़ायदा और फल हासिल हुआ।

४३—संतों के सतसंगियों को इस वास्ते मुनासिब है कि ऐसे बाचक ज्ञानियों का जोकि अद्वैत बादी

हैं, यानी भक्ती से बिरोध और नफ़रत रखते हैं और सिवाय बिचार और अहंग्रह उपाशना के (मैं ब्रह्म हूं) और कोई अभ्यास नहीं करते संग और सुहबत न करैं, और न इस क़िसम के ग्रंथौं को सिवाय एक दफ़े के वास्ते मालूम करने उनके हाल के पढ़ैं, और नहीं तो इनके बचन बेपरवाही और अहंकार के सुन २ कर आलसी और बेपरवाह हो जावैंगे, और फिर उनसे अभ्यास संतौं की जुगत का नहीं बनेगा, और इस सबब से उनके उद्धार में ख़लल पड़ जावेगा ॥

४४—लेकिन जो बेदान्ती या ज्ञानी या सूफ़ी द्वैत-बादी हैं, यानी भक्ती को क़ायम रखते हैं, और अपनी सफ़ाई के वास्ते कोई न कोई अंतरी अभ्यास करते रहते हैं जैसे अजपा जाप यानी स्वाँसा से नाम का लेना, या मानसी प्राणायाम करना, या दृष्टी का साधन करना या दिलपर नाम की ज़र्ब लगाना, या दस प्रकार के शब्द जो पातंजल जोग शास्त्र में लिखे हैं, उनका किसी न किसी तरकीब से चित्त लगा कर सुनना, या ब्रह्म को आकाश-वत व्यापक मान कर चेतन्य यानी रोशन आकाश का ध्यान करना वग़ैरह २, उनका संग और सुहबत

शुरू मैं जब तक कि संत या साधगुरु (संत मत वाले) न मिलैं, करने मैं कुछ हर्ज नहीं होगा, बशर्ते कि यह शख़्स सच्चा परमार्थी है, और अपनी हालत को निरखता परखता चलता है, और जाँच करता रहता है कि किस क़दर मेरी बृत्ती ब्रह्मानंद मैं लीन होती है, ऐसे शख़्स को इन ज्ञानियों के सतसंग से यह फ़ायदा होगा कि अंदरूनी सफ़ाई हासिल होगी, पर सुरत की चढ़ाई का फ़ायदा बग़ैर अभ्यास संतों की जुगत (सुरत शब्द योग) के, और किसी तरह हासिल नहीं हो सक्ता, और जब उसको संत सतगुर या साधगुरू भाग से मिल जावैं तब उस को मुनासिब और लाज़िम होगा कि और सब संग छोड़ कर सिर्फ़ उनका सतसंग करे और उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ सुरत शब्द योग का अभ्यास, प्रेम और अनुराग के साथ करे, तब उसकी सुरत आहिस्ता २ पिंड से न्यारी होकर ब्रह्माण्ड यानी ब्रह्म देश मैं, और फिर वहाँ से संतो के दयाल देश मैं पहुंच कर, और अपने सच्चे कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनंद को प्राप्त होगी। वह कुल्ल मालिक अरूह अपार अनंत और अबिनाशी है, और उसका देश भी अमर है, और

वहाँ का आनन्द भी अनन्त और अपार और अमर है, और सुरत पहुँचने वाली भी अमर हो जावेगी ॥

४५—सच्चे जोगेश्वरों के मत में और संत मत में सिर्फ़ इतना भेद है, कि वे एक दरजे नीचे रहे, यानी उनका सिद्धान्तपद शुद्ध माया की हद्द यानी ब्रह्माण्ड में रहा, और इस सबब से उनका आवागवन क़ितई नहीं छूटा, यानी परलय या महा परलय के बाद फिर शरीर धारन करना पड़ा, और संत माया की हद्द यानी ब्रह्माण्ड के पार गये, और निर्मल चेतन्य यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के देश में पहुंच कर बासा किया, और वाचक ज्ञानियों का यह हाल है कि उन्हों ने चलना चढ़ना (यानी माया देश को ते करना) नहीं माना, इस सबब से मलीन माया के देश यानी पिंड में ही रहे, मनाकाश में जिस को उन्हों ने ब्रह्म या आत्मा क़रार दिया समाये, और हरचंद इन्हों ने ब्रह्म को अपना सिद्धान्त माना, लेकिन उसके निज धाम की (जो ब्रह्माण्ड में वाक़े है) इन को ख़बर नहीं पड़ी, इस सबब से इनका दरजा बहुत नीचा रहा, और आवागवन उनका जल्द जल्द होता रहा ॥

बचन ६

मन और सुरत की चढ़ाई धीरज के साथ चाहिये और अभ्यास दुरस्ती से यानी निर्बिघ्न करना चाहिये।

१—राधास्वामी मत के अभ्यासियों को चाहिये कि बिरह और उमंग लेकर अपना अभ्यास नेम के साथ रोज़मर्रह करैं, और मन और सुरत और दृष्ट को पहिले पाँच चार मिनट तीसरे तिल के मुक़ाम पर जमावैं, और फिर पहिले या दूसरे अस्थान पर तवज्जह रख कर यानी चित्त को ठहरा कर शब्द को सुनैं; और ध्यान के वक़्त उसी मुक़ाम पर नज़र और चित्त को ठहरा कर स्वरूप का ख़्याल करैं (चाहे जब नज़र आवैं) और अभ्यास करने मैं चढ़ाई के वास्ते, नीचे से ऊपर की तरफ़ बहुत ज़ोर न लगावैं, सहज स्वभाव मन और चित्त और नज़र को ऊपर की तरफ़ तान कर मुक़ाम पर शब्द या स्वरूप के आसरे ठहरावैं, और होशयारी रक्खैं कि दुनियाँ के ख़ियालात किसी क़िसम के मन मैं न आवैं, और न किसी तरह की तरंग स्वार्थी या परमार्थी उठावैं,

तो अभ्यासी को थोड़ा बहुत रस और आनन्द शब्द या स्वरूप का ज़रूर मिलेगा ॥

२—जो अभ्यास के वक़्त हालत बिरह और उमंग की न होवे, तो चाहिये कि पहिले दो शब्द चितावनी और बैराग और दो शब्द प्रेम के गौर से पढ़कर अभ्यास में बैठें और अपनी कसरों पर नज़र करके, दीनता के साथ थोड़ी प्रार्थना वास्ते प्राप्ती दया के राधास्वामी दयाल के चरनों में करें, और फिर भजन या ध्यान शुरू करें ॥

३—जो इस पर भी मन न माने और गुनावन और ख़ियालात बेफ़ायदा उठावे तो जो भजन करते होवें उस में ध्यान शामिल कर दें, यानी उसी आसन से बैठे हुये स्वरूप का ध्यान करें, और शब्द की तरफ़ भी तवज्जह रक्खें, और जो फिर भी गुनावन बंद न होवे तो सुमिरन नाम का भी करते जावें । इस तरह मन थोड़ा बहुत निश्चल होकर अभ्यास में लगेगा ॥

४—जो फिर भी गुनावन दूर न होवे, और मन दुरस्ती के साथ भजन में न लगे, तो भजन या ध्यान के वक़्त किसी प्रेम के शब्द या प्रेम की कड़ियों को अंतर में या थोड़ी आवाज के साथ थोड़ी देर गावें ।

उससे यक़ीन है कि गुनावन दूर हो जावेगी, और भजन और ध्यान का कुछ रस आवेगा ॥

५—जो इस पर भी मन रूखा फीका रहे, और ख़िया-लात बे फ़ायदा उठावे तो भजन और ध्यान छोड़-कर धुन के साथ नाम का सुमिरन करे, इस तरह कुछ सफ़ाई हासिल होगी, और फिर थोड़ी देर ध्यान या भजन करे, या दोनों को मिलाकर अभ्यास करे, तो कुछ फ़ायदा मालूम पड़ेगा ॥

६—जो किसी वक़्त इन कामों में मन बिल्कुल न लगे या रूखा फीका रहे, तो पाँच शब्द जिन में रास्ते का भेद और चढ़ाई का हाल होवे, ग़ौर के साथ और अर्थों पर नज़र रख कर, आहिस्ते २ या थोड़ी आ-वाज़ के साथ पढ़ें, और मुक़ाम २ पर जैसा कि उन-का ज़िकर आवे, मन और चित्त को ख़्याल के साथ ठहराते जावें, और शब्द की हर एक कड़ी को चार या पाँच दफ़े या ज़्यादा पढ़ें और उतनी देर उसी मुक़ाम पर जिसका ज़िकर कड़ी में है चित्त को ठह-रावें। इस क़िसम का पाठ थोड़ा बहुत भजन और ध्यान की बराबर फ़ायदा देगा, और होशयारी रक्खें कि और कोई ख़्याल संसारी या परमार्थी मन में न आवे ॥

७—जो इन काररवाइयों में से कोई भी दुरुस्ती से न बनसके, तो समझना चाहिये कि मन निहायत करमी और मलीन है, और उसकी सफ़ाई का इलाज यह है, कि चंद रोज़ होशियारी के साथ सतसंग करे, और प्रेमी और साध जन की थोड़ी बहुत सेवा इख़्तियार करे, और उनके और सतसंग के बचनों को चित्त देकर सुने और मनन करे, तब कुछ अर्से में सफ़ाई हासिल होगी, और शौक़ पैदा हो जावेगा, फिर जो अभ्यास कि ऊपर लिखागया है, उससे दुरुस्ती से बनना शुरू हो जावेगा ॥

८—और जो ऐसा मौक़ा न होवे कि कोई दिन सतसंग में रह कर सेवा और अभ्यास करे, तो वह तरकीब करे कि घंटे दो घंटे बाद, पाँच मिनट सात मिनट जहाँ बैठा हो, या कोई काम हाथों से कर रहा हो, या चारपाई पर लेटा होवे, आँख बंद करके पहिले अस्थान पर मन और सुरत और दृष्टि को जमाकर सुमिरन और ध्यान करे। इस क़दर थोड़े अर्से यानी पाँच सात मिनट में मन चंचल नहीं होगा और न कोई ख़्याल और तरंगें उठावेगा। इस तरह दिन रात में जो दस बारह दफ़े भी यह अभ्यास बन पड़ा, तो क़रीब एक घंटे के या कुछ ज़्यादह वक़्त इस

निर्मल अभ्यास में लग जावेगा, और कोई दिन में थोड़ा बहुत रस ज़रूर आवेगा कि उसका असर हर वक्त़ मालूम पड़ेगा, और मामूली भजन और ध्यान के वक्त़ भी, पाँच २ सात २ मिनट कई बार करके मन अस्थिर होकर कुछ रस पावेगा, और रफ़्ता २ मामूली अभ्यास भी दुरुस्ती से बनेगा, और सिवाय उसके यह चंद मिनट का अभ्यास भी और और वक्त़ों पर जारी रहेगा, कि जिस्से जल्द सफ़ाई मन और इन्द्रियों की होती जावेगी, और आनन्द भी आहिस्ता २ बढ़ता जावेगा॥

९—जो किसी को वक्त़ भजन या ध्यान के इधर से ग़फ़लत हो जावे और अंतर में होश रहे, तो यह निशान दुरुस्ती अभ्यास का है, लेकिन जो नींद की सी हालत हो जावे, और दोनों तरफ़ का होश न रहे, तो मुनासिब है कि वक्त़ शुरू होने ऐसी हालत के, दो चार मिनट के वास्ते अभ्यास छोड़ कर आँखें खोलदे, और जो सुस्ती दूर न होवे तो उठ कर दो चार क़दम टहल कर फिर अभ्यास करे, और जो फिर नींद की सी हालत होवे तो वही इलाज करे, और जो फिर भी ग़फ़लत आवे तो उस वक्त़ अभ्यास मुल्तवी कर दे॥

१०—कम से कम एक वक्त, आध घंटा या बीस मिनट अभ्यास करना चाहिये, और जिस अभ्यास (भजन या ध्यान) में मन ज़्यादा लगे, वह ज़्यादा करना चाहिये और दूसरा कम, लेकिन यह दोनों अभ्यास दो दफ़े रोज़ मरेह ज़रूर करना मुनासिब है, और जहाँ तक मुमकिन होवे नाग़ा नहीं करना चाहिये ॥

११—मामूली तौर पर अभ्यास का वक्त, सुबह और शाम का मुनासिब है, और कोई क़ैद नहाने और धोने और जगह वग़ैरह की नहीं है, जिस तरह जिस का दिल चाहे, आराम के साथ नरम फ़र्श पर बैठे, और जो पेशाब या पाख़ाने की हाजत होवे, तो उससे फ़ारिग़ होकर बैठे, और जगह की इस क़दर अहतियात चाहिये, कि अभ्यासी के नज़दीक शोर व ग़ुल न होवे और कोई ग़ैर आदमी वहाँ मौजूद न रहे, और कोई अभ्यासी को अभ्यास की हालत में न छेड़े, जो ज़रूरत होवे तो दूर से आवाज़ देवे ॥

१२—शौक़ीन अभ्यासी को इख़्तियार है, कि चाहे जिस वक्त, खाना खाने से पेश्तर, या दो तीन घंटे बाद खाना खाने के, चाहे जिस जगह अभ्यास करे, और चाहे जितनी देर दस मिनट से लगा कर

एक घंटे सवा घंटे या डेढ़ घंटे तक, जिस क़दर दिल चाहे एक मर्तबे अभ्यास करे, और जब दया से उस की सुरत और मन सिमट कर, ऊपर की तरफ़ को चढ़ने लगे तो शुरू में इस क़दर अहतियात रक्खे कि बहुत ज़्यादह और बहुत ऊँचे की तरफ़ उनको न खींचे, आहिस्ता २ जिस क़दर बरदाश्त होवे चढ़ाई करे, और जब ऐसा होवे कि बसबब ज़्यादा चढ़ाई के दिल तड़पने लगे, तो जितने दरजे बरदाश्त होवे अभ्यास जारी रक्खे, और जब ऐसी हालत दिल की बरदाश्त न होवे तो उस वक़्त अभ्यास छोड़ देवे, या जो ख़ुद बख़ुद खिचाव ज़्यादह मालूम होता होवे, और उसकी बरदाश्त न कर सके, या कुछ तकलीफ़ या ख़ौफ़ मालूम होवे, तो भी उस वक़्त अभ्यास छोड़ कर उठ खड़ा होवे, और फिर थोड़े अर्से बाद अभ्यास करे, ताकि आहिस्ता २ उस हालत की बरदाश्त हो जावे, और बाद अभ्यास के कुछ काम काज भी करता रहे, जिससे बदन और इन्द्रियाँ सिथल और सुस्त न होने पावें ॥

१३—जो किसी अभ्यासी का वक़्त ध्यान या भजन के कोई हिस्सा बदन का सुन्न यानी सुस्त या बेकार हो जावे तो जानना चाहिये कि उससे अभ्यास दुरुस्त

बनता है। ऐसी हालत को देख कर ख़ौफ़ और वहम न करना चाहिये। बाद अभ्यास के आहिस्तगी के साथ उठ कर दस पाँच मिनट चिहल क़दमी करे, सुस्ती बदन की रफ़ा हो जावेगी ॥

१४—जब भजन या ध्यान में विशेष रस या आनंद मिलने से, अभ्यासी की तबीअत में मस्ती और बे परवाही और संसार के भोग बिलास और काररवाई की तरफ़ से किसी क़दर नफ़रत पैदा होवे, तो लाज़िम है कि ऐसे जोश की हालत में, किसी चीज़ या काम या रोज़गार या कुटम्ब परवार का जल्दी से त्याग न करे, और इस जोश को पक्का और ठहराऊ न समझे। थोड़े दिन में आहिस्ता २ हज़म हो जावेगा, यानी साधारन हो जावेगा, और फिर अपने त्याग वग़ैरह पर पछताना पड़ेगा, इस वास्ते इस मुआमले में निहा-यत अहतियात के साथ बर्ताव करना लाज़िम है, और उस जोश को जिस क़दर मुमकिन होवे, ज़ब्त करना और दुनियाँदारों की नज़र से छिपाना मुना-सिब है ॥

१५—और अभ्यासी को ऐसे जोश की हालत में अपने तईं पूरा मानना या अपना सब काम पूरा बन जाना समझना नहीं चाहिये, नहीं तो रास्ता आइन्दह

की तरक्की का बंद हो जावेगा, और जो हालत कि पैदा हुई है वह भी रफ़्तह २ साधारन हो जावेगी और फिर अपनी कसरें मालूम पड़ेंगी, और वह समझ (पूरे मानने की) ग़लत हो जावेगी ॥

१६-अभ्यासी को हर हालत में मुनासिब है कि अपनी क़सरों पर नज़र रक्खे, और दीनता न छोड़े, और जब तक कि त्रिकुटी और दसवें द्वार में न पहुँचे तब तक जो कुछ कि हालत मस्ती और बे परवाही की उस पर गुज़रे, और ज़्यादह से ज़्यादह आनन्द प्राप्त होवे, उसको पायदार और मुसूतक़िल न समझे और दिन २ अभ्यास में तरक्की करे, और ऊँचे से ऊँची चढ़ाई पर नज़र और इरादा रक्खे, और देह और इंद्रियों से थोड़ा बहुत काम काज करता रहे, जिसमें रूह की धार का चढ़ाव और उतार बराबर जारी रहे, और तरक्की भी होती रहे। इस तरह अहतियात के साथ अभ्यास करने से काम पूरा और दुरुस्त बनेगा, और नहीं तो मस्ती और बे परवाही ग़ालिब हो जावेगी, और दुनियाँ और देह के काम में बहुत हर्ज वाक़े होगा, और फिर अभ्यास और उसकी तरक्की में भी खलल पड़ेगा, और वह हालत मस्ती की भी एक रस क़ायम नहीं रहेगी, और शायद कि तन्दुरुस्ती में भी किसी न किसी तरह का खलल वाक़े होवे ॥

१७—वास्ते दुरुस्ती से जारी रहने काररवाई अभ्यास के और ज़ब्त करने जोश मस्ती के, अभ्यासी को मुनासिब है कि संत सतगुरु या साधगुरू या प्रेमी अभ्यासी से जो अपने से ज़्यादा दरजे का है मेल, और उनके सतसंग में वक्तन फ़वक्तन चंद्र रोज़ के वास्ते शामिल होना, ज़रूर जारी रक्खे—उनकी सुहबत और बचनों से इसको अपनी हालत की ख़ामी मालूम होती रहेगी, और आनंद और सरूर का नशा जो इसको वक्तन फ़वक्तन अभ्यास में हासिल होगा, ना मुनासिब तौर पर बढ़ने नहीं पावेगा, और वे हर तरह से अंतर और बाहर मदद देकर, इस को जल्दबाज़ी और मस्ती और दूसरे नुकसान वग़ैरह से बचाते रहेंगे, और दिन २ इसकी तरक्क़ी में मदद देंगे ॥

बचन १७.

तरकीब रोकने मन की चाह और तरंगों की और ज़ब्त करने इंद्रियों की, और बर्णन फ़ायदह राधास्वामी दयाल की सरन का ॥

१—जबकि अभ्यास के समय मन और इंद्रियाँ चंचल रहेंगी, तो कुछ रस नहीं आवेगा, और न कुछ तरक्क़ी

होवेगी, इस वास्ते वह उपाव कि जिससे मन थोड़ा बहुत ठहरे आगे लिखा जाता है ॥

२—ग़ौर से मन के हाल को बिचारने और जाँच करने से मालूम होता है, कि यह चार मौक़ों पर थोड़ा बहुत क़ाबू में आ सक्ता है, यानी चंचलता छोड़ कर जहाँ ठहराओ वहाँ ठहर जाता है। एक ख़ौफ़ के वक़्त दूसरे अपने मतलब के पूरे होने की जगह, तीसरे इश्क़ और मुहब्बत की जगह, चौथे रंज के वक़्त।

पहिले ख़ौफ़ का बयान।

३—जिस वक़्त कि किसी क़िसम का ख़ौफ़ दिल पर ग़ालिब होता है, उस वक़्त मन और इन्द्रियाँ सिथिल हो जाती हैं, और जिस तरफ़ को कि तवज्जह के साथ उनको लगाओ, तो थोड़े बहुत लग जाते हैं। ख़ास कर भजन और ध्यान में ऐसे वक़्त मन और सुरत का सहज में सिमटाव और ऊपर की तरफ़ चढ़ाई मुमकिन है, क्योंकि इस तरफ़ आस मिलने सहारे की वास्ते दूर होने ख़ौफ़ या बचाव के ख़ौफ़ की चोज़ से रहती है, और ऐसे वक़्त पर जिस क़दर ख़ौफ़ ज़्यादह होता है, उसी क़दर मन और सुरत ज़ोर के साथ अन्तर में लगते हैं। लेकिन हद्द से ज़्यादह ख़ौफ़ की हालत में कोई काम

नहीं बन सक्ता और ऐसी हालत दिल पर कभी नहीं आने देना चाहिये ॥

दूसरे आसा पूरन होनेकी जगह।

४—जिस जगह कि जीव का कुछ काम अटका हुआ है, या जहाँ से जिसकी कोई आसा पूरन होने वाली है, वहाँ यह मन उमंग और दीनता के साथ काररवाई करने को तइयार रहता है, और उस शख़्स के प्रशन्न और राज़ी करने को, जिस्से या जिसके वसीले से वह मतलब पूरा होना मुमकिन है, कोशिश करता है, और अपनी टेक और आदत और तरंगेँ चाहे जिस क़िसम की होवेँ फ़ौरन छोड़ देता है, और जिस तरफ़ वह शख़्स चाहे, उधर को फ़ौरन मुतवज्जह होकर, सर्व अंग से काम करने को तइयार होता है, और नीँच ऊँच सेवा और ख़िदमत तन मन और धन की ख़ुशी से करता है ॥

तीसरे इश्क़ और मुहब्बत की जगह।

५—जहाँ इस मन को किसी क़िसम की मुहब्बत है, या किसी के साथ इश्क़ पैदा हो जाता है, वहाँ यह गुलामों के मुवाफ़िक़ ख़िद्मत और हाज़िरी उमंग के साथ करता है, और अपनी सर्व चाहेँ और तरंगेँ उसकी

ख़ातिर छिन में छोड़ कर, अपने माशूक़ की ख़ुशी और रज़ामंदी को मुक़द्दम समझता है, और ज़रा भी अपने नफ़े और नुक़सान और इज्ज़त और हुरमत का आगा पीछा नहीं सोचता है, और कुटम्ब परवार और बिरादरी वग़ैरह का ख़याल नहीं करता है, और दुनियाँ की लज्या और शरम और ख़ौफ़ और उम्मेद वग़ैरह को ताक़ पर रख देता है, और जैसे माशूक़ चाहे वैसेही बर्तने को हरदम तइयार रहता है ॥

चौथे दुक्ख और रंज के वक्त ।

६—जब कोई सख़्त सदमाँ या मुसीबत या रंज वाक़े होता है, उस वक्त यह मन सब तरंगें संसारी तरक्क़ी और इन्द्रियों के भोगों को छोड़ कर उदासीन हो जाता है, और सच्चे बैराग की हालत उस पर ग़ालिब होजाती है, और निहायत दरजे की दीनता और ग़रीबी के साथ बर्ताव करता है, और किसी पर ज़ियादती या सख़्ती करना पसंद नहीं करता है, और आम तौर पर परमार्थ और ख़ासकर मालिक के चरनों की तरफ़, इस की सरधा ऐसे वक्त में बहुत बढ़ जाती है, और संत और महात्माओं के बचनों को ग़ौर से सुनता और बिचा-रता है, और उन पर अमल करने को शौक़ के साथ

तइयार होता है, और जो कोई कड़वा या सख़्त बचन कहे, तो उस की बरदाश्त करता है, और उससे एवज़ लेने का इरादा नहीं करता ॥

७—जो ज़िकर मन की हालत का ऊपर लिखा गया, उसका बर्ताव दुनियाँ में प्रत्यक्ष और ज़ाहर नज़र आता है, और परमार्थ में भी उन चार सूरतों में मन की वैसी ही हालत बल्कि उससे ज़्यादा बदलनी मुमकिन है। उस का ज़िकर तफ़सील के साथ नीचे लिखा जाता है ॥

अव्वल परमार्थी ख़ौफ़ का बयान।

८—जबकि इस दुनियाँ और उसके सामान की नाशमानता सच्चे परमार्थी की नज़र में आई, और देह धर कर जो दुख सुख भोगने में आते हैं, उनका भी हाल उसने ग़ौर से दरियाफ़्त किया, और जहाँ २ कि उसकी प्रीत या बंधन है, उसके सबब से भी जो ख़ुशी और तकलीफ़ आयद होती है, उसको भी उसने जाँच कर देखा, कि अपनी ही आशक्ती का नतीजा है, और फिर अपनी मौत और आइन्दह की ज़बर बासना और संग और स्वभाव के अनुसार बारम्बार जनम और मरन का बिचार करके जो ख़ौफ़ दिल में पैदा हुआ, तो उ-

सके सबब से किसी क़दर सिथलता और सुस्ती ज़रूर मन में आवेगी। जो हर|वक़्त नहीं तो जिस वक़्त, कि इन बातों का ख़्याल दिल में आवेगा उस वक़्त ज़रूर हालत मन की बदलेगी। और जब कि अपने सच्चे और कुल्ल मालिक का पता और भेद घट में मालूम हुआ, और उसका कुछ जलवा और प्रकाश भी सच्चे गुरू का संग करके नज़र आया, तब उस मालिक और गुरू के हुकम के मुआफ़िक़, संसार और परमार्थ में न बर्तने के सबब से, जो ख़ौफ़ मालिक की अप्रशन्नता का दिल में पैदा हुआ, वह सब से बढ़ कर और निर्मल और सच्चा वसीला मन की दुरस्ती के वास्ते होवेगा। ऐसा ख़ौफ़ सिर्फ़ सच्चे परमार्थियों के दिल में, कि जिन को हरदम कुल्ल मालिक और गुरू की प्रशन्नता का ख़्याल रहता है, पैदा होगा, और वेही इस के सबब से बुरे कामों से बचेंगे॥

यह सब ख़ौफ़ मन की गढ़त और उसकी दुरुस्ती के वास्ते, और अभ्यास के समय उसको शब्द और स्वरूप में स्थिर करने के लिये, और भोगों से बचते रहने के लिये, बड़ी भारी मदद देते हैं। इस वास्ते हर एक परमार्थी को चाहिये, कि इन में से कोई न कोई ख़ौफ़ दिल में पैदा करके, संसार से अपना बचाव

(जिस क़दर मुनासिब और ज़रूरी होवे) करता रहे, और अंतर अभ्यास और बाहर सतसंग और सेवा बिरह अंग लेकर दुरुस्ती से करता रहे ॥

और जब कभी दुनियाँ का ख़ौफ़ किसी क़िसम का दिल में पैदा होता है, उस वक़्त भी अभ्यासी के मन और सुरत किसी क़दर निश्चल होकर अभ्यास में जुड़ जाते हैं, और अंतर में किसी क़दर शान्ती और तसल्ली उनको हासिल हो जाती है ॥

दूसरा बयान आस का वास्ते पूरे होने मतलब के ॥

९—जो कि सच्चे परमार्थी के मन में सब से बढ़ कर एक आसा अपने मालिक से उसके निज धाम में पहुँच कर मिलने की ज़बर होगी, और वह आसा बग़ैर दया और मेहर और बख़्शिश कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के पूरी होनी ना मुमकिन है, और कुल्ल मालिक और संत सतगुर की दया उस वक़्त हासिल होगी, कि जब वे सेवक की सेवा और दीनता और प्रेम और आज्ञाकारी होने से राज़ी और प्रसन्न होवें, इस वास्ते वह सेवक वास्ते प्राप्ती दर्शन और निज धाम के ज़रूर ख़ुशी और उमंग के साथ उन अंगों

मैं बर्तना शुरू करेगा, कि जिससे राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की प्रसन्नता और दया हासिल होवे, और उस बर्ताव मैं उसको किसी तरह की दिक्कत और तकलीफ़ न होगी, [बल्कि उस का मन उन अंगों मैं जिस क़दर मुमकिन होगा बर्तकर राज़ी होगा, और कोई अंग मैं न बर्तने से या भूल चूक हो जाने से निहायत दुखी होकर पछतावेगा, और मुवाफ़ी के वास्ते प्रार्थना करेगा, और आइंदह को ज़्यादह होशयारी और एहतियात के साथ काम करेगा ॥

इस वास्ते हर एक सच्चे परमार्थी को दर्शनों की चाह, और निज धाम मैं पहुँचने की आसा ख़ूब मज़बूत करके, वास्ते प्राप्ती मेहर और दया और प्रसन्न करने कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के जिस क़दर बन सके जतन करना चाहिये, और जब २ भूल चूक हो जावे तब २ अपने मन मैं शरमाना और पछताना और चरनों मैं प्रार्थना करना चाहिये ॥

तीसरा बयान प्रेम और इश्क़ का राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं ॥

१०—जब कि सच्चे परमार्थी को सतसंग करके साबित हो गया, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल

और संत सतगुर ही सच्चे और पूरे हितकारी जीव के हैं, और निज रूप से हर दम और हर वक़्त इसके संग हैं, और वे ही रचना भर में सब से बड़े और समरथ पुर्ष हैं, और उनका धाम जो ऊँचे से ऊँचा और सब के परे है, अमर अजर और परम आनंद का अस्थान है, और वहीं से सुरत आदि में उतर कर आई, और सिवाय कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के, और कोई, जीव के बंधन आहिस्ता २ काट कर, और उसको माया और काल के जाल से निकाल कर, उस निज घर में पहुंचाने वाला नहीं है, तब उस सच्चे परमार्थी के दिल में ज़रूर प्रीत और प्रतीत राधास्वामी और संत सतगुर के चरनों में आवेगी, और जिस क़दर कि उन की दया से अभ्यास करके इसकी चाल चलती जावेगी और अंतर में दया और मेहर के परचे मिलते जावेंगे, उसी क़दर प्रीत प्रतीत बढ़ती जावेगी, यहाँ तक कि दुनियाँ भर में उस को राधास्वामी दयाल और संत सतगुर से ज़्यादा या उनकी बराबर कोई प्यारा नहीं लगेगा और जिस क़दर प्रेम उसका शुरू से बढ़ता जावेगा, उसी क़दर वह तन मन धन की सेवा, ज़्यादा से ज़्यादा करता जावेगा, और जान प्राण तक उन पर नौछावर करने

को तइयार रहेगा, और किसी क़िसम की सेवा करने और भक्ती के अंगों में बर्तने में उसको भिझक या लिहाज़ या शरम या डर या सोच या बिचार आगे पीछे का नहीं रहेगा, और उनकी आज्ञा में बर्तने को अपना बड़ा भाग समझेगा ॥

इस वास्ते हर एक परमार्थी को राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों में, प्रीत और परतीत लाना और अंतर और बाहर सतसंग जारी रख कर उसका दिन २ बढ़ाना मुनासिब और लाज़िम है, कि जिससे उसपर दिन २ दया और मेहर की बख़्शिश ज़्यादह से ज़्यादह होती जावे, और सेवा और भजन और आज्ञा में बर्तना उस को सहज और आसान हो जावे ॥

चौथा दुक्ख और रंज यानी तीन तापों में गिरफ़्तारी ॥

११—इस दुनियाँ में कोई जीव ऐसा नहीं है, कि जो किसी न किसी क़िसम के दुःख में, किसी न किसी वक्त गिरिफ़्तार न होवे, यानी तीन ताप का चक्कर हमेशह चलता रहता है, और सब जीव रोग सोग और उपाधी के झटके सहते रहते हैं ॥

दुनियादार ऐसे दुखों के वक्त रोते और चिल्लाते और बिल्लाते हैं और पुकारते हैं, मगर कुछ सुनवाई नहीं होती, लेकिन परमार्थी जीव ऐसी तकलीफ़ों के वक्त, अपने कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की तरफ़, अपने घट में दौड़ते हैं—यानी उस वक्त सुमिरन ध्यान और भजन ज़ोर देकर करते हैं, कि जिससे उन को थोड़ा बहुत दया से सहारा मिलता है, और ऐसे वक्त में जो कि मन उनका दुनियाँ और उसके सामान और भोगों की तरफ़ से सच्चा उदास होता है, और मामूली चंचलता छोड़ देता है, यानी किसी क़िस्म की तरंगें और ख़्याल और गुनावन वग़ैरह नहीं उठाता है, इस सबब से ज़्यादह आसानी के साथ वे अंतर अभ्यास में लग जाते हैं, और उस तकलीफ़ के दूर होने या हलके होने या न ब्यापने या कम ब्यापने की नज़र से, ज़्यादह बिरह के साथ उनके मन और सुरत नाम और रूप और शब्द में जुड़ जाते हैं, और फ़ौरन उसका नतीजा यानी दया और मेहर और रक्षा और सम्हाल उनको अपने घट में मालूम होता है ॥

इस वास्ते कुल्ल परमार्थियों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जिस क़दर बन सके तकलीफ़ के वक्त थोड़ा बहुत अंतर अभ्यास करें, बैठे २ या लेटे २, और

जो मामूली तौर से न बन सके तो अपने चित्त को सहज तौर से चरनों में जोड़ते रहें, तो ज़रूर कुछ न कुछ मदद मिलेगी, यानी अंतर में दया का सहारा और ताक़त पावेंगे, और ऐसी हालत में हमेशह यह ख़्याल रखना चाहिये कि जो कुछ होता है वह अपने मालिक राधास्वामी दयाल की मौज से होता है, और वे उसमें हमेशह अपने बच्चों की रक्षा और सम्हाल करते हैं, और उनके दुखदाई करमों के फल को बहुत हलका कर देते हैं, और उसी में उनके मन की गढ़त और सफ़ाई भी करते हैं, और जो इस तरह मौज से तकलीफ़ आवे उसमें ज़्यादह घबराना या निरास होना नहीं चाहिये, बल्कि धीरज के साथ राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर उसको सहना चाहिये, और जहाँ तक मुमकिन हो मौज के साथ बग़ैर शिकवह और शिकायत के मुवाफ़क़त करना मुनासिब है, और जब दिल चाहे प्रार्थना करे और दया और मेहर माँगे, लेकिन जो प्रगट दया होती हुई न मालूम पड़े यानी तकलीफ़ किसी क़दर न घटे, तो भी उसको ऐसी ही मौज समझ कर, जहाँ तक बने बरदाश्त करने को तइयार होवे, तो ज़रूर वे दया से थोड़ी बहुत ताक़त बरदाश्त की बख़्शेंगे, और जो मौज कम करने या

घटाने तकलीफ़ की नहीं होगी, तो भी थोड़ी बहुत उसकी मसलहत अपने सेवक को जता कर सहारा देंगे, क्योंकि बाज़े करम इसी तरह काटे जाते हैं, और उसमें मतलब यह है कि अभ्यासी भक्त की जल्द मौज से सफ़ाई हो जावे और कोई करम उसको चरनों में पहुँचने और वहाँ बासा पाने से न अटकावे। इस बचन से यह न समझना चाहिये कि तकलीफ़ या बीमारी के वक़्त निरानिरी अभ्यास के आसरे रहे—नहीं ज़ाहरी तदबीर मिस्ल दवा वग़ैरह के दस्तूर के मुवाफ़िक़ ज़रूर करना चाहिये, और दया का आसरा और भरोसा वास्ते कामयाबी उस तदबीर या दवा के मन में रखना चाहिये, क्योंकि दवा का असर मुनासिब और मुवाफ़िक़ दया से होगा, और जो भक्त के किसी कुटुम्बी या रिश्तेदार को, कोई तकलीफ़ या मुसीबत आयद होवे, तो उस भक्त की भक्ती के सबब से बहुत सहायता उस कुटुम्बी की हो जावेगी मगर जैसे कि उसके करम हैं, उनका भोग दया और सहायता के साथ उसको ज़रूर भोगना पड़ेगा, क्योंकि करमों का लेख जैसा कुछ कि है मिट नहीं सक्ता है, पर दया से हलका हो जाता है, या परमार्थी भाव में बदल दिया जाता है ॥

१२—मन की हालत और कोई २ ख़वास उसके ऐसे हैं, कि बग़ैर थोड़ी बहुत तकलीफ़ पाये, उनकी गढ़त और दुरुस्ती मुमकिन नहीं है, यानी इसका संसार में बंधन और झुकाव ऐसा ज़बर है, कि जब तक अपने प्यारे जीवों और भोगों और पदार्थों से यह किसी क़दर तकलीफ़ या दुख न पावे, तब तक उनकी तरफ़ से मुख नहीं मोड़ता, इस वास्ते जब इसको किसी क़दर छुड़ाना और उन भोगों से हटाना मुनासिब और ज़रूरी मालूम होता है, और बचनों की समझ बूझ लेकर यह उनसे जैसा चाहिये वैसा नहीं हटता है, तब मौज से इसको उन मुआमलों में, किसी न किसी क़िसम की तकलीफ़ या रंज या झगड़ा या तकरार वग़ैरह पैदा करके हटाया और बचाया जाता है ॥

ऐसी तकलीफ़ें या झगड़े जब २ पेश होवें, उनको मस्लहत वास्ते परमार्थी फ़ायदह के समझ कर सच्चे परमार्थियों को ऐसी मौज के साथ मुवाफ़क़त करना चाहिये ॥

१३-सिवाय इन चार सूरतों के पाँचवीं जुगत वास्ते दुरुस्ती और सम्हाल मन के, और दूर करने उसके बिकारों के यह है, कि यह शख़्स औरों में औगुन और बिकार के अंग देख कर और उनको बुरा समझ कर

अपने हाल की तरफ़ नज़र करे, कि आया वही औगुन और बिकार मेरे में भी हैं या नहीं, और जो हैं तो वह और लोगों को ऐसे ही बुरे मालूम होते होंगे, जैसे कि औरों के औगुन मुझ को बुरे मालूम होते हैं, फिर औरों को नसीहत करने या उनके औगुनों की बुराई करने से पहिले मुझको लाज़िम और मुनासिब है, कि अपने औगुनों और बिकारों को दूर करूँ, और इस तरह यह शख्स आहिस्तह २ औरों के औगुन देखकर अपनी सफ़ाई करे, तो कुछ अर्से की ऐसी काररवाई से बहुत कुछ दुरुस्ती और सम्हाल मन की मुमकिन है, और अपने मन के हाल पर नज़र करने में इस क़दर एहतियात चाहिये, कि सब तरह के बिकारों और औगुनों पर चाहे वे संसार में नुक़सान करने वाले होवें, या परमार्थी काररवाई में बिघन डालने वाले होवें, ग़ौर से नज़र करे और उनके दूर करने में जहाँ तक बन सके राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर कोशिश करे ॥

१४—ईश्वर का भी वाक्य है, कि मैं वास्ते दुरुस्ती और बचाव और सम्हाल अपने भक्तों के उनको तीन चीज़ देता हूँ-पहिले थोड़ा रोग, दूसरे संसारियों में किसी क़दर निरादर, तीसरे किसी क़दर निरधनता, यानी वाफ़ी और काफ़ी धन न होना ॥

पहिले रोग का फ़ायदह

१५—थोड़ी बहुत बीमारी के रहने से मन कमज़ोर रहेगा, और ज़्यादह भोग बिलास मेँ नहीँ बर्तेगा, और अहंकार मन मेँ कम आवेगा, और दूसरे पर सख़्ती कम करेगा, और मौत का ख़ियाल जब तब आता रहेगा, और शरीर बहुत पुष्ट न होगा, कि जिससे भजन मेँ हर्ज पैदा होवे ॥

दूसरे निरादर का फ़ायदह

१६—जब संसारी और बिरादरी के लोग तान और निंद्या और हँसी करैंगे, और भक्त को नादान समझ कर उसका निरादर करैंगे, तो उसका दिल उनकी तरफ़ से ख़ुद बख़ुद और सहज मेँ हट जावेगा, और मेल बहुत कम होवेगा, इस तरह सहज मेँ संसारियोँ के साथ मुहब्बत और नशिस्त बरख़ास्त और बात चीत बहुत कम हो जावेगी, और उनका संसारी असर भक्त के दिल को नुक़सान नहीँ पहुँचावेगा ॥

तीसरा निरधनता का फ़ायदह

१७—जब कि धन की आमदनी सिर्फ़ गुज़ारे के लायक़ होगी, और भक्त के पास जमा नहीँ होगा, तो मन उसका ज़रूरत के वक़्त हमेशा मालिक की तरफ़ रुजू होगा, और दया और मदद माँगेगा, और

धन का भरोसा और अहंकार नहीं करेगा, और भोगों में भी कम बर्तेगा, क्योंकि जिस चीज़ और दिखावे के सामान को उसका मन चाहेगा, उसको बसबब काफ़ी न होने धन के ख़रीद नहीं सकेगा, और इस तरह निमाना रहेगा ॥

१८—परमार्थियों को समझना चाहिये, कि मुसीबत और तकलीफ़ एक क़िस्म की कसौटी है, इसमें अपने मन के हाल की और भी प्रीत और प्रतीत अपने इष्ट की ख़ूब जाँच होती है, और अपनी कसरों को मालूम करके, उनके दूर करने का मौक़ा मिलता है, यह ज़रूर नहीं है कि भक्तों पर हमेशा ऐसी हालत तकलीफ़ और मुसीबत की गुज़रती रहे, लेकिन कभी २ इस का आयद होना, वास्ते तरक़्क़ी उनके परमार्थ और दूर करने कसरों के मुनासिब और ज़रूर है, और इसकी मसलहत और ज़रूरत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर ख़ूब जानते हैं, ख़ास मतलब उनका यही है, कि अपने प्यारे भक्त को सब तरह से निर्मल और साफ़ करके, और अपने चरनों की प्रीत और प्रतीत बढ़ाकर, अपने निज धाम में बासा देवें, और काल और माया के जाल और करमों के कष्ट और क्लेशों से छुड़ा कर, पूरन और अमर आनंद बख़्शें ॥

१९—मालूम होवे कि जब तक मन में संसार और संसारी लोग और माया और उसके भोगों का भाव और प्यार है, तब तक जीव काल का क़रज़दार है, और वह आसा धर कर करम करने से बाज़ नहीं रहेगा, और फिर उस करम का फल दुख सुख भी ज़रूर भोगेगा; इस वास्ते राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की नज़र यही रहती है, कि सिवाय ज़रूरी काररवाई के फ़ज़ूल ख़्वाहिशें और तरंगें, वास्ते तरक़्क़ी और विस्तार जगत के ब्योहार और भोग बिलास की, अपने भक्त के हिरदे से जिस क़दर मुमकिन होवे दूर कर दें, ताकि निज घर के पहुँचने के जतन और साधन में, कोई संसारी बंधन और ख़्वाहिश उसको रास्ते में न अटकावे ॥

राधास्वामी दयाल की दया और उनकी सरन का फ़ायदह ॥

२०—यह सब तदबीरें और जतन और हालतें जिनका ऊपर बयान हुआ, वास्ते थोड़ी बहुत दुरुस्ती और गढ़त मन के मुफ़ीद हैं, और हर एक सच्चे परमार्थी को उनका ख़याल अपने परमार्थी बर्ताव में रखना ज़रूर चाहिये, लेकिन बग़ैर दया और मेहर राधास्वामी

दयाल के इन में पूरी कामयाबी होनी मुशकिल है, और यह दया उस वक्त हासिल होगी, जब प्रेमी भक्त राधास्वामी दयाल को कुल्ल मालिक और सर्व समर्थ समझ कर, उनकी सच्चे मन से सरन लेवेगा, और सर्व बल और आसरे और अहंकार छोड़ कर, राधास्वामी दयाल की दया का भरोसा मन में रख कर, अपने परमार्थ और स्वार्थ की काररवाई जहाँ तक मुमकिन होवे उनकी मौज और हुकम के मुवाफ़िक़ शुरू करेगा॥

२१—सरन का स्वरूप यह है, कि जैसे तीन चार बरस का बालक अपनी माता के आसरे रहता है, और दुख सुख के वक्त उसी की गोद की तरफ़ दौड़ता है, और जैसे माता रक्खे उसी में राज़ी रहता है, और हरचंद कि खेल कूद में भी और लड़कों के साथ शामिल होता है, पर थोड़ी २ देर बाद माता की याद करके उसके पास जाता है, और उसके दूध और दर्शन और प्यार का अधार रखता है, ऐसे ही प्रेमी भक्त राधास्वामी दयाल के चरन रस का आधार रखता है, यानी जब तब ध्यान और भजन करके अंतर में थोड़ा बहुत रस लेता रहता है, और अव्वल बालक की तरह सर्व अंग करके परमार्थ और स्वार्थ में उन्हीं की दया और सम्हाल का भरोसा रखता है॥

२२—ऐसे भक्त पर राधास्वामी दयाल ज़रूर दया करते हैं और उसके सब कामों की और भी मन और इन्द्रियों की हरतरह से सम्हाल फ़रमाते हैं, और जब वह किसी काम में भूलता है या चूकता है, और उसके बाद अपने मन में झुरता और शरमाता और पछताता है, और वास्ते माफ़ी के प्रार्थना करता है, तब वे फ़ौरन उसकी भूल चूक माफ़ फ़रमाते हैं। ऐसे भक्त के मन में हमेशह ऐसी समझ और प्रतीत रहती है, कि जो कुछ उसकी निसबत होता है वह राधा-स्वामी दयाल की मौज से होता है, और वह मौज चाहे जैसी होवे दया और मसलहत से ख़ाली नहीं है, यानी उसमें किसी न किसी क़िसम का फ़ायदा उसका, चाहे वह जल्द मालूम पड़े या बदेर, ज़रूर होगा, और जो किसी हालत में उसको बेचैनी या घब-राहट भी होती है, तो वह उस वक़्त सहायता के वास्ते राधास्वामी दयाल के चरनों की तरफ़ दौड़ता है, यानी अंतर में अपने मन और सुरत को चरनों में जोड़ता है, और थोड़ा बहुत रस और सहारा लेकर किसी क़दर शान्ती ज़रूर हासिल करता है॥

२३—इस वास्ते कुल सच्चे परमार्थियों को मुनासिब और लाज़िम है, कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल

को अपना सच्चा माता और पिता और रक्षक और हितकारी समझ कर, सच्चे मन से उनके चरनों की सरन लेवें, और जितने काम परमार्थी और स्वार्थी हैं, उनमें तदबीर और जतन मुनासिब जैसा कि हुक्म है, या जैसा कि दस्तूर है करते रहैं, पर उनके फल की निसबत दया और मेहर का आसरा और भरोसा रख कर जैसी मौज हो उसको मंजूर करें, यानी उसके साथ मुवाफ़कत करें, और जिस क़दर कि अपने से बन सके, ख़ास कर परमार्थी कामों में मिहनत और कोशिश करते रहैं, और हर वक्त दया और रक्षा और सम्हाल माँगते रहैं, तो उनका काम, सहज में आहिस्तह २ दुरुस्त बनता जावेगा, और मन और इन्द्री भी रफ़्ते २ क़ाबू में आते जावेंगे। और वास्ते परख दया और मेहर के, थोड़ा बहुत नित्त अभ्यास अंतर में करना मुनासिब है, और मन की चाल की भी निरख परख यानी निगरानी रखना ज़रूर है, ताकि उसकी हालत की ख़बर पड़ती रहे और क़ायदा और हुक्म के मुवाफ़िक़, जिस क़दर दुरुस्ती उसकी मुमकिन है करते रहैं, और जो कुछ कि अपनी ताक़त से न बन सके, उसकी दुरुस्ती मौज के हवाले कर के दया के उम्मेदवार रहैं॥

बचन ११

नित अभ्यास करना चाहिये और जिसमें रस ज़्यादह आवे वही काम ज़्यादह करे, और हर हाल में दया और मेहर का भरोसा रक्खे ॥

१—राधास्वामी मत के अभ्यासियों को चाहिये, कि भजन और ध्यान और धुन के साथ सुमिरन जिस क़दर बन सके करें, और इन में से जिस अभ्यास में मन ज़्यादह रुजू होवे, उसी को ज़्यादह देर तक करें और जिसमें मन कम लगे उसको कम करें ॥

२—जो भजन में ज़्यादह मन लगे, और सुमिरन और ध्यान की तरफ़ तवज्जह कम होवे, तो भजन ज़्यादह करें और जो दिल चाहे तो थोड़ा ध्यान भी किसी वक़्त करें ॥

३—और सुमिरन नाम का धुन के साथ उस वक़्त करें, कि जब मन भजन और ध्यान में न लगे, नहीं तो कुछ ज़रूर नहीं है जब दिल चाहे तब थोड़ा या बहुत करें ॥

४—लेकिन जो सतसंग प्राप्त नहीं होवे, तो थोड़ा पाठ बानी और बचन का समझ २ कर नेम के साथ हर रोज़ करें, यह किसी क़दर सतसंग का फ़ायदह देगा, और इससे होशयारी और लगन जागती रहेगी ॥

५—जो थोड़ी बहुत खटक अपने जीव के कल्यान को दिल में रही आवेगी, और थोड़ा बहुत अभ्यास और पाठ नेम के साथ जारी रहेगा तो राधास्वामी दयाल जब २ और जिस तरह मुनासिब समझेंगे ज़रूर उस अभ्यासी पर दया फ़रमाते रहेंगे, और अभ्यास में तरक्क़ी भी बख़्शते रहेंगे, इस तरह एक दिन ज़रूर जीव का कारज बन जावेगा ॥

६—जब कभी अभ्यास में रस और आनंद न आवे, तो समझना चाहिये कि किसी ओछे करम का चक्कर है, ऐसे वक़्त में मुनासिब तो यह है कि ज़ोर देकर मुवाफ़िक़ मामूल अभ्यास करे, चाहे रस आवे या नहीं, और जो ऐसा न बन सके तो अभ्यास थोड़ा करे और उस रोज़ तवज्जह के साथ पाठ ज़्यादह करे और ख़ासकर चितावनी और प्रेम और चढ़ाई के शब्दों को पढ़े ॥

७—ऐसी हालत में ज़्यादह घबराना या निरास होना नहीं चाहिये, बल्कि ओछे करम के चक्कर को जल्द काटने के लिये कुछ परमार्थी काररवाई जो बन सके तो मामूल से थोड़ी ज़्यादह करनी चाहिये ॥

८-हर हाल में मेहर और दया का भरोसा रखना चाहिये, जब कि दुनियाँ में कोई शख़्स किसी की मिह-

नत और हाज़िर बाशी का एवज़ाना नहीं रखता है तो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल अपने भक्त की सेवा किस तरह खाली रक्खेंगे ॥

९—कभी २ अभ्यास का रस न मिलने में भी कुछ मसलहत है, यानी जो कोई दिन कुछ रस नहीं मिला या कम मिला तो आगे ज़्यादह मिलने की उम्मेद है, या कोई दूसरा फ़ायदा जैसे मन की गढ़त और समझ बूझ और प्रीत और प्रतीत पक्की करना और बढ़ाना वग़ैरह २ मुतसव्वर है ॥

१०—इसवास्ते घबरा कर या निरास होकर अभ्यास को छोड़ना नहीं चाहिये और न राधास्वामी दयाल की तरफ़ से बे प्रतीत होना, बल्कि अपने मन और इन्द्रियों के हाल और चाल पर ग़ौर से नज़र करना चाहिये, कि कुछ न कुछ उनकी कसर के सबब से अभ्यास का रस नहीं मिला और उस कसर के दूर करने का जतन दया का बल लेकर करना चाहिये ताकि बिघन जल्दी दूर हो जावे, और आइंदा को ख़लल न डाले ॥

११—और अभ्यासी को मुनासिब है कि जो कोई सतसंगी अपने से ज़्यादह दरजे और ज़्यादह तजर्बे का होवे, उससे हाल अपना कह कर सलाह और मदद

लेवे, उससे भी कुछ फ़ायदह होगा और तबीअत को ताक़त आवेगी ॥

१२—अभ्यासी को इस क़दर एहतियात ज़रूर चाहिये, कि भोगों की चाह और तरंग कम उठावे, और उनमें ज़रूरत के मुआफ़िक़ बर्ताव करे, क्योंकि जो इन्द्रियों के भोग में ज़्यादती के साथ बर्ताव रहेगा तो भजन में मन कम लगेगा और रस कम आवेगा ॥

१३—इस वास्ते अभ्यासी सतसंगी को चाहिये कि जब तब चितावनी और बैराग और भक्ती और प्रेम के शब्दों का पाठ करता रहे, और जब मन बेफ़ायदह और फ़ज़ूल तरंगें उठावे तब उनको जहाँ तक मुमकिन होवे रोके और हटावे, और मन में शरमावे और पछतावे और प्रार्थना करे, आहिस्तह २ हालत बदलेगी ॥

१४—इस काम में जल्दी करना मुनासिब नहीं है, क्योंकि यह मन जुगान जुग और जन्मान जनम से भूला हुआ और भरमा हुआ है, और शुरू से इसका झुकाव संसार और भोगों की तरफ़ हो रहा है, सो आहिस्तह २ इसका स्वभाव बदलेगा और अंतर में मुख मुड़ेगा; दया राधास्वामी दयाल की शामिल हाल है, लेकिन वह भी आहिस्तह २ काररवाई करेगी क्योंकि एक दम हालत बदलने में पूरा और ठहराऊ फ़ायदह नहीं होगा ॥

१५–और सतसंगी अभ्यासी को यह भी ख़्याल रखना चाहिये कि राधास्वामी मत का मतलब मन और सुरत के समेटने और चढ़ाने का है, सो जिस तरह यह काम आसानी से हो सके (यानी जिस अभ्यास में मन ज़्यादह लगे) वही जतन करना चाहिये, और दिल में शौक़ देखने रोशनी और चमत्कारों का या हासिल होने सिद्धी और शक्ती का नहीं रखना चाहिये क्योंकि जो इस क़िसम की आसा मन में रही तो अभ्यास में निर्मल रस नहीं आवेगा, इस वास्ते मुनासिब है कि भजन के वक़्त शब्द की तरफ़ और ध्यान के वक़्त स्वरूप और मुक़ाम की तरफ़ (चाहे कुछ नज़र आवे या नहीं) तवज्जह रक्खे, और गुनावन किसी क़िसम की न उठावे, तो थोड़ा बहुत रस मन और चित्त के एकाग्र होने से ज़रूर मिलेगा, और इसी का नाम निर्मल रस है और जब मौज से रोशनी वग़ैरह या कोई और कैफ़ियत नज़र आवे तो उसको देखे मगर मन अपना उस में न बाँधे, और न ख़्वाहिश इस बात की रक्खे कि बार २ वही रोशनी या कैफ़ियत नज़र आवे, नहीं तो शब्द और स्वरूप और मुक़ाम की तरफ़ से तवज्जह किसी क़दर हट जावेगी, और मन रूखा और फीका हो जावेगा, और अभ्यास में

जैसा चाहिये नहीं लगेगा, और ऐसा ख़याल दिल में पैदा होगा कि हमको कुछ हासिल नहीं हुआ, या हमारी तरक्क़ी नहीं होती है, या कि हम पर कुछ दया नहीं है, और फिर अनेक तरह की गुनावनें भी पैदा होकर मन को अभ्यास की तरफ़ से ढीला कर देंगी ॥

बचन १२

बर्णन सत्तपद के सच्चे खोजी का और यह कि वह सत्तपद असत्त यानी माया देश के परे है, और उसके मिलने का रास्ता घट में है, और इस रचना में उस सत्त की सिर्फ़ किरनें आई हैं और उन्हीं की सत्ता से यहाँ की कुल्ल काररवाई हो रही है ॥

१—सच्चा खोजी सत्तपद का वह है कि जिसको सच्ची चाह इस बात की है कि सत्त बस्तु को तहक़ीक़ करे कि वह क्या है और कहाँ है और कैसे मिले, और इस खोज करने में जब उसका सही पता लग जावे, तो उस सत्य बस्तु के हासिल करने में किसी

तरह की उसके मन में अटक या लज्या और शरम और ख़ौफ़ न रहे, और न किसी तरह की किसी में उसकी टेक या पच्छ होवे, और न यह इरादा होवे कि जो कोई बात उसने पहिले सुनी और पढ़ी है या समझी है या अपनी बिद्या और बुद्धि से बिचारी है उसके साथ जहाँ तक बने मेल मिलावे, और नई सही तहक़ीक़ात होने पर किसी तरह का अफ़सोस या मन की हठ या सुस्ती पिछली समझ या बिचार के छोड़ने में न करे, यानी सत्य वस्तु के मालूम होने पर ख़ुश होकर उसको फ़ौरन ग्रहन करे और किसी तरह का उसके हासिल करने में पसोपेश न करे और अपनी पिछली समझ और बिचार के ग़लत साबित होने पर, सुस्त और उदास होकर ऐसा कह कर कि असल सत्य बस्तु की प्राप्ती का जो जतन बताया गया है वह महा कठिन है, हट न जावे ॥

२—जो कोई कि तहक़ीक़ात की हालत में किसी के धमकाने या डराने या फुसलाने से हट जावे या अपनी बात रखने को फ़ज़ूल बातें बना कर के खोज के जारी रखने की निसबत उज़रात पेश करे, या किसी क़दर अपनी ओछी समझ बूझ की पक्ष करके साफ़ अक़ल के साथ बचन न सुने और न समझना चाहे, या कोई

ओछी दलील पेश करके सरीह सच्ची बात को न माने और न कबूल करे, या सच्ची वस्तु के लखाने वाले और उसके संगियों में औगुन देखे, या उनकी चाल ढाल पर वे समझे बूझे (संसारियों की अक़ल के मुवाफ़िक़) एतराज़ करे, तो जानना चाहिये कि वह सच्चा खोजी नहीं है, और फिर ऐसे शख़्स से सत्य वस्तु के लखाव और उसकी प्राप्ती की जुगत वग़ैरह की बाबत बात चीत करनी नामुनासिब होगी, क्योंकि ऊपर की बातों से साफ़ मालूम हो जावेगा कि उसका इरादा सत्य वस्तु के ग्रहण करने का नहीं है ॥

३—जो कोई तहक़ीक़ात पूरी करके क़ायल हो जावे और ऐसा कहे कि हक़ीक़त में सत्तवस्तु जो लखाई गई है सही है, और उसकी प्राप्ती की जुगत और जतन भी सही है, लेकिन मैं फ़लाँ २ आदत और स्वभाव या खान पान या फ़लाँ चाल ढाल को, जिनका छोड़ना वास्ते प्राप्ती उस सत्य वस्तु के ज़रूर है, नहीं छोड़ सक्ता, तो भी उस का नाम सच्चा और पूरा खोजी और दर्दी नहीं हो सक्ता, और इस वास्ते उससे भेद की बातें कहना मुनासिब न होगा ॥

४—अब समझना चाहिये कि सत्य वस्तु वह है कि जो स्वतंत्र और आपही आप है, और किसी तरह किसी

के आधीन नहीं है, और सदा एक रस और एक हाल पर है, और कभी उस में कुछ अदल बदल नहीं होता, और जो महा प्रेम और महा आनंद और महा चेतन्य और महा ज्ञान स्वरूप है, और जो कुछ कि जहाँ तहाँ सिवाय उसके है या नज़र आता है, वह सब उसके आधीन है और उसी की सत्ता से क़ायम है॥

५—अब ग़ौर करो कि इस लोक में जो कुछ कि नज़र आता है, वह सदा एक रस क़ायम नहीं रहता यानी नाशमान है, लेकिन जितने अर्से तक कि यहाँ की हर क़िसम की रचना ठहरी हुई नज़र आती है वह उसी सत्य की सत्ता से क़ायम है, यानी वह सत्ता किरन रूप अथवा सुरत स्वरूप से यहाँ हर एक देह में मौजूद होकर कुल्ल काररवाई उसकी अपनी शक्ती से करती है, और जब वह सत्ता खिंच जाती है यानी देह से उसका बियोग हो जाता है, तो उस देह का अभाव हो जाता है॥

६—इस सत्ता यानी सुरत में थोड़ी बहुत वही ताक़त और शक्ती है जो कि उसके भंडार यानी कुल्ल मालिक में है, और वही सच्चा सत्य पद है और यह सुरत उसकी अंस यानी किरन है, यह हाल हर एक चीज़ यानी दरख़्त और जानदार के बीज से जिस वक़्त कि प्रथम

धार उस में से निकलती यानी कुला फूटता है और सुरत अपना ज़हूर करती है साफ़ ज़ाहर होता है, कि उसी वक़्त से जितनी शक्तियाँ कुदरत की हैं, जैसे पाँच तत्त और तीन गुन और रोशनी और बिजली की शक्ती और खैंच शक्ती और हटाव शक्ती और बनाव शक्ती और सिंहार शक्ती वग़ैरह हाज़िर होकर उस सुरत की ताबेदारी में रलमिल कर उसकी देह के बनाव और बढ़ाव और सम्हाल में मदद देती हैं, और जब वह सुरत देह को छोड़ती है तब यही शक्तियाँ आपस में लड़भिड़ कर उस देह के स्वरूप को बिगाड़ देती हैं॥

इससे सुरत की हकूमत कुल्ल क़ुदरत की शक्तियों पर जो इस रचना में काम दे रही हैं ज़ाहर है॥

७—ऊपर के बयान से ज़ाहर है कि वह सत्तपद इस रचना में किरन यानी सुरत स्वरूप है, हर एक देह में चाहे वह ज़मीनी है या आसमानी मौजूद है, और कुल्ल काररवाई उस देह की बल्कि और देहियों की जो उसके मुतअल्लिक़ यानी आधीन हैं अपनी ताक़त से कर रहा है, तो जो कोई उस सत्त का खोज करना चाहता है और उससे मिलने की चाह रखता है, तो पहिले अपने सुरत स्वरूप का खोज करे, और

उससे मिल कर फिर उसके भंडार का पता लगाकर उससे मिले, और यह पता और खोज अपने घट में लग सक्ता है, बाहर खोज इसका नहीं चल सक्ता और न कभी बाहर जतन करने से उस सत्तपद से मेला होगा ॥

८—ज़ाहर है कि जब तक सुरत का तअ़ल्लुक़ यानी बंधन देही या और जानदारों और पदार्थों के साथ जो कि नाशमान हैं, और हमेशह उनकी हालत बदलती रहती है रहेगा तब तक उसको सच्चा यानी अमर सुख प्राप्त नहीं हो सक्ता, और दुख और कलेश वग़ैरह से सच्ची नृवित्ती नहीं हो सक्ती, इस वास्ते जो कोई अमर आनंद और सत्तपद की प्राप्ती चाहता है उसको लाज़िम है कि सुरत की धार को (जो शब्द की धार है) पकड़ कर अपने घट में उलटा चले, तो पहिले उसको सुरत का स्वरूप जो कि संतों के दसवें द्वार यानी सुन्न में है नज़र आवेगा, और फिर उस रूप से बदस्तूर शब्द की डोरी पकड़ के और ऊपर चढ़ के सुरत के भंडार में जो कुल्ल मालिक का धाम और असली सत्यपद है पहुंचेगा और अमर और पूरन आनंद को प्राप्त होगा

९—इस धाम में सिवाय सत्त के और कोई दूसरी चीज़ नहीं है, और वहाँ की रचना ऐन रूहानी यानी निर्मल चेतन्य की है, और सदा एकरस यानी महा आनन्द स्वरूप रहती है।

१०—इस देश के नीचे से प्रकृती यानी माया प्रघट हुई, और नीचे २ उसका बिस्तार ज़्यादह से ज़्यादह होता गया और वहाँ रचना मिलौनी की हुई, यानी उस सत्तपद की किरनों अथवा सुरत ने माया के मसाले से अनेक रूह पैदा किये और जोंकि माया का मसाला (जो असल में गुबार रूप है) हमेशह एकरंग और एकरूप नहीं रहसक्ता, इस सबब से उस माया के देश में अदल बदल और भाव अभाव काररवाई हरदम जारी है, और इसी सबब से दुख सुख और कलेश वग़ैरह ब्यापता है, सो जबतक कि सुरत इस हद्द के पार निर्मल चेतन्य यानी सत्य पद में उलट कर न जावेगी, तब तक दुख सुख और जनम मरन से सच्चा छुटकारा नहीं होगा, और न असली सत्तपद की प्राप्ती होगी

११—इसवास्ते कुल्ल सच्चे परमार्थियों को मुनासिब है कि असल सत्य पदका जो अनंत अपार और सदा एक रस क़ायम है, और प्रेम और आनंद का भंडार

है, अपने घट में खोज लगाकर और चलने की जुगत दरियाफ़्त करके जिस क़दर बन सके शौक़ के साथ सहज २ चलना शुरू करैं, और संसार और उसके भोगों मैं ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बर्ताव जारी रक्खैं, ज़्यादती मैं उनके परमार्थ यानी सत्यपद के मिलने के जतन मैं ख़लल पड़ेगा, और जो इस तौर पर काररवाई करैंगे तो वे राधास्वामी दयाल की दया से रफ़्तह २ एक दिन असत्य देश से न्यारे होकर सत्य यानी निर्मल चेतन्य देश मैं पहुंच कर बासा पावैंगे और अमर आनंद को प्राप्त होवैंगे ॥ और जब से कि वे सच्चे मन से प्रेम अंग लेकर अभ्यास शुरू करैंगे तो थोड़े अर्से मैं आहिस्तह २ थोड़ी बहुत सत्य की प्राप्ती यानी शब्द चेतन्य से मेला होता जावेगा, और उसी क़दर असत्य से दूरी होती जावेगी, और उसका असर भी कम होता जावेगा और सत्य की प्राप्ती का निशान यह है कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों मैं प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावे और संसार और उसके पदार्थों मैं रग़्बत कम होती जावे ॥

बचन १३

राधास्वामी दयाल के चरनौं में किसी न किसी तरह की प्रीत और भाव और सेवा और यादगारी का फ़ायदह ॥

१-दुनियाँ के जितने काम हैं सब प्रीत और शौक़ के साथ किये जाते हैं, जिस काम में कि किसी की प्रीत और शौक़ नहीं होता है वह काम दुरुस्ती से नहीं बनता है, और जिस तरफ़ जिसकी प्रीत होती है उसी तरफ़ उसका झुकाव रहता है ॥

२—जहाँ जिसकी गहरी प्रीत है वहाँ आपस में मेल भी ज़ल्द २ और बार २ होता है, और वहीं एक दूसरे के वास्ते तन मन धन भी ख़ुशी से लगाता है ॥

३—इसी तरह परमार्थ में जिस किसी की प्रीत आई, वह कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके प्रेमी भक्तौं के संग की चाह उठावेगा, और जब २ इत्तफ़ाक़ से उनका सतसंग मिलेगा बहुत ख़ुश होकर उस में शामिल होगा, और दर्शन और बचन का रस हासिल करेगा, और उनकी परमार्थी किताबौं को बहुत शौक़ के साथ पढ़ेगा और सुनेगा ॥

४—यह प्रीत प्रेमियौं के संग और उनकी किताबौं

के पढ़ने से पैदा होगी और बढ़ेगी, और जिस क़दर तबीअत शौक़ के साथ इस काम में लगेगी उसी क़दर दुनियाँ और दुनियाँ दारों की तरफ़ से हटेगी ॥

५—कुल्ल रचना में कुल्ल काररवाई प्रीत और शौक़ की है सो जिस किसी को परमार्थ में थोड़ी बहुत प्रतीत के साथ प्रीत आई, उसको उसी मुवाफ़िक़ वहाँ रस और आनन्द मिलेगा और उसी क़दर उससे वहीं की कार-रवाई बनती जावेगी ॥

६—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों के हाल को मुलाहज़ा करके निहायत दया के साथ ऐसा हुक्म फ़रमाया कि जो उनके चरनों में थोड़ी भी प्रीत और प्रतीत लावेगा, तो भी उसका किसी क़दर फ़ायदा परमार्थी इस जनम में हो जावेगा, और आइंदा की तरक़्क़ी के वास्ते सिलसिला जारी हो जावेगा, यानी वह प्रीत दिन दिन बढ़ती जावेगी ॥

७—और राधास्वामी दयाल ने तरीक़ा अंतरी अभ्यास का ऐसा सहज जारी फ़रमाया कि उस को हर कोई थोड़ा या बहुत आसानी से कर सके, और अपनी प्रीत और परतीत के मुवाफ़िक़ उसका फ़ायदह (यानी रस और आनंद) जीते जी देख सके, और सतसंग करके उस प्रीत को और उसके साथ अभ्यास भी बढ़ा सके ॥

८—राधास्वामी दयाल की इस क़दर दया और मेहर जीवौं पर है, कि जो थोड़ी बहुत सचौटी के संग बाहर का सतसंग और अंतर मैं अभ्यास थोड़े शौक़ के साथ शुरू कर देवैं, तो वे दया से उनको अंतर मैं परचे देकर उनकी प्रीत और प्रतीत बढ़ाते हैं, और घट मैं थोड़ा बहुत रस और आनंद भी बख़्शते हैं ॥

९—अब जिस किसी को दुनियाँ और दुनियादारौं का हाल और यहाँ के सामान और पदार्थौं की कैफ़ियत देख कर राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं (जो कि जीव के सच्चे हितकारी और दम २ के संगी और मददगार हैं) गहरी प्रीति आई, वही एक रोज़ गुरमुख का दरजा पावेगा, और उनकी पूरी दया अपनी निस्बत अन्तर और बाहर परखता जावेगा, बाक़ी जीवौं को जिस २ दरजे की प्रीत उनके चरनौं मैं होवेगी उसी क़दर फ़ायदा उनको हाल मैं मालूम होवेगा, और आइन्दा वे भी अपने शौक़ और प्रीत के मुवाफ़िक़ नम्बरवार गुरमुख बनाये जावैंगे ॥

१०—इसवास्ते कुल्ल जीवौं को मुनासिब और लाज़िम है, कि जहाँ और सब काम दुनियाँ के करते हैं, वहाँ थोड़ी बहुत प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं और उनके सतसंग और

प्रेमी भक्तौं मैं लाकर थोड़ी बहुत काररवाई परमार्थ की यानी बाहर का सतसंग और पाठ उनकी बानी और बचन का और अंतर अभ्यास सुमिरन और ध्यान और भजन का शुरू कर देवैं, तो रफ़्ते २ उनकी प्रीत और प्रतीत दुनियाँ का तमाशा देख कर चरनौं मैं बढ़ती जावेगी, और जीते जी उसका फ़ायदा उनको नज़र आवेगा, और आइन्दा के वास्ते तरक्क़ी का सिल्सिला वास्ते हासिल होने सच्ची मुक्ती यानी पूरे उद्धार के जारी हो जावेगा, कि जिस से एक दिन दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से सच्चा छुटकारा हो जावेगा ॥

११—जो कोई किसी क़िसम का नाता यानी प्रीत थोड़ी या बहुत राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं जोड़ेगा, या किसी तरह से उनके किसी सच्चे प्रेमी भक्त से प्रीत और मेल पैदा करेगा तो राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से उसका भी किसी क़दर कारज इस जनम मैं बनावैंगे, यानी उसके जीव का थोड़ा बहुत कल्याण हो जावेगा, और आइन्दा को भी सिल्सिला लग जावेगा ॥

१२—और जो कोई कि राधास्वामी दयाल की जुगत की कमाई (सुरत शब्द अभ्यास) संत सतगुरु

या साध गुरू या उनके सच्चे प्रेमी सतसंगी से उप-
देश लेकर, सच्चे मन से थोड़े दिन भी करेगा तौ भी
वह चौरासी मैं नहीं जावेगा, और आहिस्ता २ सिल्-
सिला उसके उद्धार का जारी हो जावेगा ॥

१३—ख़ुलासा यह है कि जैसे बने तैसे किसी न किसी
जुगत से यादगारी राधास्वामी दयाल के चरनौं की रोज़-
मर्रह किसी न किसी वक्त़ होनी चाहिये, फिर राधास्वामी
दयाल अपनी मेहर से उस जीव को आहिस्ता २ खींच
कर चरनौं मैं लगावैंगे, और रफ़्ते २ उसका उद्धार करैंगे ॥

१४—जिस किसी ने कि एक बार दर्शन संत सतगुरु
के प्यार और भाव से किये हैं और उनके बचन चित्त
देकर सुने और समझे हैं, तौ भी वह अवेर सवेर सत-
संग मैं मिलाया जावेगा, और जो बिलफ़र्ज़ इस जनम
मैं शामिल नहीं हुआ, तौ अंत समय पर उसके जीव
की थोड़ी बहुत सम्हाल की जावेगी, और आइंदह
के जनम मैं सतसंग मैं खींच कर मिलाया जावेगा।
और जिसने कि कई बार शौक़ के साथ सतसंग किया
पर उपदेश नहीं लिया, तौ उसके भी बहुत से करम
कट जावैंगे और अंत समय पर उसके जीव की किसी
क़दर सहायता की जावेगी, और आइंदह को सिल्-
सिला उद्धार का जारी हो जावेगा ॥

१५—जिस किसी को राधास्वामी मत और सतसंग और सतगुर की महिमाँ सुनकर, राधास्वामी दयाल के चरनों में भाव और प्यार आया, और गुप्त सेवा तन मन धन को करी, पर कोई सबब से सतसंग में शामिल न हो सका और न दर्शन सतगुर के किये और न उपदेश पाया, तो भी राधास्वामी दयाल उस जीव की अपनी मेहर और दया से सहायता करेंगे, और इसी जनम में चाहे आइंदह के जनम में उसको सतसंग में मिला कर और सुरत शब्द की कमाई उससे कराकर रफ़्ते २ उसका सच्चा उद्धार फ़रमावेंगे॥

१६—जो कोई कि राधास्वामी दयाल और उनके नाम और धाम की महिमाँ सुनकर राधास्वामी नाम का सुमिरन प्यार और भाव के साथ करेगा, और बानी और बचन को भी शौक़ के साथ पढ़ेगा, तो राधास्वामी दयाल इसी जनम में खींचकर उसको सतसंग में लगावेंगे और उसपर दया करेंगे, और जो इस जनम में मौक़ा न हुआ तो आइंदह के जनम में वह ज़रूर सतसंग में शामिल किया जावेगा और काररवाई उसके उद्धार की जारी हो जावेगी॥

१७—ऐसा हाल दया और मेहर का सुनकर जीवों को चाहिये कि ज़रूर राधास्वामी दयाल के चरनों

में हाज़िर या ग़ायब, ज़रूर थोड़ी बहुत प्रीत या उनकी यादगारी करते रहें, कि जिस्से सहज में उनके जीव का कल्यान हो जावेगा और जो इतनी बात से चूकेंगे, यानी सुनकर भी थोड़ा बहुत भाव और प्यार राधास्वामी दयाल के चरनों में या उनके सतसंग में या उनके प्रेमी भक्त में या उनके नाम और बानी और बचन में नहीं लावेंगे, तो उनको जानना चाहिये कि अभागी हैं और उनके उद्धार में अभी बहुत देर है॥

१८—राधास्वामी दयाल की यहाँ तक जीवों पर दया और मेहर है कि जो कोई अनजानता और मूर्खता से उनकी या उनके सतसंग की या उनके प्रेमी भक्त की निंद्या करता रहेगा तो उसको भी पहिले उसके पाप करम काट कर अवेर सवेर खींच कर सतसंग में मिलावेंगे, जहाँ से कि उसके उद्धार का सिलसिला जारी होजावेगा॥

१९—किस क़दर भारी दया की बात है कि जो किसी से महिमाँ जान कर या अनजान्ता से कोई सेवा किसी क़िस्म की तन मन और धन या इंद्रियों की राधास्वामी दयाल के निमित्त बन आवेगी तो उस को भी थोड़ा बहुत परमार्थी फ़ायदह बख़्शेंगे, यानी उसके जीव को किसी क़दर सहायता करेंगे और चरनों में प्रेम प्रीत का दान देकर आइंदह को उसके उद्धार का रास्ता आहिस्तह २ जारी फ़रमावेंगे॥

२०—जो कोई राधास्वामी नाम और उनकी बानी को प्यार के साथ गावेगा और पढ़ेगा तो उसको भी थोड़ा बहुत परमार्थी फ़ायदा पहुंचेगा, क्योंकि यह नाम सच्चे कुल्ल मालिक का है और इसका असर बड़ा भारी है, जो प्यार और भाव के साथ गाया जावे और जो इसका भेद समझ कर सुमिरन करेगा, तो उसका फ़ायदा और भी ज़्यादह होगा, यानी वह एक दिन सतसंग में शामिल होकर या किसी प्रेमी भक्त से मिलकर अभ्यास में लग जावेगा, और राधास्वामी दयाल की बानी को भाव से पढ़ने का भी यही फ़ायदा हासिल होगा।

२१—अब ख़्याल करो कि जो लोग प्रीत और प्रतीत के साथ नित्त सतसंग और अभ्यास करते हैं, और तन से मन से और धन से जिस क़दर मुमकिन है नित्त सेवा करते हैं, और राधास्वामी दयाल की दया और मेहर को अंतर और बाहर नित्त अपने ऊपर देखते हैं और परखते हैं, उनको किसी क़दर भारी दरज़ा और मुक़ाम हर एक की लगन के मुवाफ़िक़ बख़्शिश फ़रमावेंगे, और सतसंग से मतलब यह है कि जहाँ कितने ही प्रेमी भक्त राधास्वामी दयाल के मिलकर बानी का पाठ और अर्थ और चरचा करते हैं, और जिसको ऐसा सतसंग प्राप्त नहीं है वह आप अपने

घर में प्रेम के साथ समझ २ कर बानी का पाठ करता है, या अपने कुटम्बियों के साथ चरचा करके राधास्वामी मतको समझाता है, यह भी सतसंग में दाख़िल है॥

बचन १४

राधास्वामी सरन, सुरत शब्द धारन, सर्व दुक्ख निवारन । महिमाँ और बड़ाई राधास्वामी मत की जो कुल्ल मालिक का सच्चा मत है, और बग़ैर जिसके धारन करने के किसी जीव का सच्चा उद्धार मुमकिन नहीं है ॥

१—दुनियाँ और दुनियाँदारों के हाल पर नज़र करने और ग़ौर करके विचारने से मालूम होता है कि सब जीवों के मन में एक क़िसम की चाह या तड़प, वास्ते बड़े से बड़े सुख और बड़े से बड़े दरजे और बुज़ुर्गी और ज़यादह से ज़यादह धन और माल और भारी से भारी ताक़त के हासिल होने के वास्ते लगी रहती है, और चाहे जिस क़दर सामान हासिल हो जावे फिर भी थोड़ी बहुत चाह वास्ते उसकी ज़यादती और तरक़्क़ी के बनी रहती है ॥

२—और जब किसी क़िस्म की तकलीफ़ और दुख या कोई सख़्त मुसीबत या रंज या बीमारी आयद होती है, तो उस वक़्त जीव तहेदिल से यानी अंतर के अंतर से चाहते हैं कि कोई ऐसी ताक़त उनको मिले या कोई ऐसी मदद उनकी करे या कोई ऐसी दवा देवे, कि जिससे वह दुख या मुसीबत या तकलीफ़ जल्द दूर हो जावे या कम हो जावे, और जब कोई ऐसा मददगार नहीं मिलता तो लाचार होकर मन ही मन में चुप्प हो जाते हैं और मुसीबत को जैसे बने तैसे बरदाश्त करते हैं, लेकिन फिर भी दिल में एक क़िस्म की तड़प और चाह वास्ते मिलने मदद के बनी रहती है ॥

३—पहिली क़िस्म की चाह जो सुख वग़ैरह की प्राप्ती के लिये उठती है, उसके पूरा करने के लिये अनेक तरह के जतन और अनेक तरह के काम और अनेक तरह की मिहनत जीव उमर भर करते हैं यानी सुनकर पढ़ कर और देख कर जब और जहाँ जिस किसी को किसी काम या किसी मुआमले या किसी विद्या और हुनर और कारीगरी और सौदागरी और सफ़र वग़ैरह २ में विशेष फ़ायदा हुआ है या मान बड़ाई और दौलत और हकूमत और दरजा मिला है

तो और जीव भी उसी मुवाफ़िक़ काररवाई करके वैसा ही फ़ायदा और दौलत और दरजा हासिल करना चाहते हैं, और जब एक धंधे यानी काम में पूरा फ़ायदा नहीं हुआ तो दूसरा धंधा शुरू करते हैं यानी बराबर काररवाई अपनी जो मतलब के मुवाफ़िक़ न होवे, या उससे पूरा फ़ायदा न मिले बदलते रहते हैं और इसी तरह के फ़िकर में कि यह काम करना चाहिये और वह छोड़ना चाहिये और इसको बढ़ाना चाहिये और उसको घटाना चाहिये रातदिन लगे रहते हैं, और चाहे सब काम उनके मतलब के मुवाफ़िक़ बन्ते जावें तो भी चाह ज़्यादा से ज़्यादा तरक्क़ी की उनके मन में बनी रहती है, और उनको निचला (यानी आराम से) नहीं बैठने देती है और इसी क़िसम के ख़ियालों का हुजूम उनके मन में हररोज़ बना रहता है और उनको किसी तरह चैन नहीं लेने देता है॥

४—यह हाल कुल्ल जीवों का है चाहे वे ग़रीब हैं या अमीर या राजा महाराजा या आलिम और फ़ाज़िल या भारी हुनर वाले या मूरख और नादान॥

और संग और सुहबत और दुनियाँ का तमाशा ऐसे ख़ियालात और चाहों को बढ़ाता रहता है और नये २ ख़्याल और चाहें पैदा करता है॥

५—खुलासा यह कि सब जीव अनेक क़िसम के ख़ियालों और कामों और बखेड़ों में हमेशा लिपटे रहते हैं और ऐसे कामों की कसरत में उनको कभी वक़्त इस बात के सोच और बिचार करने का भी नहीं मिलता, कि क्यों बावजूद हासिल होने बहुत से सामान के उनके मन में त्रिश्ना और नई नई चाहें दुनियाँ के तरक़्क़ी की बनी रहती हैं और पैदा होती जाती हैं, और बे शुमार जीव इसी हालत में उमर भर पचते और खपते रहते हैं. और आख़िर को मौत के वक़्त यहाँ से ख़ाली हाथ जाते हैं, यानी जिस २ सामान के हासिल करने में उन्हों ने अपनी सारी उमर ख़र्च करी उनमें से कोई भी उनका अख़ीर वक़्त पर संगी और मदद गार नहीं होता, और न मौत या तकलीफ़ के वक़्त धन और माल और हकूमत और लियाक़त और इलम और अक़ल और कुटम्ब और परवार और फ़ौज और लश्कर उनका संगी और मददगार होता है, रंज और अफ़सोस के साथ जान देते हैं और सब सामान यहाँ का यहीं छोड़ जाते हैं ॥

६—अब दूसरी क़िसम के ख़ियालों का ज़िकर किया जाता है, यानी दुख और मुसीबत के दूर करने के वास्ते अनेक तदबीरें सोचते हैं और काम में लाते हैं

जैसे दवा दारू करना, अपने २ अक़ीदा और निश्चय के मुवाफ़िक़ मालिक या देवताओं या पैग़म्बरों और औलियाओं और महात्माओं और जादूगरों और भूत पलीत और चुड़ैल वग़ैरह से मदद माँगना, और मुक़ामात मुतबर्रक व तीरथ व दरियाओं और कूओं पर, जाना और वहाँ के रसम और दस्तूर के मुवाफ़िक़ काररवाई करना और, तावीज़ और गंडा और क़िस्म २ के पत्थर लकड़ी वग़ैरह को गले में डालना या बाज़ू पर बाँधना और निशान या कोई चीज़ महात्माओं और औलियाओं की अपने संग वास्ते हिफ़ाज़त के रखना, या कोई नाम या मंत्र या शब्द का पढ़ना और जाप करना या कोई ख़ास पूजा अपने मकान पर या किसी ख़ास मंदिर या मसजिद या मज़ार या गिरजा या किसी ख़ास मुक़ाम में जाकर करना, या किसी फ़क़ीर या साधू या ख़ुदापरस्त लोगों से इल्तिजा करना और मदद माँगना, या दान और पुन्य और ख़ैरात करना और मोहताजों को खिलाना पिलाना, या किसी देवता और महात्मा के वास्ते नज़र नियाज़ बोलना और ज़ियारत का वादा करना वग़ैरह २ ॥

७—और जब बावजूद इन तदबीरों के फिर भी मुसीबत या तकलीफ़ दूर न होवे, तो लाचार होकर ख़ामोश हो रहते हैं, और उस तकलीफ़ और मुसीबत को ज़बरन और क़हरन् सहते हैं, फिर भी अख़ीर वक़्त तक दिल में ऐसी चाह और तड़प लगी रहती है, कि कोई उनकी तकलीफ़ को जैसे बने वैसे दूर कर देवे या घटा देवे, और जब कोई इलाज पेश नहीं जाता, तो लाचार क़िस्मत या नसीब या अपने पिछले अगले ऐमालों का नतीजा यानी फल समझ कर, या मालिक की मरज़ी ऐसी ही जान कर ज्यों त्यों रो पीट कर सब्र करते हैं॥

८—ग़रज़ कि कुल्ल जीव इस दुनियाँ में सुख और बड़ाई के प्राप्ती की चाह और फ़िकर में और भी तकलीफ़ और दुक्खों के दूर करने या घटाने के ख़्याल और सोच में हमेशा सरगरदाँ रहते हैं, लेकिन जो जतन और तदबीरें कि वे काम में लाते हैं, चाहे उनसे थोड़ा या पूरा फ़ायदा हासिल होवे, फिर भी सुख की चाह और तकलीफ़ और दुक्खों का ख़ौफ़ और चिंता उनके मन से दूर नहीं होती हैं॥

९—इस दुनियाँ में ऐसी हालत का कोई इलाज न देख कर, बाज़े लोग परमार्थ यानी मज़हब की तरफ़ इस उम्मेद पर रुजू लाये, कि वहाँ से कोई

सहारा ऐसा मिले कि जिस्से दुनियाँ की तरक्की और तृष्णा की तपन से बचें, और ऐसे स्थान का पता लगे कि जहाँ पहुंच कर परम सुख को प्राप्त होवें और फिर कोई चाह बाक़ी न रहे, और ऐसी जुगत मालूम होवे कि जिससे तकलीफ़ और दुक्खों का असर कम ब्यापे और रफ़्ता २ उन से पीछा छूट जावे ॥

१०—जब इस तरह बाज़े लोगों ने मज़हबी तहक़ीक़ात और तलाश शुरू की, तब उसमें बहुत सी दिक़्क़तें पेश आईं, यानी पहिले तो कितने ही मज़हब नज़र आये, और फिर उनमें आपस में ना इत्तफ़ाक़ी दिखलाई पड़ी, कि एक दूसरे को ग़लत या ओछा बतलाता है, और मालिक के वजूद की निस्बत भी बहुत सा इख़्तलाफ़ पाया गया कि कोई किसी को मालिक क़रार देता है और कोई मालिक के वजूद से बिलकुल मुन्किर हैं ॥

११—ऐसी हालत मज़हबों की देख कर बहुत से शक और सन्देह दिल में सच्चे खोजी के पैदा हुए और जब उसने तहक़ीक़ात शुरू की और वास्ते दूर करने अपने भरमों के थोड़े सवालात किये तो उनका जवाब पूरा २ किसी मत में न मिला इस सबब से जैसी चाहिये वैसी तसल्ली नहीं हुई, पर लोगों के तान और

तिशने का ख़ौफ़ करके जिस मज़हब में कि जो पैदा हुए या जिस को किसी सबब से उन्हों ने इख़्तियार किया, उसी में चुप्प होकर ज़ाहिरी तौर पर लगे रहे, पर दुनियाँ के दुख सुख की हालत और कैफ़ियत उनकी नहीं बदली और न पूरा २ सहारा उनको तकलीफ़ और दुक्ख की हालत में मिला ॥

१२–यह बात ज़ाहर है कि कसरत से लोग बेइल्म और नादान हैं, और दुनियाँ के सुखों के भोगने और उनके वास्ते नई २ चाह उठाने में ऐसे मशग़ूल हैं, कि उनको कभी सुध भी इस बात की नहीं आती कि कोई इस दुनियाँ का सच्चा और कुल्ल मालिक है, और उससे उनका क्या रिश्ता है, उनको एक दिन देह और दुनियाँ के सामान और कुटुम्ब परवार को ज़रूर छोड़ना पड़ेगा, यानी एक दिन मौत ज़रूर आवेगी फिर बाद मरने के क्या हाल होगा, इसकी उनको ख़बर भी नहीं और न दरियाफ़्त करने की ख़्वाहिश है ॥

१३–और जो कि इस क़िस्म के जीव हमेशा यानी ज़िन्दगी भर, इन्द्रियों के भोगों में गिरिफ़्तार रहते हैं, और नई २ चाहें उठा कर हमेशा मिहनत करते रहते हैं, और इसी क़िस्म के लोगों का उनको संग रहता है, तो ऐसी चाह और आदत और स्वभाव और अपने

करमौं के मुवाफ़िक़ बारम्बार ऊँच नीच देशौं और जोनौं में पैदा होकर, हमेशा देहियौं के संग दुख सुख भोगते रहेंगे, और इन ऊँच नीच देशौं में बैकुंठ और बहिश्त और स्वर्ग और मृत्यु लोक (यानी यह दुनियाँ) और नर्क और जहन्नुम वग़ैरह शामिल हैं ॥

१४—सच्चे खोजी लोग हमेशा कम पैदा होते हैं, और उनको जब तक कि पूरी २ कैफ़ियत किसी मज़हब की न मालूम होवे, कि जिससे तसल्ली और इतमीनान हो जावे तब तक उनका खोज हमेशा जारी रहता है, यानी वे हमेशा ख़्वाहिशमंद रहते हैं कि कोई उनको सच्चे मालिक का सच्चा पता और भेद बतावे और जब कोई भेद देने वाला मिल जावे, तो उससे निहायत ख़ुश होकर मिलते हैं, और उसके बचनौं को ग़ौर और तवज्जह के साथ सुनते हैं, और मगन हो जाते हैं ॥

१५—ऐसे खोजियौं की दो क़िस्में हैं, एक तो बहुत से हालात मज़हबी (जो कि मालिक के भेद में दाख़िल हैं) जानना और समझना चाहते हैं, और जब उनके संदेह और सवालौं के इत्तफ़ाक़ से किसी भेदी से मिलकर पूरे जवाब मिल जावें, तब उनके मन में एक क़िस्म की शान्ती आ जाती है, लेकिन यह इरादा नहीं

होता कि अब उस सच्चे मालिक का उसके निज धाम मैं पहुँच कर दर्शन करैं, क्योंकि अभी मन उनका दुनियाँ के भोग और बिलास और मान बड़ाई वग़ैरा का ख़्वाहिशमंद है, और उस ख़्वाहिश को छोड़ना या कम करना नहीं चाहता है ॥

१६—दूसरी क़िस्म के खोजी को दर्दी कहना चाहिये, उसके दिल मैं सिवाय दरियाफ़्त करने ख़ास २ मज़हबी बातों और भेद मालिक के, एक क़िस्म की तड़प वास्ते देखने हाल क़ुदरत के, और निज धाम मैं पहुंच कर हासिल करने आनंद और बिलास दर्शन कुल्ल मालिक के लगी रहती है, और वह तड़प किसी सूरत मैं, जब तक कि उसको जुगत चल कर मिलने मालिक की सिखाई न जावे, और वह उसके मुवाफ़िक़ चलना शुरू करके अपने घट मैं कुछ रस और आनंद न पावे, कम या दूर नहीं होती ॥

१७—इस दूसरी क़िस्म के खोजी दर्दी को जिस वक़्त कि कोई भेदी अभ्यासी मिलेगा, वह उसके साथ फ़ौरन मुहब्बत करेगा, और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अभ्यास मैं लग जावेगा, और थोड़ा बहुत रस और आनंद अंतर मैं पाकर, दिन २ उसकी प्रीत और प्रतीत चरनों मैं कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के

और भी उनके प्रेमी अभ्यासियों में बढ़ती जावेगी। ऐसा खोजी किसी पिछले महात्माओं के क़ौल या किसी मज़हबी किताब के हवाले का मुहताज नहीं रहता, वह अपनी प्रीत और प्रतीत सच्चे मालिक के चरनों में और भी सुरत शब्द के अभ्यास में अपनी इल्मी और अमली तहक़ीक़ात से पैदा करता है, और फिर वह प्रीत और प्रतीत ऐसी मज़बूत होगी, कि कोई उसको किसी तरह भरमा नहीं सकेगा और न उसको अपने काम यानी अभ्यास से हटा सकेगा॥

१८—थोड़ा सा हाल उस समझ बूझ का कि जिसके वसीले से खोजी दर्दी को बचन सुन कर और उनका बिचार करके गहरी प्रीत और प्रतीत हासिल होती है आगे लिखा जाता है॥

१६—और उस समझ बूझ का ख़ुलासा यह है॥

१—दुनियाँ और उसका सामान और सर्व इन्द्रियों के भोग नाशमान हैं, यानी न तो वे आप ठहराऊ हैं, और न उनका असर देर तक रहता है॥

२—जीव भी इस रचना में मुक़र्रर अर्से से ज़्यादा देह में नहीं ठहर सकता, फिर चाहे जितनी मिहनत और मशक़्क़त करके अनेक तरह के भोग और सामान पैदा करे, अख़ीर वक़्त यानी मरने के समय उन सब को अफ़सोस के साथ ज़रूर छोड़ना पड़ेगा॥

३-कुटम्ब परवार और धन माल और बिरादरी और दोस्त और आशना और नौकर चाकर और जिन २ से इस जीव का ब्योहार है; सब अपने २ वक्त़ और मतलब के संगी हैं। इन में से कोई सच्चा और पूरा हितकारी और मददगार नहीं है, कि जो आम तौर पर सुख और ख़ास कर दुख और तकलीफ़ के वक्त़ सच्ची मदद करे ॥

४-बल्कि अपनी देह और इन्द्रियाँ और अंग २ भी अख़ीर वक्त़ पर दग़ा देते हैं, यानी महज़ बेकार हो जाते हैं, और बीमारी की हालत में भी इनका थोड़ा बहुत ऐसा ही हाल हो जाता है ॥

५—जीव यानी रूह जिसको संत सुरत कहते हैं अमर है और जहाँ तक कि मन और माया की हद्द है, वहाँ तक मन सुरत का ख़ोल यानी ग़िलाफ़ होकर उसके संग मरने के बाद जाता है ॥

६-जो कोई इसमें शक लावे तो समझना चाहिये कि जिस क़दर जड़ पदार्थ हैं इनका असली नाश नहीं है सिर्फ़ रूप बिगड़ जाता है, फिर सुरत जो कि जड़ की चेतन्य करने वाली है, उसका नाश यानी अभाव किस तरह मुमकिन है, अलबत्ता बाद मरने के देह यानी ग़िलाफ़ बदल जाता है, इस बात के

सबूत बहुत हैं, यानी कितने ही मुआमले ऐसे हैं, कि कई शख़्सों ने लड़कपन में हाल और मुक़ाम अपने पिछले जनम का बयान किया, और उसकी बख़ूबी तसदीक़ हो गई, और कितने ही मौक़ों पर मुरदों की रूहों ने अजनबी लोगों से कुछ अपना पिछले जनम का हाल और कोई कैफ़ियत ख़ास ज़ाहिर की और फिर उसकी तसदीक़ हो गई, और ऐसे मुआमले भी बहुत कसरत से वाक़े हुए हैं, और होते रहते हैं, कि जिसमें मुरदों की रूहों ने अपने अज़ीज़ों को ख़ास मुआमलों में, ख़्वाब की हालत में गुप्त भेद या चीज़ें बतलाईं, जिसके सबब से उनका सख़्त तकलीफ़ या नुक़सान से बचाव हो गया या कोई जमा उनको मिल गई ॥

७–जागृत और स्वप्न की हालतों के मुक़ाबला करने से साफ़ ज़ाहिर होता है, कि सुरत का बंधन इस देह और दुनियाँ के साथ जागृत अवस्था में (जब कि उसकी धार आँख के मुक़ाम पर ख़ास कर और कुल्ल इन्द्रियों के स्थान पर उतर कर ठहरती है) होता है, और उसी वक़्त स्थूल देह और दुनियाँ के दुख सुख उसको ब्यापते हैं, और जब कि सुरत की धार नींद के बस आँख के मुक़ाम से अंदर में

हट जाती है, यानी पुतली किसी क़दर खिच जाती है, या सुपन देश में पहुंच कर सूक्षम शरीर और इन्द्रियों के साथ काररवाई करती है, तब अस्थूल देह और दुनियाँ का दुख सुख कुछ नहीं व्यापता, बल्कि उसकी कुछ ख़बर भी नहीं रहती है, फिर जो कोई चाहे कि दुनियाँ और देही के दुख सुख से किसी क़दर नजात पावे, तो उसको चाहिये कि अपनी पुतलियों को उलटावे यानी रूह की धार को यहाँ से खींच कर अंतर में ऊपर की तरफ़ को चढ़ावे ॥

जिस अभ्यास से ऐसी काररवाई जब यह जीव चाहे आसानी से बन आवे, तो उसी साधन से दरजे बदरजे चढ़ाई करके, और अस्थूल सूक्षम और कारन वग़ैरह गिलाफ़ों से न्यारा होकर, एक दिन अपने भंडार में (जो महा आनंद और सुख का स्थान है) पहुंच सक्ता है ॥

८–और स्वप्न अवस्था की कैफ़ियत को जाँच करके मालूम होता है, कि इस घट में सर्व रस और सुख का भंडार ज़रूर है क्योंकि जब आदमी सुपना देखता है, तब सर्व इन्द्रियों के भोगों का रस अपने अंतर में लेता है और उस वक़्त अस्थूल देह और इन्द्रियाँ बेकार होती हैं, और कोई पदार्थ और भोग बाहर मौजूद नहीं होते, फिर भोगों के पैदा करने और उनका रस

लेने की शक्ति और वह रस और आनंद घट में ही मौजूद हैं, जो ज़्यादा अंतर में सुरत चढ़े और परदों यानी गिलाफ़ों के पार जावे, तो ज़रूर उसकी शक्ती और आनंद और आराम बढ़ते जावेंगे और देहियों यानी गिलाफ़ों की तरफ़ से दूरी और बे ख़बरी होती जावेगी, यानी उनके दुख सुख कम या बिल्कुल नहीं बयापेंगे ॥

९—दुनियाँ में देखा जाता है कि हर एक चीज़ में दरजे हैं, और जानदारों में भी इनसान से लगा कर कीड़े मकोड़े और भुनगे और बनसपती तक बहुत दरजे हैं। और जो कि आसमानी रचना मिस्ल सूरज और चाँद और तारागन की इस लोक से ज़्यादह लतीफ़ और बहुत बड़ी और ज़्यादह ठहराऊ मालूम पड़ती है, तो ज़रूर हुआ कि उनमें रचना जानदारों की बनिस्बत इस लोक के, ज़्यादा रोशन और ताक़तवर और सुखदाई और ठहराऊ इनसान के दरजे से ऊपर सिलसिले वार होगी ॥

१०—लेकिन स्थूल देह के साथ सुरत किसी ऊँचे लोक या मुक़ाम में नहीं जा सक्ती, पहाड़ों और गुब्बारों पर चढ़ने वालों ने तहक़ीक़ किया है, कि साढ़ छः मील से ज़्यादह कोई मनुष्य इस आकाश में नहीं चढ़ सक्ता,

वहाँ पहुँचने पर जान जाती रहती है, और जोकि सुरत रूह का असली स्वरूप चेतन्य की धार है, और वह निहायत सूक्षम और लतीफ़ है, और चाल उसकी रोशनी और बिजली की धार से (जोकि एक सेकिण्ड मैं क़रीब एक लाख कोस के चलती है) ज़्यादा से ज़्यादा है, तो जो वह सुरत आहिस्ता २ अभ्यास करके अपनी देह से न्यारी हो जावे, यानी अपने घट में आँख के पार आकाश में ऊँचे को चढ़ने लगे, तो उस को ऐसी शक्ती हासिल हो जावेगी, कि चाहे जिस ऊँचे लोक में पहुंच कर सैर करे और वहाँ का सुख और आनंद देखे, और जब चाहे जब देह में लौट आवे और इसी तरह अभ्यास बढ़ा कर एक दिन ऊँचे से ऊँचे देश में जो कुल्ल मालिक का स्थान और परम आनंद का भंडार है, अपनी चेतन्य धार पर सवार होकर पहुंच सक्ती है, उसी तरह जैसे सूरज की किरन अपनी धार पर सवार होकर सूरज में उलट कर जा सकती है। मैस्मरेज़िम और हिप्नोटिज़्म के आलिम लोग अपने मामूलों से अक्सर दूर मुक़ामों का हाल और परदेशियों की ख़बर और बीमारी वग़ैरह की अंदरूनी हालत और उसका इलाज दरियाफ़्त करके बता सक्ते हैं और कितने ही ऐसे वाक़े हुए कि जिसमें बीमारों की या कोई

सदमह रसीदह शख़्स की रूह अपने जिस्म से किसी क़दर न्यारी होकर ऊँचे देश में चढ़ी और उस वक़्त उसके कुटम्बी या संगियों ने उस को मुरदा समझा लेकिन वह ऊँचे चढ़ कर सब कारवाई देखता रहा और हरचंद उसकी रूह ने चाहा कि ज़्यादा ऊँचे चढ़ कर गहरा आनंद पावे लेकिन उसकी रूह फिर देह में उतर आई और आँखें खोल कर उसने जो हालत कि गुज़री और जो कैफ़ियत कि देखी अपने लोगों से ज़ाहर की ॥

११—इस तरह अभ्यासी सुरत का ऊपर के लोकों की सैर करना और फिर अपने निज भंडार यानी सच्चे मालिक के चरनों में अपने घट में चढ़कर पहुंचना मुमकिन है, और रास्ता चलने का आँख के मुक़ाम से जहाँ कि सुरत की बैठक जाग्रत अवस्था में है चलेगा ॥

१२—मनुष्य की हालतों से और भी मुवाफ़िक़ बचन संतों और महात्माओं के ज़ाहिर है कि मनुष्य का स्वरूप कुल्ल रचना का नमूना है, यानी जो कुछ कि रचना बाहर है वह सब छोटे नमूने के तौर पर मनुष्य के अंतर में मौजूद है, और दोनों का आपस में इत्तफ़ाक़ और मेल है, और रास्ता ऊँचे से ऊँचे

देश का भी घट में चेतन्य धार के वसीले से मौजूद और जारी है; जैसे कि कुल्ल आसमानी रचना यानी तारागन जो नज़र आते हैं इनका सूत हमारी आँखों से ब वसीले उनकी किरनियों के जो इस लोक में आती हैं और इस लोक से उन तारागन में जाती हैं लगा हुआ है, और जिस किसी की सुरत जिसमानी क़ैद यानी देही के बंधन से किसी क़दर आज़ाद और न्यारी हो जावे; तो वह अपने सूक्ष्म स्वरूप यानी चेतन्य धार रूप से जहाँ चाहे छिन भर में जा सक्ता है और लौट कर देह में आ सकता है, क्योंकि सुरत की धार की चाल बहुत तेज़ से तेज़ है रोशनी और बिजली की चाल जो कि निहायत तेज़ है उसकी चाल के साथ मुक़ाबला नहीं कर सक्ती ॥

१३—सुरत की चेतन्य धार निहायत सूक्ष्म और लतीफ़ है और वह देखने में नहीं आती पर उसकी काररवाई से यानी जब वह जाग्रत के वक्त आँख के मुक़ाम पर उतर कर बैठती है और देह और इन्द्रियों को चेतन्य करती है उसका देह में मौजूद होना ज़ाहर होता है, और ख़ास निशान उस चेतन्य धार का चेतन्यता और शब्द यानी आवाज़ है, क्योंकि जब बच्चा पैदा होता है तो वह पहिले आवाज़ करता है,

जो आवाज़ न करे तो मुर्दा (यानी हिस्स से ख़ाली) समझा जाता है, और आदमी या जानवर जब तक बोलता है और हरकत करता है, ज़िन्दा यानी चेतन्य है, और जब हरकत और बोल बन्द हो गया, तब मुर्दा समझा जाता है, और जो ग़ौर करके देखा जावे, तो कुल्ल काररवाई इस दुनियाँ की शब्द और सुरत से हो रही है, यानी एक बोलता है, और दूसरा सुनकर तामील करता है, बल्कि जड़ पदार्थों की भी कारखाई (जो कि चेतन्य पुर्ष की मदद से जारी होती है) बग़ैर हरकत और आवाज़ के नहीं होती है, और वह हरकत और आवाज़ गुप्त चेतन्य का (जो सब जड़ पदार्थों में मौजूद है पर बग़ैर मदद विशेष चेतन्य के कुछ कारर-वाई नहीं कर सकता) ज़हूरा है, ख़ुलासा यह कि जहाँ धार रवाँ है, उसके साथ आवाज़ भी बराबर जारी है, यानी शब्द कुल्ल का चेतन्य करने वाला और हरकत देने वाला है, और ख़ुद चेतन्य रूप है चाहे जिस दरजे का होवे, इससे साबित हुआ कि जो कोई चेतन्य धार पर सवार होकर चलना चाहे, वह शब्द यानी उस धुन को जो उस धार के साथ जारी है, पकड़ कर चले, तो जहाँ से वह धार आती है पहुंच जावेगा। देखो अंधे आदमी को जो कोई थोड़ी दूर से बुलावे,

तो वह बुलाने वाले की आवाज़ को पकड़ के उसके पास पहुंच जाता है, और अँधेरी रात में जो कोई जंगल में रास्ता भूल जावे, और कोई नज़दीक के गाँव से आदमियों की आवाज़ आती होवे, तो वह उस आवाज़ को पकड़ के गाँव में पहुंच सकता है, इससे ज़ाहिर है कि आवाज़ की बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला और अँधेरे में प्रकाश करने वाला नहीं है ॥

१४—जितने मत कि दुनियाँ में जारी हैं उन सब में शब्द की महिमाँ लिखी है, और यह बयान किया है कि शब्द कुल्ल रचना की आद है, यानी पहिले शब्द हुआ और फिर उससे रचना हुई, और वह शब्द मालिक के साथ था, और ख़ुद मालिक का रूप और ज़हूरा है, और वही सच्चा करतार है। अब समझना चाहिये कि शब्द से मतलब चेतन्य धार से है, जो कुल्ल मालिक के चरनों से प्रगट हुई और कुल्ल रचना की करतार है, और कुल्ल हरकत और चेतन्यता और असर का कारन शब्द है और वही चेतन्य है, पर माया के देश में ब सबब मिलौनी माया के, उस चेतन्य शब्द की ताक़त और असर में दरजे बदरजे फ़र्क़ हो गया, और उसी क़द्र उसकी ताक़त और हरकत और असर में भी फ़र्क़ यानी दरजे हो गये, पर कुल्ल कार्रवाई जहाँ जैसी है शब्द के आसरे हो रही है ॥

१५—संतों ने, जो कि धुर मुक़ाम यानी कुल्ल मालिक के धाम से आये, शब्द का भेद साफ़ २ और शरह के साथ बयान किया, और हाल मंज़िलों का जो कि कुल्ल मालिक के स्थान से सुरत के पिंड में नशिस्त के मुक़ाम तक वाक़ा हैं, मै कैफ़ियत शब्द हर मुक़ाम के तफ़सील के साथ ज़ाहर किया, कि जिसकी मदद से चलने वाला हर एक मुक़ाम के हाल और कैफ़ियत को समझ कर और उस मुक़ाम की आवाज़ को पकड़ कर रास्ता तै कर सकें, यानी अपनी सुरत को अपने घट में शब्द को पकड़ के ऊँचे देश यानी अपने निज घर की तरफ़ चढ़ाता जावे, और इस जुगत से आहिस्ता आहिस्ता एक दिन अपने कुल्ल मालिक का दर्शन पाकर और माया और मन और काल और करम के घेरे से निकल कर, परम और अमर आनंद को प्राप्त होवे, और दुख सुख और कष्ट और कलेश और जनम मरन से अपना सच्चा छुटकारा कर लेवे ॥

१६—जो कोई मन और इन्द्रियों के भोग बिलास को सच्चा सुख, और देह और दुनियाँ को अपना रूप और घर समझ कर, इसी के वास्ते मिहनत और जतन करते रहेंगे, तो उस आसा और मंसा और स्वभाव के मुवाफ़िक़ उन को बारम्बार देह धरनी पड़ेगी, क्योंकि मृत्यु

देह की होती है नकि सुरत की, यानी जब सुरत देह को छोड़ देती है, या उससे जुदा हो जाती है, उसी का नाम मौत है ॥

१७—लेकिन जो कोई खोजी दर्दी दुनियाँ और देह के हाल को देख कर, और यहाँ के सामान की नाशमानता ख़्याल करके, अजर धाम और अमर आनंद के प्राप्ती की चाह उठा कर जतन करना चाहते हैं, उनके वास्ते ऊपर के बयान के मुवाफ़िक़ यह हिदायत की जाती है, कि अपनी सुरत को आँख के मुक़ाम से चेतन्य धार यानी शब्द की धुन को पकड़ के, अपने घट में ऊपर की तरफ़, भेद मंज़िल और रास्ते और चलने की जुगत का, संत सतगुर से (जो धुर मुक़ाम के पहुंचे हुये हैं) या साधु गुरू से (जो निस्फ़ रास्ता ते कर चुके हैं और आगे को चल रहे हैं) या उनके सच्चे प्रेमी सतसंगी से (जो कुछ रास्ता ते कर चुका है और चल रहा है) उपदेश लेकर चलना शुरू करे, लेकिन यह काररवाई जब दुरुस्त बनेगी, जब कि चलने वाले के मन में सच्चा प्रेम कुल्ल मालिक के दर्शनों का पैदा होगा, और अभ्यास करके वह प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा, और उसी क़दर रास्ता भी आसानी के साथ ते होता जावेगा ॥

१८—प्रेम यानी खैंच शक्ती या आपस में मिलने की शक्ती, कुल्ल रचना का जुज़ेआज़म यानी परम तत्त है, यानी कुल्ल रचना इसी प्रेम से हुई और इसी प्रेम के आसरे ठहरी हुई है, और इसी तरह कुल्ल काररवाई इस दुनियाँ में, प्रेम यानी शौक़ और मुहब्बत के वसीले से जारी है ॥

जिसको जिस चीज़ या काम का शौक़ या इश्क़ होता है, वही काम वह करता है, और जिस में उसका प्यार है उसी से मिलता है, और सब देहैं और उन के रूप, इसी प्रेम के सबब से बने हुए और ठहरे हुए हैं, यहाँ तक कि कुल्ल मालिक आप प्रेम सिंधु यानी प्रेम का अपार भंडार है, और जो धारैं कि उसके चरनों से निकलीं वह भी प्रेम स्वरूप हैं, और जो उन धारों से मंडल और उनमें रचना पैदा हुई वह भी प्रेम स्वरूप है। खुलासा यह कि कुल्ल जीव प्रेम रूप हैं, और प्रेम ही से कुल्ल काररवाई कर रहे हैं, और प्रेम ही के बल से अपने निज भंडार की तरफ़ उलट कर जा सकते हैं, इस वास्ते जो कोई कि इस मर देश से न्यारा होकर अमर देश में पहुंचना चाहे, वह प्रेम अंग लेकर चल सकता है, और अपने प्रेम भंडार से मिल सकता है ॥

जिस मज़हब और उसके अभ्यास में प्रेम की मदद नहीं या उसका ज़िकर भी नहीं, वह सब मज़हब और अभ्यास थोथे और ख़ाली हैं। यह प्रेम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में (जो घट घट में मौजूद हैं) आना चाहिये, और ज़ाहिर यानी बाहर में संत सतगुरु या साधगुरू के चरनों में (जो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम का भेद देकर, जुगत उनसे मिलने की बताते हैं, और मदद देकर सुरत को पहुंचाते हैं) आना चाहिये, तब रास्ता आसानी और दुरुस्ती से तै होगा, और जो प्रेम मन में नहीं आया, तो जो कुछ कि करनी यानी अभ्यास वग़ैरह करेगा, वह नेम यानी करम में दाख़िल होगी, लेकिन खोजी दरदी के मन में फ़ौरन महिमाँ राधास्वामी दयाल और उनके धाम की सुनकर चरनों का प्रेम पैदा होगा, और इसी तरह जिस किसी को संत सतगुरु या साधगुरू मिलेंगे, वे अपनी दया से बचन सुना कर उसके मन में प्रेम पैदा कर देंगे, और सतसंग और अभ्यास करके वह प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा, और एक दिन धुरधाम में पहुंचा कर छोड़ेगा॥

२०—यह कैफ़ियत जो ऊपर बयान हुई, और जो दर्दी खोजी की समझ बूझ का नतीजा है, सिर्फ़

दुनियाँ और अपनी देह की हालत के मुलाहिज़े से मालूम हो सकती है, यानी खोजी और बिचारवान पुर्ष देह और दुनियाँ के हालात को ग़ौर से जाँच कर, जो बयान कि ऊपर की अठारह दफ़ों में किया गया है, बतौर नतीजे के अपनी ज़ाहरी तहक़ीक़ात से निकाल सकता है, फिर उसके वास्ते कोई ज़रूरत या हाजत किसी की गवाही या तसदीक़ की (जैसे पुरानी मज़हबी किताबें या महात्माओं के बचन की) नहीं रहती, और इस सबब से उस खोजी का यक़ीन भी पूरा और पक्का होता है, और जो कि उसके दिल में दर्द है, यानी इस दुखदाई और मर देश को छोड़ कर, महा सुख के स्थान और अमर देश में पहुंचना चाहता है, इस वास्ते उससे काररवाई अभ्यास की भी, दरजे बदरजे बहुत दुरुस्त बनेगी और निरबिघ्न जारी रहेगी ॥

२१-ऐसे खोजी दर्दी को संत सतगुरु (जो कि अंतर जामी हैं) अपनी दया से संयोग बना कर ज़रूर मिलते हैं, और हर तरह की मदद देकर मेहर और दया से उसका पूरा कारज बनाते हैं ॥

असल परमार्थ यही है और सच्ची मुक्ती और पूरा उद्धार इसी का नाम है, बाक़ी जितनी कारवाई अंतर

और बाहर परमार्थ के नाम से लोग करते नज़र आते हैं, वह भरम है, लेकिन किसी क़दर सफ़ाई और शुभ करम का फल उससे मिलता है, यानी कुछ अर्सा के वास्ते ऊँचे नीचे देश और जोन में सुख प्राप्त हो जाता है, पर देही का बंधन चाहे सूक्ष्म होवे या स्थूल, और उसके लाज़मी दुख सुख और भाव अभाव, यानी जनम मरन से छुटकारा किसी सूरत में मुमकिन नहीं॥

२२—मज़हब या तरीक़ या पंथ नाम रास्ते का है, और मत और दीन और ईमान नाम उस समझ बूझ का है, कि जिसका यक़ीन हासिल करके प्रीत के साथ उस रास्ते पर चलना शुरू किया जावे, कि जिससे चलने वाला परम सुख और हमेशा के क़ायम रहने वाले स्थान में पहुंच कर अमर आनंद को प्राप्त होवे, और दुख और ओछे सुखों से क़तई छुटकारा हो जावे, और काम क्रोध और लोभ मोह और अहंकार और दसों इन्द्रियों के ज़ोर शोर के मुक़ाम से बिल्कुल अलहदह हो जावे, और ऐसे स्थान पर पहुंचे कि जहाँ सिवाय सच्चे मालिक के प्रेम और दर्शनों के आनंद और बिलास के और कोई दूसरी ख़्वाहिश या बर्ताव या किसी क़िस्म का ब्योहार (जो कि दुख सुख का मूल है) क़तई नहीं है॥

२३—अब ग़ौर करो कि मनुष्य के लुभाने और दिल बहलाने, और उसको मन और इन्द्रियों का रस और स्वाद देने के वास्ते, ब्रह्म और माया ने बेशुमार भोग और पदार्थ इस देश में पैदा किये हैं, और सब जीव उन्हीं की चाह और आसा बाँध कर, उमर भर दिन रात मिहनत और मशक्कत करते हैं, और फिर भी ऐसे जीव बहुत कम हैं, कि जिनको सर्व सुख प्राप्त होवें, यानी कुल्ल इन्द्रियों के भोग उनकी चाह के मुवाफ़िक़ मिल जावें, लेकिन चाहे पूरा सुख मिले या नहीं, सब जीव उसकी आसा में बदस्तूर पचते और खपते रहते हैं, और बावजूदे कि अकसर उनके जतन नाकामयाब होते हैं, और और तरह से भी दुनियाँ के हाथ से धक्के और झटके खाते रहते हैं, फिर भी नई २ चाह और आसा उठा कर अपनी काररवाई से बाज़ नहीं आते, चाहे वह आसा पूरी होवे या नहीं ॥

२४—बड़े अफ़सोस का मुक़ाम है कि सब जीव अपनी मामूली अक्ल और अपनी ज़ाहरी आँखों से देखते और समझते हैं, कि बड़े और छोटे आदमी और सब सामान इस दुनियाँ का गुज़रता चला जाता है, यानी उनका भाव और अभाव (हस्ती और नेस्ती) बराबर

जारी है, और एक दिन आपको भी इस देश और उसके सामान और खुद अपनी देह को छोड़ कर जाना है, फिर भारी तअज्जुब और अचरज यह होता है, कि ज़रा से सफ़र को जब जाते हैं तो हर तरह का बंदोबस्त अपने सुख और आराम का करते हैं, और इस भारी सफ़र का कि जहाँ से फिर लौटना नहीं होगा, कोई जतन अपने आराम के वास्ते दुरुस्ती के साथ नहीं करते, और इस ज़िन्दगी में हर एक शख़्स अमीर और ग़रीब अनेक तरह के रोग और सोग और कलेश और तकलीफ़ें सहते हैं, और जो जतन कि उनके दूर करने का करते हैं, उनमें से अकसर कुछ फ़ायदा नहीं देते, यानी उनसे किसी तरह का बचाव दुख और तकलीफ़ का नहीं होता, फिर भी खोज और तलाश नहीं करते, कि कोई ख़ास जतन ऐसा भी है कि जिससे दुक्खों से पूरा २ या किसी क़दर बचाव और सुखों की आसा, और तृश्ना का घटाव, या बिलकुल दूर हो जाना मुमकिन होवे ॥

२५—इन बातों का थोड़ा बहुत इलाज और जतन और सबब और फ़ायदा हर एक मज़हब में बयान किया है, पर न तो कोई उस जतन को विधि पूर्वक करता है और न उसकी काररवाई की बिधी अच्छी तरह से

जानते, और न कोई उसका समझाने वाला हर एक मज़-हब में और हर जगह मिल सक्ता है, बल्कि जो पेशवा और और अचारज अपने वक़्त के हर एक मज़हब में होते आये हैं, वे ख़ुद इन बातों से जैसा चाहिये वैसे वाक़िफ़कार न थे और न हैं, और जोकि यह बातें अक्सर करके इशारे में बयान की हैं, इस वास्ते सिवाय अभ्यासियों के आम जीव उनको किताबें पढ़कर दरियाफ़्त नही कर सक्ते, और पहिले तो ऐसा हाल है कि वह जतन और जुगत कि जो थोड़ा बहुत असर और फ़ायदा दिखलावे उसकी बिधि किसी मज़हब में पाई नहीं जाती, फिर जीवों को कहाँ से और कैसे मालूम होगा और दूसरे सब जीव आम तौर पर मज़हब की तरफ़ से ऐसे बेपरवाह हैं, कि न तो किसी के दिल में खोज उन बातों का है, और जो कोई बतावे तो कोई चित्त देकर सुन्ना भी नहीं चाहते, और न उसके फ़ायदे और असर की परख या जाँच करनी मंजूर है, सिर्फ़ पुरानी रसम और चाल और सीखों में जो कि बुज़ुर्गों के वक़्त से जारी हैं बग़ैर सोचने और बिचारने उनकी असलियत और कैफ़ियत और नफ़ा और नुक़सान के ज़ाहरी तौर पर बर्ताव कर रहे हैं, और इसी को परमार्थ समझते हैं, यानी इन्हीं कामों से अपनी मुक्ती या उद्धार की बाद

मरने के आसा बाँध कर बेफ़िकर हो रहे हैं, और इतना ग़ौर और ख़्याल आम तौर पर किसी को भी नहीं है, कि इस बात की जाँच करें, कि आया उन कामों से जीते जी भी कुछ फ़ायदा, कि जिस्से आइन्दा मुक्ती का सबूत या यक़ीन होवे, होता है कि नहीं ॥

२६—अब समझना चाहिये कि असल में शुरूआत मज़हबों की किस तरह पर हुई, और उनसे क्या मतलब और फ़ायदा मंजूर था, सो संतों के बचन से ज़ाहर होता है, कि दुनियाँ में सब जीव आम तौर पर मन और इंद्रियों के भोग और सुखों की प्राप्ती के लिये देखा देखी और सुना सुनी के मुआफ़िक़ जतन करने लगे, और हरएक मुआमले में ज़्यादह से ज़्यादह आसा और तृष्णा बढ़ाते गये, कि जिसके सबब से ज़्यादह मिहनत उनको करनी पड़ी, चाहे वह आसा पूरी हुई या नहीं, और उसके सबब से दुख सुख भोगते रहे, और रोग सोग और तकलीफ़ वग़ैरह के दूर करने के लिये भी, जो जतन कि उनको आम तौर पर जीवों की काररवाई देख कर मालूम हुये करने लगे, पर जब उन से कुछ फ़ायदा न हुआ, तब दुखी रहे और कोई उनकी मदद न कर सका, और मौत के वक़्त, तो कितई किसी का जतन पेश न गया, और वह भारी दुख सब

को भोगना पड़ा, और आइन्दह की हालत से सब को बेख़बरी रही कि आया दुख मिलेगा या सुख ॥

२७—ऐसी हालत जीवों की देख कर, यानी इन तीन क़िसम के दुक्खों में जिनका ज़िकर ऊपर हुआ, उनका कोई सहाई या मददगार न देख कर, वक़्त वक़्त के महात्माओं और बुद्धिवानों ने और कहीं कभी परमेश्वर या ब्रह्म ने आप औतार धर कर या अपनी कला भेज कर, ऐसी समझ सुनाई या जुगत बताई, कि जिससे इन तीनों क़िसम के दुक्खों की हालत में थोड़ा बहुत जीवों को सहारा या मदद मिले, और यह समझ और जुगत हर एक ने अपनी अपनी पहुंच और वाक़िफ़कारी और बुद्धि की ताक़त के मुवाफ़िक़ बताई और किताबों में लिखी, लेकिन हर एक समय के लोगों की समझ और कहन में थोड़ा बहुत फेर और इख़तलाफ़ होता गया, और फिर जीवों की समझ के मुवाफ़िक़ (जिनकी हिदायत के वास्ते वह किताबें बनाई गईं) हर वक़्त में क़मी बेशी और इख़तलाफ़ बढ़ता गया, कि जिसके सबब से हर मज़हब या गिरोह में बहुत से फ़िरक़े होते गये, और असली मतलब कि जो उन किताबों के जारी करने का था दिन २ गुम और गुम होता गया ॥

२८—ख़ुलासा यह कि जिस किसीने जो समझ सुनाई

या जुगत बताई, वह सब टटोलवाँ चले यानी नतीजे से सबब को ढूँढ़ते गये, और जिस क़दर कि उनको बुद्धि की मदद और दुनियाँ के हाल और .क़ुदरत की काररवाई को ग़ौर से मुलाहज़ा और जाँच करने से जो कैफ़ियत मालूम पड़ी, वही उन्हों ने ज़ाहर की, और उसी के मुवाफ़िक़ अपने २ देश के जीवों को करम और धरम वग़ैरह की हिदायत की, और जब तक कि आम जीव नादान और बेपरवाह रहे, उन्हों ने उनके बचन को दुरुस्ती से माना, और उस के मुवाफ़िक़ जिस क़दर बन सका ज़ाहरी कारवाई की, और जब उनमें से बाज़े बाज़ों की बुद्धी जागी, या विद्या पढ़ कर थोड़ी बहुत समझ आई, और बिचार उत्पन्न हुआ, तब वे पिछले महात्माओं और बुद्धिवानों और कलाधारियों के बचनों में इख़्तलाफ़ और एर फेर देख कर उनकी जाँच और तौल करने लगे, और कसरें निकाल कर उनकी कारवाई में अदल बदल कर दिया, या नई समझ और नई कार-रवाई जारी करी, और इख़्तलाफ़ के सबब से हर फ़िरके में आपस में लड़ाई और झगड़े होने लगे, और एक मज़-हब वाला दूसरे पर या एक ही मज़हब वाले अपने मुख़्त-लिफ़ फ़रीक़ों पर तान और तंज़ करने लगे, और ग़ल्-तियाँ और कसरें निकाल कर एक दूसरे को झूठा या

ओछा बताने लगे और इस तरह से असल मतलब गुम् हो गया, और ज़ाहरी और दिखावे और हिरसा हिरसी की काररवाई बढ़ती गई ॥

२९—जो समझौती या मत कि औतारों या कला-धारियों ने जारी किये, उनमें धरम यानी इख़लाक़ की बातें और रसमें थोड़ी बहुत एकसाँ थीं, लेकिन जो जुगत कि उन्होंने बताई वह निहायत कठिन और ख़तर-नाक थी, कि जिसकी काररवाई आम तौर पर जीवों से नामुमकिन मालूम हुई, और वह सिर्फ़ लिखने और पढ़ने के वास्ते थी, अमल दरामद उसका आम तौर पर जारी नहीं हुआ, और बाज़ों ने वह जुगत ऐसे मुअम्मे और इशारों में लिखी, कि वह आम जीवों की समझ में न आई और न उसकी कारवाई जारी हुई, सिर्फ़ ज़ाहरी रसमों और कारवाइयों में, कि जिनमें असली मतलब और फ़ायदा बहुत कम था, सब जीव अटक गये, और उन्हीं की टेकें बाँध कर दूसरे से ज़िद्द और तकरार करने लगे, और दुक्खों के दूर करने या उन में सहायता और मदद की प्राप्ती का ख़्याल किसी को नहीं रहा, और इस सबब से सब जीव अपनी २ बुद्धि और समझ के मुवाफ़िक़ काम करने लगे, और नतीजा उसका यह हुआ कि बहुत कम जीव ऊँचे यानी सुख स्थान

में, जैसे स्वर्ग और बैकुण्ठ या बहिश्त या और ऊँचे लोकों में पहुंचे, और बाक़ी कसरत से नीचे के लोक और नरकों वग़ैरह में यानी चौरासी जोनों में भरमें, और कुल्ल और सच्चे मालिक का भेद और पता किसी को नहीं मिला, और न उसके प्राप्ती के जतन और जुगत की ख़बर पड़ी ॥

३०—ऐसी हालत जीवों की देखकर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने संतों को, जो उसके निज पुत्र या ख़ास मुसाहब हैं, दया करके संसार में भेजा, कि पहिले सत्तपुर्ष का भेद और पता और धाम प्रघट करके (जो कि तीन लोक यानी माया के घेर के पार है) जतन और अभ्यास उसके प्राप्ती का, सुरत शब्द मारग को अपने घट में कमाई करके बताया, लेकिन जो कि पुराने मुत-फ़र्रिक़ मज़हब और उनकी शाखों का बहुत ज़ोर और शोर था, इस सबब से संतमत और उसकी जुगती की कारस्वाई बहुत कम जारी हुई, और हरचंद उस वक़्त से जाबजा साधू संतमत के जब तब प्रघट होते गये, और उन सब ने वही सुरत शब्द मारग का उपदेश किया, लेकिन पढ़े लिखे जीव बहुत कम इस मत में शामिल हुये, और फिर बहुत से जीव जो कि विद्यावान और बुद्धिवान न थे, और ज़ात पाँत में भी ज़रा कम दरजे

के थे, यानी अहंकारी और अभिमानी न थे, संत मत में शामिल हो गये, लेकिन इनमें से सुरत शब्द के अभ्यासी बहुत कम बल्कि थोड़े से ख़ास २ हुये, और बाक़ी कोई न कोई ज़ाहरी पूजा या रसम में (मुवाफ़िक़ और मतों के जो कि कसरत से रायज थे) अटक गये, और सिर्फ़ संतों की बानी और बचन के पढ़ने और रसमी पूजा करने को अपने उद्धार का वसीला समझा, और बाज़े वाचक ज्ञानी हो गये, सो इनका हाल भी थोड़ा बहुत मुवाफ़िक़ और मतों के जीवों के समझना चाहिये, यानी सच्चे मालिक के धाम में इन में सिवाय बाज़े ख़ास अभ्यासी और प्रेमियों के कोई न गया ॥

३१—इसी अर्से में बसबब गुम होने असली परमार्थ और रुजू होने आम तौर से कुल्ल जीवों के दुनियाँ और उसके भोग बिलास की तरफ़, और भूलने कुल्ल मालिक और उसके भजन बंदगी के, करमों का भार जीवों के सिर पर ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ता गया, और नतीजा उसका यह हुआ कि रोग सोग और निरधनता और कलह और कलेश और आपस में लड़ाई और झगड़े बहुत बढ़ते गये, और उमरें भी जीवों की कम हो गईं, और ज़मीन की पैदावार और काररवाई और आमदनी हर एक पेशे की बहुत घट गई, और अनेक तरह की

चिन्ता और फ़िकर ज़्यादह सताने लगी, और नक़ली और रसमी परमार्थ की ज़ाहरी काररवाई ज़्यादह होती गई, कि जिसमें असली परमार्थ का फ़ायदा बहुत कम और मन और इन्द्रियों के भोग और दिखावे की काररवाई ज़्यादा हो गई, और इस सबब से जीव कसरत से नीचे दर्जों में उतरने लगे, तब ऐसी हालत परेशानी और मुसीबत जीवों की देखकर, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल अति दया करके आप संत रूप धर कर प्रगट हुये, और निहायत आसान जुगत इस माया के देश से निकल कर, निज घर यानी राधास्वामी देश में जाने की, प्रगट की और कुल्ल भेद अपना और अपने धाम का और हाल रास्ते और उसकी मंज़िलों का बयान फ़रमाया, और आम तौर से जीवों को हेला दिया, कि जो कोई देह और दुनियाँ के दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से बचना चाहे, वह उनकी यानी राधास्वामी दयाल की सरन में आवे, और जो सहज जुगत सुरत शब्द मारग की उन्होंने दया करके जारी फ़रमाई, उसका अभ्यास जिस क़दर बन सके, ग्रहस्त में रहकर और अपना उद्यम और रोज़गार करते हुये नेम से रोज़मर्रा करे, और चरनों में प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ावे, तो वे अपनी दया से उसका उद्धार फ़रमावेंगे, यानी निज घर में पहुंचाकर उसको अमर आनंद बख़्शेंगे ॥

३२—और जो जीव कि करम धरम और पिछली टेकों की पक्ष धारन करके, राधास्वामी दयाल के बचन को नहीं सुनेंगे या नहीं मानेंगे, और बेफ़ायदा हुज्जत और तकरार उठाकर राधास्वामी मत से बिरोध जनावेंगे, उनको सिवाय एक दफ़े हाल इस मत का सुनाने के, छेड़ने या उन से बहस करने का हुक्म नहीं है, और न किसी को डराने या लालच दिखाने का हुक्म है, क्योंकि यह मत प्रेम का है, और जब तक किसी के दिल में सच्चा शौक़ और प्रेम कुल्ल मालिक के चरनों में न आवेगा, तब तक उससे उस सहज जुगत का अभ्यास भी नहीं किया जावेगा, इसवास्ते यह सब जीव काल और माया के घेर में रहे आवेंगे, और वहीं बारम्बार ऊँची नीची देह धर कर दुख सुख भोगते रहेंगे॥

३३—जो कोई राधास्वामीदयाल की सरन में आवेगा, उसका बचाव तीन क़िस्म के दुक्खों से थोड़ा बहुत ज़रूर हो जावेगा, और यह हालत अपनी अभ्यास करके वह थोड़ी बहुत इसी ज़िंदगी में देख सक्ता है। और उन तीनों क़िसम के दुक्खों का ज़िकर दफ़ा २६ में हो चुका है और दूसरी तरह उन को तीन ताप करके भी कहा है, यानी मानसी दुख और तनका दुख जैसे बीमारी वग़ैरह, और उपाधी का दुख जैसे

लड़ाई झगड़ा कलेश वग़ैरह, और चौथा मौत का दुख जोकि सब में भारी है ॥

३४—राधास्वामी मत के उसूल यह हैं—

(१) सच्चा कुल्ल मालिक एक है, और उसका धाम ऊँचे से ऊँचा है, और वहाँ सिवाय प्रेम के और कोई दूसरी वस्तु नहीं है, यानी माया की मिलौनी क़तई नहीं है, और उस कुल्ल मालिक का नाम राधास्वामी है, और यह नाम धुन्यात्मक है, यानी इसकी धुन घट २ में हो रही है, और किसी आदमी का धरा हुआ नहीं है ॥

(२) और उस सच्चे मालिक का तख़्त घट घट में मौजूद है, और उसके मिलने का रास्ता भी घट में है, और अपनी किरन यानी धारों के वसीले से सब जगह मौजूद है ॥

(३) जीव यानी सुरत कुल्ल मालिक की अंस है, जैसे सूरज और उसकी किरन या सिंध और उसकी बूँद ॥

(४) कुल्ल मालिक यानी दयाल देश के नीचे से एक धारा श्याम रंग निकली जिसका नाम निरंजन और काल पुर्ष है, और मन इसकी अंस है। इसी ने संकल्प उठाकर और सत्तपुर्ष से आज्ञा लेकर नीचे के देश में तिरलोकी की रचना करी ॥

(५) इसी देश में शुद्ध माया का प्रथम ज़हूर हुआ, और निरंजन ने इस माया से मिल कर पहिले ब्रह्मांड की रचना करी, और पुर्ष प्रकृत और माया ब्रह्म और शिव शक्ति और निरंजन जोत इन्हीं दोनों के नाम हैं, जो कि उतार के वक़्त नीचे के मुक़ामों पर धरे गये, और यही निरंजन कुल्ल मतों का परमेश्वर और ख़ुदा है। सत्तपुर्ष राधास्वामी का भेद किसी ने नहीं पाया ॥

(६) फिर निरंजन जोत ने नीचे के देश में अपनी तीन धारों (यानी ब्रह्मा बिष्णु महादेव) के वसीले से, देवताओं और मनुष्यों और चारों खान के जीवों की रचना करी, इस देश में मलीन माया प्रगट हुई, और उसकी मिलौनी से सब रचना हुई। इस देश को पिंड देश भी कहते हैं ॥

(७) इस हिसाब से राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ कुल्ल रचना के तीन बड़े दरजे हुये। पहिला प्रेम यानी निर्मल चेतन्य देश, जहाँ सिवाय प्रेम यानी चेतन्य के और किसी की मिलौनी नहीं है। दूसरा निर्मल चेतन्य और शुद्ध माया देश, जहाँ ब्रह्मान्डी रचना यानी ब्रह्म सृष्टी हुई। तीसरा निर्मल चेतन्य और मलीन माया देश, जहाँ पिंडी यानी सूक्ष्म और अस्थूल रचना हुई ॥

(८) मन जो कि निरंजन यानी काल पुर्ष की अंस है, संकल्प बिकल्प यानी इच्छा का भंडार है, और इन्द्रियाँ जो कि देह में बतौर औज़ार के हैं, उनके वसीले से पिंडी मन इस लोक में इच्छा अनुसार कार-रवाई यानी करम करता है, और यह देह और उसके औज़ार (इन्द्रियाँ) माया का कारज हैं॥

(९) रोशनी और रोशन किरनियाँ चेतन्य और दयाल पुर्ष की अंस यानी किरनियों का ज़हूरा है, और अँधेरा और श्याम किरनियाँ काल पुर्ष और माया का ज़हूरा और नमूना है॥

(१०) पहिले बड़े दरजे में दयाल पुर्ष यानी निर्मल चेतन्य का बासा है, और दूसरे और तीसरे दरजे में काल पुर्ष और माया प्रधान हैं, यानी इन दो दरजों की रचना माया की हद्द में है॥

(११) माया और उसका कारज हमेशा एक हालत में नहीं रहते, यानी उसमें तग़इयर और तबद्दुल हमेशा ज़ारी रहता है, इस सबब से इसकी हद्द में सुख और दुख ब्यापते हैं, और भाव और अभाव देहियों का, जो कि बतौर गिलाफ़ के सुरत चेतन्य पर इस देश में चढ़े हुये हैं, होता रहता है, और गिलाफ़ या देही माया के मसाले यानी पाँच तत्त और तीन गुन से बनी है॥

(१२) ब्रह्म और माया देश यानी रचना के दूसरे और तीसरे दरजे में पाप और पुन्य का ज़हूर हुआ, और इसी देश का नाम करम देश है, यानी करम का ज़हूर इन्हीं दो देशों में हुआ, और यही करम पुन्य और पाप करम कहलाये ॥

(१३) पुन्य और पाप करम की दो क़िसमें हैं, एक असली और दूसरो ज़ाहरी और रसमी ॥

(१४) असल पुन्य करम यह है कि संतों की जुगत का अभ्यास करके, मन के मुक़ाम से बृत्ती यानी धारा उठ कर ऊँचे देश, यानी सुरत चेतन्य के निज घर की तरफ़, रुजू होवे ॥

(१५) और असली पाप करम यह है कि मन के मुक़ाम से बृत्ती यानी धारा उठ कर, इन्द्रियों के घाट पर आवे, और वहाँ से बाहर की रचना यानी भोगों, और पदार्थों की तरफ़ रुजू करे ॥

(१६) असली पुन्य करम का यह फ़ायदा है, कि मन और सुरत दिन २ ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ कर निर्मल होते जावेंगे, और निर्मल आनंद पाते जावेंगे, और त्रिकुटी के मुक़ाम पर मन ठहर जावेगा, और सुरत उससे न्यारी होकर दयाल देश में पहुंच कर अमर आनंद को प्राप्त होगी, और वही जुगत और जीवों को बताकर

या उसकी काररवाई में मदद देकर, उन को भी परम आनंद का कराना यही काम असली और सच्चा परमार्थ है ॥

(१७) और असली पाप करम का नुक़सान यह है कि मन और सुरत का रुख़ नीचे और बाहर की तरफ़ रहेगा, और उनकी धारें इन्द्रियों द्वारे जड़ पदार्थों की तरफ़ बिखरती रहेंगी, और देहियों के साथ दुख सुख सहती रहेंगी, और जनम मरन का चक्कर नहीं छुटेगा, और और जीवों को भी ऐसी काररवाई की शिक्षा या उसमें मदद देना, और असली पुन्य करम के करने वालों यानी सच्चे परमार्थी जीवों को उनकी काररवाई से रोकना या उसमें बिघन डालना, पाप करम में दाख़िल है॥

(१८) रसमी पुन्य करम यह है कि जो सामान क़ुदरती तौर पर या जमाअत के ब्योहार और रसम के मुआफ़िक़, या अपनी ज़ाती मिहनत और मशक्क़त से हासिल हुआ है, उस्से औरों को फ़ायदा और सुख पहुंचाना मन बचन और करम करके, इसका फ़ायदा यह होगा कि इस शख़्स को आइंदा बिशेष सुख मिलेगा, और जो यह करम निष्काम बन पड़ेगा, तो मालिक के चरनों में प्रेम और भक्ती पैदा होगी ॥

(१९) और ज़ाहरी पाप करम यह है, कि औरों के सामान पर बदनियती के साथ नज़र डालना या उस को ज़बरदस्ती छीन लेना, या और तरकीब से नाहक़ यानी ग़ैर वाजिब और ना मुनासिब तौर से ले लेना, या उनकी किसी तरह से हक़ तल्फ़ी करना और नुक़सान पहुंचाना, या किसी तरह की तकलीफ़ और कष्ट देना मन बचन और करम करके, और परमार्थी जीवों के साथ उपाधी उठाना और लड़ाई झगड़ा करना।

(२०) असली पुन्य करम में प्रवृत्ती (यानी सुरत और मन के गगन में चढ़ाने का अभ्यास) बग़ैर मदद और सतसंग सतगुरु के, जो धुर धाम के भेदी और बासी हैं, क़तई मुमकिन नहीं है, और ज़ाहरी और रसमी पुन्य करम भी बग़ैर सतसंग सतगुर के और अभ्यास उनकी जुगती के, निष्कामता के साथ बनना बहुत मुशकिल बल्कि ना मुमकिन है॥

(२१) राधास्वामी अथवा संत मत में महिमा और ज़रूरत सतगुरु की जो धुरधाम का भेद बतावें और जुगत चढ़ाने और चलाने मन और सुरत की उसकी तरफ़ समझावें, बहुत भारी है। बग़ैर उनके उपदेश और दया और मदद के अभ्यास किसी से नहीं बन सक्ता है,

और न भेद सच्चे मालिक और उसके धाम और रास्ते का मिल सक्ता है ॥

(२२) संत सतगुर कुल्ल मालिक का स्वरूप या उसके निज और प्यारे पुत्र हैं, और जीवौं का सच्चा और पूरा उद्धार जब कभी होगा उन्हीं के वसीले से होवेगा, और उन्हीं की यह ताक़त है कि जीवौं को चारौं खान मैं से निकाल कर पहिले नर देही मैं और फिर संतसंग और अभ्यास कराके ऊँचे लोकौं मैं और फिर निज धाम मैं पहुंचावैं ॥

(२३) संत सतगुर कुल्ल जीवौं के सच्चे हितकारी हैं, और रक्षक और बंदी छोड़ हैं, और वेही जीवौं को सच्चे और कुल्ल मालिक से मिला सक्ते हैं, और उसी स्वरूप मैं यानी संतसतगुर रूप मैं, सच्चा और कुल्ल मालिक जब २ मौज होती है औतार धारन करता है ॥

(२४) जो किसी को संत सतगुर न मिलैं, पर साध गुरू से मेला हो जावे, तो वह भी उसके उद्धार मैं पूरी मदद दे सक्ते हैं। और साध गुरू उनको कहते हैं, कि जो संत सतगुरु या कुल्ल मालिक से जब वह औतार धारन करे, मिल कर और उनकी दया से अभ्यास करके आधा रास्ता ते कर चुके हैं, यानी पारब्रह्म पद मैं पहुंचे हैं, और निज

धाम में पहुँचनहार हैं, यानी संत सतगुर गती को प्राप्त होने वाले हैं ॥

(२५) जो इन दोनों में से किसी से मेला न होवे, लेकिन इनका कोई सच्चा प्रेमी सतसंगी मिल जावे तो उससे भेद और जुगत लेकर खोजी और दर्दी परमार्थी अभ्यास शुरू कर सक्ता है, लेकिन कारज उसका संत सतगुर ही बनावेंगे, यानी सवेर अवेर उसको ज़रूर दर्शन देकर दया फ़रमावेंगे ॥

(२६) हर एक जीव में चाहे औरत होवे या मर्द तीन शक्ती मौजूद हैं, पहिली देह और इन्द्रियों की शक्ती, दूसरी मन और विद्या बुद्धी की शक्ती, तीसरी सुरत यानी रूह की शक्ती बग़ैर मथन यानी अभ्यास और मशक़ के इनमें से कोई शक्ती नहीं जाग सक्ता है। पहिली और दूसरी शक्ती के जगाने से संसारी फ़ायदे जैसे धन और नामवरी और हकूमत और इन्द्रियों के भोग वग़ैरह हासिल हो सकते हैं, और तीसरी यानी रूह की शक्ती के जगाने से, जीव को परमार्थी लाभ प्राप्त हो सक्ता है, यानी उसके मन और सुरत घट में चढ़ कर ऊँचे लोकों में और फिर वहाँ से कुल्ल मालिक के धाम में पहुंच कर परम और अमर आनंद को प्राप्त हो सकते हैं सब जीवों पर फ़र्ज़ है कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते थोड़ी

बहुत कोशिश वास्ते जगाने रूह की शक्ती के ज़रूर करें, और यह काम सतगुर से मिल कर और उनकी जुगती की कमाई करके बन सक्ता है ॥

(२७) मुक्ती यानी सच्चे उद्धार की ज़रूरत सब जीवों को है, और राधास्वामी मत में सच्ची मुक्ती या उद्धार से यह मतलब है, कि जीव सुरत शब्द का अभ्यास करके माया के घेर से निकल कर निर्मल चेतन्य देश यानी कुल्ल मालिक के धाम में पहुंच कर, अपने सच्चे मालिक, और माता पिता का दर्शन पावे, और जो कि वही धाम परम आनंद का भंडार है और अमर अजर है, और वहाँ किसी तरह का कष्ट और जनम मरन का दुख नहीं है, तो सुरत भी वहाँ पहुंच कर अमर अजर हो जाती है। और परम आनंद को जो सदा एक रस रहता है प्राप्त होती है। इसी को सच्ची मुक्ती और पूरा उद्धार कहते हैं ॥

(२८) जो कोई ऐसी मुक्ती और उद्धार के हासिल करने के वास्ते जो जतन कि संतों ने बताया है, नहीं क-रेगा, वह माया के देश में ऊँच नीच देही धारन करके, हमेशा दुख सुख भोगता रहेगा, और जनम मरन का चक्कर उसका नहीं छूटेगा। खुलासा यह कि बारम्बार अ-पनी बासना और करम अनुसार ऊँच नीच देश और जून में देह धारन करके दुख सुख भोगता रहेगा ॥

(२९) जो कि कुल्ल मालिक प्रेम का भंडार है, और सब जीव भी जो कि उसकी अंस हैं प्रेम स्वरूप हैं, और कुल्ल काररवाई रचना में प्रेम से ही हो रही है, इस वास्ते जो कोई अपनी रूहानी शक्ती को जगाना चाहे, उसको चाहिये कि प्रेम अंग लेकर अभ्यास करे, और उस प्रेम को दिन २ संत सतगुर और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ाता जावे। इस तरक्की के साथ उस के मन और सुरत की चढ़ाई की भी तरक्की होती जावेगी, और एक दिन पूरन प्रेम हासिल करके प्रेम भंडार में पहुंच जावेगा। बग़ैर सच्चे प्रेम यानी शौक़ के राधास्वामी मत में सुरत शब्द अभ्यास की कमाई मुमकिन नहीं है॥

३५—जो कोई कि राधास्वामी मत में शामिल हुआ उसी को बड़भागी समझना चाहिये, क्योंकि उसी का एक दो या तीन जनम में सच्चा उद्धार हो जावेगा, और जितने कि परमार्थी प्रश्न और सन्देह जीवों के दिल में निसबत कुल्ल मालिक और उसकी क़ुदरत और जीव और माया और रचना वग़ैरह के पैदा होते हैं, उन सब का जवाब जिससे शान्ती हो जावे, सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल सक्ता है, और किसी मत में बहुत से भारी सवालों के जवाब नहीं हैं, और इसी सबब से, लोगों को पूरा यक़ीन उस मत का नहीं होता है, और न उसकी

जुगती या अभ्यास की कमाई हो सक्की है, और न सच्ची शान्ती हासिल हो सकती है। अब जीवों को इख़्तियार है कि अपने असली नफ़े या नुक़सान का ख़्याल करके, चाहे संतों के बचन को माने या नहीं। और मालूम होवे कि यह मत कुल्ल मालिक का है, और इसमें सब जीव सर्ब देशों और मतों के, जिनके मन में सच्चा खोज सच्चे मालिक का है शामिल होकर उसकी सहज जुगती का अभ्यास बग़ैर छोड़ने घरबार या रोज़गार के आसानी से करके अपने जीव का कल्यान कर सक्के हैं, यानी सच्ची मुक्ती को प्राप्त हो सकते हैं॥

३६-जो कि यह बचन तूलतवील यानी बहुत लंबा है, इस वास्ते इसका ख़ुलासा नीचे लिखा जाता है॥

(१) देह और दुनियाँ और उसके भोग और जितने पदार्थ और सामान हैं, सब नाशमान और जड़ हैं, और इस वास्ते असत्य हैं॥

(२) इस रचना में सत्त और चेतन्य और आनन्द स्वरूप सुरत मालूम होती है, कि जिसके सबब से देह हर एक जानदार की चेतन्य हो रही है, और यहाँ जड़ पदार्थ यानी भोगों से थोड़ा बहुत रस मिलता है, यानी कुल्ल देहियाँ चाहे चेतन्य हैं या जड़, सुरत के सबब से जो कि उन में प्रगट या गुप्त मौजूद है, सत्त नज़र आती हैं, यानी ठहरी

हुई हैं, और जब उसका बिजोग होता है, तो उसी वक़्त या थोड़े अर्से में उन देहियों का अभाव हो जाता है। इसवास्ते इस लोक में सुरत चैतन्य ही सत्य है, और बाक़ी सब पसारा असत्य है ॥

(३) जो कि सुरतें मुवाफ़िक़ देहियों के अनेक हैं, और देह में आती हैं और उसको छोड़कर चली जाती हैं, तो ज़रूर हुआ कि इसका कोई ख़ास मंडल या भंडार है, और वही महा सत्य और महा चैतन्य और महा आनंद स्वरूप है ॥

(४) देही पाँच तत्व और तीन गुन का (जो कि माया का मसाला है) कारज हैं, और यह सब जड़ हैं, और सुरत की चैतन्यता से चैतन्य होते हैं ॥

(५) इन तत्तों का भी अलहदा २ मंडल मौजूद है, और स्थूल तत्वों का मंडल जुदा २ नज़र आता है ॥

(६) ऊँचे देश की रचना लतीफ़ और सूक्ष्म नज़र आती है, फिर वहाँ तत्त भी सूक्ष्म होंगे और उनके मंडल भी बदस्तूर सूक्ष्म होंगे ॥

(७) यहाँ देखने में आता है कि सुरत की बैठक पाँच तत्त और तीन गुन और इन्द्रियाँ और मन के परे है, इसवास्ते सुरत का मंडल यानी भंडार इन सब बल्कि सुरत के मुक़ाम के परे, ऊँचे से ऊँचे मुक़ाम

मैं होना चाहिये। सबूत इसका यह है कि इस रचना में, एक सूरज मंडल के ऊपर दूसरा सूरज मंडल, और दूसरे पर तीसरा और फिर चौथा और पाँचवाँ सब का अख़ीर है और वहीं से आदि धार प्रगट होकर इन सब मंडलों की रचना करती चली आई है, फिर वही अख़ीर मुक़ाम सुरत चेतन्य का निज भंडार है, और वही कुल्ल मालिक का धाम है और बीच के मंडल एक का एक भंडार और मददगार और मालिक है॥

(८) ज़ाहिर है कि असत्य यानी नाशमान और जड़ पदार्थों में दिल लगाने और बंधन पैदा करने से जब २ उन की हालत बदलती है और अभाव हो जाता है तब दुख पैदा हो जाता है, और जब यह देह (जो सुरत के बैठने और चंदरोज़ रहने का इस लोक में मकान है) जरज़री हो जावेगी, या क़ाबिल रहने के नहीं रहेगी, तब इसके छोड़ने के वक़्त महादुख होगा॥

(९) इस वास्ते अक़लमंद और विचारवान आदमी को चाहिये कि जड़ और नाशमान यानी असत्य रचना में ज़रूरत, और काररवाई के मुवाफ़िक़ दिल लगावे और बंधन पैदा न करे॥

(१०) लेकिन जिस क़दर मुमकिन होवे सत्य में प्रीत करे, और उसकी प्राप्ती का जतन मुनासिब इस ज़िंदगी

में थोड़ा बहुत कर लेवे, ताकि इस असत्य रचना के छोड़ने के वक्त तकलीफ़ न होवे, और महा सत्य से मिल कर अमर आनंद को प्राप्त हो जावे ॥

(११) जो कि कुल्ल रचना धारों की है, और यह सुरत चेतन्य उस महा सत्य यानी कुल्ल मालिक की एक धार या किरन है, (और इसी के सबब से इस लोक में रचना होती है और ठहरी हुई है) तो मुनासिब है कि इसी सत्य और चेतन्य धार को पकड़ के इस के निज भंडार में पहुंचना चाहिये ॥

(१२) यह चेतन्य सुरत की धार घट में गुप्त जारी है, पर नज़र नहीं आती, लेकिन शब्द यानी आवाज़ इसका ज़हूरा और निशान है, इस वास्ते शब्द की धुन को पकड़ के चलने से इस धार का उसके भंडार की तरफ़ उलटाना मुमकिन है ॥

(१३) जो धुन को पकड़ के यानी आवाज़ को सुनता हुआ चलेगा, वह जहाँ से वह आवाज़ आती है वहाँ पहुंच जावेगा, चाहे रास्ते में उसके अँधेरा है या उजेला ॥

(१४) अब आदि शब्द यानी आदि धार का, और भी रास्ते और मंज़िलों का जहाँ से शब्द प्रगट हुआ

है, यानी धार जारी हुई है, भेद मिलना चाहिये, ताकि खोजी दरदी मुक़ाम २ की धुन को पकड़ के रास्ता तै करे और आहिस्ता २ एक दिन धुरधाम में, जहाँ से कि आदि धार प्रगट हुई, पहुंच कर महा सत्य और अमर आनंद को प्राप्त होवे ॥

(१५) यह भेद और हाल रास्ते और मंज़िलों का (जो कि हर एक के घट में मौजूद है) शब्द भेदी और शब्द अभ्यासी से मिलेगा। उससे पूरी हिदायत और मदद लेकर कुल्ल मालिक के चरनों में (जो कि महा सत्य महा चेतन्य और महा आनंद स्वरूप है) अपने मन में प्रेम पैदा करके चलना चाहिये, क्योंकि प्रेम से कुल्ल रचना की काररवाई हुई है और जारी है, और सब काम प्रेम से हो रहे हैं, इस वास्ते बग़ैर प्रेम के यह रास्ता तै होना मुमकिन नहीं है ॥

(१६) यह भेद और हाल मंज़िल और रास्ते का और जुगत पैदा करने और बढ़ाने प्रेम की, उस महा सत्य और महा चेतन्य और महा आनंद स्वरूप के चरनों में जिस को कुल्ल और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल कहते हैं, राधास्वामी मत की बानी और बचन और उनकी संगत से मालूम हो सक्ता है, और किसी मत में जो इस वक़्त जारी हैं, इस भेद और जुगत वग़ैरह २

का साफ़ २ और ऐसे क़ायदे और आसानी के साथ कि जिस की काररवाई हर कोई कर सके, ज़िकर भी नहीं है ॥

(१७) राधास्वामी मत में सच्चे मालिक की कुदरत का भेद है, यानी जिस तरह कि सुरत रूह की धार का धुर मुक़ाम से उतार हुआ है, उसी क़ायदे और रास्ते से उसके उलटाव और चढ़ाव का अभ्यास राधास्वामी मत कहलाता है, इस मत में कोई बात या कोई तरीक़ा मनुष्य का बनाया हुआ या बिद्या बुद्धी से निकाला हुआ नहीं है। और जोकि सिवाय सुरत चेतन्य की धार के उलटाने के और कोई रास्ता या तरीक़ा सुरत के निज घर में पहुंचने का नहीं है, इसवास्ते सुरत चेतन्य की धार यानी शब्द की धुन को पकड़ के यानी सुनते हुये चलना, यही सच्चा और पूरा रास्ता है। इसके सिवाय जितने रास्ते अंतर में चलने के हैं, वह सब ख़तरनाक और कठिन और ओछे यानी माया की हद्द में ख़तम होने वाले हैं, इस वास्ते उनसे सच्चा और पूरा उद्धार मुमकिन नहीं है ॥

३७—और मालूम होवे कि जो मतलब और फ़ायदा परमार्थी कारवाई से मंजूर है, वह भी इस वक़्त में सिर्फ़ उस जुगत यानी सुरत शब्द की कमाई से, जो

राधास्वामी मत में जारी है, हासिल होना मुमकिन है, यानी संसारी ख़्वाहिशों और तरंगों का पूरा होना या दूर हो जाना, और मन और देही के सुक्खों में होशयारी और सम्हाल का रहना, और उन के दुक्खों में रिआयत और बचाव, और मौत के महा दुक्ख के वक़्त सहायता, और बजाय तकलीफ़ के आनन्द की प्राप्ती, राधास्वामी मत के अभ्यासी को हासिल हो सक्ती है, और ज़हूर इस कैफ़ियत का कुछ अर्से के अभ्यास के बाद अभ्यासी आप देख सक्ता है, और वही कैफ़ियत दिन २ बढ़ती जावेगी, और एक दिन कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से पूरी २ हालत (जिस का ज़िकर ऊपर हुआ) पैदा होनी मुमकिन है॥

बचन १५

परमार्थियों को तीन क़ायदों पर ख़्याल रखने से अभ्यास में बिघन कम वाक़े होंगे और परमार्थ की तरक़्क़ी दिन २ होती जावेगी॥

१—जो लोग कि राधास्वामी मत में शामिल हैं, और सच्ची चाह अपने जीव के सच्चे उद्धार, और सच्चे मालिक

के दर्शनों की, उसके निज धाम में पहुंच कर रखते हैं, उनको मुनासिब है कि वास्ते तरक्की अपने अभ्यास के और दुरुस्ती चाल चलन परमार्थी और भी संसारी ब्यौहार के, नीचे के लिखे हुए क़ायदों के मुवाफ़िक़ जिस क़दर बन सके काररवाई करते रहैं, और जो वे इन क़ायदों को अच्छी तरह समझ कर उन पर नज़र रक्खैंगे, तो उम्मेद है कि उनको अपनी कसरैं और भूल चूक मालूम हो जावैंगीं, और फिर उन की सम्हाल का जतन भी वे दुरुस्ती से कर सकैंगे ॥

२–और वह क़ायदे यह हैं—

पहिला–जो कि सुरत ऊँचे मुक़ाम यानी राधास्वामी दयाल के चरनों से उतर कर पिंड में आँखों के मुक़ाम पर ठहरी है, और वहीं बैठ कर इन्द्रियों के द्वारे काररवाई देह और दुनियाँ की कर रही है, सो इसको राधास्वामी मत की जुगत के मुवाफ़िक़ अपने निज घर की तरफ़ उलटाना ॥

दूसरा—गुरु स्वरूप या मुक़ामी स्वरूप का ध्यान करके मन और सुरत को ऊँचे देश में चलाना और ठहराना॥

तीसरा—परमार्थ और स्वार्थ में जीवों के साथ इस तरह बरताव करना जैसा कि यह शख़्स अपने साथ औरों से बर्ताव चाहता है ॥

३-इन क़ायदों के मुवाफ़िक़ बर्ताव में जो विघन या दिक़्क़त वाक़े होती हैं, उनका थोड़ासा ज़िकर और हटाने का जतन आगे लिखा जाता है। उस का ख़्याल हर एक सच्चे परमार्थी को जिस क़दर बन सके रखना, और उस जतन को काम में लाना मुनासिब है, क्योंकि जो इस क़दर अहतियात और होशियारी नहीं की जावेगी, तो उन क़ायदों के मुवाफ़िक़ बर्ताव कम बनेगा, और इस सबब से परमार्थी तरक़्क़ी में भी किसी क़दर कसर पड़ेगी ॥

४—पहिले क़ायदे के मुवाफ़िक़ बर्ताव करने में यानी सुरत और मन की चढ़ाई में संसारी चाहें और तरंगें और इंद्रियाँ विघन डालती हैं, यानी यह सुरत की धार को सिमटने और ऊपर की तरफ़ को चढ़ने से रोकती हैं, क्योंकि जब धार का रुख़ इन्द्रियों के द्वारे बाहर पदार्थों में या देह में नीचे की तरफ़ हुआ, तब उस का मुख ऊपर की तरफ़ मोड़ना और चढ़ाना मुश्किल होगा, इस वास्ते अभ्यासी को मुनासिब है कि आम तौर पर ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बाहरमुख कामों और पदार्थों में बर्ताव करे, और ख़ास तौर पर वक़्त अभ्यास के मन और इन्द्रियों को रोक कर और सुरत की धार को समेट कर, अपने अंतर में ऊँचे की तरफ़

आहिस्ता २ चलाने की आदत करे। जो इस तौर पर काररवाई की जावेगी, तो थोड़ा बहुत रस और आनन्द सिमटाव और चढ़ाई का मिलेगा, और फिर इसी तरह काररवाई जारी रखने और उसको आहिस्ता २ बढ़ाने से ज़्यादा रस मिलेगा, और देह और दुनियाँ की तरफ़ से किसी क़दर हटाव होता जावेगा ॥

और जो इस काररवाई मैं मन इन्द्रियाँ संसारी तरंगैं उठा कर ख़लल डालैंगी तो इकसाँ रस नहीं मिलेगा यानी अभ्यास मैं कभी आनन्द और कभी रूखा फीकापन रहेगा, और उसी क़दर सुरत की चाल भी निज घर की तरफ़ सुस्त रहेगी ॥

५—जो कोई अपने मन और इन्द्रियौं की हर वक्त निगहबानी और चौकीदारी करता रहेगा, और फ़ज़ूल तरंगौं और ख़्वाहिशौं को उठने से रोकता रहेगा, तो वह अभ्यास के समय भी उनकी थोड़ी बहुत सम्हाल कर सकेगा, नहीं तो अभ्यास के वक्त अनेक तरह के ख़्याल और गुनावन पैदा होंगे, और अभ्यासी को उनकी ख़बर भी नहीं होगी, यानी मन उस का बजाय भजन और ध्यान के अनेक ख़्यालौं मैं बहता रहेगा, इसवास्ते मुनासिब और लाज़िम है, कि जिस क़दर बन सके अभ्यास के वक्त मन और इन्द्रियौं

की रोक और सम्हाल ज़रूर की जावे, ताकि थोड़ा बहुत रस भजन और ध्यान का मिलता रहे, और फिर उस में आहिस्ता २ तरक़्क़ी भी होती जावे ॥

६—दूसरे क़ायदे के बर्ताव में इस क़दर अहतियात चाहिये, कि वक़्त ध्यान और भजन के पहिले स्वरूप का ख़्याल करके उसको अपने सनमुख रक्खे, तो मन और इन्द्री जो कि स्वरूप में लगने को आदत रखते हैं, किसी क़दर निश्चल होकर स्थान पर ठहरेंगे या शब्द में लग जावेंगे, और उस वक़्त दूसरी सूरतों का ख़्याल कम आवेगा और शब्द भी साफ़ सुनाई देगा, और जो स्वरूप को संग नहीं लिया जावेगा, तो अपने स्वभाव के मुवाफ़िक़ मन और इन्द्री अनेक ख़्याल यानी गुनावन में अक्सर चंचल रहेंगे ॥

७—जब कि ध्यान के वक़्त थोड़ा बहुत स्वरूप नज़र आजावेगा, या भजन के वक़्त शब्द साफ़ सुनाई देगा तो मन और सुरत उस में बे तकल्लुफ़ लग जावेंगे, और दूसरा ख़्याल नहीं उठावेंगे, लेकिन जिस वक़्त कि गुनावन का ज़ोर होगा, उस वक़्त स्वरूप को थोड़ा ज़ोर देकर ख़्याल से सनमुख रखने में गुनावन हट जावेगी, और जो गुनावन कम न होवे तो किसी शब्द के प्रेम की भरी हुई कड़ियों के स्वरूप के

सन्मुख गाने या बतौर आरती के पाठ करने से बहुत फ़ायदा होगा ॥

८—गुरु स्वरूप के ध्यान की और उस को सनमुख रखने की महिमाँ इस सबब से ज़्यादा है, कि उसका ख़्याल करते ही मन और इन्द्री परमार्थी यानी प्रेम के घाट पर आजावेंगे, और तब भजन और ध्यान का रस ज़्यादा मिलेगा, और गुनावन बहुत कम पैदा होगी, लेकिन यह बात जब दुरुस्त बनेगी जबकि अभ्यासी को गुरु स्वरूप में गहरा परमार्थी भाव और प्यार होगा। इसी सबब से राधास्वामी दयाल ने अपनी बानी और बचन में गुरभक्ती पर ज़्यादा ज़ोर दिया है, यानी प्रथम गुर चरनन में प्रेम पैदा करने के वास्ते ज़ोर देकर हिदायत की है ॥

९—मालूम होवे कि बग़ैर तीव्र बैराग के संसार और भोगों की तरफ़ से, और बग़ैर गहरे प्रेम और अनुराग के, राधास्वामी दयाल के चरनों में मन और सुरत शब्द में, जैसा कि चाहिये नहीं लग सकते, और वक़्त भजन के गुनावन और तरंगें बहुत उठती रहेंगी, लेकिन जो अभ्यासी को गुर स्वरूप में भाव और प्यार है, तो उसको अगुवा यानी ख़्याल से सन्मुख रखने से मन किसी क़दर निश्चल हो सक्ता है, क्योंकि

साकार स्वरूप में प्यार करने की उस को आदत है, और गुरु स्वरूप के सन्मुख होने पर उसके मन और इन्द्री, दर्शन और बचन में लग कर फ़ौरन परमार्थी घाट पर आजाते हैं, और संसारी ख़ियाल हट जाते हैं, और दूसरा फ़ायदा यह है कि गुरु स्वरूप को संग लेने में अभ्यासी को मिस्ल मुक़ामी स्वरूप के अस्थान २ पर उसको बदलने की ज़रूरत न होगी, यानी वही गुरु स्वरूप उस को सत्तलोक तक (जहाँ तक कि साकार रचना है) दरजे बदरजे सूक्ष्म होता हुआ पहुंचा देगा, और अभ्यासी का भी स्वरूप इसी तरह बदलता जावेगा॥

१०—जो कोई मुक़ामी स्वरूप के आसरे चलेगा तो भी यही फ़ायदा हासिल हो सक्ता है, बशर्ते कि यह अस्थान २ पर थोड़ा बहुत प्रगट होता जावे, और जो प्रगट होने में कुछ देरी हुई या कसर रही, तो उस रूप में ख्याल से ध्यान करने में वैसा प्यार नहीं आवेगा, जैसा कि गुरु स्वरूप में आसक्ता है, और इस सबब से गुनावन यानी मन की चंचलता जल्दी कम या दूर न होवेगी, और रस भी कम आवेगा।

अब अभ्यासी को चाहिये कि अपने शौक़ और हालत को परख कर, जिस तरह उसको फ़ायदा ज़ियादा मालूम पड़े, उसी तरह अपने ध्यान की सम्हाल करे, क्योंकि बग़ैर ध्यान के मन और सुरत का सिमटाव जैसा कि चाहिये जल्दी न होवेगा। अलबत्ता जिस किसी को शब्द खुल जावे, उसको इस क़दर ज़रूरत ध्यान पर ज़ोर देने की नहीं होगी, लेकिन ऐसा हाल कुल्ल अभ्यासियों का नहीं हो सक्ता। किसी बिरले उत्तम अधिकारी की ऐसी हालत होवेगी, इस वास्ते कुल्ल अभ्यासियों को अव्वल ध्यान पर ज़्यादा ज़ोर देना मुनासिब और ज़रूर है॥

११—मालूम होवे कि गुरुस्वरूप का दर्शन ऊँचे के मुक़ाम पर खिंच कर होता है, और मुवाफ़िक़ और दुनियाँ की सूरतों के जब ख़्याल करो उस वक़्त यह स्वरूप प्रघट नहीं हो सक्ता, यह स्वरूप अंतरजामी पुर्ष आप दया करके, अपने भक्त की प्रीत और प्रतीत बढ़ाने के वास्ते धारन करता है, और ऊँचे देश में प्रगट होकर दर्शन देता है। इसी सबब से अक्सर इस स्वरूप का दर्शन स्वप्न अवस्था में जबकि मन और सुरत का ज़्यादा खिंचाव हो जाता है होता है, और अभ्यास के वक़्त कभी २ ऐसी दया होती है, इस वास्ते

अभ्यासी को जब कभी गुरु स्वरूप का दर्शन अभ्यास के वक्त या स्वप्न अवस्था में होवे, तो उसको ख़ास दया मालिक की समझना चाहिये, और उसी स्वरूप को चित्त में धारन करके अभ्यास के वक्त उस का ध्यान करना चाहिये ॥

१२-तीसरे क़ायदे के मुवाफ़िक़ बर्ताव करने से अभ्यासी प्रेमी को, उसकी परमार्थी काररवाई और संसारी व्योहार में बहुत फ़ायदा हासिल होवेगा, यानी उसके हाथ से किसी को किसी क़िस्म की तकलीफ़ या दुख नहीं पहुंचेगा, और जो कि परमार्थियों को हिदायत है कि जहाँ तक बन सके या मुनासिब होवे परमार्थी जीवों के साथ दीनता और प्यार और दया भाव के साथ बर्ताव करें और आम जीवों के साथ दया भाव रक्खें, तो इस तरह बर्ताव करने से सब की प्रसन्नता हासिल होगी, और मालिक भी प्रसन्न होकर भक्ती और प्रेम की बख़्शायश करेगा, और दिन २ हालत बदलती जावेगी, और झगड़े रगड़े और ईर्षा और विरोध वग़ैरह परमार्थी की काररवाई में विघन नहीं डालेंगे, और हिरदा उस का दिन २ शुद्ध और कोमल होता जावेगा, और मालिक के चरनों के प्रेम से भरता जावेगा ॥

१३—जो परमार्थी का थोड़ा धन का नुक़सान भी हो जावे, और झगड़ा रगड़ा विरोध हट जावे तो ऐसे नुक़सान को बरदाश्त करना मुनासिब है, और सख्त सुस्त और तान के बचन को सहना और छिमा कर के एवज़ न लेने में परमार्थी का ज्यादा फ़ायदा है, बनिस्बत इस के कि ओछे और क्रोधी आदमियों से मुक़ाबिला करना और तकरार बढ़ाना। ख़ुलासा यह कि परमार्थी को इस बात की अहतियात ज़रूर चाहिये कि जिस में उस का मन संसारी मुआमिलों के सबब से चिन्ता में न पड़े, और गदला और मैला न होवे, और भजन में इस क़िस्म के ख़्याल बिघन न डालें, नहीं तो उसके रस और आनंद में भी फ़र्क़ पड़ेगा, और यह हर्जा बनिस्बत और छोटे नुक़सान या ज़रा सी मन की तकलीफ़ के बहुत भारी है, और उसका बचाव हर हालत में जहाँ तक मुमकिन होवे, और मुनासिब मालूम पड़े ज़रूर करना चाहिये॥

बचन १६

सतसंगियों को मौज और रज़ा पर क़ायम होना चाहिये, और दुख सुख की हालत में भरोसा दया का

रख कर, परमार्थ में ढीले और रूखे फीके होना नहीं चाहिये ॥

१—कुल्ल मतों में जो संसार में जारी हैं, और राधास्वामी मत में खास कर, हुकम है कि जहाँ तक मुमकिन होवे सच्चे परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने प्रीतम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मौज के साथ हर काम में मुआफ़िक़त करे, यानी जो वे अपनी मौज से करें चाहे उस में सुख होवे या दुख उस को मंजर और क़बूल करे, और सुख के वक्त मन में फूले नहीं और अपने मालिक को भूल न जाय, और दुख के वक्त दुख का रूप न बन जावे और अपने मालिक से नासाज़ या रूखा फीका न हो जावे। दोनों हालत में ऐसी समझ क़ायम रक्खे कि जो कुछ होता है वह मालिक की मौज से होता है, और उस में मसलहत और फ़ायदा है; क्योंकि जब मालिक को अपना सच्चा पिता और हितकारी और सर्व समरथ माना तब बगैर उनकी मौज के कुछ नहीं हो सक्ता, और जो मौज कि वे करेंगे वह अपने बालक के वास्ते ज़रूर फ़ायदामंद होगी, चाहे उसका नतीजा जल्द मालूम पड़े या देर से, और उस में

पहिले परमार्थी फ़ायदे पर नज़र होगी, और दूसरे दुनियाँ के फ़ायदे पर ॥

२—जिस किसी से कि मौज के साथ मुवाफ़क़त बिल्कुल नहीं की जा सक्ती है, तो जानना चाहिये कि वह शख़्स निपट दुनियाँदार और करमी है, और उस का मन अपने तन और इन्द्रियों में और भी कुटम्ब परिवार और दुनियाँ के सामान और भोग बिलास में बंधा और फंसा हुआ है, और जब किसी तरह का हर्ज या तकलीफ़ या नुक़सान इन में होता नज़र आता है, तब फ़ौरन बेकली और घबराहट के साथ (उसकी बरदाश्त न कर के) पुकारने लगता है, और निहायत रंज मान कर और दुखी होकर उस का चित्त बिगड़ जाता है, और जिस किसी के तअ़ल्लुक़ का वह काम होवे उसकी शिकायत करता है; और भी मालिक से आज़ुदा ख़ातिर होकर उस की काररवाई पर तान और तंज़ के बचन कहता है, और कितने ही अर्से तक दुखी रह कर आख़िर को लाचारी के साथ सबर करता है ॥

३—लेकिन जो कि थोड़े बहुत परमार्थी हैं, और सच्चे मन से मालिक की भक्ती में शामिल हुए हैं, और उसकी दया और मेहर हरदम माँगते रहते हैं,

और जो अंतर अभ्यास कि उनको संत अथवा राधा-स्वामी मत के मुवाफ़िक़ बताया गया है उस को भी नेम से करते हैं, और कुछ २ आनंद और रस भी अंतर में पाते हैं, पर अभी उनके मन में दुनियाँ और उस के भोगों और पदार्थों की क़दर, और चाह बनी हुई है, तो वे भी मौज के साथ जैसा चाहिये मुवाफ़िक़त नहीं कर सकेंगे, और हरचंद वक़्त तकलीफ़ और रंज और नुक़सान के चित्त उन का दुखी होवेगा, और मालिक की तरफ़ से भी किसी क़दर रूखा फीका हो जावेगा, पर सतसंग के बचन याद करके और संतों की बानी पढ़ कर थोड़ी बहुत होशियारी आजावेगी, और ऐसी समझ धारन करके कि मालिक सर्ब समरथ है, और बग़ैर उसके हुकुम के कुछ नहीं हो सका, संतोष के घाट पर आजावेंगे, और ज़्यादा पुकार और फ़रियाद और शिकवा और शिकायत और किसी को बुरा भला कहना और मालिक से बेज़ार हो जाना दुनियाँदारों की तरह से नहीं करेंगे ॥

४—दूसरे दरजे के परमार्थी जीव सख़्ती और सुस्ती के वक़्त यानी तकलीफ़ और नुक़सान की हालत में थोड़े दुखी हो कर, जल्द सत संग के परमार्थी बचन याद लाकर, और अपने अभ्यास में थोड़ा बहुत मश-

गूल होकर शुकराने के घाट पर आजावैंगे, यानी ऐसी समझ धारन करके कि जो रंज और तकलीफ़ या हर्ज और नुक़सान वाक़े हुआ, वह न मालूम किस क़दर भारी था, सो मालिक की दया से बहुत कम यानी मन भर का सेर भर रह कर उन पर गुज़रा, और वह फल उनके पिछले करमों का था, सो उस दया का शुकराना अपने मालिक के चरनों में बजा लाकर, बदस्तूर अपनी भक्ती यानी प्रीत और प्रतीत चरनों में क़ायम रक्खैंगे, और ज़्यादा तर तवज्जह भजन में करके और मालिक की दया और रक्षा की परख अपने अंतर में करके सुखी हो जावैंगे, और सुख के वक़्त भी होशियार रह कर मालिक का शुकराना करके, अभ्यास में ज़्यादा तवज्जह करैंगे ॥

इन जीवों के चित्त का बंधन संसार और उसके भोगों और पदार्थों में, बनिस्बत ऊपर की क़िस्म के जीवों के किसी क़दर हलका और ढीला होगा, और उनकी क़दर भी बनिसबत परमार्थ के किसी क़दर कम होगी, यानी परमार्थ का भाव उनके दिल में ज़्यादा होगा ॥

५—अव्वल दरजे के परमार्थी जीवों की प्रेम की हालत बहुत ज़बर होगी, और उनके चित्त में संसार

और उसके पदार्थों का बंधन भी बहुत कम होगा, और उसके तरक्की की चाह भी बहुत कम होगी, सिर्फ़ इस क़द्र कि जिस में औसत दरजे पर संसार में गुज़ारा हो जावे, और परमार्थ का काम भी जारी रहे, और सरन और भरोसा सच्चे मालिक की दया का बहुत मज़बूत होगा और उस की मौज को अपने मन की चाह पर जहाँ तक मुमकिन होगा हमेशा मुक़द्दम रक्खेंगे, यानी उनके चित्त में मालिक की मौज के साथ मुवाफ़िक़त करने की मुख्यता रहेगी, और उसके मुक़ाबिले में अपने मन की चाह को ज़बर नहीं क़रार देंगे, और हर हालत में चाहे दुख होवे या सुख मालिक की दया के आसरे और भरोसे रह कर उसकी बरदाश्त करेंगे, और किसी वक़्त मालिक की तरफ़ से बेमुख नहीं होंगे, यानी जो मौज होगी उस को अपने हक़ में मुफ़ीद समझ कर शुकर करते रहेंगे, और ऐसी समझ अपने मन में रक्खेंगे, कि जो कुछ कि तकलीफ़ या दुख होता है, वह अपने करमों का फल है; मगर उसके साथ मालिक की सहायता बराबर जारी है, और उस दुख या तकलीफ़ का नतीजा भी उनके हक़ में बेहतर होगा, यानी उस में करमों की सफ़ाई और मन और इन्द्रियों की गढ़त और

भजन की तरक़्क़ी होवेगी। यह हालत सच्ची और पूरी सरन वालों की है। जब किसी वक़्त किसी हालत की बरदाश्त कम होवेगी, तो वे उस वक़्त मालिक के चरणों में प्रार्थना वास्ते हासिल होने ताक़त बरदाश्त के करेंगे, और ऐसी सूरत में उनकी दुआ भी जल्द मंज़ूर होगी, यानी अंतर में किसी क़द्र सहायता और शान्ती मालूम होवेगी॥

६—इससे ज़्यादा दरजे के जो परमार्थी हैं वह साध होंगे जिनकी पहुंच दसवें द्वार तक है और जो कि वे पिंड और ब्रहमान्ड के ऊपर पहुंचे हैं, उनको कोई दुख सुख देह और दुनिया का नहीं छू सक्ता है, वे हर हाल में रज़ा के दरजे पर बर्तेंगे, यानी सर्व अंग करके मालिक की मौज के साथ मुवाफ़क़त करेंगे, उन के करम का हिसाब कुछ नहीं रहा, और पिंडी और ब्रहमान्डी मन और माया भी नीचे रह गये, उन की रहनी और कुल बर्ताव मौज के अनुसार समझना चाहिये, सिवाय जीवों के हित और उपकार के और कारखाई दुनियाँ की उनसे कम या बिल्कुल नहीं बन पड़ेगी॥

७—अब मालूम होवे कि जो कुछ सख़्ती या तकलीफ़ सच्चे परमार्थियों पर गुज़रती है, वह बग़ैर हुकम

और मौज सच्चे मालिक के नहीं आती। और सच्चे परमार्थी से मतलब यह है, कि जिसके हृदय में सच्ची चाह सच्चे मालिक के धाम में पहुंचने की है, और जिसने सच्ची सरन राधास्वामी दयाल की धारन की है। सो ऐसी सख़्ती और तकलीफ़ के भेजने में, इन में से कोई न कोई मतलब ज़रूर होगा, (१) पिछले बाक़ी माँदा यानी शेष करमों का काटना, (२) तन मन और इन्द्रियों की गढ़त करना, कि जिससे सुरत की चढ़ाई आसान और तेज़ होवे, (३) झीना मान और अहंकार दूर करना, (४) मन की कसरें और भूल चूक का दूर करना, (५) भोगों से हटाना और उन में स्वाभाविक झुकाव और प्यार का दूर करना, (६) संसार और उस के पदार्थों की तरफ़ से चित्त में उदासीनता का लाना, (७) हर तरह से और हर हालत में आसरा और भरोसा मालिक की दया का मज़बूत करना, और उसी तरफ़ से सहायता की आस रखनी और माँगनी (८) बढ़ाना प्रीत और प्रतीत का मालिक के चरनों में, और तरक्क़ी देना शौक़ का वास्ते प्राप्ती दर्शन और पहुंचने निज धाम के, (९) तोड़ना कुल संसारी आसरे और भरोसे और बल का अंतर में, (१०) ढीला करना प्रीत और बंधन का कुटम्ब परवार और संसारी लोगों में॥

८—अब ख़्याल करो कि ऐसी सख़्ती या तकलीफ़ या कुछ दुनियाँ के नुक़सान को, कि जिस में ऊपर के लिखे हुए फ़ायदे हासिल होवैं, ऐन दया मालिक की समझना चाहिये, नकि उस की तरफ़ बेरहमी (निरदईपन) और सख़्त गीरी (कठोरता) का इल्ज़ाम लगा कर उसके चरनौं से बेमुख होना, और अपनी सरन और प्रीत प्रतीत मैं ख़लल और बिघन डाल कर रूखे फीके हो जाना ॥

९—सच्चे परमार्थी को मुनासिब नहीं है कि मालिक को सर्ब समर्थ जान कर ऐसी आसा बाँधे, कि जितने काम और चाहैं दुनियाँ की उस के दिल मैं होवैं, वह सब मुवाफ़िक़ उसकी ख़्वाहिश के पूरे हो जावैं, और नहीं तो मालिक की दयालता और समरत्थता मैं कसर है। ऐसी समझ निहायत मूर्खता और नादानी भक्ती के क़ायदे की ज़ाहर करती है ॥

१०—सच्चे परमार्थी को जानना चाहिये कि जब वह सच्चे मालिक की सरन मैं आया, और असली मतलब उस का यह है कि जैसे बने तैसे अपने मालिक के धाम मैं पहुंच कर, और उस का दर्शन हासिल कर के, परम आनंद को प्राप्त होवे, तो वह मालिक उस की दरख़्वास्त को वास्ते प्राप्ती ऐसे सामान और

तरक्क़ी दुनियाँ और उसके भोग बिलास के, कि जो उस के चलने और रास्ता तै करने में बिघन डाले और रोक लगावे, कैसे मंज़ूर कर सक्ता है, क्योंकि ऐसा सामान उस को देना उस के साथ दुशमनी करना है, यानी उस के परमार्थी काम में ख़लल डालना है। मालिक का दर्शन बग़ैर हटने के दुनियाँ और उस के भोगों से किसी तरह नहीं मिल सक्ता, तो जबकि मालिक सच्चे परमार्थी पर दया करेगा, तो उस के मन को आहिस्ता २ दुनियाँ और उस के सामान से हटावेगा न कि और ज़्यादा सामान देकर उस में फंसावे, और उस की ख़लासी ज़्यादा तर मुशकिल कर देवे॥

११—इस वास्ते सच्चे परमार्थियों को चाहिये कि, सिवाय ज़रूरी सामान के, जो लायक़ औसत दरजे के गुज़ारे के होवे और कुछ मालिक से न माँगें, और उस्से उसी को चाहें, यानी दर्शन और निज धाम के प्राप्ती की चाह हर हालत में ज़बर और मुक़द्दम रक्खें, और जब कोई हालत इस क़िसम की आवे कि जो उन के मन के बरख़िलाफ़ होवे उस को मालिक की दया का आसरा और भरोसा रख कर जहाँ तक बने बरदाश्त करें, और जो उस में ज़्यादा घबराहट या बेकली पैदा होवे, तो अपने अंतर में चरनों की तरफ़

तवज्जह कर के, सहायता और ताक़त बरदाश्त की माँगैं, और शिकवा और शिकायत न करैं॥

यह क़ायदा सच्ची भक्ती का है, यानी भक्त को जहाँ तक बन सके, अपने भगवंत की मरज़ी और मौज पर क़ायम रहना चाहिये, और जो वह इस के वास्ते पसंद करे, वही इस को भी पसंद करना चाहिये, और अपनी ख़्वाहिश बरख़िलाफ़ उस की मौज के पेश नहीं करना चाहिये, लेकिन जो मन न माने तो अपने हाल और ख़्वाहिश को वक़्त अभ्यास के चरनौं मैं अर्ज़ कर देना मुनासिब है, आइन्दा भगवंत यानी मालिक की मौज है, कि जो मुनासिब होवे तो मंज़ूर करे, और जो ना मुनासिब समझ कर मंज़ूर न करे, तो भक्त को चाहिये कि मौज के साथ जैसे बने तैसे मुवाफ़क़त करे॥

१२–अब मालूम होवे कि परमेश्वर यानी त्रिलोकी-नाथ ने भी कहा है, कि जो कोई मेरी भक्ती करे उस को म तीन चीज़ैं देकर, दुनियाँ और उस के भोग और उस की मुहब्बत से बचाता हूं। और वह तीन चीज़ यह हैं, (१) थोड़ी बीमारी, (२) निंद्या और निरादर संसारियौं की तरफ़ से, (३) निरधनता यानी सिर्फ़ गुज़ारह के मुवाफ़िक़ धन और सामान देना;

और उन भक्तों ने इन चीज़ों को परमेश्वर की दात और दया समझ कर ख़ुशी से मंज़ूर और क़बूल किया ॥

१३–पिछले वक़्तों में जो गुरू हुये वे अक्सर गृहस्तियों को उपदेश नहीं देते थे, और पहिली शर्त उन की यही होती थी, कि घर और कार बार छोड़ कर उन के पास आवे, और नज़दीक रह कर सेवा करे, और औरतों को बिलकुल उपदेश नहीं देते थे, और अभ्यास भी उनका ऐसा कठिन और ख़तरनाक था, कि हर एक जीव से उस का बन पड़ना मुशकिल बल्कि ना मुमकिन था ॥

१४—बरख़िलाफ़ इस के अब इस ज़माने में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने ऐसी दया फ़रमाई है कि गृहस्तियों को चाहे औरत होवे या मर्द बिला छुड़ाने घर बार और रोज़गार के, सहज जुगत वास्ते उन के सच्चे उद्धार के समझाते हैं, और गृहस्त में ही उन से अभ्यास करा के उन के जीव का कल्यान करते हैं, और सब तरह से अपने सेवकों की परमार्थ और स्वार्थ में रक्षा करते हैं ॥

१५—अब बावजूद ऐसी मेहर और दया के जिस्से परमार्थ की सच्ची काररवाई बहुत आसान हो गई है, जो जीव संसार के सामान को ज़्यादा तलबी करें,

और उस के न मिलने या थोड़ी सी सख़्ती और तक-लीफ़ या नुक़सान में घबराकर, मालिक की तरफ़ से रूखे फीके हो जावें, या परमार्थ के छोड़ने को तइयार होवें, तो किस क़दर अफ़सोस का मुक़ाम है, और कैसी उनकी नादानी और ग़फ़लत और अभागता है, और परमार्थ की क़दर और चाह की किस क़दर कमी उन के दिल में मालूम होती है ॥

१६—अब राधास्वामी दयाल की ख़ास और बिशेष दया का हाल बयान किया जाता है, कि इस ज़माने में जीवों को निहायत निबल और दुखी देख कर, बजाय सेवक स्वामी के पिता पुत्र का भाव परमार्थ में जारी फ़रमाया, और जीवों को हुक्म दिया कि जैसे बने तैसे थोड़ी बहुत लगन और प्रीत चरनों में लाओ और सतसंग करके और बानी और बचन पढ़ कर, जैसे बने तैसे प्रतीत कुल्ल मालिक राधा-स्वामी दयाल और उन के सुरत शब्द मारग की हृदय में बसाकर, जिस क़दर बन सके नेम के साथ दो बार जितनी देर मुमकिन होवे अभ्यास करो, और अपनी उमंग के मुवाफ़िक़ जिस क़दर आसानी से बन सके तन मन धन की कुछ सेवा करो, और जैसी तैसी सरन लेकर राधास्वामी दयाल की दया का भरोसा

वास्ते अपने जीव के उद्धार के मन में रक्खो, और जहाँ तक बन सके जीवों को मन बचन और करम कर के सुख पहुंचाओ, और नहीं तो अपने मतलब के वास्ते किसी को दुख मत दो। जो इस हुक्म के मुवाफ़िक़ काररवाई करेगा, तो राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से उस के जीव का कारज आप बनावेंगे, और तीन या चार जनम में उसको दयाल देश में पहुंचा देंगे, और उन की भूल चूक और कसरों को दया करके पिता की तरह माफ़ करेंगे, और उन के पिछले अगले करमों को सहज २ काट कर, काल और करम के घेर से निकाल लेवेंगे, और करमों के काटते वक़्त भी दया और सहायता बराबर जारी रहती है॥

१७—इस ज़माने के जीवों से सिवाय उत्तम अधिकारी यानी अव्वल दरजे के भक्तों के, भक्ती के क़ायदे के मुवाफ़िक़ बर्ताव करना और रहनी दुरुस्ती के साथ रहना मुशकिल है, इस वास्ते राधास्वामी दयाल जहाँ तक मुमकिन होता है, बहुत सख़्त तकलीफ़ या मुसीबत अपने सच्चे और प्रेमी भक्तों पर नहीं आने देते हैं, और जो उनके करम या करनी ज़्यादा नाक़िस है, और उस के फल का भोग भी ज़्यादा सख़्त है,

तो भी थोड़ी बहुत खास दया और सहायता फ़रमाते हैं, यानी या तो किसी न किसी तरह उस करम भोग की सख़्ती कम कर देते हैं, या ताक़त और सामान उस के बरदाश्त का बख़्शते हैं। और जब २ जो कोई दर्द की हालत में सच्ची पुकार करे उस की थोड़ी बहुत सुनवाई भी होती है, ख़ुलासा यह कि इस समय में हर तरह से दया और प्यार करना जीवों पर मंज़ूर है, बशर्ते कि वे चरनों में थोड़ी बहुत प्रीत और प्रतीत लावें, और दिन २ अपने परमार्थ के बढ़ाने की थोड़ी बहुत चाह रखते होवें, और दुनियाँ के लोगों की निंद्या स्तुती पर ख़्याल न करके अपना रिश्ता राधास्वामी दयाल और उनकी संगत से जोड़े रहें, और चाहे कभी रूखे फीके या ढीले हो जावें, लेकिन अपना नाता न तोड़ें, यानी परमार्थी काररवाई मिसल अभ्यास वग़ैरह के छोड़ न देवें और सतसंग से मेल बदस्तूर जारी रक्खें। ऐसे जीवों का जो पूरा २ बर्ताव मुवाफ़िक़ भक्ती के क़ायदों के नहीं होगा यानी उस में कुछ २ क़सूर रहेगी, तो भी राधास्वामी दयाल उन की सहायता करेंगे, और अपनी दया का बल देकर जिस क़दर काररवाई ज़रूरी और मुनासिब होगी उनसे करावेंगे, और भूल चूक और क़सूरों पर नज़र नहीं करेंगे॥

१८-अब कुल्ल जीवों को चाहिये कि ऐसी दया और मेहर का शुकराना अपने मन में लाकर जैसे बने तैसे राधास्वामी दयाल की सरन में आवें, और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर और राधास्वामी मत के असूल और क़ायदों को अच्छी तरह समझ कर, जिस क़दर बन सके अभ्यास नेम से हर रोज़ करें, तो चंद रोज़ में दया और मेहर की परख उन को आती जावेगी, और अपने सच्चे उद्धार का सबूत अपने अंतर में उन को इसी ज़िन्दगी में थोड़ा बहुत मिलता जावेगा, कि जिससे उनकी प्रीत और प्रतीत चरनों में दिन २ बढ़ती जावेगी, और रफ़्ता २ एक दिन उनके जीव का पूरा कारज बन जावेगा ॥

बचन १७

बर्णन सच्चे प्रेमी परमार्थियों की हालत और रहनी और पकड़ और ब्योहार का और यह कि ऐसी हालत और रहनी कैसे आवे ॥

भाग पहिला १

बर्णन हालत और रहनी वग़ैरह सच्चे प्रेमियों का ॥

१—जो सच्चे प्रेमी राधास्वामी मत में शामिल हैं, उन की हालत ऐसी होनी चाहिये, कि हमेशा चित्त में अपने प्रीतम राधास्वामी दयाल के चरनों का और भी सतगुरु के स्वरूप का ख़याल बना रहे, और मन में उमंग वास्ते दर्शनों के अक्सर उठती रहे, और दर्शनों के न मिलने से किसी क़दर बेकली रहे ॥

२—जब मौज से दर्शन प्राप्त होवें, तो सर्व अंग कर के मन और चित्त मगन हो जावें, और किसी दूसरे काम और बात की उस वक़्त सुध न रहे, और यही चित्त चाहता रहे कि बराबर दर्शन करते रहें और बचन सुन कर खिलते रहें, और उस वक़्त देही के कारज का भी ख़याल बहुत कम बल्कि बिल्कुल न रहे, और प्यार और भाव चरनों में बढ़ता रहे ॥

३—ऐसे प्रेमी दूसरे सच्चे प्रेमियों को देख कर और उनसे मिलकर बहुत ख़ुश होंगे, और आपस में उन के प्यार भाव ऐसा ही होगा, कि जैसे निज कुटम्बियों में होता है ॥

४—और कुल्ल परमार्थी जो सतसंग और अभ्यास में शामिल होवें उन प्रेमियों को प्यारे लगेंगे, और उन सब के साथ उनका बर्ताव ऐसा होगा, जैसे कि कोई अपने बिरादरी के लोगों के साथ बर्तता है ॥

५—और जो लोग कि थोड़ी बहुत परमार्थ की चाह लेकर या खोज की नज़र से सतसंग में आवें, उनको भी देख कर सच्चे प्रेमी ख़ुश होंगे, और जिस क़दर मुमकिन होगा उनको उन की परमार्थी काररवाई में मदद देने को तइयार रहेंगे ॥

६—लेकिन जो कोई चतुरई या कपट की बातें सतसंग में आकर बनावेंगे, या परख और जाँच सतगुरु और उनके मारग की करेंगे, या अपनी समझ या अपना जुदा मत समझाने और पेश करने की नज़र से चरचा करेंगे, या संत मत को ओछा साबित करने के इरादे से बाद बिबाद करेंगे, वे लोग सच्चे प्रेमियों को प्यारे नहीं लगेंगे, क्योंकि वे सच्चे गाँहक परमार्थ के नहीं हैं, बल्कि वे सच्चे और पूरे परमार्थ के निंदक और बिरोधी हैं, और बजाय सतसंग में प्रेम की चरचा करने और सुनने के, अपनी ओछी समझ और चतुरई की बातें पक्षपात की नज़र से पेश करके, सतसंग में बिघन डालेंगे। सच्चे प्रेमी ऐसे लोगों को अभागी समझ कर उनसे मेल नहीं करेंगे, और न उनका सतसंग में बार २ आना पसंद करेंगे ॥

७—सच्चे प्रेमी आम तौर पर कुल्ल जीवों से दीनता और दया भाव के साथ बर्ताव करेंगे, लेकिन उन लोगों

से जो कि निपट संसारी हैं, या सच्चे परमार्थ के निंदक और विरोधी हैं, दिल से मेल नहीं करेंगे, बल्कि उनसे दूर रहना चाहेंगे ॥

८—सच्चे प्रेमी ज़रूरी कारोबार अपने गृहस्त और रोज़गार के करके, बाक़ी वक़्त अपना परमार्थी कार-रवाई यानी सतसंग और अभ्यास वग़ैरह में लगावेंगे, और अपने प्रीतम की याद और चिंतवन में लौलीन और मगन रहेंगे, और जो किसी से बात चीत भी करेंगे तो ख़ास कर परमार्थी या उसमें परमार्थ की तरफ़ को झुकाव रहेगा ॥

९—संसारी ब्योहार में भी परमार्थी क़ायदे का उन को ख़्याल ज़्यादा रहेगा, यानी जहाँ तक मुमकिन होगा अपने मतलब के वास्ते किसी को तकलीफ़ या नुक़सान नहीं पहुंचावेंगे, और जहाँ तक मुमकिन होगा, आप दूसरे के हाथ से थोड़े नुक़सान को बरदाश्त करने को तइयार रहेंगे ॥

१०—सच्चे प्रेमी जहाँ तक मुमकिन होगा किसी को तान या तंज़ का बचन नहीं कहेंगे, बल्कि आप ऐसे बचन दूसरों की ज़बान से सुनकर चुप्प हो रहेंगे ॥

११—निंदकों की मलामत और बुराइयों पर उन को अजान और मूरख समझ कर नाराज़ नहीं होंगे,

और न उनको किसी क़िस्म की तकलीफ़ पहुंचाने का निद्या की एवज़ में इरादा करेंगे, बल्कि जो मुमकिन होगा उनको सच्ची समझौती देकर निद्या करने से बचावेंगे, और जो वह बचन नहीं मानेंगे तो उनके साथ हठ नहीं करेंगे ॥

१२—सच्चे प्रेमी हमेशा दीनता और ग़रीबी के साथ गुज़रान करेंगे, और किसी के झगड़े और बखेड़े के कामों में, बे ज़रूरत ख़ास नहीं शामिल होंगे, और न किसी की बे सबब और बिला ज़रूरत बुराई भलाई करेंगे, और जो किसी दो शख़्सों में तकरार या झगड़ा होगा, तो जहाँ तक बनेगा उन का आपस में तसफ़िया और मेल करावेंगे, और न तो किसी दो आदमियों को लड़ावेंगे, और न उनकी लड़ाई में दख़ल और मदद देंगे॥

१३—सच्चे प्रेमी ग़रीब और मुहताज और दुखिया जीवों पर रहम करेंगे, और जो मुमकिन होगा तो उन की थोड़ी बहुत मदद करेंगे ॥

१४—दुनियाँ के ब्योहार और कामों में मन से लिप्त नहीं होंगे, और न बहुत उन की अपने मन में गुनावन करेंगे, बल्कि अपने मालिक की मौज और दया के आसरे जैसा मुनासिब नज़र आवेगा उस मुवाफ़िक़

उन कामौं को जल्द कर के फ़ारिग़ होने का इरादा रक्खैंगे॥

१५—खान पान और पहिरने ओढ़ने वग़ैरह मैं जहाँ तक मुमकिन होगा, अपनी इच्छा और पसंद को दख़ल नहीं देंगे, बल्कि औरौं की पसंद और इच्छा के मुवाफ़िक़ जो सामान बन जावेगा उसी मैं राज़ी रहैंगे॥

१६—अपने दिल से दुनियाँ की तरक्क़ी और नामवरी और मान बड़ाई की चाह नहीं उठावैंगे, लेकिन जो मालिक अपनी मौज से उन को सामान बख़्शेगा, उस मैं दीनता और डर के साथ, कि कहीं उन के परमार्थ मैं ख़लल न पड़े, बर्ताव करैंगे॥

१७—उन के दिल मैं मज़बूत बंधन किसी के साथ नहीं होगा, सिर्फ़ अपने प्रीतम मालिक के चरनौं की पकड़ गहरी और मज़बूत होगी, और भक्ती की रीत और क़ायदौं की सम्हाल हर वक्त तहेदिल से करते रहैंगे, और आस और बिस्वास अपने मालिक के चरनौं मैं दृढ़ और मज़बूत रक्खैंगे॥

१८—जहाँ तक मुमकिन होगा किसी मुआमले मैं अपनी चाह को मुक़द्दम नहीं रक्खैंगे, बल्कि अपने

प्रीतम कुल्ल मालिक की मौज और दया की हर काम मैं ज़बर और अगुवा रक्खेंगे ॥

१६—परमार्थ की तरक्की और दर्शनों की प्राप्ती के वास्ते अलबत्ता बारम्बार बिन्ती और प्रार्थना करेंगे पर इस मैं भी मौज और दया का आसरा मुक़द्दम रक्खेंगे, और चाहे जैसी हालत बेकली और घबराहट और तड़प की कभी २ उन पर गुज़रे, पर धीरज और बिस्वास दृढ़ रख कर अपने प्रीतम से कभी रूखे फीके या आज़ुर्दा ख़ातिर नहीं होंगे, और देर अबेर मैं उस की मौज की मसलहत को समझ कर, ज़्यादा और फ़ुज़ूल घबराहट और जल्दी नहीं मचावैंगे ॥

२०—सख़्ती और सुस्ती और संसारी रंज और दुख की जहाँ तक बनेगा, अपने प्रीतम की मौज और दया के आसरे बर्दाश्त करेंगे, और हमेशा शुकर के घाट पर क़ायम रहेंगे, और रज़ा के दरजे के मुवाफ़िक़ बर्तने के वास्ते कोशिश करते रहेंगे ॥

२१—ऐसे सच्चे प्रेमियों की कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल, और भी सतगुर को ज़्यादा ख़ातिरदारी मंज़ूर रहती है, और सिवाय ऐसी हालत के कि जिस मैं उन का कोई ख़ास और भारी फ़ायदा परमार्थी मुतसव्वर होवे, वह कुल्ल मालिक दयाल उनको तकलीफ़

या दुख या रंज की बरदाश्त नहीं कर सक्ता है और ऐसी ख़ास हालत में भी फ़ौरन अंतरी दया और सहायता उन पर फ़रमाता है, कि जिस्से वह दुख और तकलीफ़ उन को ज़्यादा न ब्यापे, यानी हर तरह से उन की दिलदारी हर वक्त़ उन के सच्चे पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल को मंज़ूर रहती है, जैसा कि इन कड़ियों में कहा है ॥

। दोहा ।

जीवत मिर्तक हो रहो, तजो ख़लक़ की आस ।
रक्षक समरथ सत गुरू, मत दुख पावे दास ॥ १ ॥
मैं सेवक समरत्थ का, कभी न होय अकाज ।
पति ब्रता नागी रहे, तो वाही पति को लाज ॥२॥

२२—जिस किसी की ऐसी सच्ची और पूरी भक्ती है; उसको कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुर का ख़ास प्यारा समझना चाहिये, क्योंकि मालिक को भक्ती प्यारी है, और सिवाय निज भक्तों के और कोई उसके महल में दख़ल नहीं पा सकता ॥

२३—परमेश्वर यानी त्रिलोकी नाथ ने भी औतार स्वरूप से भक्ती और भक्त की निस्बत अपना गहरा प्यार ज़ाहिर किया है, जैसा कि इन कड़ियों में लिखा है ॥

। चौपाई ।

भक्ती हीन बिरंच[1] क्यों न होई ।
सब जीवन सम प्रिय मम सोई ॥
भक्ति वंत जो नीचहु प्रानी ।
प्राण से अधिक सो प्रिय मम बानी ॥

इसका अर्थ यह है कि जो ब्रह्मा भी है, और उस में भक्ती यानी चरनों का प्रेम नहीं है, तो सब जीवों के समान मुझ को प्यारा है, लेकिन जो कोई कैसा ही नीच हो और उस के मन में भक्ती यानी चरनों का प्रेम है, वह मुझ को अपने प्राणों से भी ज़्यादा प्यारा है ॥

२४–जो ग़ौर की नज़र से देखा जावे तो भक्ती (यानी दीनता प्यार और सेवा) रचना में कुल्ल जीवों को बल्कि जानवरों को भी और उन में ख़ूंख़्वार जानवरों तक निहायत प्यारी है, और इन सब में वही सुरत कुल्ल मालिक की अंस मौजूद है, तो फ़िर कुल्ल मालिक को भी भक्ती प्यारी है । और हरचंद वह किसी की दीनता और सेवा का मुहताज नहीं है, पर कोई जीव बिना भक्ती यानी प्रेम के उसके पास नहीं पहुंच सक्ता है, और न बग़ैर प्रेम के उससे अभ्यास रास्ता तै करने का बन सक्ता है, इस वास्ते सिर्फ़ जीवों के

(१) ब्रह्मा

कल्यान और फ़ायदे के लिये, भक्ती और प्रेम मारग उस सच्चे कुल्ल मालिक ने निहायत दया और प्यार से जारी फ़रमाया कि जिस्से जीव आसानी के साथ माया और काल के जाल से निकल कर, उस के निज धाम और चरनों में बासा पावें, और काल कलेश और जनम मरन के दुक्खों से बच कर अमर और परम आनन्द को प्राप्त होवे ॥

२५–अब कुल्ल जीवों को जो सच्चा कल्यान और आनन्द चाहते हैं लाज़िम है, कि सच्चे कुल्ल मालिक के चरनों में प्रेम प्रीत करें, और सच्ची दीनता वास्ते प्राप्ती उस के दर्शन के चित्त में धारन करें, तो उन के जीव का कारज बनना मुमकिन है, और तरह से हरगिज़ २ वे सच्चे मालिक के दरबार में नहीं पहुंच सक्ते ॥

और भक्ती कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल के चरनों में करना चाहिये, तब पूरा काम बनेगा, और जो और किसी की भक्ती करेंगे तो भी कारर-वाई वैसी ही करनी पड़ेगी, लेकिन सच्चा और पूरा कारज नहीं बनेगा, यानी काल और माया के घेर से बाहर नहीं जावेंगे, और इस वास्ते जनम मरन की फाँसी नहीं कटेगी, और बारम्बार देह धारन कर के दुख सुख सहना पड़ेगा ॥

॥ भाग दूसरा २ ॥

बर्णन उस जुगत का कि जिस्से ऊपर की लिखी हुई हालत और रहनी वग़ैरह हासिल होवे।

२६—जो कोई दरियाफ़्त करे कि ऐसी हाल और रहनी जिसका ऊपर ज़िकर हुआ कैसे आवे, तो कहा जाता है कि पहिले तो जौहर यानी सच्चा शौक़ कुल्ल मालिक से मिलने का जीव के दिल में पैदा होना चाहिये, और यह शौक़ सच्चे प्रेमी और सतगुर के संग से पैदा हो सकता है, और इसी शौक़ की तरक़्क़ी और जतन करके पूरे होने का नाम सच्चा और पूरा परमार्थ है॥

२७—अब मालूम होवे कि कुल्ल जीव भक्ती और प्रेम के क़ायदे और बर्तावे से बेख़बर हैं, यानी बालकपन से संसारी और ख़ुद मतलबी यानी अप-स्वार्थी लोगों का संग करके, उनकी तबीअत और स्वभाव और रहनी दुनियाँदारों के मुवाफ़िक़ होती है, और मालिक का भाव और प्यार और डर और भी जीवों का हित उन के मन में बहुत कम होता है, और जो कि परमार्थी रहनी और स्वभाव दुनियाँ-दारों के चाल चलन के बरख़िलाफ़ है, इस वास्ते

सच्चे परमार्थी को कुछ अर्सा चाहिये, कि सतगुरु और प्रेमियों का संग और अंतर अभ्यास कर के, अपनी पुरानी आदत यानी संसारी स्वभावों और चाल चलन को बदले, और इस के वास्ते जो जतन कि संतों ने दया कर के फ़रमाये हैं, वह आगे लिखे जाते हैं ॥

(१) सतगुरु और प्रेमी जन का संग और उन के बचनों को होशियारी से सुनना और समझना और जो २ अपने लायक़ होवें उन की कारवाई शुरू करना ॥

(२) कुल्ल मालिक और सतगुरु और प्रेमियों में सच्चा प्यार मन में पैदा होना, और उन का सतसंग कर के कुल्ल मालिक के दर्शनों का शौक़ दिल में, बढ़ाते जाना ॥

(३) उपदेश लेकर अंतर में शौक़ के साथ स्वरूप का ध्यान और भजन यानी शब्द का अभ्यास करना और उस का थोड़ा बहुत रस और आनन्द लेना ॥

(४) सतसंग के बचन सुन कर और बानी का पाठ कर के, अपने मन की हालत और कसरों को जाँचना और शरमाना, और उन की दुरुस्ती और सम्हाल के वास्ते सच्चा इरादा और कोशिश करना ॥

(५) सच्चे प्रेमियों की रहनी और उन का हाल सुन कर और पढ़ कर और सतसंग में अपनी आँख से देख कर, अपनी हालत और रहनी को उसी के मुवाफ़िक़ बदलने का सच्चा इरादा और कोशिश करना ॥

(६) जो २ नाक़िस और संसारी समझ और पकड़ अपने मन में संसारियों के संग से बस गई हैं, उनको सतसंग के बचन बिचार कर छोड़ना, और परमार्थी रीत और ब्योहार की समझ दृढ़ करना और उस के मुवाफ़िक़ अपना बर्ताव दुरुस्त करना ॥

(७) जो २ आदत और स्वभाव संसारियों के संग से मन और इन्द्रियों के पड़ गये हैं, उन को आहिस्ता आहिस्ता छोड़ना ॥

(८) जो २ फ़ुज़ूल ख़्वाहिशें और तरंगें दुनियाँ की तरक्क़ी और ऐश और आराम की मन में समा रही हैं, उन को सतसंग के बचन सुन कर और समझ कर मन से निकालना और आइंदा वैसी तरंगों को न उठने देना ॥

(९) दूसरों के स्वभाव और बर्ताव और चाल जो अपने तईं परमार्थी समझ लेकर बुरे और नाक़िस मालूम होवें उन को अपने में परखना, और जो वैसी

ही हालत या उसका बोजा अपने में मालूम पड़े तो उसको वैसा ही बुरा और नाक़िस समझ कर शरमाना, और उसके दूर करने की कोशिश करना ॥

(१०) जब किसी से ब्यौहार या काम पड़े तो पहिले मन में सोचना, कि ऐसे काम में अपना मन दूसरे की तरफ़ से कैसा बर्ताव चाहता है, और फिर जहाँ तक बने दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव करना ॥

(११) जो बचन कि अपने तईं कड़ुवे और कठोर और तान और ईर्षा वग़ैरह के मालूम पड़ें, तो अह-तियात करना कि उस क़िसम के बचन आप दूसरे से न बोले, क्योंकि उसको भी वे बचन वैसे ही कड़ुवे और कठोर और तान के मालूम होकर उसका चित्त दुखी होगा ॥

(१२) किसी की ग़ीबत में यानी पीठ पीछे बुराई न करना, और न किसी दूसरे से सुन्ना, और जो किसी अपने प्यारे को समझाना या सम्हालना मंज़ूर है, तो उसके सामने जो सच्चा हाल किसी की बुराई भलाई का होवे, (और उस शख़्स से अपने प्यारे को बचाना मुनासिब है) तो ऐसे हाल के कहने में दोष नहीं है ॥

(१३) किसी से ईर्षा या विरोध मन में न लाना और जो कोई अपने साथ कुछ सख़्ती भी करे, तो उसको मालिक की मौज समझ कर जहाँ तक बने बरदाश्त करना, और उससे एवज़ लेने का इरादा न करना ॥

(१४) अपने मन और इन्द्रियों को जहाँ तक बने, ऐसी सम्हाल रखने की कोशिश करना, कि फ़ज़ूल जगह और भोगों और पदार्थों में न दौड़े, और न उन की पीछे गुनावन और ख़्याल उठाना, नहीं तो अभ्यास में ख़लल पड़ेगा ॥

(१५) खान पान वग़ैरह में अहतियात मुनासिब रखनी, और जहाँ तक मुमकिन होवे भोगों की इच्छा न उठाना अनिच्छित और मौज से जो प्राप्त होवे उसी में ना मुनासिब और ना जायज़ का विचार करके बर्तना ॥

(१६) दुनियाँ और उसके कुल्ल सामान को नाशमान और सच्चा संगी न समझ कर उसकी फ़ज़ूल चाह न उठानी, और जो सामान मौज से मुयस्सर आवे, उसका अपने मन में अहंकार न लाना, और दीनता और ग़रीबी हमेशा चित्त में रखनी ॥

(१७) दुनियाँ के अमीर और बड़े आदमियों से बे ज़रूरत मिलने की आदत न करे ॥

(१८) खुशामदी और अस्तुत करने वालों की बातें चित्त देकर न सुने, और उन की झूठी तारीफ़ पर, अपने मन में न फूले, बल्कि उन को फ़ौरन् खुशामद और तारीफ़ की बातें बनाने से मना कर दे॥

(१९) दुनियाँ दारों और कपटी भक्तों से मेल कम करना, नहीं तो यह धोखा देकर भक्ती की रीत और उसके कामों में बर्ताव करने में कुछ न कुछ बिघन डालेंगे॥

(२०) भक्ती की कारवाई में नुमायश और दिखावे और अपनी तारीफ़ कराने की नज़र से कोई काम न करना क्योंकि उसका फल बहुत ओछा है। मुनासिब यह है कि जो काम करे, वह मालिक और सतगुरु की प्रसन्नता के लिये करे, कि उसमें भक्ती और प्रेम की तरक्क़ी होगी॥

(२१) मन और माया के छल और लुभाव से राधास्वामी दयाल और सतगुरु का बल लेकर जहाँ तक बने होशियार रहना, क्योंकि साधन अवस्था में यह अकसर बिघन डालते हैं, और क़नक कामिनी की चाट दिखला कर, सच्चे अभ्यासी को रास्ते में रोकते हैं॥

(२२) जिस क़दर अपने से बिला दिक़्क़त बन सके, जीवों के हित और उपकार में मदद देना, लेकिन सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा मुक़द्दम समझना, यानी उसकी मुख्यता चित्त में रखना ॥

(२३) प्रेमी और भक्त जन का भक्ती के क़ायदों के मुवाफ़िक़ काररवाई, और सेवा वग़ैरा में उमंग के साथ संग देना, और आप भी भक्ती की रीत में बर्तना ॥

(२४) संसारी लोगों का डर और शरम करके भक्ती की काररवाई नहीं छोड़ना ॥

(२५) सतगुरु और प्रेमियों से अन्तर और बाहर सफ़ाई से बर्तना और कपट न करना ॥

(२६) अपने परमार्थ की तरक़्क़ी की चिन्ता और फ़िक्र दिल में हमेशा रखना, और जिस काररवाई में फ़ायदा मालूम होवे वही काम करना ॥

(२७) मालिक की याद दिल में जिस क़दर बन सके बढ़ाना ॥

(२८) कुल्ल मालिक और सतगुरु की प्रसन्नता जैसे मुमकिन होवे हासिल करना, और इस बात का दिल में ख़ौफ़ और ख़्याल रखना, कि कोई काम ऐसा न बने कि जो उनकी मौज और मरज़ी और पसंद के बरख़िलाफ़ होवे ॥

(२९) अभ्यास के वक़्त जहाँ तक बने कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु की दया का बल लेकर संसारी ख़्यालों को मन में न आने देना और जो आवें तो हटाना ॥

(३०) वक़्तन् फ़ वक़्तन् चरनरस लेते रहना और अभ्यास जितनी दफ़े (चाहे थोड़ी देर हो) दिन रात में बन सके दुरुस्ती से करते रहना, यहाँ तक कि उसका किसी क़दर आधार हो जावे ॥

२८—इस दुनियाँ में भूल और भरम और ग़फ़लत का बड़ा ज़ोर है, इस सबब से यह जितने अंग कि ऊपर बर्णन किये गये, पढ़ कर या सुन कर किसी शख़्स में आसानी से नहीं आ सकते हैं, जब तक कि (१) चेत कर अंतर और बाहर सतसंग न किया जावेगा, और (२) जनम मरन और देहियों के साथ दुख सुख भोगने का ख़ौफ़ मन में न आवेगा, और (३) दुनियाँ और उसके सामान को नाशमान और मालिक यानी कुल्ल करतार की क़ुदरत और कारीगरी को प्रगट देख कर, उसका खोज और उसके धाम में पहुंच कर उसके दर्शनों का शौक़ पैदा न होवेगा ॥

२९—जब ऐसा ख़ौफ़ और शौक़ पैदा होगा, तब सतगुरु और सतसंग की तलाश करके उसमें शामिल होगा,

और बचनों को चित्त से सुन कर और बिचार कर उनके मुवाफ़िक़ काररवाई करने की हिम्मत और इरादा मज़बूत करेगा, तब अलबत्ता यह शुभ अंग आहिस्ता २ आते जावेंगे, और बिकारी और नाक़िस अंग जो सच्चे परमार्थ के हासिल होने में बिघन कारक हैं दूर होते जावेंगे॥

३०—अब मालूम करना चाहिये कि बिना मेहर और दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के ऐसा ख़ौफ़ और शौक़ जिसका ऊपर ज़िकर लिखा गया और खोज सतगुर और सतसंग का किसी के दिल में पैदा नहीं हो सकता, और जिसके दिल में ऐसा ख़ौफ़ और शौक़ और खोज दुनियाँ के हालात और कारोबार पर नज़र करके और मौत का ख़्याल ला-कर पैदा हुआ, उसी को मेहरी और संसकारी और अधिकारी समझना चाहिये, और उसी से सच्चे पर-मार्थ की कारवाई दुरुस्ती से बन पड़ेगी, और वही शख़्स दुनियाँ के रसमी और झूठे परमार्थ से सच्ची नफ़रत करेगा॥

३१—जिस मेहर और दया का ज़िकर ऊपर हुआ, यह प्रथम दरजे यानी शुरू की समझना चाहिये, और वही मेहर और दया ऐसे शौक़ीन जीव को सतगुर

और सतसंग से मिलादेगी, और वही मेहर और दया उसकी परमार्थी काररवाई के साथ दिन २ बढ़ती जावेगी, यानी वह शख़्स दया के बल से शुभ अंगों को ग्रहण करता जावेगा, और नाक़िस और बिकारी अंगों को आहिस्ता २ छोड़ता जावेगा, और अंतर में अभ्यास करके उसको रस और आनन्द मिलता जावेगा, और इस तरह उसकी ताक़त और परमार्थी शौक़ और भक्ती की काररवाई दिन २ बढ़ती जावेगी, और फिर उसी का नाम सच्चा प्रेमी समझना चाहिये ॥

३२—ऐसे पूरे अधिकारी और प्रेमी जीव के दिल में तेज़ खटक अपने सच्चे उद्धार और प्राप्ती दर्शन कुल्ल मालिक की पैदा होगी, और दिन २ ज़्यादा तेज़ होती जावेगी, और उसके साथ बैराग और अनुराग भी उस के चित्त में बढ़ते और पकते जावेंगे, और राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन भी गहरी और मज़बूत होती जावेगी, और फिर ऐसे प्रेमी पर राधास्वामी दयाल ख़ास दया फ़रमा कर, उसकी सुरत को अंतर में चढ़ावेंगे, और माया और काल के घेर से निकाल कर रफ़्ता २ एक दिन धुर मुक़ाम में पहुंचाकर उसका कारज पूरा कर देंगे, यानी अपने दर्शनों का परम आनन्द और बिलास बख़्शेंगे ॥

३३—मालूम होवे कि जो कोई इस बचन को पढ़कर या सुनकर ऐसा ख़्याल करेगा, कि बग़ैर दया के कुछ नहीं हो सकता है, और इस वास्ते मुझ को कुछ करना ज़रूर नहीं है, जो कुछ करनी दरकार होगी वह दया आप करालेगी, तो ऐसी समझ धारन करने वाले पर दया किसी तरह से नहीं आवेगी, और वह आलसियों और काहिलों में शुमार किया जावेगा।

३४—इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि दुनियाँ का हाल ग़ौर से देख कर थोड़ा बहुत ख़ौफ़ और शौक़ मन में लाकर, तलाश सतगुर और सतसंग की इस नज़र से, कि उनको पता और भेद कुल्ल मालिक और उसके निज धाम का, जहाँ हमेशा का सुख और आनन्द प्राप्त होवे, और दुक्खों से क़तई बचाव हो जावे, करें, और जब वे मिल जावें तब उन के बचन सुनकर और उपदेश लेकर, उनकी हिदायत के मुवाफ़िक़ शौक़ और मिहनत के साथ काररवाई शुरू करें, और बिकारी अंगों से डर कर और शुभ अंगों की प्राप्ती की चाह उठा कर, जो जतन कि बताया जावे उस की कारवाई जहाँ तक मुमकिन होवे दुरुस्ती से करने का सच्चा इरादा और कोशिश करें, तब राधास्वामी दयाल

अपनी दया का बल देकर जिस क़दर काररवाई ज़रूरी और मुनासिब है कराते जावेंगे, और आहिस्ता २ एक दिन उन का पूरा काम बनावेंगे, जैसा कि इन कड़ियों में लिखा है ॥

॥ कड़ी ॥

मेहर दया करनी करवाई ।
करनी कर बहु मेहर बढ़ाई ॥
करनी मेहर संग दोउ चलते ।
तब फल पूरा चढ़ चढ़ लेते ॥

३५—और जो कोई ऊपर के लिखे के मुवाफ़िक़ हिम्मत और इरादा मज़बूत कर के, कारवाई परमार्थ की अपने जीव के कल्यान के वास्ते शुरू नहीं करेंगे, वे ख़ास मेहर और दया से ख़ाली रहेंगे, और फिर उन का काम भी जैसा चाहिये दुरुस्ती से पूरा नहीं बनेगा ॥

॥ बचन १८ ॥

राधास्वामी मत और सुरत शब्द अभ्यास की महिमाँ और बर्णन बड़भागता उन जीवों की जो प्रीत और प्रतीत सहित अभ्यास कर रहे हैं ॥

१—राधास्वामी मत सब से ऊँचा और गहरा है, और उस का अभ्यास सुरत शब्द जोग का सीधा और सहज और धुर पहुंचाने वाला है, इससे बढ़ कर कोई जुगत और अभ्यास रचना भर में नहीं है, और इस को कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने इस समय में जीवों पर अति दया कर के आप प्रघट किया ॥

२—राधास्वामी मत में सच्चे कुल्ल मालिक राधास्वामी का भेद बर्णन किया है, और उन का निज धाम ऊँचे से ऊँचे देश में समझाया है, और अपनी धारों यानी किर्नियों के द्वारे या वसीले से वे सब जगह मौजूद हैं, पर सिंहासन यानी तख़्त ऊँचे से ऊँचे धाम में है, जो कि अपार और अनन्त और अगाध और अथाह और अकह है ॥

३—रचना में समान और बिशेष चेतन्य का भेद बसबब हायल होने माया के परदों के साफ़ नज़र आता है, फिर राधास्वामी धाम महा बिशेष चेतन्य का मुक़ाम है, जो कि महा निर्मल और महा आनन्द और महा प्रेम स्वरूप है, और माया का जहाँ नाम और निशान भी नहीं है, क्योंकि यह वहाँ से नीचे के देश में प्रगट हुई, और उस देश में रचना के होने

से पहिले चैतन्य का गिलाफ़ हो रही थी, यानी बतौर तह के उस को ढके हुई थी ॥

४—जितने मत कि दुनियाँ में जारी हैं वे माया के घेर यानी हद्द में ख़तम हो गये, और राधास्वामी मत का सिद्धान्त निर्मल चेतन्य, यानी दयाल देश में सच्चे कुल्ल मालिक का निज धाम है, और वहीं पहुंच कर सुर्त का सच्चा और पूरा उद्धार, यानी माया के जाल से निरवार और जनम मरन से छुटकारा हो सक्ता है, और बाक़ी माया के देश में चाहे जैसे बढ़ से बढ़ कर सुख प्राप्त हो जावें, पर जनम मरन का चक्कर हमेशा जारी रहेगा ॥

५—सुरत शब्द मारग से मतलब यह है, कि सुरत यानी रूह को जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है, और जो प्रथम धार और धुन रूप हो कर राधास्वामी धाम से निकली, और जगह २ मण्डल बाँध कर रचना करती हुई पिण्ड में उतर कर ठहरी है, शब्द यानी धुन की धार के साथ मिला कर उलटाना और कुल्ल मंडलों के पार निज धाम में पहुंचा कर बिश्राम देना ॥

६—शब्द या धुन से मतलब चेतन्य की धार से है जो असल में कुल्ल रचना की करता है, और वही

धार जब पिंड में आकर ठहरी, उस का नाम सुरत हुआ, और ब सबब उलट जाने इस की तवज्जह के बाहर की तरफ़ भोगों और पदार्थों में और नीचे की तरफ़ पिंड में, इस का बंधन देह और दुनियाँ में हो गया है। जो कोई भेद समझ कर और जुक्ती का उपदेश लेकर सुरत का रुख़ इन तरफ़ों से मोड़ कर, ऊपर यानी इस के निज घर की तरफ़ धुन की डोर पकड़ कर यानी शब्द को चित्त लगा कर सुनते हुए प्रेम और शौक़ के साथ चलाना शुरू करे, तो वह राधास्वामी दयाल की दया और सतगुरु की मदद और कृपा से आहिस्ता २ एक दिन माया की हद्द के पार अपने निज घर में पहुंच सक्ता है, और जनम मरन और देहियों के दुख सुख से बच कर परम और अमर आनन्द को प्राप्त हो सक्ता है। यह फल सुरत शब्द जोग के अभ्यास का है॥

७—और कोई जुगत या अभ्यास कर के सुरत निज घर यानी धुर धाम में नहीं पहुंच सक्ती, क्योंकि आदि ज़हूर चेतन्य का शब्द है, और यही कुल्ल रचना का करता और उस की जान है, फिर इस धार को पकड़ के धुर धाम में पहुंचना मुमकिन है, और जितनी धारें हैं वह माया के घेर से निकलीं

और वहीं खतम होगईं, उन में से कोई माया की हद्द के पार नहीं जा सक्ती है, और जो कि शब्द ही की धार चेतन्य और ज्ञान की धार और कुल्ल रचना की करतार है, इस वास्ते सुरत शब्द मारग से बढ़ कर कोई अभ्यास रचना भर में नहीं है ॥

८—और जो कि सुरत शब्द अभ्यास में प्राणों के रोकने या खींचने की कुछ जरूरत नहीं है, इस सबब से वह अब्र ऐसा आसान कर दिया गया है, कि जो सच्चा शौक़ होवे तो स्त्री और पुर्ष लड़का और जवान और बूढ़ा सब उस को जो थोड़ा बहुत शौक़ और प्रेम होवे, तो बग़ैर तकलीफ़ और खतरे के कमा सक्ते हैं, और थोड़े दिनों में उस का फल और फ़ायदा देख कर, और नित अभ्यास जारी रख कर, अपना परमार्थी भाग जगा और बढ़ा सक्ते हैं ॥

९—जो भेद कुल्ल मालिक और रास्ते के मुक़ामों के मालिकों का, और भी सुरत यानी जीव का, और तरीक़ा उस को उलटा कर फिर निज धाम में पहुंचाने का शब्द को सुन कर, राधास्वामी मत में खोल कर कहा है, वह किसी मत में जो कि आज कल जारी हैं पाया नहीं जाता, और न बहुत से सवालों के जवाब जिन से पूरी तसल्ली हो जावे, सिवाय

राधास्वामी मत के और किसी मत में मिल सकते हैं, इस वास्ते जो कोई कि इस मत के भेद और हाल को अच्छी तरह निरनय कर के समझ लेवें, उस की गत कुल्ल जीवों से बढ़ कर हो जावेगी, यानी कुल्ल विद्यावान और चतुरा और सब मतों के आचारज और पेशवा, उस को असल परमार्थ से बेख़बर और नादान नज़र आवेंगे, और जबकि वह अभ्यास सुरत शब्द जोग का प्रेम और शौक़ के साथ शुरू करेगा, तो उस के फ़ायदे का कुछ बयान नहीं हो सक्ता है, यानी वह राधास्वामी दयाल की मेहर से एक दिन कुल्ल रचना को पार करके, महा प्रेम और महा आनन्द के धाम में पहुंच कर, जनम मरन के कष्ट और कलेश से रहित हो जावेगा॥

१०—बड़ी ख़ूबी और बड़ाई राधास्वामी मत और उस के अभ्यास की यह है, कि इस में सब जीव किसी देश और किसी हालत और किसी पेशा और किसी मज़हब में होवें, और चाहें ग्रहस्त में रह कर रोज़गार करते होवें, या बिरक्त या आज़ाद होवें, इस मत में शामिल होकर उस का अभ्यास जो थोड़ा भी शौक़ और प्रेम रखते हैं, आसानी के साथ कर सकते हैं, और कोई दिन में थोड़ा बहुत उस का रस और आनन्द अपने अंतर में हासिल कर सक्ते हैं॥

११-यह मत और इसका अभ्यास अंतरी और रूहानी है। अभ्यासी को इख़्तियार हैं कि चाहे जिस वक़्त, और चाहे जहाँ एकान्त में आराम के साथ बैठ कर, और जो बैठा न जावे तो लेट कर, (बग़ैर दूसरे शख़्स के जानने के) अभ्यास कर सक्ता है, और यह बहुत ज़रूर नहीं है कि वह अपनी कोई ज़ाहरी रसम या क़ायदे या ब्योहार को बदले, बशर्ते कि उस काररवाई से उस के ज़ाती फ़ायदे के मतलब से; किसी को किसी क़िसम का दुख या नुक़सान न पहुंचता होवे ॥

१२-राधास्वामी मत और उस के अभ्यास के आप कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु रक्षक और निगहबान हैं, यानी जो कोई सच्चे मन से थोड़ा शौक़ लेकर, थोड़ी बहुत प्रतीत के साथ इस मत को क़बूल कर के सुरत शब्द के अभ्यास में लगेगा, उस पर राधास्वामी दयाल और संत सतगुर आप दया फ़रमाते हैं, और अन्तर में परचे और मदद देते हैं, कि जिस को परख कर अभ्यासी का शौक़ आहिस्ता २ बढ़ता जाता है, और प्रीत और प्रतीत चरनों में और भी अभ्यास की जुगत में बढ़ती जाती है ॥

१३—और जो कि मतलब और मक़सद राधास्वामी मत और उस के अभ्यास का यह है, कि मन और सुरत दिन २ अपने पिंड में बैठक के अस्थान से, ऊँचे की तरफ़ सिमटते और सरकते जावें, और ऊँचे देश के शब्द और स्वरूप से मिल कर, दिन २ रस और आनन्द ज़्यादा से ज़्यादा पाते जावें, तो जिस क़दर अपनी बैठक के मुक़ाम से हटते जावेंगे, उसी क़दर दुनियाँ और उस के सामान की तरफ़ से चित्त उपराम होता जावेगा, और राधास्वामी दयाल और सतगुर के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती और पक्की जावेगी—यही निशान सच्चे अभ्यास और सबूत सच्चे उद्धार का है॥

१४—यह बात अच्छी तरह से हर एक जीव को जो राधास्वामी मत में शामिल होवे समझना चाहिये, कि इस मत के अभ्यासी पर ज्यों २ वह अभ्यास करती जावेगा वही हालत गुज़रती जावेगी जो कि मरने के वक़्त जीवों पर जब कि रूह का खिंचाव दिमाग़ की तरफ़ होता है गुज़रती है, यानी सहज २ आँखों की पुतली को, कि जिस में रूह की धार ठहर कर देह और दुनियाँ का काम कर रही है, अन्दर और ऊपर को तरफ़ उलटाया जाता है, और जिस क़दर

यह काम दुरुस्ती से बनता जाता है, उसी क़दर सुरत देह और दुनिया से न्यारी होती जाती है, और इधर के बंधन ढीले होते जाते हैं। जब ऐसी हालत इस ज़िन्दगी में होने लगी और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और उनका जलवा अंतर में मालूम होने लगा और संसार के भोग बिलास और मान बड़ाई से चित्त थोड़ा बहुत हट कर अंतर अभ्यास यानी चरनों में ज़ियादा शौक़ और प्रेम के साथ लगने लगा, तो इस से ज़ियादा और क्या सबूत सच्चे उद्धार का दरकार है॥

१५–सच्चे प्रेमी अभ्यासी को ऊपर की लिखी हुई हालत और कैफ़ियत से साफ़ यक़ीन होता जावेगा कि इसी सुरत शब्द मारग की कमाई से एक दिन पूरा काम बन जावेगा, और यह कि इस मारग का सूत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से लगा हुआ है, और इस मारग के कमाई करने वाले की वे आप रक्षा फ़रमाते हैं, और ख़ास दया उसपर फ़रमा कर दिन २ उस की तरक़्क़ी में मदद देते हैं, फिर उस की प्रीत और प्रतीत चरनों में ज़रूर बढ़ेगी और पुख़्ता होती जावेगी, और दुनियाँ और उस के सामान से जो कि

नाशमान है, और उसमें रस और आनन्द बहुत थोड़ा और दुख के साथ मिला हुआ है, ज़रूर अभाव-ता और उदासीनता होती जावेगी ॥

१६—सच्चे प्रेमी अभ्यासी को राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से जब तब शब्द की असली धुन सुना कर, और अपना प्रकाश स्वरूप दिखा कर या सतगुरु रूप में दर्शन देकर, सुरत शब्द मारग की बड़ाई और अपनी दया की जाँच और यक़ीन कराते हैं, कि जिससे उस को साफ़ मालूम हो जावे कि वे हर दम उस के अंग संग हैं, और जब २ ज़रूरत होवेगी उस की मदद फ़रमावेंगे, और उस की सुरत को सब बंधन ढीले कर के और अपनी गोद में बैठा कर, यानी अपने संग लेकर और ऊँचे देश में चढ़ा कर एक दिन निज घर में पहुंचा देंगे ॥

१७—सुरत की चढ़ाई पिंड के परे यकायक और जल्दी नहीं हो सक्ती, क्योंकि इसमें बहुत हर्ज और नुक़सान और तकलीफ़ पैदा होने का ख़ौफ़ है, लेकिन आहिस्ता २ काररवाई जारी रहने से अभ्यासी का बहुत फ़ायदा है, यानी उस को आनंद और सरूर हजूम होता जावेगा, और मस्ती और इधर से बेहोशी

नहीं होवेगी। और दोनों काम दुनियाँ और परमार्थ के किसी दरजे तक जारी रहेंगे और अभ्यास की तरक्की भी बराबर होती जावेगी ॥

१८—इस वास्ते सुरत शब्द मारग के अभ्यासी को मुनासिब और लाज़िम है कि अपना अभ्यास प्रीत और प्रतीत के साथ बराबर जारी रक्खे, और जल्दी और शिताबी न करे, और न बहुत घबराहट और बेकली जिससे कि नाउम्मेदी और निरासता पैदा होवे, मन में आने देवे, बल्कि दया का हाल दिन २ मुलाहज़ा करके चित्त में दृढ़ बिश्वास रक्खे कि राधास्वामी दयाल उसको किसी हालत में नहीं छोड़ देंगे, और उसकी ख़बरगीरी और सम्हाल करते हुए एक दिन ज़रूर धुर घर में पहुंचा देंगे ॥

१९—अब ख़्याल करना चाहिये कि जिस शख़्स का सच्चा और पक्का इरादा दयाल देश में पहुंचने का है और दुनियाँ और उसके सामान से चित्त किसी क़दर उपराम हो गया है, और माया की हद्द में जिस क़दर कि रचना है उसमें वह चित्त से ठहरना नहीं चाहता है और राधास्वामी दयाल के शब्द स्वरूप और भी सतगुरु रूप में जिसको प्यार है, और ऊँचे देश और धुरधाम में पहुंच कर इन स्वरूपों के

दर्शन का आनन्द और बिलास लेने को जिसके दिल में चाह और तड़प लग रही है, और माया के मसाले की देहियों से जिसको किसी क़दर नफ़रत हो गई है, तो ऐसा प्रेमी अभ्यासी किस तरह माया की हद्द में ठहर सक्ता है; वह तो ज़रूर सतगुरु स्वरूप और शब्द के साथ लिपट कर और दयाल देश में पहुंच कर बिश्राम करेगा, चाहे यह काम एक जनम में पूरा होवे या दो में, और इस सूरत में वह कुछ अरसा संतों के दसवें द्वार यानी सुन्न में जो कि माया की हद्द के पार है क़याम करेगा, और दूसरे जनम में सतगुरु के संग आकर और उत्तम कुल में जनम ले कर फिर वही सुरत शब्द मारग का अभ्यास जहाँ से छोड़ा है शुरू करके अपना काम पूरा बनावेगा, यानी संतगती को प्राप्त होकर राधास्वामी के चरनों में बासा पावेगा॥

२०—और जो शौक़ और प्रेम किसी क़दर हलका रहा और करनी भी उसी मुवाफ़िक़ बनती रही, तो तीन जनम में कारज बनेगा। और इस सूरत में पहिले जनम में सहसदलकँवल के ऊपर और फिर दूसरे जनम में दसवें द्वार में कोई दिन ठहर कर तीसरे जनम में दयाल देश में पहुंचेगा, और हर जनम में उत्तम कुल

में पैदा होकर और सतगुरु से मिल कर बदस्तूर अपना अभ्यास सुरत शब्द मारग का जारी रक्खेगा, और प्रीत प्रतीत और शौक़ हर जनम में बढ़ता जावेगा ॥

२१—ऊपर के बयान से मालूम होगा कि किस क़दर महिमा और भारी गति राधास्वामी मत के अभ्यासी की है, यानी वह एक दिन आतमा और परमातमा और ईश्वर और परमेश्वर और ब्रह्म और पारब्रह्म के धाम के ऊपर चढ़ कर और दयाल देश में पहुंच कर संत और परम संत गती को प्राप्त हो सक्ता है, और तब उसकी गत इन सब से ज़ियादा और भारी हो जावेगी, अब जीवों को इख़्तियार है कि राधास्वामी मत के भेद को सुन कर और ऐसे भारी दरजे के हासिल करने के वास्ते सतगुरु और राधास्वामी दयाल की सच्ची सरन लेकर सुरत शब्द मारग के अभ्यास में दिलो जान से कोशिश करें, और चाहे किसी मुक़ाम का माया की हद्द में इष्ट बाँध कर और वहाँ की जैसी कुछ काररवाई है उसके मुआफ़िक़ अमल दरामद करके तिरलोकी के ऊँचे देश में रहें, और चाहे दुनिया और उसके भोग बिलास में अटक कर स्वर्ग और मृत्युलोक की ऊँची नीची जोनों में भरमते रहें ॥

॥ बचन १९ ॥

बर्णन हाल मन की तरंगौं और ख़्यालौं का जो कि करम भरम के सूक्ष्म रूप हैं और यह कि जब तक इनकी कमी और सफ़ाई न होगी तब तक मन और सुरत दुरुस्ती से अभ्यास में नहीं लगेंगे और प्रेम की तरक्क़ी नहीं होगी। और जतन काटने उन ख़्यालौं और तरंगौं और करमौं का ॥

हाल पैदा होने और बिस्तार पाने मन के ख़्यालौं और तरंगौं का।

१—मन का क़ायदा है कि जब इस में किसी तरंग की हिलोर उठती है तब धार खड़ी होकर उस इन्द्री की तरफ़ कि जिसके भोग की तरंग उठी है रवाँ होती है, और जो वह भोग बाहर मौजूद होवे तो उस से मिल कर जैसा कुछ कि उसका रस है मन को पहुंचाती है, और जो वह भोग इत्तफ़ाक़ से उस वक्त मौजूद नहीं है तो मन उसका अनुमान करके अपनी

धार के वसीले से जो इन्द्री घाट तक आई है ख़्याली रस लेता है, और उस वक़्त उस भोग के रस का रूप हो जाता है, और कोई दूसरा ख़्याल उस वक़्त नहीं रहता है, और फिर उस भोग के हासिल करने के निमित्त अनेक तरह के जतन सोचता है, और किसी क़दर वक़्त अपना इसी गुनावन में ख़र्च करके और इरादा उस जतन के करने का बाँधकर उस ख़्याल को छोड़ देता है ॥

२—जिस क़दर अर्से तक कि मन इसी गुनावन और ख़्याल में लगा रहा उस ख़्याल और इरादा का कि जो उसने वास्ते जतन करने के किया मनाकाश में गहरा नक़्श पड़ जाता है, और फिर वही नक़्श उस इरादे के मुआफ़िक़ मन से बाहर काररवाई वास्ते प्राप्ती उस भोग के करावेगा। और जब वह भोग प्राप्त होगा तब निहायत हर्ष और ख़ुशी के साथ उस भोग में लिपट कर उसका रस लेगा, और फिर इस काररवाई का भी नक़्श मनाकाश में बदस्तूर पड़ेगा, और वह बार २ उस भोग के रस की याद दिला कर और हिलोर उठा कर बदस्तूर काररवाई और जतन यानी अंतरी और बाहरी करम करावेगा, और इसी तरह करमों का सिलसिला बढ़ता जावेगा ॥

३—कुल इन्द्रियों के भोगों की चाह का पैदा होना और उनके प्राप्ती के लिये इरादा और फिर जतन का करना और उसके सुफल होने पर भोगों का रस लेना और फिर बारम्बार उसी क़िस्म की तरंगें उठाना और उनके पूरे होने के वास्ते तदबीर और जतन करना, यही सिलसिला करम का पैदा करता है, और इसी काररवाई के नक़्श पर नक़्श अंतर में जमा होते जाते हैं और इसी का नाम करमों का दफ़्तर है॥

४—यह तरंगें और उनके पूरे करने के वास्ते जो कुछ कि कारखाई की जावे वह औरों के भोग बिलास देख कर या सुन कर या उनका हाल पढ़ कर पैदा होती हैं, या अपने मन में नई उमंग उठा कर ज़ाहर होती हैं। और इनके सिलसिले की कोई हद्द नहीं है यानी जिस क़द्र सामान मुयस्सर आवे और जैसा संग मिल जावे तो इस क़िस्म की तरंगें मिसूल आरायश मकान व सवारी और लिबास और ज़ेवर और जमा करने धन और माल और बढ़ाने अनेक तरह के सामान वग़ैरः के और लगाने बाग़ात और बढ़ाने सामान ऐश और आराम और करना अनेक तरह के काम नाम-वरी और यादगार के बेशुमार पैदा होती हैं, और इस तरह करमों का दफ़्तर भी बहुत भारी हो जाता है॥

५–यही सब नक़्श जिनको करमों का दफ़्तर कहा गया है बराबर जीव के करम के बाद करम बेतादाद कराते हैं। और हर एक करम के सुख और दुख का भोग थोड़ा बहुत वक़्त, तरंग उठाने और उसका ख़याल करने और फिर उसका भोग करने के मन को अंतर और बाहर मिलता है, और जिस क़दर कि शौक़ और ज़ोर के साथ कोई करम किया गया है, चाहे वह आप को, या दूसरों को सुखदाई है या दुखदाई, उसी क़दर मज़बूत नक़्श उसका दिल में पड़ेगा, और आइन्दा वह उसी तरह का एवज़ यानी फल अंतर और बाहर देवेगा, यानी अंतर में तो वक़्त सख़्त तकलीफ़ और मौत के जब कि सुरत यानी रूह की धार का खिंचाव ऊपर की तरफ़ होवेगा और वह उन नक़्शों के मुक़ाम से गुज़र करेगी तब वे नक़्श ज़िन्दा होकर उसको कुछ देर अटकावेंगे और जैसा कुछ कि उनका भोग है (सुख या दुख और रस या तकलीफ़) उसी मुवाफ़िक़ फल देवेंगे, और उस वक़्त सुरत यानी जीव जो कि संसारी है कोई जतन उस दुख के हटाने का नहीं कर सकेगा, और इसी तरह जब बाहर दुखदाई करमों का एवज़ मिलेगा चाहे वह बतौर रोग या सोग के होवे या दूसरे के हाथ

से (जिसको इस शख़्स ने साबिक़ में दुख दिया है) तकलीफ़ पहुंचे, उसका पूरा फल भोगना पड़ेगा, और चाहे जिस क़दर जतन और तदबीर की जावे वह तकलीफ़ और दुक्ख बग़ैर पूरा भोग दिये नहीं हटेगी ॥

६—और इसी तरह सुखदाई करमों का भोग अंतर और बाहर मिलेगा और जो वह करम पूरे हैं तो बाहर बग़ैर जतन या तदबीर करने के उनका फल सुख रूप सहज में प्राप्त होगा, और जो अधूरे हैं तो थोड़ा जतन और मिहनत करके हासिल होगा ॥

७—यह थोड़ा सा हाल शुरूआत और तरक़्क़ी सिलसिला करमों का बयान किया गया है। इसको बिस्तार करके कुल करमों का हाल वक़्त उनके बोजा पड़ने से और फिर ज़हूर करने और तरक़्क़ी पाने तक समझ लेना चाहिये। यही माया का जंजाल है कि अनेक तरह के भोग और पदार्थ पेश करके और उन में जीव को लुभा कर करमों के चक्कर में डालती है, कि फिर जिसका सिलसिला दूर तक जारी रहे, और उससे निकलना मुशकिल हो जावे और माया के घेर में बारम्बार देह धारन करके अपनी करनी और इरादे का फल भोगता रहे ॥

८—एक मिसाल दी जाती है कि जिससे ऊपर का

लिखा हुआ हाल आसानी से समझ में आ जावे। जैसे कोई शख़्स किसी की शादी की महफ़िल में गया और वहाँ रोशनी और फ़र्श वग़ैरा और फुलवार की आरायश और आतिशबाज़ी वग़ैरह देख कर मन में ख़ुश हुआ, और इरादा किया कि अपने लड़के की शादी में जो सामान मुयस्सर आवे तो उसी मुवाफ़िक़ महफ़िल आरास्ता करे। और फिर इस इरादे के पूरा करने के वास्ते अनेक जतन और मिहनत करके धन का पैदा करना और जोड़ना शुरू किया, और जब वक़्त आया तब जिस क़दर कि सामान मुयस्सर हो सका थोड़ी बहुत उसी के मुवाफ़िक़ जैसा कि देखा था महफ़िल तइयार की, और जब उसकी तारीफ़ हुई तब फिर इरादा किया कि आइन्दा उस्से भी बढ़ कर काम करे। इसी तरह सिलसिला इस करम का बढ़ता चला और फिर मालूम नहीं कि कब तक उसकी जिन्दगी में जारी रहे, और जो सामान कि मुयस्सर आने में कमी रही तो रंज और अफ़सोस भोगना पड़ा, और फिर भी उस इरादे को और उसके पूरा करने के वास्ते जतन और मिहनत को न छोड़ा, यानी जो इस जनम में ख़ातिरख़्वाह काम न बना, तो उस की आसा दूसरे जनम

में बाक़ी रही, और फिर वही जतन और मिहनत करने लगा। इस तरह यह सिलसिला व दस्तूर जारी रहा। यह मिसाल बहुत थोड़े से हाल की है, लेकिन जीवों के मन में बेशुमार तरंगें दुनियाँ के भोग बिलास और नामवरी की उठती रहती हैं, और जो एक पूरी यानी ख़तम हो गई, तो फिर दूसरी और तीसरी पैदा हो गई, इस तरह करमों का चक्कर कभी ख़तम नहीं होता॥

९—जो कोई कहे कि करमों का नक़्श कैसे पड़ता है, तो उसका हाल यह है, कि जैसे अक्सी तस-बीर खींचने वाला यानी फ़ोटोग्राफ़र जब तसवीर खींचता है, तब सूरज की किरन की मदद से अक्स शीशे पर पड़ता है, इसी तरह सुरत चेतन्य की रो-शनी की मदद से मनाकाश में, जो कि मुवाफ़िक़ शीशे के है जीव के ख़याल और करमों का नक़्श पड़ता है, बल्कि बाहर के आकाश में भी अक्सी तसवीर खिच जाती है, चुनांचि समुद्र के किनारे के रहने वाले वक़्त सुबह या क़रीब शाम के आने वाले जहाज़ का अक्स आकाश में देख कर मालूम कर लेते हैं कि फ़लाना जहाज़ थोड़े अर्से में आने वाला है॥

१०—सिवाय इस के यह भी कैफ़ियत रोज़ मर्रा जीवों पर गुज़र रही है, यानी जब कोई कुछ मज़-मून या कलाम लिखना चाहता है, या मकान बनाना चाहता है, या मुसव्विर कोई तसवीर खींचना चाहता है, या और कोई कारीगर कोई चीज़ बनाना चाहता है, तो वह पहिले उस को अपने मन में सोचता है, और उस सोचने के वक्त नक़्श या ख़ाका, उस मज़मून या मकान या तसवीर या चीज़ वग़ैरा का मनाकाश में लिख जाता है, पीछे उस का नमूना वह बाहर लिखता है या बनाता है, ऐसे ही सब काम और ख़्यालों का हाल समझ लेना चाहिये, कि पहिले उन का नक़्श मनाकाश में पड़ता है, और फिर इन्द्रियों के वसीले से उन की सूरत बाहर ज़ाहिर होती है ॥

जतन छुटकारा करने का करमों के चक्र से

११—अब ग़ौर करने की बात है कि ऐसे करम के चक्र और जंजाल से जीव का छुटकारा कैसा मुश्किल है, सो सच्चा और पूरा निरवार बग़ैर राधास्वामी दयाल की सरन लेने, और उनकी जुगत के अभ्यास करने के और किसी तरह मुमकिन नहीं है, और वह जुगत सुरत शब्द जोग है, जिस की कमाई

करने से तीनों क़िस्म के करम यानी संचित प्रारब्ध और क्रियमान का सिलसिला सहज में कट सक्ता है, और कुल्ल करमों का हिसाब कोई दिन में बेबाक़ हो सक्ता है ॥

१२—जितने मत कि दुनियाँ में जारी हैं वे अक्सर तो करम का उपदेश करते हैं, और आसा सुख की इस लोक में या स्वर्ग वग़ैरा में बंधवा कर, बद-स्तूर माया के जाल और करम के चक्कर में फंसाते हैं, कोई २ बाहरमुख भक्ती मूरतों या निशानों की (जो कि जड़ हैं) कराते हैं और असल का भेद नहीं बताते, इस सबब से वे उपाशक स्थूल और सूक्ष्म शरीर में चक्कर खाते रहते हैं, और करम के जाल से निकलने नहीं पाते, कोई २ ग्रंथ और पोथी पढ़ने और पढ़ाने में अटकाते हैं और कोई ईश्वर या ब्रह्म या ख़ुदा का चिन्तवन और ध्यान कराते हैं, लेकिन वह ध्यान बे ठिकाने और ना दुरुस्त रहता है क्योंकि वह ईश्वर या ब्रह्म या ख़ुदा को अरूप क़रार देकर आकाशवत सर्ब व्यापक बताते हैं, और ध्यानी आकाश का तसव्वुर बाँध कर इसी चेतन्य के मंडल में रहता है, यानी माया के घेर के पार नहीं जा सक्ता, और वाज़े वाचक ज्ञान समझाते

हैं, यानी ख़ुद जीव को सर्व व्यापक ब्रह्म क़रार देते हैं, और माया और उस के सामान को मिथ्या समझ कर कहते हैं कि जाना आना कुछ नहीं है, सिर्फ़ इतना चाहिये कि अपने तईं ब्रह्म स्वरूप मान्ने का विर्द[1] करें, इतनी ही काररवाई से जनम मरन से छुटकारा हो जाना मानते हैं, इन्हों ने भी धोखा खाया, और उस चेतन्य के मंडल से जो कि माया के संग रचना में फंसा हुआ है बाहर नहीं गये॥

१३—ख़ुलासा यह कि यह सब मतवाले और ख़ुद इन का ब्रह्म या ईश्वर या ख़ुदा (जो उन का सिद्धान्त पद है) माया के घेर और चक्र में फँसा हुआ है, फिर इन लोगों का सच्चा निरवार काल और करम के घेर से किस तरह हो सक्ता है, अलबत्ता यह बात सिर्फ़ राधास्वामी मत के मान्ने और उस की जुगत के कमाने से हासिल हो सक्ती है, और इस का बयान शरह के साथ आगे लिखा जाता है॥

राधास्वामी मत के अभ्यास की कमाई से तीनों क़िसम के करमों का असर घटना और दूर होना मुमकिन है॥

१ अभ्यास।

१४—मालूम होवे कि राधास्वामी मत का अभ्यास शब्द और स्वरूप के आसरे, सुरत रूह की धार के अंतर में उलटाने और चढ़ाने का है, और उस धार का अस्थान वक्त जाग्रत के आँखों की पुतली में है, सो उस धार के साथ पुतली भी उलटती है, और जिस वक्त कि पुतली और वह धार थोड़ी भी उलटती और खिंचती हैं, तो उसी वक्त देह और दुनियाँ का होश कम हो जाता है या उसकी बिल्कुल सुध नहीं रहती है, और हाथ पैर ऐंठने लगते हैं और दाँती भी बंद हो जाती है, और इन्द्रियाँ बल्कि मन भी सिथल और बेकार हो जाते हैं॥

१५–जब ऐसी हालत अभ्यास कर के थोड़ी बहुत पैदा होनी शुरू हुई, तो स्थूल और सूक्ष्म यानी अंतर और बाहर करमों की काररवाई आपही हलकी होती जावेगी, और अंतर में कुछ रस और आनन्द पाकर और मालिक की कुदरत और दया का मुलाहज़ा कर के, अभ्यासी का चित्त संसार और उस के भोगों की तरफ़ से आप ढीला होता और हटता जावेगा; और दुनियाँ के रस फीके पड़ते जावेंगे, और शौक़ तरक्की अभ्यास और हासिल करने बिशेष रस का अंतर में बढ़ता जावेगा, और संसारी

ख़्वाहिशें घटती जावेंगी, और जो ज़रूरी सामान के वास्ते यह अभ्यासी कुछ काररवाई, मिसल् रोज़गार और पेशा वग़ैरः के करेगा, या चाह उठावेगा, तो उस में हमेशा मालिक की मौज और दया की मुख्यता रक्खेगा, और अपनी चाह को मालिक की मरज़ी के आधीन रक्खेगा, इस तरह क्रियमान करमों में अभ्यासी का बंधन बहुत कम या बिल्कुल नहीं होवेगा, यानी सिल्सिला करमों का आइन्दा के वास्ते बंद हो जावेगा ॥

१६—प्रारब्ध करम उनको कहते हैं जिन का फल इस ज़िंदगी में भोगना होगा, सो उन का असर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से बहुत हलका हो जावेगा यानी जिस क़दर अभ्यासी को अपनी सुरत को आँख के मुक़ाम से हटाने की ताक़त हासिल हुई है, उसी क़दर वह देह और दुनियाँ से न्यारा होता जाता है, और जो कि जाग्रत में आखों का स्थान सुरत की बैठक का है, और वही सुख दुख के भोग और करम करने का स्थान है, इस वास्ते जिस क़दर कि रूह की धार इस मुक़ाम से अभ्यास की मदद से हटती जावेगी, उसी क़दर दुख सुख कम व्यापेगा, इस तरह प्रारब्ध करम का भोग हलका और कम होता जावेगा ॥

१७—अब बाक़ी रहे संचित कर्म जो कि अभी नक़्श यानी बीज रूप मनाकाश में धरे हैं, और करम कराने या फल देने को आइन्दा तइयार होंगे, सो यह करम जैसा कि अभ्यासी की सुरत मनाकाश को छेद कर ऊँचे को चढ़ती जावेगी, रास्ते में गुनावन और ख़्याल रूप पेश होकर, थोड़ी देर में अपना भोग और फल देकर नष्ट होते जावेंगे, यानी जो अभ्यास शौक़ के साथ दुरुस्त बनपड़ा तो अभ्यासी की सुरत कुछ अर्से में मनाकाश के पार हो जावेगी, और संचित करमों का दफ़्तर साफ़ हो जावेगा ॥

१८—इस तरह राधास्वामी मत के अभ्यासी के कुल्ल करम एक या दो जनम में कट सक्ते हैं, और जो ज़रा, शौक़ और अभ्यास सुस्त रहा, और संसार के भोगों की बासना थोड़ी मन में धरी रही तो तीन जनम में ज़रूर सफ़ाई हो जावेगी, और सुरत घट में ऊँचे देश में चढ़ कर शब्द और स्वरूप का रस और आनन्द लेवेगी और तब निर्मल प्रेम और उस के साथ अभ्यास भी दिन २ बढ़ता जावेगा ॥

दुनिया के ख़यालों और तरङ्गों को, परमार्थी चिन्तवन और उमङ्ग के साथ बदलना चाहिये, तब थोड़ा बहुत रस और आनन्द अन्तर में मिलेगा ॥

१९—अब समझना चाहिये कि जितने करम आदमी बाहर करता है, प्रथम वह अंतर मैं ख़्यालरूप पैदा होते हैँ, और वही ख़्याल तरंग या धाररूप होकर इन्द्री के मुक़ाम पर अपने भोग का रस मन को देते हैँ, और मन वक़्त उठने ख़्याल या तरंग के, उसी तरंग और उसके भोग और रस का थोड़ा बहुत रूप हो जाता है, और दूसरी बात या काम की उस वक़्त उसको कुछ सुध नहीँ रहती, और जब कोई उसकी तरंग के बिस्तार और उसके भोग के रस लेने मैँ बिघन डाले, वह उस वक़्त बहुत बुरा और दुश्मन नज़राई देता है, और जो मदद देवे वह प्यारा और मित्र ख़्याल किया जाता है। यह हालत कुल्ल जीवौँ पर दुनियाँ मैँ रोज़मर्रा बर्त रही है, लेकिन इसकी काररवाई अंतर मैँ इस तरह जल्द और सिलसिलेवार होती है कि किसी को उसको ख़बर भी नहीँ पड़ती है॥

२०—दुनियाँ मैँ जब जीव को किसी भोग का रस मिलता है तो फिर बार बार उसी रस के प्राप्ती को चाह उठाकर जतन करता है, और जो इत्तफ़ाक़ से जतन करके भी वह भोग प्राप्त न होवे, तो उसका ख़्याल उठाकर और गुनावन करके थोड़ा बहुत रस, धार के उठ कर इन्द्री घाट तक आने का लेता है॥

२१—अब जो कोई सच्चा शौक़ीन परमार्थ का है उसको चाहिये, कि अपने मन और सुरत की धार को नौ द्वार यानी इन्द्रियों के मुक़ाम से हटाकर दसवें द्वार की तरफ़ जो मस्तक में है (और जिस द्वारे से सुरत की धार पिंड में आकर नेत्रों में ठहरी है) संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ शब्द और स्वरूप के आसरे उल्टाना शुरू करे। यानी पहिले परमार्थी रस लेने का ख़्याल मन में उठाकर जो जुगत कि बताई गई है उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास में बैठे। तब उसके ख़्याल के मुवाफ़िक़ जैसा वह तेज़ और मज़बूत होगा, मन के अस्थान से धार उठकर ऊँचे की तरफ़ रवाँ होगी, और जिस क़दर कि वह चलकर रास्ते के स्थान पर ठहरेगी, या उसी तरफ़ की गुनावन करती रहेगी, उसी क़दर उस धार के ऊँचे देश के चेतन्य से मिलने का रस आवेगा॥

२२—यह रस बहुत निर्मल और साफ़ है और थोड़ी सी तवज्जह अंतर में करने से मिल सक्ता है। जब इसकी थोड़ी बहुत कैफ़ियत मालूम होगी, यानी मन को कुछ मज़ा आवेगा और उसके नशे और सरूर का रस मालूम पड़ेगा, तब बार बार उसी रस के लेने के इरादे से अभ्यास करेगा। और फिर यही हालत

बढ़ती जावेगी यानी शौक़ और प्रेम दिन २ तरक्की करता जावेगा ॥

२३—इसवास्ते हर एक सच्चे परमार्थी को मुनासिब है, कि जब जब फ़ुर्सत और मौक़ा मिले, तब सच्ची तरंग अंतर में परमार्थी रस लेने की उठाकर अभ्यास शुरू करे, और जैसे दुनियाँ के कामों में जब किसी काम का ख़्याल करता है, तो उस वक़्त उसी का रूप हो जाता है, और दूसरी बात की सुध नहीं रहती है, इसी तरह अभ्यास के वक़्त भी सिर्फ़ परमार्थी ख़्याल को पक्का करके भजन या ध्यान करे और किसी दूसरे काम या बात का जहाँ तक मुमकिन हो ख़्याल न लावे, तो ज़रूर थोड़ा बहुत रस अभ्यास में मिलेगा, और फिर उसका शौक़ आहिस्ता २ बढ़ता जावेगा ॥

२४—सिवाय अभ्यास के वक़्त के और वक़्तों में भी चार पाँच मिनट या ज़्यादह अपने चित्त को मुक़ाम और स्वरूप या शब्द का अंतर में ख़्याल करके वहाँ जोड़ता रहे, तो इतनी ही देर में कुछ रस मिलेगा और यही काररवाई जब जब ख़्याल आ जावे कई बार दिन और रात में करे, और उससे फ़ायदा उठावे यानी रस लेवे, तब थोड़ी बहुत ख़बर अंतर के आनन्द की पड़ेगी और उसका शौक़ बढ़ेगा ॥

२५—अब ऊपर कही हुई काररवाई और मामूली अभ्यास से कुछ कुछ रस मिलेगा, और राधास्वामी दयाल की दया और कुदरत थोड़ी बहुत नज़र आवेगी तब किसी कदर प्रेम उनके चरनों में पैदा होगा, और दर्शनों का शौक़ बढ़ेगा, और फिर अभ्यास भी ज़्यादा दुरुस्ती से बन पड़ेगा, और रफ़्ता २ उसके रस और आनन्द का इस क़दर आधार हो जावेगा, कि दिन रात में बग़ैर दो चार बार अभ्यास का रस लेने के चैन नहीं आवेगा और बिरह और शौक़ ज़्यादा होता जावेगा ॥

२६—ऐसी करनी से दिन २ मेहर और दया भी बढ़ती जावेगी, और उसके साथ प्रेम और करनी भी बढ़ती जावेगी और रफ़्ता २ एक दिन काम पूरा बन जावेगा ॥

दुनियावी ख़ियालों की क़िसमें और उनके हटाने की ज़रूरत वास्ते सफ़ाई अंतर और दूर करने दुई और कपट के कि जो परमार्थ में ज़्यादा बिघन कारक हैं ॥

२७—अब मालूम करना चाहिये कि ऐसी करनी या अभ्यास कि जिसका ज़िकर ऊपर हुआ दुरुस्ती से कैसे बन सक्ता है, यानी जिस वक्त कि परमार्थी कार-रवाई का ख़्याल उठे, उस वक्त किसी और ख़्याल या बात की तरंग मन में नहीं उठाना चाहिये, तो उस परमार्थी ख़्याल का रूप दुरुस्त बनेगा, यानी धार दसवें द्वार की तरफ़ उठ कर रवाँ होगी और जो दूसरी क़िस्म की तरंगें उस वक्त पैदा होवेंगी तो अनेक धार पैदा होकर बाहर या नीचे की तरफ़ जारी हो जावेंगी, और उस परमार्थी धार का रूप बिगड़ जावेगा, और इस सबब से उस का कुछ रस नहीं आवेगा क्योंकि मन दूसरी धारों में लिपट कर उन्हीं का रूप बन जावेगा, और उन्हीं का रस लेवेगा ॥

२८—इस वास्ते सच्चे परमार्थी को चाहिये कि जितने ख़ियालात ग़ैरों के ताल्लुक़ के हैं और या अपनी पिछली ज़िन्दगी के कामों से ताल्लुक़ रखते हैं, जहाँ तक मुमकिन होवे बिल्कुल अपने मन से भुलादेवे और वक्त अभ्यास के ख़ास कर और दूसरे वक्तों में भी ऐसी अहतियात की आदत डाले, कि उस क़िस्म के ख़्यालों को अपने मन में न उठने देवे और जो पैदा होवें तो उनको जल्द हटावे ॥

२९—दूसरी क़िसम के ख़्याल जो मन में पैदा होते हैं, वह मन और इन्द्रियों के भोगों और दुनियाँ की मान बड़ाई और नामवरी के हैं। इनकी निसबत भी वक़्त भजन के ख़ास कर, और दूसरे वक़्तों में भी वैसी ही अहतियात ज़रूर है, कि फ़ज़ूल तरंगें न उठने पावें। जिस क़दर कि इस शख़्स के घर गृहस्त और देह के कारोबार और रोज़गार के ताल्लुक़ ज़रूरी ख़्याल हैं, उनके उठाने और उनकी काररवाई जारी करने में मुक़र्ररा वक़्तों पर कुछ हर्ज नहीं होगा, लेकिन इस क़िसम की तरंगें फ़ज़ूल और बे ज़रूर और बे वक़्त उठाना मुनासिब नहीं है, और जब वे ज़ाहर होवें बल्कि जब उनकी हिलोर उठे, उसी वक़्त से उनके रोकने और हटाने की मन को आदत डालना चाहिये, ताकि भजन और ध्यान और बानी के पाठ के वक़्त वे ज़ोर न करने पावें॥

३०—तीसरी क़िसम के ख़्याल वे हैं, कि जो ब सबब ईर्षा या बैर और विरोध, या लड़ाई और झगड़े या अपनी या दूसरे की हक़्क़ तल्फ़ी की वजह से पैदा होवें। यह ख़्याल अक्सर झूँझल और गुस्से और गरमी के भरे हुए होते हैं, और जिस वक़्त कि यह उठते हैं निहायत तकलीफ़ ख़्याल करने वाले को देते हैं,

और उस के सुरत और मन को बिखेर देते हैं और फैला देते हैं कि फिर वह उस वक्त, क़ाबिल परमार्थी बल्कि दुनियाँ की काररवाई के भी (जब तक कि ठंढा न होवे) नहीं रहता। परमार्थी शख़्श को इस क़िसम के ख्यालों से बचना बहुत ज़रूर है, नहीं तो उसका नुक़सान होगा और जहाँतक बने किसी से झगड़ा या तकरार न करना, और थोड़ी तकलीफ़ और नुक़सान की एवज़ में बदला लेने का इरादा न करना, और हर एक की दुनियाँ की तरक्क़ी को मालिक की मौज से होना समझ कर ईर्षा और बिरोध न करना चाहिये। और जिस किसी से पुरानी नामुवाफ़क़त या अदावत चली आती है उसका ख्याल अपने दिल से निकाल कर जो मुमकिन होवे और मुनासिब मालूम पड़े, तो आपस में मेल कर लेना बेहतर होगा॥

३१—चौथी क़िसम के ख़ियालात वे हैं, कि जो एक तरंग के अंग २ से अनेक और बे सिलसिले ख़ुद ब ख़ुद और बग़ैर इरादे इस शख़्स के पैदा होकर अर्से तक मन को अपने चक्कर में डाल कर घुमाते हैं। इनका कोई ख़ास स्वरूप नहीं है और न उनसे कोई ख़ास मतलब निकलता है, और न किसी तरह

का रस मिलता है, मुफ़्त वक्त बरबाद जाता है, और मन की ऐसी काररवाई बिल्कुल बेफ़ायदा होती है। ऐसी तरंगों के उठते ही रोकने और हटाने की आदत डालना बहुत ज़रूर है, नहीं तो जो उनकी धार एक बार जारी होगई, तो फिर ख़बर नहीं कि कितनी देर तक मन उनमें भरमता रहेगा, और उस वक्त इस शख़्स को होश भी नहीं रहता कि मैं क्या कररहा हूँ ॥

३२—इस चौथी क़िस्म की तरंगों का हाल बहुत कम ख़्याल करने वाले को मालूम पड़ता है। जैसे जब पाँच चार आदमी एक जगह बैठ कर बात चीत करने लगे, तो उस वक्त एक शख़्स की बात के अंग २ यानी लफ़्ज़ लफ़्ज़ से हर एक शख़्स अपने हाल और तबीअत और तजर्बे के मुवाफ़िक़ एक एक नई बात याद करके कहना शुरू कर देता है, और फिर इसी तरह उसकी बात के लफ़्ज़ों से और नई बातें पैदा होती चली जाती हैं, यहाँ तक कि घंटे गुज़र जावें और बातें ख़तम न होवें, और कोई भी यह नहीं कह सक्ता कि कौन सी बात पहिले शुरू हुई, और कैसे २ उससे नई बातें पैदा होकर सिल्सिला बढ़ता चलागया। ऐसे ही मन अंतर में एक ख़्याल के अंग से अनेक ख़्याल और बातें पैदा करके, उनके सिल्सिले

को बे इरादा और बे मतलब बेहोश आदमी की तरह से (जो कि बे सरोपा गुफ़्तगू करता है) बढ़ाता चला जाता है, और आप इससे कि मैं क्या कर रहा हूँ बे ख़बर रहता है ॥

३३—पाँचवीं क़िसम की तरंगें वह हैं जिनको मनोराज कहते हैं, यानी उसमें मन अनेक तरह की ख़्वाहिशें मान और बड़ाई और हकूमत और भोग और बिलास, और जमा करने अनेक तरह के सामान और तरक़्क़ी कुटम्ब और परवार वग़ैरह २ के उठाकर, अपनी चाह के मुवाफ़िक़ उनको अपने ख़्याल ही में पूरा करके उनका रस लेता है। और उस वक़्त हर एक क़िसम की हालत जो कि उस सामान वग़ैरह के हासिल होने पर पैदा होती, उस ख़्याल करने वाले शख़्स पर ज्यों की त्यों गुज़रती है, और ऐसी कैफ़ियत ज़ाहिर होती है, कि ख़्याल करने वाले का ज्यों का त्यों रूप, उसके ख़्याल के मुआफ़िक़ बन जाता है, और मन उस ख़्याली सामान का भोग पूरा करके रस लेता है और मगन होता है। यह एक अजीब हालत नशे और सरूर की है, कि जब तब हर एक शख़्श के अंतर में पैदा होती रहती है, और जब यह भजन के वक़्त पैदा होवेगी, तो बिल्कुल अभ्यास का होश भी नहीं

रहेगा और जब घंटे दो घंटे बाद होश आवेगा, तब यह भी ख़बर न होगी, कि इस वक्त मैंने भजन किया कि मनोराज करता रहा ॥

३४–प्रेमी अभ्यासी को मुनासिब और लाज़िम है, कि पहली और तीसरी और चौथी और पाँचवीं क़िसम की तरंगें को, जहाँ तक मुमकिन होवे बिल्कुल न उठने देवे, बल्कि उनका बीजा भी अपने मन से आहिस्ता २ निकाल देवे। और दूसरी क़िसम की तरंगें ज़रूरत के मुवाफ़िक़ और मुनासिब तौर पर उठावे, और जिस क़दर बने जल्द उनकी काररवाई करके फ़ारिग़ हो जावे, तब मन और सुरत निरबंध और हलके होकर अभ्यास में दुरुस्ती के साथ लगेंगे और अंतर में रस और आनंद भी मिलेगा। और जब तक फ़ज़ूल और बेफ़ायदा तरंगें नहीं हटाई जावेंगी तब तक मन और उसके साथ सुरत नीचे और बाहरमुखी धारों के साथ लिपटे और अटके रहेंगे और न तो सिमटेंगे और न दसवें द्वार की तरफ़ सरकेंगे, और जो हिदायत कि अभ्यास की निसबत की गई है, उसकी काररवाई जैसा कि चाहिये दुरुस्त नहीं बन पड़ेगी, और न उसमें जल्द तरक़्क़ी होगी ॥

३५—सच्चे परमार्थी को इस बात की भी अहतियात रखनी चाहिये, कि बे मतलब और बे ज़रूरत बात चीत में किसी की बुराई भलाई यानी निंद्या स्तुती न करे, और न दूसरे की ज़बान से जहाँतक मुमकिन होवे सुने, बल्कि जब कभी ऐसा इत्तफ़ाक़ पेश आवे तो दूसरों की बुराई भलाई देखकर या सुनकर अपने मन को नसीहत करे, कि उसी क़िसम की बुराई की बातों से बचना इख़्तियार करे, और भलाई की बातों को अपने वास्ते नमूना समझ कर उनके मुवाफ़िक़ आप भी काररवाई करे ॥

३६—ऐसे ख़ियालों का जिनका ज़िकर ऊपर लिखा गया, मन में जमा होने और दौरा करने का नाम मलीनता और चंचलता है, और जब तक यह बिकार दूर न होंगे या कम न होते जावेंगे, तब तक सफ़ाई का आना और भजन का दुरुस्ती से बनना मुशकिल है ॥

३७—जो जो ख़्याल कि मन में ऊपर की क़िसमों के पैदा होते हैं, असल में यही सूक्षम करम और भरम हैं, जब उनकी कारवाई बाहर की जाती है, तब उन करम और भरम का रूप बाहर बनता है और हर एक शख़्स उनको देखता है, लेकिन तबतक कि वह ख़्याल रूप मन में धरे हैं, चाहे वे शुभ या नेक हैं,

और चाहे अशुभ या बद हैं, दूसरा कोई उनसे वाक़िफ़ नहीं हो सक्ता, अलबत्ता मालिक अंतरजामी उनको देखता है, और जो शख़्स ख़्याल करने वाला होशियार है, तो वह अपने मनकी हालत को आप जान सक्ता है ॥

३८—इससे ज़ाहर है कि किसी आदमी के असली ख़वास और चाल चलन और मन की हालत से कोई शख़्स वाक़िफ़ नहीं हो सक्ता, जब तक कि उसके ख़्यालों का स्वरूप बाहर प्रघट न होवे । यह हाल सही सही उस वक़्त मालूम हो सक्ता है, कि जब उससे किसी को काम पड़े या किसी क़िसम के ब्योहार का बर्ताव पेश आवे, उस वक़्त ख़बर पड़ती है कि फ़लाना आदमी असल में सच्चा है या झूठा और नेक है या बद ॥

३९—ज़ाहरी काररवाई और चाल चलन और ब्योहार वग़ैरह से, किसी शख़्स का असली हाल पूरा २ सही नहीं मालूम हो सक्ता, क्योंकि ब सबब ख़ौफ़ हाकिम और उसके क़ानून के, और भी ख़ौफ़ और शरम बिरादरी और दोस्त आशनाओं और पड़ोसियों के, और ख़ौफ़ नुक़सान रोज़गार और पेशे के, आदमी के बहुत से असली ख़वास और ख़सलत छिपे रहते

हैं, लेकिन जब उसको मौक़ा मिले और किसी क़िस्म का ख़ौफ़ ज़्यादा न मालूम पड़े, तब वह अपनी ज़ाहरी काररवाई के बिल्कुल बरख़िलाफ़ बर्तने को तइयार हो जाता है या बर्तावा करने लगता है, तब ख़बर पड़ती है कि अंदरून उसका कैसा है ॥

४०-इस वास्ते पूरा २ एतबार सब तरह की कार-रवाई और ब्योहार में उस शख़्स का हो सक्ता है, कि जिसके दिल में ख़ौफ़ अपने सच्चे कुल्ल मालिक का, यानी उसकी अप्रसन्नता और अपने परमार्थी नुक़-सान का बसा हुआ है, वह हर वक़्त और हर हालत में और हर एक से सच्चा बर्तेगा, और उसका अंतर और बाहर यकसाँ होगा। और जो कि दुनियाँ के ख़ौफ़ों के सबब से, थोड़ी बहुत दुरुस्ती के साथ अपना ज़ाहर बनाये हुये रखते हैं, उनका वक़्त कम होने उन ख़ौफ़ों के पूरा ऐतबार और भरोसा नहीं किया जा सक्ता है, क्योंकि उस वक़्त वे अपने अंदरूनी ख़िया-लात के बमूजब बे धड़क और बे ख़ौफ़ बर्तने को तइयार हो जावेंगे ॥

४१-सच्चे परमार्थी को अपने मन की चाल चलन और उसके ख़्वासों को अपने अंतरी ख़िय़ालात और तरंगों से जाँचना चाहिये, और जब तक कि अंतर

में सफ़ाई न होवे, और सच्चे मालिक और सतगुरु का ख़ौफ़ दिल में पैदा न होवे, और परमार्थी नुक़सान के बचाने को पक्ष मन में न आवे, तब तक अपने तईं गुनहगार और बिकारों से भरा हुआ समझ कर जतन उनके दूर करने का जैसा कि संतों ने फ़रमाया है करता रहे, और जब तब चरनों में राधास्वामी दयाल और सतगुर के प्रार्थना और फ़रियाद भी करता रहे। उनकी मेहर और दया से आहिस्ता आहिस्ता सफ़ाई होती जावेगी, और उसी क़दर भजन का रस भी मिलता जावेगा, कि जिस्से शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा॥

४२-इसमें कुछ शक नहीं कि बग़ैर राधास्वामी दयाल की दया के, जीव की ताक़त नहीं है कि अपने बल से यह काम कर सके, लेकिन जो वह बचन सुनकर और समझ कर सच्चा इरादा इस बात का करेगा, कि बिकारों को दूर करके और प्रेम की दौलत हासिल करके, एक दिन राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंचकर, अमर और परम आनन्द को प्राप्त होऊँ, और जो जुगत कि राधास्वामी दयाल ने फ़रमाई है, उसकी काररवाई और अभ्यास थोड़ी बहुत प्रीत और प्रतीत के साथ शुरू करेगा, और अपने मन और

इन्द्रियों की थोड़ी बहुत सम्हाल और निगहबानी शुरू कर देगा तो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल, अपनी दया से उसको मदद देते जावेंगे, यानी आहिस्ता २ उसका प्रेम बढ़ाते जावेंगे, और एक दिन निर्मल करके अपने चरनों में बासा देवेंगे ॥

जिस क़दर कि प्रेम राधास्वामी दयाल के चरनों का बढ़ता जावेगा, उसी क़दर मन और सुरत सिमट कर अंतर में चढ़ते जावेंगे, और बिकारी अंग और जितने कि फ़ज़ूल ख्याल और तरंगें हैं, वह सहज में आपही झड़ते जावेंगे, और दिन २ सफ़ाई होती जावेगी और एक दिन काम पूरा बन जावेगा ॥

॥ बचन २० ॥

बर्णन भूल और भरम और निबलता जीव का और यह कि बिना मेहर और दया कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के और अभ्यास उस करनी के कि जो वे बतावें, इसका उलट कर निज घर में पहुँचना यानी सच्चा उद्धार मुमकिन नहीं है ॥

१—जीव को इस देश मैं आये हुए बहुत अर्सा गुज़र गया, और बहुत से जनम इसनें धारन किये, और अनेक क़िसम के संग और सोहबत मैं रहकर, तरह २ के ख़वास और स्वभाव इसके मन मैं पैदा हो गए, यहाँतक कि अपने निज मालिक सत्तपुर्ष राधा-स्वामी दयाल को जिनकी यह अंस है, और निज धाम को जहाँ का यह असल मैं बासी है, बिल्कुल भूल गया, और इसी देश को अपना वतन और इसी देह को अपना स्वरूप, और यहाँ के संग सोहबत को अपना प्यारा संग समझ कर इनही मैं बर्तने लगा, और यहाँ ही के भोग बिलास को अपने आनन्द और सरूर का वसीला जानकर उनके हासिल करने के लिये मिह-नत और कोशिश करता है, और जब वह प्राप्त होवैं तो उन मैं मगन होकर बर्तता है, और आम तौर पर सिवाय दुनियाँ और उसके सामान के बिस्तार और तरक़्क़ी के, और कोई ख़्वाहश ज़ियर दिल मैं नहीं लाता है ॥

२—इस क़दर उतार सुरत का पिंड मैं नीचे की तरफ़ हो गया है, और इस क़दर तमोगुन यानी ग़फ़लत भूल और भरम ने इसको घेर लिया है, कि जो कोई निज घर का पता जनावे या उसकी महिमाँ सुनावे,

तो इसकी तवज्जह ऐसे बचनों की तरफ़ बहुत कम आती है; और मन में शक और शुभे इस कसरत से भरे हुए हैं, कि जब तक कोई अर्सा यह सच्चे भेदी और निज घर के पहुंचें हुए, या पहुंचने के जतन करने वालों का संग न करे, तब तक वे भरम और संदेह दूर नहीं हो सक्ते, और सच्चों के बचन की प्रतीत नहीं आसक्ती है ॥

३—एक भारी सबब प्रतीत न आने का यह भी है; कि इस दुनियाँ में बहुत से पाखंडी और रोज़गारी लोगों ने सच्चों की नक़ल करके, अपने तई पुजवाने या अपनी मान बड़ाई और धन पैदा करने के लिये दूकान खोल कर, जीवों को अनेक तरह के धोखे दिये, और उनका धन जिस क़दर बन सका खींचा, और तरह २ के बचन परमार्थी अपनी बुद्धी और चतुराई से गढ़ कर और कुछ इशारा सच्चों के बचन का लेकर अनेक तरह की पूजा जारी करी और अनेक इष्ट जीवों को बंधवाये, कि जिसके सबब से परमार्थ में अनेक गिरोह और फ़िरक़े होगये, और उनका आपस में मेल और इत्तफ़ाक़ न रहा, बल्कि लड़ाई और झगड़े और दुश्मनी आपस में इस क़दर बढ़-गई, कि एक दूसरे का खंडन करने लगा, और

हर एक गिरोह अपने तईं सच्चा और पूरा, और दूसरों को झूठा और ओछा समझने और कहने लगा ॥

४—प्रथम तो जीवों को दुनियाँ के देह और रोज़गार के कारोबार से फ़ुर्सत बहुत कम मिलती है और जो थोड़ा वक्त फ़ुर्सत का मिलता है, वह भोग बिलास और बेफ़ायदा बात चीत और कामों और सैर और तमाशे वग़ैरा में ख़र्च किया जाता है । इस वजह से किसी की तवज्जह परमार्थ और उसकी तहक़ीक़ात की तरफ़ नहीं आती है, और जो किसी को थोड़ा बहुत शौक़ परमार्थ और उसके खोज का पैदा भी हुआ, तो उसको बड़ी हैरानी और परेशानी होती है, कि क्या करूँ और किसके बचन मानूँ, क्योंकि हरएक जुदे जुदे तौर और तरीक़े से परमार्थ का हाल बयान करता है, और जुदी तरकीब वास्ते हासिल करने मोक्ष या उद्धार के बताता है, और अपना इष्ट भी जुदा जुदा मुक़र्रर किया है ॥

५—ज़ाहर है कि जो कुल्ल परमार्थ के खोज करने वालों को, सच्चे मालिक का पता और भेद मिला होता तो सब उसी एक का इष्ट बाँधते, और उससे मिलने का एकही रस्ता और एकही जुगत बयान करते, और आपस में उनके मेल और इत्तफ़ाक़ रहता

और बरखिलाफी और ईर्षा और बिरोध न होता, लेकिन जबकि वह जुदा २ इष्ट करार देते हैं, और तरीका भी जुदा २ बयान करते हैं, और कोई मालिक की मौजूदगी का यकीन करते हैं, और कोई इनकार करते हैं, तो इससे साफ साबित है कि यह सब सच्चे कुल्ल मालिक से बेखबर हैं, और जो कुछ कि यह बातें कहते हैं वह या तो झूठी और बनावट की हैं, या ओछी और अधूरी हैं, फिर ऐसी सूरत में सच्चे खोजी को सच्ची और पूरी बात का दरियाफ्त करना निहायत मुश्किल बल्कि नामुमकिन होगया ॥

६—मालूम होवे कि सच्चे कुल्ल मालिक का भेद और पता और मिलने की जुगत, सिवाय उसके निज भेदी के और कोई नहीं जान सक्ता, या तो वह अपना भेद आप नरस्वरूप धर कर कहे या अपने निज भेदी जो संत सतगुरु हैं उनको हुकम देवे, कि वे जगत में प्रगट होकर बर्णन करें। इस सबब से यह भेद अब तक गुप्त रहा ॥

७:—जितने मत कि दुनियाँ में जारी हैं वह या तो ब्रह्म अथवा परमेश्वर ने आप जगत में औतार लेकर प्रगट किए, और हद्द उनकी ब्रह्म पद तक रही, और या उसकी (परमेश्वर की) अंस और कलाओं ने,

जैसे ऋषीश्वर और मुनीश्वर और जोगी और जोगीश्वर और पीर पैगम्बर औलिया वग़ैरा ने जारी किये, पर सच्चे कुल्ल मालिक का भेद और पते का ज़िकर भी इन मतों में नहीं है ॥

८—सिवाय इसके जो जुगती कि इन मतों में, वास्ते उद्धार जीव के मिस्ल प्राणायाम वग़ैरा बयान की है, वह और उसके संजम निहायत कठिन और ख़तरनाक हैं, और हर एक से, ख़ास कर ग्रहस्तियों से, उसकी काररवाई मुश्किल और नामुमकिन है ॥

९—और जोकि इन सब मतों में बैराग और पुरुषार्थ पर ज़्यादा ज़ोर दिया है, और सहारा और आसरा किसी का नहीं रक्खा है, इस सबब से जीव जो कि इस ज़माने में ख़ास कर निहायत दुखी और निबल हो रहे हैं, और अनेक तरह की चिन्ता और रोग सोग वग़ैरा में गिरफ़्तार रहते हैं, ताक़त उस काररवाई की नहीं रखते, यानी न तो उनसे बैराग की धारना दुरुस्ती से हो सक्ती है, और न वह मिहनत और मशक्क़त अभ्यास और उसके संजमों की सम्हाल वग़ैरा में, जैसा कि चाहिये बन पड़ती है, इस सबब से क्या गृहस्त और क्या बिरक्त थोड़ा बहुत मामूली साधन दृष्टी या नाम के सुमिरन या ध्यान वग़ैरा का

(और वह भी बेठिकाने) करके रह जाते हैं, और बाक़ी पोथियाँ पढ़ते या सुनाते हैं, और ज़बानी महात्माओं के बचन का अपनी बुद्धि और समझ के अनुसार, निरणय और बिचार करते रहते हैं ॥

१०—और बहुत से जीव तो ज़ाहरी पूजा और पाठ और संजम वग़ैरा में, मिसूल तीर्थ ब्रत मूर्त और मंदिर और नाम के ज़बानी सुमिरन और पोथियों के पाठ वग़ैरा में लग गये उनको उस नक़ल के असल की भी जिसकी पूजा उन्हों ने इख़्तियार की है ख़बर नहीं है, और इस पूजा से मुराद औतार और देवताओं के स्वरूप से है, जो कि पाषान और धात के बनाकर मंदिरों में स्थापन किये हैं, या और कोई निशान पिछले महात्माओं का किसी ख़ास जगह रक्खा है, और उसका दर्शन साथ ताज़ीम और अदब और भाव और प्यार के करते हैं ॥

११—मालूम होवे कि इस कलयुग में मुवाफ़िक़ हुकम कुल्ल मालिक के, संत भी नर रूप धर कर इस दुनियाँ में प्रगट हुये, और उन्हौंने सत्तपुर्ष का भेद जो ब्रह्म और पारब्रह्म के परे है सुनाया, और जुगत उसके धाम यानी सत्यलोक में पहुंचने की सुरत शब्द मारग की कमाई से समझाई, लेकिन जो कि कुल्ल

जीव परमेश्वर या देवताओं या महात्माओं के इष्ट में बँधे हुये थे, और बाहरमुखी पूजा मूर्त और तीर्थ और निशान वग़ैरा की अललअमूम जारी की, इस सबब से संतों के बचन को बहुत कम जीवों ने माना, और जब संत और उनके जानशीन गुप्त हो गए, तब वह भेद और तरीक़ा अभ्यास का भी गुप्त हो गया ॥

१२—इस तरह जब २ और जहाँ २ संत या उनके साध प्रघट हुये, तो उनके और उनके अभ्यासी जानशीनों के वक़्त में, काररवाई सतसंग और अभ्यास वग़ैरा की जारी रही, लेकिन जब अभ्यासी गुप्त हो गये तब वह भेद भी गुप्त हो गया, और जो लोग कि पीछे उस मत में शामिल हुये, वह कोई न कोई बाहर मुखी पूजा या कारखाई और पोथियों के पढ़ने पढ़ाने में मिसूल और मतों के जीवों के अटक रहे ॥

१३—जबकि ऐसी हालत जगत की देखी कि कोई भी सच्चे मालिक के भेद से वाक़िफ़ नहीं, और न उसके धाम में पहुंचने का रास्ता और जुगत चलने की जानता है, और सच्चे उद्धार का रास्ता बिल्कुल बंद पाया, तब कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल, आप संत सतगुरु रूप धर कर जगत में प्रगट हुये, और अपना निज भेद और निज धाम का हाल, जो कि

ब्रह्म पारब्रह्म और सत्तनाम सत्तपुर्ष के परे हैं, और तरीक़ा अभ्यास सुरतशब्द-जोग का आप बयान फ़रमाया और अभ्यास में ऐसी आसानी कर दी, कि हर कोई गृहस्त और विरक्त और मर्द और औरत उस को सहज तौर से कर सक्ता है ॥

१४—और दूसरे मतों का हाल भी बयान किया, कि जिससे मालूम होवे कि कौन मत कहाँ तक पहुंचा है, और उनके आचारज कहाँ और किसका इष्ट बाँध कर ठहर गये, और क्या तरीक़ा अभ्यास का उन्हौंने जारी किया ॥

१५—और एक ख़ास और भारी दया जीवों पर यह फ़रमाई, कि जो जीव राधास्वामी मत को क़बूल करके और उनके चरनों का इष्ट बाँध कर जिस क़दर हो सके अभ्यास सुरत शब्द योग का शुरू करेगा, तो वे आप उसके सहाई होवेंगे, और अपनी दया का बल देकर जिस क़दर करनी मुनासिब है उससे करा कर आप उसकी सुरत को चढ़ा कर धुर मुक़ाम में पहुंचावेंगे, और जो मुनासिब होगा तो दो या तीन या चार जनम में उसका काम पूरा बना देंगे, क्योंकि जीव निहायत निबल और बारम्बार भूलनहार है, और अपने बल से कोई काररवाई, जैसे संसार से वैराग और चरनों में अनुराग नहीं, कर सक्ता ॥

१६—दूसरी ख़ास और गहरी दया यह फ़रमाई कि अभ्यास को ऐसा आसान कर दिया, कि औरत और मर्द बग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के, आसानी के साथ थोड़ा बहुत कर सक्ते हैं, और गृहस्त में बैठे हुये अपनी सच्ची मुक्ती होती हुई, आहिस्ता आहिस्ता इसी ज़िन्दगी में देख कर चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ा सक्ते हैं, कि जो एक दिन निज धाम में पहुंचा कर छोड़ेगी ॥

१७—ऐसी भारी दया और मेहर का कौन शुकर अदा कर सक्ता है, और असल में सच्ची और पूरी दया इसी को कहते हैं, कि ग़रीब और लाचार दुखियाओं की घर बैठे ख़बर ली जावे, यानी कुल्ल मालिक आप इस लोक में आकर या अपने निज भेदी और प्रेमी को भेज कर और अपनी दया का बल देकर जीवों से थोड़ी सी मुनासिब और ज़रूरी करनी करावें, और फिर पूरा फल बतौर दान और इनाम के बख़्शें, यानी सहज २ भक्ती और अभ्यास कराकर अपने लोक में बासा देकर जनम मरन और काल और करम के कष्ट और कलेश से बचा लेवें ।

१८—ऐसी दया अब तक किसी ने नहीं करी और न कर सक्ता है, और यह सच्च भी है कि सिवाय कुल्ल

मालिक राधास्वामी दयाल के ऐसी दया कौन कर सक्ता है, कि थोड़ी सी प्रीत और प्रतीत और सेवा के एवज़ में, जीव के पूरे उद्धार का सिलसिला जारी कर देवे। यह काम कुल्ल मालिक आप कर सक्ता है, या उसकी निज अंस जिसको वह इख़्तियार देवे कर सक्ती है, और दूसरे की ताक़त नहीं कि जीवों को काल और करम और माया के जाल से निकाल कर, उसके घेरे के पार निज देश में पहुंचावे॥

१९—काल पुर्ष यानी ब्रह्म और परमेश्वर और ख़ुदा माया देश की कुल्ल रचना का मालिक है, और उस को मंज़ूर भी यही है कि जीवों को अपनी हद्द के पार न जाने देवे। कुल्ल देवता और माया की शक्तियाँ उसके इख़्तियार में हैं, और सब रचना उससे डरती है और उसके हुकम में चल रही है॥

२०—यह काल पुर्ष सिर्फ़ सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल और उनकी अंस संत सतगुर से डरता है, और उन के हुकम में दख़ल नहीं दे सकता, यानी जिन जीवों पर कि उन्होंने अपनी दया की मुहर लगा दी उन को वह रोक नहीं सकता, बल्कि उनको रास्ता ते करने में अपनी हद्द के अंदर मदद देता है॥

२१—अब बिचारो कि जिस किसी को कुल्ल मालिक

राधास्वामी दयाल आप मिले, या उनकी अंस से मेला हुआ, वह किस क़दर बड़भागी है, और जो २ उनकी जैसी तैसी सरन लेकर, सुरत शब्द मारग के अभ्यास में लग गये, वे भी बड़भागी हैं, क्योंकि राधास्वामी मत और उसके अभ्यास के रखवार राधास्वामी दयाल आप हैं, और सरन वालों और जैसी तैसी करनी वालों की रक्षा और ख़बरगीरी अपनी दया से आप करते हैं, और इस दया और रक्षा का हाल राधास्वामी मत वालों को चंद रोज़ के अभ्यास के बाद आप मालूम हो सकता है, और अपना उद्धार होता हुआ इसी ज़िन्दगी में आप देख सकते हैं ॥

२२--असल हाल यह है कि बाहरमुखी पूजा और परमार्थी काररवाई, जैसे तीरथ और बरत और नाम का सुमिरन और ध्यान और पोथियों का पाठ वग़ैरः हर कोई कर सकता है, लेकिन घट में मन और सुरत का ऊँचे देश में आकाश के परे चढ़ाना काम मुश्किल है, और किसी की ताक़त नहीं कि इसको दुरुस्ती के साथ निर्विघ्न कर सके, जब तक कि कुल्ल मालिक और संत सतगुरु या साधगुरू, अपनी दया का बल साथ न देवें, और रास्ते में काल और करम और माया और मन के विघनों से अपनी रक्षा करके न बचावें ॥

२३—यही सबब है कि कुल मतौं के लोग जो दुनियाँ मैं जारी हैं, बाहरमुखी कामौं मैं लग रहे हैं, और बाज़े नाभी या हिरदे या छठे चक्र मैं ध्यान भी करते हैं, लेकिन उनको चढ़ाई का फ़ायदा पिंड मैं भी जैसा चाहिये हासिल नहीं होता, और जो किसी ख़ास मत का सिद्धान्त पद ब्रह्मान्ड मैं भी है, तो वह उसके हाल से बेख़बर हैं, और रास्ते के भेद और चलने की जुगत का तो कुछ ज़िकर ही नहीं, बल्कि सिद्धान्त पद को सर्व व्यापक मान कर चलना चढ़ना फ़ज़ूल बताते हैं, इस वजह से इनमैं से किसी का भी सच्चा और पूरा उद्धार यानी जनम मरन से क़ितई छुटकारा नहीं होता ॥

२४--यह बात सिर्फ़ राधास्वामी मत मैं, जहाँ कुल मालिक आप मददगार है, हासिल हो सक्ती है, क्यौंकि जब तक कुल मालिक आप या संत सतगुरु या साध० गुरू उसके भेजे हुये, इस लोक मैं जीवौं के लेने के वास्ते न आवैं, तब तक कोई जीव पिंड के ऊँचे देश और ब्रह्मांड मैं और इन दोनौं के परे राधास्वामी पद अथवा निर्मल चेतन्य देश मैं जा नहीं सक्ता, और न देह और मन और माया और इच्छा और इन्द्रि-यौं और भोगौं वग़ैरा से पीछा छूट सकता है, क्यौंकि जब संत सतगुरु या साध गुरू प्रगट होंगे, तब वे जीवौं

की प्रीत और सब तरफ़ से हटा कर पहिले अपने चरनों में जोड़ेंगे, और फिर अपने निज रूप यानी चैतन्य शब्द स्वरूप में लगा कर, निज धाम में पहुंचा देंगे ॥

२५—बग़ैर प्रेम के यह रास्ता तै नहीं हो सक्ता है और वह प्रेम राधास्वामी दयाल के चरनों में बग़ैर संत सतगुरु या साध गुरू और उनके प्रेमियों के संग सोहबत के हासिल नहीं हो सक्ता है, और न सच्ची दीनता कुल्ल मालिक और सतगुर के चरनों में आ सक्ती है ॥

२६—ऊपर के बयान से ज़ाहर है कि जीव का सच्चा उद्धार बग़ैर कुल्ल मालिक यानी धुर की दया के मुमकिन नहीं है, यानी जब तक कि संत सतगुरु या साध गुरू (जो कि होनहार संत हैं) नहीं मिलेंगे, तब तक भेद कुल्ल मालिक और रास्ता उस के निज धाम का और तरीक़ा चलने का मालूम न होगा, और रास्ता तै करने में मदद नहीं मिलेगी, और यह संत सतगुरु और साधगुरू कुल्ल मालिक के हुकम से संसार में आते हैं, और सच्चा उपदेश जीवों को देकर उनको निज घर की तरफ़ चलाते हैं, इस वास्ते जब तक कोई जीव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन

न लेवेगा और उनके भेजे हुये संत सतगुरु या साधगुरू से प्रीत नहीं करेगा, तब तक उसके उद्धार की कारवाई शुरू न होवेगी। और जो सच्चे मन से सरन लेकर जैसी तैसी कारवाई यानी अभ्यास सुरत शब्द मारग का शुरू कर देगा, और जहाँ तक बनसके हुकम और आज्ञा के मुवाफ़िक़ अपनी चाल चलन दुरुस्त करता जावेगा, उस को बराबर मदद मिलती जावेगी, और कुल्ल मालिक की मेहर और दया उसको एक दिन दयाल देश में पहुंचा कर छोड़ेगी, चाहे यह काम एक जनम में बने या दो या तीन या चार जनम में, हर जनम में भक्ती और भजन बढ़ते जावेंगे॥

२७—जो कोई कहे कि जब संत सतगुरु या साध गुरू प्रगट होवें, तब कुल्ल जीवों का उद्धार होना चाहिये, सो यह बात इस तौर पर दुरुस्त है, कि जो जीव उनके सनमुख आवेंगे उन पर ज़रूर उनकी दया होगी, और उनके उद्धार का सिलसिला आगे पीछे और अबेर सवेर जारी हो जावेगा, यानी जो अधिकारी जीव हैं वह बहिसाब उत्तम मध्यम निकृष्ट और नीच के, एक दो तीन या चार जनम में अपना काम बनवा लेंगे, और बाक़ी जीवों के घट में दया का बीजा बोदिया जावेगा, और वह उनके पिछले करमों को काट कर आहिस्ता २

अंकुर पैदा करेगा, और फिर वही जीव अधिकारियों के शुमार में आजावेंगे, और उनके पूरे उद्धार का सिलसिला जारी हो जावेगा, यानी उनको हर जनम में संत सतगुर मिलेंगे, और उनकी भक्ती और भजन बढ़ा कर, एक दिन निज धाम में पहुंचा देंगे ॥

२८—संत सतगुर सब एक हैं, उन में आपस में कुछ भेद नहीं है, जब हुकम होता है तब वे जीवों को आम तौर पर उपदेश फ़रमाते हैं, और जब तक ऐसी मौज है सिलसिला सतसंग और उद्धार का जारी रहता है ॥

२९—इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने वक्त में संत सतगुर या साधगुरू का खोज करते रहें, और जब वे भाग से मिल जावें तो उन से, उपदेश लेकर अभ्यास जारी कर दें, और उनके और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते रहें, तो एक दिन उनका काम पूरा बन जावेगा ॥

३०—संत सतगुरु और साधगुरू का निशान यह है, कि वे सुरत शब्द मारग का उपदेश करेंगे, और आप भी शब्द अभ्यासी होंगे, और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल का इष्ट बंधवावेंगे, और अपने बचन सुनाकर करम भरम और संसय दूर करावेंगे, और बाक़ी

पहिचान उनकी सतसंग और उनके मारग के अभ्यास से आवेगी ॥

३१—ख़ुलासा यह कि बग़ैर कुल्ल मालिक की दया के, संत सतगुरु से मेला नहीं होगा, और न उन में भाव आवेगा, और जब विशेष दया होगी तब जीव से सुरत शब्द मारग का अभ्यास बन पड़ेगा, और संत सतगुरु की आज्ञा अनुसार बर्ताव शुरू करेगा, और जब और ज़्यादा दया होगी, तब अंतर में उस को रस और आनन्द मिलना शुरू होगा, और प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ती जावेगी, और इस तरह रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी होती जावेगी, और एक दिन काम पूरा बन जावेगा ॥

३२—लेकिन जो कोई इस बात को सुनकर यह कहे, कि अब हम को कुछ करना ज़रूर नहीं है, जब दया होगी वह आप करालेगी, सो यह कहन और समझ इस क़दर ना दुरुस्त है, कि उस को तलाश करना संत सतगुरु और उनके सतसंग की बहुत ज़रूर है, और जब मिल जावें तब उनके चरनों में प्रेम प्रीत करना और उनसे उपदेश लेकर अभ्यास शुरू कर देना मुनासिब है। मेहर और दया इस काररवाई में भी संग होगी, और बाक़ी जो कुछ करनी दरकार और ज़रूर

होगी, वह भी मेहर और दया करावेगी, क्यौंकि दुनियाँ के कामौं मैं भी आदमी तलाश और मिहनत से बाज़ नहीं आते, और जो कुछ नतीजा उनकी मिहनत का होता है वह प्रारब्ध अनुसार मिलता है, फिर परमार्थ मैं काहिली और सुस्ती और बे परवाही, किसी सूरत मैं जायज़ औ दुरस्त नहीं हो सक्ती, और जो ऐसा करेगा वह ख़ास दया से महरूम रहेगा ॥

२३-अब समझना चाहिये कि करनी और दया संग २ चलैंगी, तब काम पूरा बनेगा, और ज्यौं २ करनी बढ़ती जावेगी, उसीक़दर मेहर और दया भी बढ़ती जावेगी। बिना कुल्ल मालिक और संत सतगुरु की दया के जो करनी की जावेगी, वह सच्चे उद्धार का फल नहीं देगी बल्कि अहंकार पैदा करेगी, और अभ्यासी को काल और माया के जाल मैं अटकावेगी, और फिर आइंदा की तरक्क़ी का रास्ता बंद हो जावेगा, और यह हाल उन लोगौं का है कि जो जुगती दरियाफ़्त करके, स्वतंत्र यानी अपने बल से करनी करना चाहते हैं, और सतगुरु से कुछ तअल्लुक़ रखने की ज़रूरत नहीं समझते ॥

॥ बचन २१ ॥

बर्णन इस बात का कि सच्ची मुक्ती क्या है, और कौन जुगत से और कहाँ पहुँचने पर हासिल हो सक्ती है ॥

१—मुक्ती रूह की रुस्तगारी या नजात या छूटने और बंधन टूटने का नाम है ॥

२—बंधन दो क़िसम के हैं—पहिला तन, मन और इन्द्रियों का, और दूसरा स्त्री पुत्र कुटुम्ब परवार और बिरादरी और धन और माल और भोग बिलास और हकूमत और नामवरी वग़ैरा का ॥

३—पहिली क़िसम का बंधन जो तन मन और इन्द्रियों के साथ कहा गया, उसमें अस्थूल सूक्ष्म और कारन और उससे ऊँचे के दरजे की देह और मन और इन्द्रियाँ शामिल हैं, यानी हर एक दरजे में रूह का बंधन उस दरजे के मसाले की बनी हुई देह के साथ होता चला आया है, और इसी तरह हर एक दरजे यानी मंडल के भोग बिलास और सामान वग़ैरा दूसरी क़िसम के बंधनों में शामिल हैं ॥

४—इन बंधनों से अंतर और बाहर छूटने का नाम मुक्ता कहना चाहिये, जो ऐसी हालत जीते जी न होवे

तो इन बंधनों का ढीले होते जाना वास्ते हासिल होने सच्ची और पूरी मुक्ती के इसी ज़िन्दगी में ज़रूर चाहिये॥

५-जिस तरकीब से कि अंतरी और बाहरी बंधन ढीले होते जावें, उसी का नाम सच्ची और पूरी जुगत, वास्ते हासिल होने सच्चे उद्धार के समझना चाहिये, और वह सुरत शब्द मारग है, और इस समय में सिर्फ़ राधास्वामी मत में उसका अभ्यास जारी है, और किसी मत में उसका भेद और तरीक़ा अभ्यास का पूरा २ और साफ़ तौर पर बिलकुल नहीं पाया जाता है॥

६-अब मालूम होवे कि जहाँ तक माया की हद्द है, वहाँ तक माया के मसाले के ग़िलाफ़ दरजे बदरजे रूह पर चढ़ते चले आये हैं, और जिस ग़िलाफ़ में बैठ कर रूह इस लोक में बज़रिये मन और इन्द्रियों के काररवाई करती है, वह स्थूल देह कहलाती है, और इसी देह के साथ कुल्ल बाहर के बंधन इस दुनियाँ में तअल्लुक़ रखते हैं, सो इनकी मुहब्बत कम होना पहिले दरजे की मुक्ती का शुरू होना है॥

७-अब ग़ौर का मुक़ाम है कि राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सच्ची और पूरी मुक्ती, पिंड और ब्रहमन्ड के परे यानी माया देश के पार संतों के निर्मल चेतन्य देश में पहुंच कर हासिल होगी, और वहीं पहुंच कर सुरत बिदे-

है और बेगिलाफ़ हो जावेगी, और नीचे के देश में किसी न किसी क़िसम के गिलाफ़ और उसी दरजे के मंडल की रचना और भोग बिलास वग़ैरा में सुरत का बंधन रहा आवेगा, और उस बंधन के सबब से दुख सुख और जनम मरन का चक्कर भी जारी रहेगा, इस वास्ते और किसी नीचे के दरजे में चाहे पिंड में होवे, या ब्रहमान्ड में, सच्ची मुक्ती प्राप्त नहीं हो सक्ती है, और जिस किसी ने कि उन दरजों में मुक्ती का होना माना है, उन्हों ने धोखा खाया। जो उन को संतों के देश की ख़बर होती तो रास्ते में न ठहर जाते॥

८—ऊपर लिखा गया है कि सच्ची मुक्ती के हासिल करने की जुगत सिर्फ़ राधास्वामी मत में जारी है, सो इसका भेद समझना चाहिये कि कुल्ल रचना धारों की है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से जो आदि धार प्रगट हुई, वही आदि सुरत यानी रूह की धार है। यह धार रास्ते में किसी क़दर फ़ासले पर ठहरती हुई, और मंडल बाँधकर रचना करती हुई, पिंड में उतर कर दोनों आँखों के पीछे मध्य में ठहरी है, और वहाँ से बाक़ी के चक्रों में ठेका लेती हुई गुदा चक्र तक पहुंची है, और इधर वही सुरत वज़रिये दो धारों के, जोकि दोनों आँखों में तिल के

मुक़ाम पर उतर कर बैठी है, देह और दुनियाँ की काररवाई करती है। अब जबतक कि यह दोनों धारें उलटकर तीसरे तिल मैं न पहुंचे, और वहाँ से एक धार होकर सुरत दरजे बदरजे उन ठेकों को जहाँ कि उतार के वक्त ठहरती आई है पार कर के, अपने निज धाम यानी भंडार मैं न पहुंचे, तब तक सच्चा और पूरा उद्धार या मुक्ती नहीँ हो सक्ती है॥

९—यह चढ़ाई सुरत की मुक़ाम २ पर शब्द के वसीले से हो सक्ती है, और राधास्वामी मत मैं हर एक मुक़ाम के शब्द का पता और भेद जुदा २ बयान किया है, सो सुरत उस शब्द को सुन्ती हुई एक मुक़ाम से दूसरे और दूसरे से तीसरे, और इसी तरह धुर मुक़ाम तक चढ़ती चली जावेगी, और वहाँ पहुंच कर बिसराम करेगी। वही मुक़ाम कुल्ल मालिक का धाम है, और वही निर्मल चेतन्य देश कहलाता है॥

१०—यह काम बग़ैर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया के नहीँ बन सक्ता है, इस वास्ते हरेक सच्चे परमार्थी जीव को चाहिये कि प्रथम खोज संत सतगुरु और उनके सतसंग का करे, और जब वे मिल जावैं तो उनके चरनौं मैं गहरी प्रीत करें, और अंतर और बाहर सतसंग और सेवा

तवज्जह के साथ करके उनको अपने ऊपर मेहरबान और मुतवज्जह करले तब उनकी मेहर और दया से अंतर मैं रास्ता कटना यानी मन और सुरत की चढ़ाई शुरू होगी, और दिन २ रस और आनन्द प्राप्त होकर शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा ॥

११—मालूम होवे कि निर्मल चेतन्य देश मैं माया नहीं है, और वहाँ कुल्ल रचना रूहानी है यानी आनन्द और प्रेम स्वरूप है, और जो कि इस लोक और देह मैं भी जिस क़दर रस और आनन्द और ज्ञान है, वह सुरत चेतन्य की धार के सबब से है, और सुरत उसका ख़ज़ाना है; इस वास्ते जो सुरत चेतन्य का भंडार है, वही प्रेम और आनन्द और ज्ञान का भंडार है । वहाँ दुख सुख और कष्ट और कलेश नहीं है, हमेशा आनन्द ही आनन्द एक रस रहता है ॥

१२—पिंड और ब्रहमान्ड मैं भी जैसे कि माया ऊँचे देश मैं शुद्ध और लतीफ़ होती गई है, आनन्द और प्रेम और ज्ञान दरजे बदरजे ज़्यादा होता गया है, लेकिन बसबब मिलौनी माया के थोड़ी बहुत मलीनता, और माया के मसाले की बनी हुई किसी न किसी क़िसम की देह का संग रहता है, और इसी सबब से थोड़ा बहुत दुख और जनम मरन का कष्ट

भी, चाहे बदेर होवे जारी रहता है, और यही वजह है कि संत फ़रमाते हैं कि इस देश में यानी पिंड और ब्रहमान्ड की हद्द में, सच्चा और पूरा उद्धार और सच्ची मुक्ती नहीं हो सक्ती ॥

१३—और यही सबब है कि वेद मत वाले कहते हैं कि हमेशा की मुक्ती होना मुमकिन नहीं है, अबेर सबेर और बाद परलै या महापरलै के तो ज़रूर आवागवन की काररवाई जारी रहेगी ॥

१४—भक्ती मारग वालों ने चार क़िसम मुक्ती की बयान की हैं, यानी सालोक सामीप सारूप और सायुज्ज पहिली क़िसम में भगवंत के लोक में बासा मिलता है, दूसरी क़िसम में भगवंत के निकट बिश्राम पाता है, तीसरी क़िसम में भगवंत का रूप हो जाता है, और चौथी क़िसम में अपने भगवंत में समा जाता है ॥

१५—लेकिन ज्ञानियों ने भगवंत का अभाव यानी उसके लोक की परलैं होती हुई देख कर, बजाय भक्ती के ज्ञान की मुख्यता रक्खी, और ज्ञान से मतलब यह है, कि अपने उपास्य के लक्ष स्वरूप का जो कि अनाम और अरूप है दर्शन करके अंत को उस में समा जाना, और स्वरूप के स्थान में ब सबब उसके हमेशा क़ायम न रहने के न ठहरना ॥

१६—इसी लक्ष चेतन्य को ज्ञानियों ने शुद्ध ब्रह्म माना पर संत फ़रमाते हैं कि उसके पेट में माया बीज रूप मौजूद थी, लेकिन इन ज्ञानियों को ब सबब न मिलने भेद संतों के देश के नज़र न आई, और इस वास्ते इन का आवागवन भी क़तई नहीं छूटा॥

१७—वेद में जो उपाशना वर्णन करी है वह ब्रह्म-पद यानी परमेश्वर की है, और पीछे करके ब्रह्म के औतार स्वरूप और देवताओं वग़ैरा की जारी हुई, और उसके पीछे सिर्फ़ नक़ल यानी मूर्तों की भक्ती जारी हो गई, और असल का भेद और उसके प्राप्ती की जुगत यानी अंतर अभ्यास बिल्कुल गुप्त हो गया॥

१८—अब जो कोई असल का भेद और उसके प्राप्ती की जुगत बतावे, तो उससे लड़ने और झगड़ने को तइयार होते हैं, और सिर्फ़ मूर्त पूजा ही में मगन और तृप्त हुये नज़र आते हैं, इस मूर्खता और ग़फ़-लत को ख़्याल करो, कि किस क़दर परमार्थी नुक़-सान जीवों का उसके सबब से हो रहा है, यानी जड़ की पूजा करके सब जीव जड़ हो रहे हैं, यानी नीचे की जोनों में उतरते चले जाते हैं॥

१९—जो ब्रह्मपद या उसके औतार स्वरूप की भक्ती अंतर अभ्यास के संग जारी रहती, तो भी किसी क़दर

फ़ायदा जीवौं को हासिल होना, यानी ऊँचे देश (ब्रह्मा-न्ड की हद्द मैं) बासा पाते, और बहुत काल वहाँ सुख भोगते, लेकिन सिर्फ़ मूर्त और तत्तौं की पूजा से, बग़ैर भेद उनके असली स्वरूप और स्थान के जीवौं की करनी मुफ़्त बरबाद जाती है, यानी सिर्फ़ शुभ कर्म का फल मिलता है, और भगवंत के लोक मैं रसाई नहीं होती है ॥

२०—जो भक्ती कि संतौं ने जारी फ़रमाई, वह कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की है, जिसका धाम ऊँचे से ऊँचा पिंड और ब्रह्मान्ड और माया के घेर के पार, निर्मल चेतन्य देश कहलाता है। वहाँ माया की मिलौनी बिल्कुल् नहीं है, इसी सबब से वह देश महा आनन्द और महाप्रेम और महाज्ञान् का भंडार है, और अनन्त और अपार और अगाध और अरूप और अनाम उसकी सिफ़त है, वहाँ पहुंच कर सुरत अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के दर्शनौं का बिलास देखती है, वह देश अजर और अमर है और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल भी अजर और अमर हैं, और वहाँ का सुख और आनंद भी अजर और अमर है, और यह सुरत भी वहाँ प-हुंच कर अमर हो जावेगी ॥

२१—इस वास्ते संतों ने भक्ती और दीनता और प्रेम की मुख्यता रक्खी है, क्योंकि उनका भगवंत कुल्ल मालिक, और उसका धाम और उसकी भक्ती और सेवक सब अमर और अजर हैं, और धुर मुक़ाम में पहुंचने पर सेवक यानी सुरत को इख़्तियार रहता है, कि जब चाहे जब अपने स्वामी से मिलजावे, और जब चाहे जब अलहदा होकर और सन्मुख रह कर दर्शनों का आनन्द और बिलास करे। इन दोनों हालत को भेद भक्ती और अभेद भक्ती कहते हैं, बग़ैर कुल्ल मालिक की भक्ती के किसी सूरत में किसी का पूरा उद्धार नहीं हो सक्ता॥

२२—पूरन भक्ती से मतलब यह है, कि भक्त संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करके, अपने भगवंत के निज धाम में पहुंच कर चरनों में बासा पावे, और दर्शन का रस और आनन्द लेवे, और वह निज धाम पिंड और ब्रह्मान्ड के परे है, इसी पूरन भक्ती का नाम पूरी मुक्ती और सच्चा और पूरा उद्धार है। इस सच्चे उद्धार और सच्ची मुक्ती की प्राप्ती के वास्ते कुल्ल जीवों को थोड़ा बहुत जतन करना (संतों की जुगत के मुवाफ़िक़) मुनासिब और लाज़िम है॥

॥ बचन २२ ॥

सच्चा मत और सच्चा पंथ क्या है, और उसकी काररवाई क्या है और किस तौर से होती है, और उससे क्या फ़ायदा हासिल होगा ॥

१—सच्चा मत उसको कहते हैं कि जो सच्चे की ख़बर और भेद और समझौती देवे, और सच्चा वह है कि जो हमेशा एक रस क़ायम रहे, और जिसमें कभी तग़इयुर और तबद्दुल वाक़े न होवे ॥

२—सच्चा पंथ उसको कहते हैं कि जो ऐसे सच्चे से (कि जिस की तारीफ़ ऊपर की गई) मिलने का रास्ता और जुगत चलने की बतावे। सो जहाँ सच्चा मत है वहीं सच्चे पंथ का भी भेद होगा, यानी यह दोनों सच्चा मत और सच्चा पंथ बतौर जोड़े के हैं, कि जहाँ एक होगा वहाँ दूसरा भी ज़रूर होगा ॥

३—सच्चे में बड़े भेद हैं, यानी एक की निसबत एक को जो ज़्यादा देर ठहरे लोग सच्चा कहते और मानते हैं, लेकिन यह कहन और मानना दोनों ग़लत हैं॥

असल सच्चा वही है कि जो ब मुक़ाबले कुल्ल रचना के हमेशा एक रस क़ायम है, और जो रचना

नहीं भी होवे तो भी बदस्तूर क़ायम और मौजूद रहता है ॥

४-इस असली सच्चे का पता और भेद सिवाय संतों के, जो कि उसके हमेशा संग रहते हैं, और किसी को नहीं मालूम हुआ ॥

इस दुनियाँ में उसका भेद या तो उसने आप सतगुर रूप धर कर प्रगट किया या उसकी आज्ञा से संतों ने, जब २ वे उसके हुकम के मुवाफ़िक़ इस लोक में आये, ज़ाहर किया ॥

५-ऊपर जो लिखा गया है कि लोगों ने एक के मुक़ाबले में दूसरे को सत्त माना है, और ऐसे सत्त कितने हो हैं, इसका मुफ़स्सिल बयान इस तौर पर है, कि परमार्थ में जो कोई खोज लगाता हुआ चला और उसको एक पद ऐसा मिला या नज़र आया कि जिस्से कुल्ल नीचे की रचना पैदा या ज़ाहर होती हुई, और जिसके आसरे वह ठहरी हुई मालूम पड़ी, और उस पद का उस खोजी को पूरा २ भेद न मालूम पड़ा और न उसको वह पद जैसा कि असल में था दिखलाई दिया यानी वह उसका अंत और पार न पा सका, तो उसने उसी को मालिक उस रचना का क़रार देकर सत्तपद माना, जैसे मसलन् यह सूरज अपने

मंडल की रचना का मालिक और करता करार दिया जावे, या इसके ऊपर का सूरज जो दूरबीन से भी नज़र नहीं आता है, मालिक और सत्त माना जावे, या यह कि उसके परे का सूरज जो पारब्रह्म स्वरूप है, कुल्ल मालिक गरदान कर उसी पर ख़ातमा किया जावे, और वही सत्त और शुद्ध माना जावे ॥

६—ऊपर जो तीन सूरज बयान किये गये, उनमें से पहिला तो निपट संसारी और नादानों का ख़ुदा और मालिक हो सक्ता है, और दूसरा जोगियों का, और तीसरा जोगेश्वरों का मालिक है, उसके पार का भेद किसी जीव या महात्मा को नहीं मालूम पड़ा, बल्कि ख़ुद उसके भी स्वरूप का वार और पार न पाया, इस सबब से इन तीनों सूरजों को कुल्ल मत वालों ने जो कि अनजान हैं, या जोगी या जोगेश्वरों या औतारों और पैगम्बरों के मोतक़िद और पैरो हैं, सत्त और मालिक माना लेकिन असल में इनमें से कोई भी कुल्ल मालिक या असली सत्त नहीं है, क्योंकि पारब्रह्मरूपी सूरज के परे सत्त नाम सत्तपुर्ष रूपी सूरज है, और वह सच्चे कुल्ल मालिक और असल सत्तपद राधास्वामी दयाल के आसरे क़ायम हैं ॥

७—यह सूरज जिनका ऊपर ज़िकर हुआ, एक की

बनिसबत एक ज़्यादा ताक़त वाला और बहुत बड़ा और ज़्यादा देर ठहरने वाला है, यहाँ तक कि दूसरे और तीसरे सूरज की परलय होती हुई, किसी बिरले जोगेश्वर ही ने देखी, और तीसरे यानी पार ब्रह्म रूपी सूरज का आदि और अंत और उसका वार पार भी किसी को नहीं मालूम हुआ, लेकिन इनको सत्त कहना ब मुक़ाबले सत्तनाम सत्तपुर्ष राधास्वामी पद के, जो कि अमर और अजर और सदा एकरस क़ायम रहते हैं, और ब्रह्मान्ड के परे हैं, दुरुस्त नहीं है। और राधास्वामी पद तो अनंत और अपार और अकह और अगाध है, और असली सत्त वही है, और उसका देश भी यानी राधास्वामी पद से सत्तलोक तक अजर और अमर है, यानी हमेशा एकरस क़ायम रहता है॥

८—इस असली सत्तपद यानी राधास्वामी धाम का जो कोई भेद बतावे, और वहाँ पहुंचने का रास्ता लखावे, उनको संत या साध कहते हैं, और उनके भेद को सत्तमत और सत्तपंथ कहना चाहिये, और यह भेद और लखाव सिर्फ़ राधास्वामी मत में, जोकि कुल्ल मालिक ने आप प्रगट किया, मौजूद है, और किसी मत में इसका ज़िकर भी नहीं है॥

९—अब समझना चाहिये कि राधास्वामी दयाल ने कुल्ल रचना के तीन दरजे मुकर्रर किये हैँ, पहिला निर्मल चेतन्य यानी रूहानी देश है, जहाँ माया की मिलौनी नहीं है, और यही सच्चे मालिक का निज धाम और देश है, और दूसरा निर्मल चेतन्य और शुद्ध माया देश है, जिसको ब्रहमान्ड कहते हैँ, इस दरजे के शुरू मैँ माया प्रगट हुई, और पुर्ष प्रकृति और माया ब्रह्म का अस्थान इसी दरजे मैँ है, और वही सरगुन और निरगुन ब्रह्म का मुक़ाम है, तीसरा दरजा निर्मल चेतन्य और मलीन माया देश है, सुरत चेतन्य और मन का बासा इसी दरजे मैँ है, और वही आत्मा परमात्मा और बैराट स्वरूप का अस्थान है ॥

१०—जो कि पहिले दरजे मैँ सिर्फ़ निर्मल चेतन्य है, और रचना भी वहाँ की ऐन रूहानी है, यानी सुरत चेतन्य की चेतन्य रूपी देह या गिलाफ़ है, इस वास्ते इसी देश मैँ पहुंच कर सच्ची मुक्ती हासिल होगी, यानी मन और माया के मसाले की बनी हुई देह से आज़ादगी हो जावेगी ॥

११—और उस पहिले दरजे मैँ संतौँ की जुगत की कमाई करने से पहुंचना होगा, और वह कमाई कुल्ल

मालिक राधास्वामी दयाल और संतसतगुरु की दया से बन पड़ेगी ॥

१२—और वह जुगत यह है कि जिस धार पर कि सुरत पहिले दरजे से उतर कर तीसरे दरजे यानी पिण्ड में आँखों के मुकाम पर बैठी है, वहाँ से उसको उसी धार को पकड़के उलटे चढ़ा कर उसके निज धाम में पहुंचाना, और वही धार शब्द और प्रकाश और नूर और जान की धार है, सो शब्द की धुन को सुनते हुये और प्रकाश को देखते हुये मन और सुरत घट में चढ़ेंगे ॥

१३—यह भेद और जुगत संतसतगुरु या साधगुरु या उनके सच्चे और प्रेमी मेली से मालूम होगी और उन्हीं के सतसंग और बानी और बचन के पढ़ने और सुनने से जीव के भरम और संसे और असत्य पद और पदार्थ में पकड़ और झुकाव दूर हो सक्ते हैं और दूसरे के सतसंग या बानी और किताबें पढ़ने और सुनने से यह बात हरगिज़ हासिल नहीं हो सक्ती है और न कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत पैदा होगी, और इस सबब से चाहे कोई जिस क़दर मिहनत करे सुरत और मन की चढ़ाई घट में ऊँचे देश की तरफ़ नहीं हो सकेगी ॥

१४—ऊपर बयान हुआ है कि बिना दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संतसतगुरु के राधास्वामी मत का अभ्यास दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगा इस वास्ते लाज़िम और ज़रूर है कि सच्चा परमार्थी पहिले खोज कर के संतसतगुरु या साधगुरू या उनके सच्चे प्रेमी से मिले, और भेद भाव समझ कर उपदेश घट में चढ़ाई की जुगत का लेवे, तब उसका सूत यानी सिलसिला कुल्ल मालिक के चरनों से लगेगा और जिस क़दर वह अभ्यास करता जावेगा उसी क़दर दया भी उसको अपने अंतर में मालूम पड़ती जावेगी, और तब उसका रास्ता सुखाला ते होवेगा ॥

१५—जिस किसी के हिरदे में सच्ची लाग परमार्थ की है, और संसार की तरफ़ से किसी क़दर चित्त में बैराग और उदासीनता भी है, और संतसतगुरु या साधगुरू और उनके सतसंग की सच्चे मन से सरन ली है, तो उसी को राधास्वामी दयाल और संतसतगुरु अपनावेंगे, और फिर उसकी सब तरह से सम्हाल अंतर और बाहर आप करेंगे, और जब तक कि उसको निज धाम में नहीं पहुंचावेंगे, तब तक उसकी बराबर सम्हाल और तरक्क़ी फ़रमाते रहेंगे, यानी उसके हिरदे में प्रीत और प्रतीत बढ़ा कर करनी करावेंगे, चाहे यह काम एक जनम में बने या दो या तीन या चार में ॥

१६—जो दरजे कि ऊपर बयान किये गये उन में से हर एक दरजे में कई मंज़िलें या मुक़ाम हैं। उनका भेद तफ़सील के साथ उपदेश के वक़्त समझाया जाता है, और उसी का नाम सत्तमत है, और इसी रास्ते का नाम सत्त पंथ है। जिस को यह भेद और रास्ता और चलने की जुगत नहीं मालूम है, वह हरगिज़ निज धाम में नहीं पहुँचेगा, और इस वास्ते उसका सच्चा उद्धार भी नहीं होगा, यानी असत्य देश में रह कर हमेशा ऊँचे नीचे लोक में देहियों के साथ दुख सुख और जनम मरन का कष्ट भोगता रहेगा॥

१७—इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब है कि इस दुनियाँ की काररवाई और इसकी रचना की हालत देखकर अमर देश और अमर सुख और आनन्द का खोज करें, और जोकि उसका पता संत सतगुरु या साध गुरू या राधास्वामी मत की संगत से मिल सक्ता है तो चाहिये कि इनहीं को तलाश कर के और उन से उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास शुरू कर दें, फिर जो कुछ कि फ़ायदा उस अभ्यास से हासिल होगा वह उनको अपने अंतर में और अपनी हालत से आप ही ज़ाहिर होता जावेगा, और फिर प्रीत और प्रतीत राधास्वामी

दयाल के चरनों में बढ़ती जावेगी, और अभ्यास का शौक़ भी तेज़ होता जावेगा और इस इस तौर से एक दिन सब काम दुरुस्त बन जावेगा ॥

॥ बचन २३ ॥

असली सत्त में जो अमर अजर और परम आनन्द स्वरूप है, पता और भेद लेकर प्यार और भाव लाना और बढ़ाना चाहिये, तब असत्य यानी माया के देश और जनम मरन से छुटकारा होगा ॥

१—जहाँ जिसको भाव और चाव या प्रीत है, वहीं उसकी तवज्जह या ख़याल जाता है, और जिस क़दर ज़्यादा दरजे की प्रीत है, उसी क़दर उसका चित्त या ख़याल बार २ प्रीतम की तरफ़ जाता है, और जो बहुत ज़्यादा दरजे की प्रीत है, तो वे दोनों अक्सर एक ही जगह यानी संग रहते हैं, ताकि हर वक़्त एक की नज़र दूसरे पर पड़े, और जब चाहें जब बात चीत करें और संग उठें बैठें ॥

२—जिस क़दर जिसको जिस किसी में भाव और प्यार है, उसी क़दर उसको अपने प्रीतम से मिलने

या उसका ख़्याल करने में रस आता है, और ख़ुशी होती है, और उसी क़द्र प्रीतम की तरफ़ से भी खैंच और मेल और तवज्जह होती है, और उसको भी मिलने और ख़्याल करने में वैसाही रस मिलता है, और तबीयत ख़ुश होती है, और यही प्रीत ज़्यादा तवज्जह और ख़्याल करने और अक्सर मिलने से बढ़ती जाती है, और दोनों की आपस में मुवाफ़क़त और मुहब्बत भी ज़्यादा होती जाती है, यहाँ तक कि एक दूसरे के हिरदे में बस जाता है ॥

३—और जब यही प्रीत ज़्यादा से ज़्यादा हो जाती है, तब दोनों शख़्सों के मन और उनकी समझ बूझ और चाह और पकड़ वग़ैरा भी एक हो जाती हैं, और एक की कहन दूसरा बे उज़र और ख़ुशी के साथ मान्ता है, और जो काम एक करता है वह दूसरे को पसंद आता है, और दोनों को आपस में एक दूसरे की ख़ुशी और रज़ामंदी का ख़्याल हमेशा पेश नज़र रहता है, और एक दूसरे की सेवा और ख़िदमत करने और हर काम में मदद देने को उमंग के साथ तइयार रहता है ॥

४—जहाँ इस क़िस्म की प्रीत दो शख़्सों की आपस में है, वहाँ एक के सुख में दूसरा भी सुखी, और दुख

और तकलीफ़ में दूसरा भी दुखी रहता है। अगर किसी वक़्त में दूर भी होवें, तो अक्सर ऐसा इत्तफ़ाक़ होता है, कि सख़्त तकलीफ़ के वक़्त एक की तबीयत का असर थोड़ा बहुत दूसरे की तबीअत पर रूहानी और कुदरती तौरपर फ़ौरन पहुंच जाता है॥

५—अब ख़्याल करना चाहिये कि जब एक शख़्स का एक दूसरे शख़्स के साथ मुहब्बत करने का यह नतीजा होता है, तो जबकि किसी की बहुत से आदमियों और जानवरों में, और माल और असबाब और मकानात वग़ैरा में, अपने २ दरजे के मुआफ़िक़ प्रीत और बंधन मन का हुआ, तब उस शख़्स की क्या हालत होगी, यानी कभी दुख कभी सुख और कभी चिन्ता और फ़िकर के चक्कर में हमेशा गिरफ़्तार रहेगा, और उसको दवादविश यानी दौड़ धूप भी अपने प्रीतवान और मित्रों से मिलने की, और उनके कामों में मदद देने की, हमेशा लगी रहेगी, और बहुत कम वक़्त फ़ुरसत का मिलेगा॥

६—ज़ाहर है कि यह प्रीत और मुहब्बत दुनियानी कहलाती है, और इस में बसबब नाशमान होने इस लोक की रचना के, बियोग यानी जुदाई भी ज़रूर होवेगी, और फिर उसका दुख भी जिस

क़दर गहरी प्रीत होगी उसी क़दर सहना पड़ेगा, ख़ुलासा यह कि यहाँ सुख थोड़ा और चंदरोज़ा होता है और दुख घनेरा, और बाज़ी हालतों में उमर भर सहना पड़ता है ॥

७—अब जानना चाहिये कि जहाँ जिसकी प्रीत है, और वहीं उसका ख़्याल दौड़ २ कर जाता है, तो उसके साथ सुरत यानी चैतन्य की धार बराबर जाती है, और जिस क़दर जिसकी जहाँ प्रीत है, उसी क़दर उसके चैतन्य और सुरत और मन की धार, उसके प्रीतम में समाई रहती है, और दोनों तरफ़ से धार की आमदरफ़्त ख़्याल के साथ जारी रहती है ॥

८—यह हाल हर एक शख़्स पर उसके रोज़मर्रा के व्योहार और बर्ताव में गुज़रता रहता है, यानी जिस वक़्त वह किसी शख़्स या मुक़ाम या चीज़ का जिस में उसके मन की प्रीत या बंधन है, ख़्याल करता है, उस वक़्त और जितनी देर कि उसका ख़्याल उधर लगा रहता है, वह उतनी देर वहीं यानी अपने प्रीतवान शख़्स वग़ैरह के पास ठहरता है और उस वक़्त जहाँ वह बैठकर ख़्याल कर रहा है मौजूद नहीं है, जैसे जब कोई किसी काम में गहरी तवज्जह के साथ मशग़ूल होता है, या कोई सोच और बिचार कर रहा है, या किसी अपने प्यारे का चिन्तवन कर रहा है,

उस वक़्त जो कोई उसके सामने आवे या बैठे या बात चीत करे, तो वह बिलकुल नहीं देखता है और न सुनता है, और जब उससे ताकीद के साथ कोई पूछे तो जवाब देता है कि मेरा ख़याल या चित्त इस वक़्त और तरफ़ था, इससे ज़ाहिर है कि वह शख़्स उस वक़्त बा-वजूद बैठे होने और आँख कान खुले होने के उस चिन्ता और ख़याल की हालत में वहाँ मौजूद न था, क्योंकि उसके मन और सुरत की धार उस वक़्त उस तरफ़ को रवाँ होगई थी, कि जिस तरफ़ का वह चिन्तवन और ख़याल कर रहा था ॥

९—इस तरह से हर एक शख़्स के मन और सुरत की धारें, अनेक जीवों और पदार्थों में दिन और रात बाहर की तरफ़ बहती रहती हैं, और चैतन्यता का घाटा होता रहता है, जैसा कि देखने में आता है, कि जिस आदमी को कारोबार और चिन्ता और फ़िक्र ज़्यादा रहता है, उसी क़दर उसका जिस्म नाज़ुक और कम ताक़त वाला होता है, और खाने का मिक़्दार भी उसका किसी क़दर कम हो जाता है, लेकिन जो किसी को दिल पसंद कारोबार ज़्यादा करने पड़े और किसी तरह की चिन्ता और फ़िक्र न होवे, यानी उसका मन बहुत जगह बँधा न होवे,

तो यह बसबब .खुशी के फूलता रहता है, और कम ताक़ती उसको नहीं सताती है। सबब इसका यह है कि पहिली सूरत में उसकी धारैं बहुत फैलती रहती हैं, और दूसरी हालत में बसबब मन के .खुश होने, और किसी क़दर बे परवाह हो जाने औरौं की तरफ़ से, धारौं का फैलाव कम होता है॥

१०—जहाँ जिसकी बहुत ज़्यादा प्रीत है, तो उसका असर इसी ज़िंदगी में नहीं, बल्कि आइन्दा की ज़िंदगी यानी जनम में भी पहुंचता है, और उसी मुवाफ़िक़ दूसरे जनम में संजोग जीवौं के साथ होता है, या उन्हीं शौक़ौं में जो एक जनम में बहुत ज़बर रहे, दूसरे जनम में भी बरतावा करता है॥

११—ऐसी हालत जगत के जीवौं की प्रीत की और उनके भरमने की देहियौं और पदार्थौं में, और मेल होने अनेक क़िसम के जीवौं और सामान के साथ मुवाफ़िक़ हर एक के ज़बर बंधन और शौक़ के, देख कर, संत सतगुर अति दया करके जीवौं को सच्ची समझौती, और सच्चे मालिक से मिलने की जुगत फ़रमाते हैं, कि जिस्से जनम मरन का चक्कर जल्दी छूट जावे, और जीव नाशमान रचना के देश से न्यारे होकर, अमर देश और अमर आनन्द के स्थान पर

पहुंच कर, और अपने सच्चे मालिक का दर्शन पाकर, हमेशा को सुखी हो जावैं ॥

१२—जो कोई बड़ा आदमी है यानी धनवान और हकूमतवान या गुनवान या रूपवान या कोई खास हुनर वाला है, या जो कोई अपने साथ किसी किस्म की भलाई और सलूक करे या किसी तकलीफ़ और मुसीबत के वक्त मदद देवे, तो ऐसे शख्स में बहुत जल्द हर किसी को भाव और प्यार आता है, और उसकी सेवा और खिदमत करने को दिलोजान से तइयार हो जाता है, और जो वह हुक्म या आज्ञा करे, या कोई बचन कहे, उसको ख़ुशी दिल के साथ मानता है ॥

१३—अब ख़याल करो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल, और उसके ख़ास पुत्र या मुसाहिब संत सतगुर रचना भर में सब से बड़े और सर्व समर्थ और सर्व गुण निधान हैं, और जीवों का हित और आराम सदा उनके पेश नज़र रहता है, और सख़्ती और नरमी और ख़ुशी और ग़म के वक्त हमेशा वे जीव के संग रहते हैं, और जिस क़दर मुनासिब होता है उसकी सम्हाल और रक्षा हर तरह से फ़रमाते हैं, और हर चन्द ज़ाहरी तौर से उनका दर्शन कठिन

मालूम होता है, पर संत सतगुरु रूप में जिस पर मेहर होवे, उसको सहज में दर्शन प्राप्त हो सक्ते हैं ॥

१४—सब कहते हैं कि कुल्ल मालिक सब जगह मौजूद है, और जो ऐसा है तो वह हर एक के अंगसंग रहता है, लेकिन परख और पहिचान उसकी किसी की नहीं हो सक्ती है, जब तक कि राधास्वामी मत में शामिल होकर उसकी जुगत का कोई दिन अभ्यास न करे ॥

१५—अब ख़याल करो कि ऐसे कुल्ल मालिक सत्पुर्ष राधास्वामी दयाल, और उनके प्यारे संत सतगुरु के चरनों में किस क़दर भाव और प्यार जीवों को लाना चाहिये, पर शर्त यह है कि उनका या तो प्रत्यक्ष दर्शन मिले, या घट में उनके नाम रूप लीला और धाम का पूरा २ पता मालूम होवे, और भी जुगत उनसे मिलने की बताई जावे, तो अलबत्ता जीवों को थोड़ा बहुत भाव और प्यार आवेगा, और जो संत सतगुरु रूप में दर्शन होवे, तो उसकी भी थोड़ी बहुत पहिचान आनी चाहिये, नहीं तो जैसा भाव और प्यार चाहिये, न तो कुल्ल मालिक और न संत सतगुर के चरनों में आ सक्ता है, क्योंकि रोज़गारी और पाखण्डियों ने ठगाई करके जीवों को बहुत डरा

दिया है, और अनेक भरम उनके मन में पैदा कर दिये हैं, कि जिस्से जबतक सच्चे और झूठे की छाँट न होवे, और उनको थोड़ी बहुत पहिचान न आवे, तब तक वे भाव और प्यार लाने में झिझकते और डरते हैं ॥

१६—जो कोई परमार्थ का बड़भागी है या जिसपर धुर की मेहर और दया है, उसी को दर्शन करके संत सतगुरु में थोड़ा बहुत भाव और प्यार आवेगा, और उनके बचन उसको प्यारे लगेंगे, और उनसे जुगती लेकर और थोड़ा बहुत अभ्यास करके, उसको अंतर में रस और आनन्द मिलेगा, और मेहर और दया के परचे भी मालूम होवेंगे, तब दिन २ उसकी प्रीत और प्रतीत संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ती और पकती जावेगी, और वही शख़्स सतगुरु के बचन को जिस क़दर ज़रूरी है मानेगा, और उसके मुवाफ़िक़ काररवाई करके उसका फल और फ़ायदा इसी ज़िंदगी में देखेगा ॥

१७—इसी तरह जिस किसी को संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत आई है, और उनकी जुगत के अभ्यास से कुछ २ रस अंतर में मिला है, उसी के मन और

सुरत की धारें बारम्बार, अंतर में ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ेंगी, और दिन २ संसार के भोग और बिलास फीके और रूखे होते जावेंगे, और उस तरफ़ को धारों का झुकाव भी कम होता जावेगा ॥

१८—इसी तौर से आहिस्ते २ दुनियाँ और उसके सामान से तबीअत ऐसे प्रेमियों की हटती जावेगी, और उनके मन और सुरत निज घर की तरफ़ उमंग और प्रेम के साथ रवाँ होते जावेंगे, और एक दिन सुरत उनकी धुर धाम में पहुंच कर, सच्चे मालिक का दर्शन पावेगी, और अमर आनंद को प्राप्त होगी ॥

१९—जो कि कुल्ल मालिक का भेद और मिलने का रास्ता और चलने की जुगत बग़ैर संत सतगुरु या उनके सच्चे प्रेमी के नहीं मालूम हो सक्ती है, और न उनके और सच्चे मालिक के चरनों में बिना उनके सतसंग और दया के प्यार और भाव आसक्ता है, इसवास्ते कुल्ल ज़ीवों को जोकि संसार और उसके सामान की नाशमान्ता देख कर सच्चे और अमर सुख का खोज लगाकर उसको प्राप्त होना चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन का खोज करें, और जब भाग से वे मिलजावें, तब शौक़ और उमंग के साथ उनके बचन

सुनैं और समझैं और बिचारैं, और सुरत शब्द का उप-देश लेकर अभ्यास शुरू करदें, तब थोड़े दिन मैं उनको और उनकी जुगत की कुछ पहिचान आवेगी, और उसी मुवाफ़िक़ प्रीत और प्रतीत भी चरनों मैं पैदा होगी, और फिर भक्ती और भाव बढ़ता जावेगा, और दिन २ हालत भी बदलती जावेगी, यानी संसार की तरफ़ से किसी क़दर उदासीनता और चरनों मैं प्रेम और अनुराग बढ़ता जावेगा ॥

२०—जबतक इस तौर से काररवाई नहीं की जा-वेगी तब तक मन और सुरत की धारों का झुकाव भोगों मैं बाहर की तरफ़ रहेगा, और मालिक के चरनों मैं प्रेम और भाव नहीं आवेगा, और इसवास्ते माया के घेर से सुरत न्यारी नहीं होगी, और वे जीव बारम्बार देह धर कर दुख सुख भोगते रहैंगे ॥

२१—खुलासा यह कि जब तक जीव को प्रीत और प्रतीत चरनों मैं राधास्वामी दयाल के नहीं आवेगी, तब तक धारों का रुख़ नहीं बदलेगा, और बाहर-मुख काररवाई कम न होवेगी, और इस सबब से असली सत्त से मेला भी नहीं होवेगा, और न परम और अमर आनंद के धाम मैं पहुंचना होगा, और जीव तुच्छ और नाशमान सुखों के वास्ते इस लोक मैं पचते

और खपते रहेंगे, और जनम मरन का दुख सहते रहेंगे ॥

२२—ऊपर के लिखे हुए से मालूम होगा कि कुल्ल जीवों को मुनासिब और ज़रूर है, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी और संत सतगुरु के चरनों में, जैसी बने तैसी प्रीत लावें, तो जिस दरजे की प्रीत होगी उसी क़दर उनके मन और सुरत की धार, घट में ऊँचे देश की तरफ़ बारम्बार रवाँ होकर चरन रस लेवेगी, और बचन बानी निहायत प्यारे लगेंगे, और दर्शनों की तलब और तड़प थोड़ी बहुत मन में लगी रहेगी, और सेवा की उमँग उठा कर तन मन धन भी परमार्थ में लगावेगा, और भेद और जुगत दरियाफ़्त करके, मुहब्बत के साथ अभ्यास में भी ज़ोर देगा। यही स्वरूप सच्ची और निर्मल भक्ती का है, और जब महिमाँ सुनकर जीव इस काम में लगा तब राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया आवेगी, और मेहर से ऐसे भक्त का कारज वे आप बनावेंगे, और मुनासिब तौर पर अंतर और बाहर के सतसंग में रस देकर उसकी भक्ती को बढ़ाते जावेंगे, कि जिससे एक दिन धुरधाम में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

२३—भक्ती और प्रेम का दरजा बड़ा भारी है, जिस घट में यह प्रगट होवे वही जन बड़भागी है, और वही दयापात्र है और वहीं एक दिन सच्चे मालिक के महल में दख़ल पावेगा ॥

२४—इस वास्ते सब जीवों को इस बात का ख़्याल और बिचार रखना चाहिये, कि गहरी प्रीत सच्चे मालिक के चरनों में लावें, और उसके चरनों में अपना मज़बूत नाता जोड़ें, और दुनियाँ और उसके सामान में मामूली प्रीत गुज़ारे के लायक़ करें, ताकि ज़बर बंधन न होने पावे । जैसे कोई परदेश में रोज़गार के वास्ते जावे, और वहाँ के लोगों से कारखाई के लायक़ प्रीत भाव करे और जब मौक़ा वतन के जाने का मिले तो फ़ौरन् अपने देश को ख़ुशी के साथ रवाना होता है, और उन परदेशियों की प्रीत से ज़रा भी उस के मन को बंधन या तकलीफ़ नहीं होती ॥

२५—इसी तरह सुरत् यहाँ परदेशी है, और उसको इस परदेश में परदेशियों के मुआफ़िक़ बर्ताव करना मुनासिब है, और परमार्थ की कमाई करके गहरी जमा यानी प्रेम कुल्ल मालिक के चरनों का अपने घट में हासिल करके, जल्द २ और बारम्बार सुरत

शब्द की रेल पर सवार होकर अपने वतन यानी कुल्ल मालिक के चरनों में आमदरफ़्त यानी फेरा जारी करना चाहिये, और जब काम पूरा हो जावे, तब बेतकल्लुफ़ अपने निज घर को ख़ुशी के साथ जाने को तइयार रहना चाहिये। यह काम दुरुस्ती से तब बन पड़ेगा, जब कि यह दिन २ अपनी प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ावेगा, और संसार में अपना प्यार जरूरत के मुवाफ़िक़ रक्खेगा, और अपने मन और सुरत की धारों को फ़ज़ूल इस दुनियाँ में नहीं ख़र्च करेगा, बल्कि दिन दिन घट में ऊँचे देश की तरफ़ को उनका प्रवाह बढ़ाता रहेगा, और संत सतगुर और प्रेमी जन से नाता मजबूत जोड़ेगा॥

॥ बचन २४ ॥

तीन बातें हमेशा सुमिरना यानी याद रखना चाहिये, और तीन बातें बिसरना यानी भूलना चाहिये॥

१—जो तीन बातें याद रखनी चाहियें यह हैं॥

(१) पहिली यह कि राधास्वामी दयाल सर्व समर्थ और कुल्ल मालिक हैं, (२) दूसरी यह कि उनके चरन यानी चेतन्य की धार जो कि शब्द की धार

है, हर एक के घट में मौजूद है, (३) तीसरी यह कि दुनियाँ के सब सामान और पदार्थ नाशमान हैं, यानी हमेशा एक रस और एक हालत पर क़ायम नहीं रहते, और यह देह भी जिसमें सुरत उतर कर ठहरी है नाशमान है, यानी मौत हरदम सिर पर खड़ी है ॥

२—यह तीन बातें बिसारनी यानी भूलनी चाहियें ॥

(१) पहिली—मन का मान जो कि ब सबब पैदा होने ख़्याल अपने बड़ाई ज़ात पाँत धन या गुन या ख़ूबसूरती या कोई और जौहर या अक़्ल या हुकूमत और ओहदा वग़ैरः के पैदा होता है, (२) दूसरी मन और इंद्रियों के भोग और माया के रचे हुये पदार्थ, (३) तीसरी भोग बिलास वग़ैरा की चिन्तवन या ख़्याल और गुनावन, और उनकी प्राप्ती के लिये आसा और मन्सा और तृश्ना ॥

भाग पहिला १

बरणन उन तीन बातों का जो याद रखनी चाहिये ॥

३—(१) पहिली—परमार्थी को चाहिये कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की याद अक्सर वक़्त, दिन रात में करे, और राधास्वामी नाम को इस क़दर

पकावे, कि सोते और जागते और अभ्यास के वक्त, जब मुनासिब और ज़रूर होवे फ़ौरन् याद आजावे, और इस बात का जिस क़दर बन सके मज़बूत यक़ीन दिल में होना चाहिये, कि राधास्वामी दयाल सर्व समरथ हैं, और जो आदि धार उनके चरनों से निकसी वही कुल्ल रचना की करतार है, और बिना उनकी मौज के कुछ नहीं हो सक्ता ॥

४—इस बात का बयान दूसरे बचनों में हो चुका है और यहाँ खुलासे के तौर पर लिखा जाता है, कि एक स्थान की रचना दूसरे ऊपर के स्थान के आधीन है, यानी ऊपर से जो धार आती है, उसी की मदद से नीचे के स्थान की रचना ताक़त और मदद लेती है, यानी एक सूरज मंडल ऊँचे के सूरज मंडल के आसरे क़ायम है, और सब के परे कुल्ल मालिक राधास्वामी धाम है, और वही सब का निज कर-तार है, इस्से ज़ाहर होगा कि आदि धार की ताक़त से कुल्ल रचना हुई, और उसी के आसरे ठहरी हुई है, यानी राधास्वामी धाम से धारा सत्तलोक तक आई, और दयाल देश यानी पहिले दरजे की रचना करी, और वहाँ से दो धारें प्रगट होकर सहसदल तक आईं, और ब्रह्मान्डी यानी दूसरे दरजे की

रचना करी, और सहसदल कँवल से तीन धार प्रगट हुईं, और उनसे देवता और मनुष्य और चार खान की रचना पिंड देश यानी तीसरे दरजे में हुई ॥

५—(२) दूसरी—परमार्थी को चरन की पहिचान और प्रतीत हासिल करनी चाहिये यानी जो चेतन्य धार कि दयाल देश से दसवें द्वार, और दसवें द्वार से पिंड में उतर कर ठहरी हुई है, वही सुरत या धुन की धार है और वही नाम और चरन की धार है, सो इस धार की अभ्यास करके थोड़ी बहुत पहिचान हासिल करना, और इस बात की दृढ़ प्रतीत मन में पैदा करना चाहिये, कि यह चरन या शब्द या जान की धार घट घट में मौजूद है, और इसी को पकड़ के सुरत ऊँचे देश यानी घर की तरफ़ उलट सक्ती है, और कोई दूसरा सीधा और धुर पहुंचाने वाला रास्ता नहीं है ॥

६—यह अक्सर बचनों में बयान हो चुका है, कि चेतन्य का निशान और ज़हूरा शब्द यानी आवाज़ है, और जहाँ कि धार रवाँ है वहाँ धुन उसके साथ मौजूद है; फिर जो चेतन्य की धार कि ऊपर से आई है, और उसके साथ धुन यानी आवाज़ बराबर जारी है, वही रचना की करता है, इस वास्ते जो उस धार

को पकड़ के चलेगा, वही उस मुक़ाम तक जहाँ से कि आदि धार प्रगट हुई पहुँच सक्ता है। और किसी धार को पकड़ के जो कोई चलेगा, वह माया के घेर के बाहर नहीं जावेगा, क्योंकि सिवाय शब्द चेतन्य की धार के और जो धारें हैं, वे माया की हद्द में से निकसी हैं और वहीं उनका ख़ातमा हो जाता है॥

७—परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है, कि इस धार की बारम्बार याद करता रहे, और याद करने से मतलब यह है, कि या तो शब्द को सुने या राधास्वामी नाम का स्थान पर ध्यान लगाकर सुमिरन करे, या स्थान पर स्वरूप का ध्यान करे ख़ुलासा यह कि इस धार के साथ जितनी बार बन सके, दिन रात में मेल करता रहे, इसी को सुमिरना कहते हैं, ऐसी यादगीरी से जिस क़दर ज़्यादा बन पड़ेगी जल्द सफ़ाई होवेगी, और चरनों में प्रीति और प्रतीत बढ़ेगी, और अभ्यास में आसानी के साथ तरक़्क़ी होवेगी॥

८—(३) तीसरी परमार्थी को ख़्याल इस बात का हमेशा रखना चाहिये, कि जिस क़दर माया के सामान और पदार्थ हैं, वे सब तुच्छ यानी थोड़ा रस देने वाले और नाशमान हैं, और यह देह भी जिसमें

बैठ करके जीव उनका भोग करता है नाशमान है, यानी एक दिन मौत ज़रूर आवेगी, और उस वक्त सब कारख़ाना और सामान दुनियाँ का और यह देश एकदम छोड़ना पड़ेगा, और कोई किसी तरह से किसी को ऐसे वक्त पर मरने से बचा नहीं सक्ता॥

९—इस बात का कोई सबूत ज़रूर नहीं है, क्योंकि कुल्ल जीवों को रोज़ मर्रा देखने में आता है कि बड़े और छोटे और राजा और अमीर और ग़रीब और कुल्ल पदार्थ और भोग वग़ैरा चलने में हैं और कोई वक्त मुक़र्रा से ज़्यादा ठहर नहीं सक्ता, इस वास्ते हर एक को मुनासिब और लाज़िम मालूम होता है कि पेश्तर इस्से कि ऐसा सख़्त वक्त आवे, सुरत को तन मन और इन्द्रियों से जिस क़दर बन सके न्यारा करके उसके घर की तरफ़ उलटावें, और अपनी मौत को याद रख कर किसी शख़्स या चीज़ में इस क़दर मन को न बाँधे, कि जिस्से छोड़ते वक्त तकलीफ़ होवे, और इसी तरह सब भोगों और पदार्थों को नाशमान समझ कर उनमें पकड़ गहरी और मज़बूत नहीं करना चाहिये, नहीं तो बियोग के वक्त बहुत दुख सहना पड़ेगा॥

१०—इस बात की यादगीरी के सबब से जीव का बहुत फ़ायदा मुमकिन है, यानी उसका बंधन दुनियाँ

और उसके सामान और कुटम्ब परवार और भोगों वग़ैरे में बहुत हलका रहेगा, और अख़ीर वक़्त पर उसको छोड़ने में तकलीफ़ नहीं होवेगी। और जहाँ तक मुमकिन होवे राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाना और पकाना चाहिये, कि जिस्से जीव के उद्धार में कोई विघन न पड़े॥

११—बल्कि सिवाय अख़ीर वक़्त पर तकलीफ़ न होने के जीते जी भी राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और यादगारी करने वाले को, बहुत कुछ फ़ायदा हासिल होवेगा, यानी दुनियाँ और उसके भोगों की तरफ़ से चित्त आहिस्ते २ हटता जावेगा, और अंतर में रस और आनन्द पाकर चरनों में प्रीत और प्रतीत और शौक़ दर्शनों का बढ़ता जावेगा, और अख़ीर वक़्त पर ज़्यादा से ज़्यादा आनन्द और दया की मदद मिलेगी, और देह और दुनियाँ के छोड़ने का रंज बिलकुल नहीं व्यापेगा, और यह हालत सुरत शब्द मारग के अभ्यास से, जो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने बहुत आसान तौर से जारी फ़रमाया है, हासिल होवेगी॥

भाग दूसरा २

बर्णन उन तीन बातों का जो बिसरनी चाहिये ॥

१२—(१) पहिली परमार्थी को अपने मन का मान घटाना और दूर करना चाहिये। यह सब औगुणों में बहुत भारी और ज़बर और बारीक बिकार है, और बहुत दिक्क़त से और बहुत देर में घटता और दूर होता है। चाहे जिस क़दर कोशिश की जावे, थोड़ा बहुत झीने से झीना मान मन में धरा रहता है और वक़्त २ पर प्रगट होता रहता है ॥

१३—इसके दूर करने का जतन सिवाय सुरत शब्द मारग के अभ्यास के, कि जिससे सुरत और मन पिंड देश को छोड़ कर ब्रह्मान्ड में, और फिर वहाँ से मन से अलहदा होकर सुरत दयाल देश की तरफ़ चढ़ेगी, और कोई नहीं है, यानी जब तक कि सुरत पिंड में रहेगी तब तक इस बिकार का क़ितई दूर होना मुमकिन नहीं है, चाहे कुछ कम हो जावे या कहीं २ और किसी किसी वक़्त बिल्कुल ज़ाहर न होवे, क्योंकि जड़ इसकी ऊँचे देश में है; और जब तक कि यह बिकार यानी मान और अहंकार मन में बसे रहेंगे, तब तक

सच्ची दीनता सतगुरु और प्रेमी जन और कुल्ल मालिक के चरनौं मैं जैसा कि चाहिये नहीं आवेगी, और न पूरा फ़ायदा परमार्थ का यानी प्रेम हासिल होगा ॥

१४—इस वास्ते परमार्थी को चाहिये कि जैसे बने तैसे इस बिकार को अपने मन से हटावे और घटावे और अपनी ताक़त और जात और पाँत और धन और हकूमत और गुन और जौहर की बड़ाई को भुलावे, और किसी मौक़े पर और किसी काम और किसी बात मैं उसको पेश न करे, और न उसकी याद और ख़्याल मन मैं लावे, यानी न तो किसी अपनी बात मैं और किसी मौक़े पर बड़ाई या तारीफ़ करे, और न दूसरौं से कराने की चाह या आस रक्खे, और न दिल मैं उसका ख़्याल लावे, और जब कोई अनजानता से या जान बूझ कर ज़िद्द और हसद से कोई बचन ओछा या अपमान का इससे कहे, तो उस वक़्त अपनी ताक़त या बड़ाई का ख़्याल करके ग़ुस्सा और रोस न करे, और न कहने वाले से और किसी वक़्त एवज़ लेने का इरादा करे, और न ऐसा समझे कि मेरा अपमान हुआ या इज्ज़त मैं ख़लल आया, बल्कि अपने आपे को नीच और नाकारा समझ कर यह ख़्याल करे कि वह ऐसे ही बल्कि ज़्यादा तर ओछे और अपमान के बचनौं के लायक़ है ॥

१५—जहाँ किसी का स्वार्थ यानी दुनियावी मतलब अटका होवे, वहाँ हर कोई मान बड़ाई छोड़ कर सच्ची दीनता करता है, और इसी तरह अपने से ज़बर के रूबरू भी दीनता से बर्तता है, फिर बड़े अफ़सोस की बात है, कि यह जीव दुनिया के मतलब के वास्ते तो सब क़िसम का मान और अहंकार छोड़ देवे, और परमार्थ में कोई न कोई या किसी न किसी क़िसम के मान का अंग लेकर उलटा अपना मान और आदर चाहे और सच्ची दीनता न करे, लेकिन, इससे यह बात ज़ाहर होती है कि उस शख़्स ने परमार्थ की दौलत की क़दर न जानी, और दुनिया की मान बड़ाई और विद्या बुद्धि और धन और हकूमत और गुन वग़ैरे को बड़ा समझा, फिर ऐसे शख़्सों को सच्चे प्रेम की दात कैसे मिले॥

१६—भक्ती और प्रेम मारग में सच्ची दीनता एक बड़ा जौहर या ज़ेवर और भारी सिंगार समझा जाता है, जिसमें यह अंग नहीं पाया जाता या वह बेपरवाही और निडरता के साथ परमार्थियों से बर्ताव करता है, तो राधास्वामी दयाल उस पर प्रेम की बख़्शिश हरगिज़ नहीं करेंगे, और वह अपने अहंकार के सबब से गहरे परमार्थ से ख़ाली रहेगा, क्योंकि राधास्वामी

दयाल का यह हुकम है, कि–दीन गरीबो मत इस जुग का, और गुरु भक्ती कर परमान ॥ सो जबतक मन में दीनता न आवेगी, तब तक गुरू और साध और कुल्ल मालिक के चरनों में सच्चा प्रेम नहीं आवेगा, और इसी सबब से दया भी नहीं आवेगी और परमार्थी तरक़्क़ी भी नहीं होवेगी ॥

१७—(२) दूसरी-परमार्थी को मन और इन्द्रियों के भोग और माया के रचे हुये पदार्थों को, जहाँ तक बन सके चित्त से बिसारना चाहिये, और उनमें ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बर्ताव करना मुनासिब है, लेकिन फ़ज़ूल ख़्वाहिशें सुरत चेतन्य की धार को नीचे और बाहर की तरफ़ बहाती हैं, और इसमें अभ्यासी का किसी क़दर नुक़सान होता है ॥

१८—भोगों और पदार्थों में खैंच शक्ती बहुत है और वह मन और इन्द्रियों को लुभाकर अपनी तरफ़ खैंचते हैं, लेकिन इसमें मनकी चाह और तरंग भोगों के रस लेने की उनकी खैंच शक्ती को जगाती है, क्योंकि जो मन में तरंग न उठें, तो चाहे जैसे भोग और पदार्थ सन्मुख आवें, तो वह मन और इन्द्रियों को लुभा नहीं सके ॥

१९—इस वास्ते अभ्यासी को खास कर शुरू अभ्यास के समय, थोड़ी बहुत सम्हाल अपने मन की करना मुनासिब है, यानी किसी क़दर भोगों से आम तौर पर बैराग रखना चाहिये, और ज़रूरत के मुवाफ़िक़ उनमें बर्ताव करना चाहिये ॥

२०—इसमें कुछ शक नहीं कि मन और इन्द्रियों का भोगों की तरफ़ से रोकना निहायत मुशकिल काम है, क्योंकि वे जन्मान जन्म और जुगान जुग और सालहा साल से उनमें बर्तते चले आये हैं, और यह बर्ताव उनका पुराना स्वभाव हो गया है, और सब जीवों का इसी क़िसम का व्यौहार देख कर शौक़ पैदा होता और बढ़ता रहता है, और पुरानी आदत और शौक़ का जो कि अभ्यास करके खूब मज़बूत होगये हैं, एकदम छोड़ना निहायत मुशकिल बल्कि क़रीब २ नामुमकिन है, इस सबब से परमार्थी को शुरू अभ्यास के समय मन और इन्द्रियाँ अपनी चंचलता ज़ाहिर करके दुरुस्ती से अभ्यास में नहीं लगने देती हैं, इसवास्ते दुनियाँ और उसके सामान और भोगों की नाशमानता और ओछापन देख कर, थोड़ा बहुत चित्त को उनकी तरफ़ से उदासीन रखना ज़रूर है ॥

२१—जीव की ताक़त नहीं है कि मन और माया से मुक़ाबिला कर सके, और भोगों की चाह या उनमें बर्ताव यकायक हटा देवे, इसवास्ते मुनासिब और ज़रूर है, कि समरथ पुर्ष राधास्वामी दयाल की सरन और ओट लेकर परमार्थ की काररवाई शुरू करे, और उनकी दया का बल लेकर मन और इन्द्रियों से मुक़ाबिला करता रहे, तो आहिस्ते २ वे किसी क़दर ज़ेर होते जावेंगे, और अभ्यास में कुछ कुछ रस मिलता जावेगा, और बाक़ी सम्हाल और उनके ज़ोर से बचाव राधास्वामी दयाल अपनी दया से आप फ़रमावेंगे, और एक दिन मेहर और दया से धुर घर में इनसे जिता कर पहुंचा देंगे ॥

२२—जीव को मुनासिब है कि राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे, और जिस क़दर बन सके अपना अभ्यास नेम से दुरस्ती के साथ करता रहे, बाक़ी जो कुछ कसर होगी वह अपनी दया से दूर करेंगे, और अपना बल देकर सब बिघन और बिकार हटा देंगे ॥

२३—जीव को इस क़दर अहतियात करना लाज़िम और मुनासिब है, कि जहाँ तक बन सके भोगों की फ़ज़ल चाह और तरंगें हटाता रहे, और भोगों और

पदार्थों की याद या उनका ख़याल मन में न लावे सिवाय इसके कि जिस क़दर वास्ते गुज़ारे के दुनियाँ और देह में ज़रूर और मुनासिब है ॥

२४—और यह भी मुनासिब है कि मन और माया और इन्द्री वग़ैरा को, जोकि परमार्थ में बिघन कारक हैं, ज़ोरावर बैरी और दुश्मन समझ कर और अपने तईं निबल और कमज़ोर देख कर, अपने रक्षक कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की याद बढ़ाता रहे, और जब जब दुश्मनों का ज़ोर ज़्यादा होवे, तब उनकी दया और सहायता माँगता रहै, और अपनी भूल चूक पर शरमाता और पछताता रहे ॥

२५—(३) तीसरी-परमार्थी को होशियारी रखनी चाहिये, कि भोग बिलास वग़ैरा की गुनावन न उठावे और न उनका चिन्तवन करे और न आसा बाँधे और न तृश्ना जगावे, क्योंकि आसा और गुनावन भोगों की ज़्यादा नुक़सान करती है, बनिस्बत उस भोग के एक या दो बार भोग लेने के ॥

२६—गुनावन और चिन्तवन जिस किसी भोग की की जावे, और उसके प्राप्ती की आसा बाँध कर जतन शुरू किया जावे, तौ ज़्यादा वक्त, और ख़याल और बुद्धी उस भोग के करने और उसकी प्राप्ती के जतन

के बिस्तार में लगेंगे, और शौक़ उसकी प्राप्ती का बढ़ता जावेगा, और जब वह भोग जतन करके प्राप्त होगा, तब मन और इन्द्रियाँ उसमें ज़्यादा शौक़ और जोश के साथ लगेंगे, और बारम्बार उस के भोगने की चाह जगा कर तृश्ना बढ़ावेंगे, और इस तरह वह तरंग मन में बहुत ज़बर होकर अभ्यास में ख़लल डालेगी, और जो कभी प्राप्ती न हुई तो मन को बहुत दुख होगा ॥

२७—जो कोई चाह के उठने के बाद फ़ौरन उस भोग को भोग लेगा, तो ज़्यादा देर यह चाह मन में नहीं बसेगी, और न बार २ उस का ख़्याल उठेगा, बल्कि परमार्थी ऐसी चाह उठने और उस के पूरा होने के पीछे, अपने मन में थोड़ा बहुत शरमावेगा और पछता-वेगा, और फिर वैसी चाह कम उठावेगा ॥

२८—लेकिन जिसके मन में चाह ज़बर है, वह उसकी गुनावन और उस को पूरा करने के लिये जतन किये बग़ैर नहीं मानेगा, और उसके मन में पछतावा भी जल्द नहीं आवेगा, और जो कोई उसको रोकेगा या समझौती देवेगा, उससे नाराज़ होगा बल्कि दुश्मनी करेगा, और जब तक कि भोग पूरा नहीं कर लेगा या उस चाह के निमित्त जतन करने में कुछ दुख नहीं पावेगा, तब तक उसको नहीं छोड़ेगा ॥

२९—भोग की गुनावन करने में किसी क़दर रस मिलता है, और मन ऐसे ख़यालों के विस्तार करने में मगन होता है, इस सबब से वह तरंग पक्क जाती है, और गुनावन का रस पाकर मन बारम्बार उसको उठाता है, इसी तरह अनेक भोगों की अनेक तरंगें मन में बस जाती हैं, और वक़्त २ पर प्रगट होकर मन को अभ्यास में नहीं लगने देती हैं ॥

३०—और परमार्थ में ज़रूर है कि मन तरंगों और उनकी गुनावन से ख़ाली होवे, इस वास्ते परमार्थी को इस बात की अहतियात ज़रूर चाहिये, कि जहाँ तक मुमकिन होवे किसी भोग की फ़ज़ूल इच्छा न उठावे, और उसकी गुनावन में अपना वक़्त बरबाद न करे, और मामूली और ज़रूरी चाह जो हैं, उनमें दस्तूर के मुवाफ़िक़ थोड़ी अहतियात के साथ बर्तता रहे, पर जहाँ तक बन सके उनकी याद और गुनावन मनमें कम करे और हटाता जावे, बल्कि दुनियाँ की तरंगों से उसको किसी क़दर ख़ाली करे परमार्थी तरंगें और ख़्याल जैसे सतगुरु और प्रेमीजन की सेवा और परमार्थी चर्चा वग़ैरा करना शुरू करे, और फ़िर उनको भी हटाकर या कम करके, सिर्फ़ राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम, और उनके दर्शनों के प्राप्ती

की चाह बढ़ावे, और उसके पूरे होने के निमित्त जतन मुनासिब, यानी भजन सुमिरन और ध्यान और सतसंग, शौक़ के साथ करता रहे ॥

॥ बचन २५ ॥

बर्णन उस जुगत का कि जिस्से परमार्थी को संसार का दुख सुख कम ब्यापे, बल्कि बिलकुल न ब्यापे; और अभ्यास में थोड़ा बहुत रस और आनन्द बराबर मिलता रहे और आहिस्ते २ बढ़ता जावे ॥

१—संसार में सब जीव दुख सुख भोग रहे हैं, सबब इसका यह है कि उनका बंधन और आशक्ती अपनी देह और कुटम्ब परिवार और धन और माल और भोग वग़ैरा में है, जब इनमें से कोई चीज़ का हर्ज-मर्ज होता है, या घाटा बाढ़ा या जब सब काम इच्छा के मुवाफ़िक़ होते जाते हैं, या कोई काम बरख़िलाफ़ मरज़ी के होता है, तब ही सुख दुख या आराम और तकलीफ़ ब्यापते हैं ॥

२—इस वास्ते संतों और सब महात्माओं ने परमार्थ में पहिले शर्त यह रक्खी है, कि परमार्थी को तन मन

धन अर्पन करना चाहिये, यानी उनमें से अपना बंधन और आशक्ती आहिस्ते २ कम करके, एक दिन अपना पूरा छुटकारा उनसे करना मुनासिब है, तब सुख दुख के चक्कर से सच्चा और पूरा बचाव होगा और परमार्थ के बचनों की क़दर और महिमा मालूम पड़ेगी॥

३—लेकिन यह बात यानी तन मन से निराशक्त और निरबंध होना बहुत कठिन और मुशकिल है, क्योंकि जीव जन्मान जनम और जुगान जुग और सालहा साल से, उनमें बर्तता और बँधता चला आया है, और संग करके उसकी आशक्ती और बंधन अपनी देह और कुटम्ब परिवार और धन माल और भोग बिलास वग़ैरा में दिन दिन मज़बूत हो गया है, फिर उसका यकायक छूटना जिस क़दर कठिन है वह साफ़ ज़ाहिर है॥

४—यह आशक्ती और बंधन दो तरकीब से कम और ढीले हो सक्ते हैं--पहिले गहरा शौक़ और प्रेम सतगुरु और सतसंग और मालिक के चरनों में--दूसरे संतों की जुगत यानी सुरत शब्द मारग का थोड़ा बहुत बिरह और प्रेम अंग लेकर अभ्यास करके मन और सुरत को ऊँचे देश में चढ़ाने से॥

५—पहिली हालत किसी विरले बड़भागी और गहरे संसकारी परमार्थी को होवेगी, लेकिन दूसरी हालत हरएक परमार्थी को, जो थोड़ा सा भी शौक़ लेकर सतसंग और शब्द का अभ्यास करेगा, आहिस्ते २ कमाई करके हासिल हो सक्ती है ॥

६—जब किसी को गहरा शौक़ और प्रेम, संत सतगुरु और उन के सतसंग में बचन और महिमाँ सुनकर आ-गया, तब उसकी आशक्ती अपनी देह और कुटम्ब परिवार और धन माल और भोग बिलास वग़ैरे में एक दम ढीली होकर चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के आ जावेगी, और जिस क़दर अभ्यास करके रस अंतर में मिलता जावैगा, दिन २ बढ़ती जावेगी, और फिर वही शख़्स सतगुरु की आज्ञा और मालिक की मौज के अनुसार सहज में बर्तने लगेगा, और उसके मन और इन्द्रियों के बिकार और पिछली टेक और पक्ष और करम और भरम बहुत जल्द दूर हो जावेंगे, और अभ्यास में भी उसको मन और माया के बिघन बहुत कम सतावेंगे, और पिछले अगले करम भी उस के सहज में दया और प्रेम के बल से कट जावेंगे, और माया का चक्कर तीन गुनों का जो हरएक के अंतर और बाहर चल रहा है, उस

पर बहुत कम बल्कि कुछ भी असर नहीं कर सकेगा, और सुरत और मन उस के ऊँचे देश की तरफ़ सहज में चढ़ते और निर्मल होते चले जावेंगे, और संसारी चाहें भी जल्द नष्ट हो जावेंगी। ऐसे प्रेमी परमार्थी को महा बड़भागी और उत्तम संसकारी समझना चाहिये, और कुल्ल मालिक और संत सतगुरु की दया हर वक्त उस के शामिल हाल रहकर, उसकी परमार्थी तरक्की और सब तरह की सम्हाल उस के सुरत और तन मन को करती जावेगी॥

७—दूसरे दरजे के परमार्थी सतसंग और अभ्यास करके, आहिस्ते २ उसी मुक़ाम और हालत को जो कि उत्तम संसकारी को जल्द प्राप्त होती है, पहुंच सक्ते हैं। दया और मेहर कुल्लमालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की उनके संग भी बदस्तूर जारी रहेगी, और रफ़्ते २ उनका कारज बनावेगी॥

८—दुनियाँ में रहकर और देह में मन और इंद्रियों के घाट पर बैठ कर, कोई भी दुख सुख के चक्कर से बच नहीं सक्ता, सिवाय उनके कि जिनके मन और सुरत एकाग्र हो कर कुल्ल मालिक के चरनों में लग गए हैं, और उनका रस और आनन्द लेते हैं, या वह जो अभ्यास करके मन और इन्द्रियों के घाट से न्यारे हो गये, उनको

भी दुख सुख देह और संसार का नहीं ब्यापेगा ॥

९—परमार्थ में शामिल होने और करनी करने का मतलब यही है, कि एक दिन ऐसे दरजे पर पहुंचे कि जहाँ इस को सुख दुख दुनियाँ और देह का न ब्यापे, और अपने प्यारे सच्चे मालिक की मौज के साथ खुशी से मुवाफ़क़त करे, और रफ़्ते २ अमर देश में पहुंच कर परम आनन्द को प्राप्त होवे, सो यह बात कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और संत सतगुरु की दया और अंतर और बाहर के सतसंग से हासिल होगी ॥

१०—उत्तम संसकार से जिसका ज़िकर ऊपर किया गया मतलब यह है, कि कोई शख़्स पिछले जनम से भक्ती और अभ्यास करता आया है, और अब नम्बर उसका अनक़रीब पूरे दरजे पर पहुंचने का आगया है, सो ऐसे जीवों की हालत संत सतगुरु का दर्शन करके और बचन सुन के जलद बदलती जावेगी, और बाक़ी जीवों की वही हालत आहिस्ते २, सतसंग और अभ्यास करके हासिल होगी; सिर्फ़ देर और सबेर का फ़र्क़ है ॥

११—हर हाल में परमार्थी को ख़्याल और तवज्जह इस बात पर रखना ज़रूर और मुनासिब है कि जहाँ तक मुमकिन होवे, संत सतगुरु की आज्ञा अनुसार

बर्ताव करे, और जब जब जैसी मौज होवे उसके साथ मुवाफ़क़त करे, तब परमार्थ को पूरी लाभ प्राप्त होगी और दुख सुख के चक्कर से छुटकारा हो जावेगा ॥

१२—लेकिन यह कैफ़ियत तब हासिल होगी जब कि परमार्थी शख़्स की आशक्ती और बंधन तन मन धन में आहिस्ते २ कम होकर दूर हो जावेगी, नहीं तो जिस क़दर कि भुकाव और फँसाव इन में रहेगा, उसी क़दर उनके घाटे बाढ़े में तकलीफ़ और आराम पावेगा, और उसी क़दर मौज के अनुसार बर्ताव में भी क़सर रहेगी ॥

१३—इस बर्ताव के कई दरजे हैं, और उनका ज़िकर खोल कर बयान किया जाता है। पहिला सबर यानी लाचार होकर जो तकलीफ़ या आफ़त आवे उसको झेलना, यह हालत संसारियों की है कि पहिले रो पीट कर, और इसकी उसकी बल्कि मालिक तक की शिकायत करके; जब कुछ बस न चला तब चुप्प होकर बैठ रहे। दूसरा तहम्मुल यानी बरदाश्त करना, यह हालत बिद्यावान और बुद्धिवानों की है; कि सोच बिचार करके और दुनियाँ में उसी क़िसम के वाक़े और नमूने, जो पिछले और हाल के वक़्त में जा बजा जीवों पर गुज़रे हैं, याद लाकर अपने मन को समझाना

और जो तकलीफ़ या दुख आयद हुआ है, उस को धीरज के साथ बरदाश्त करना। तीसरे शुक्र, यानी अपने मालिक के चरनों में अहसानमंदी ज़ाहर करनी। यह हालत परमार्थी की शुरू भक्ती में है, कि उसको वक़्त सख़्ती और तकलीफ़ के ऐसी समझौती अपने मन को देनी चाहिये, कि न मालूम किस क़दर भारी सदमा और दुख आने वाला था, कि जो अपने प्यारे मालिक ने दया और मेहर से बहुत कम कर दिया, यानी सूली का काँटा और मन का सेर भर रक्खा, और फिर उसमें भी न मालूम क्या मसलहत और फ़ायदा परमार्थी यानी भक्त का मंज़ूर है, सो हरदम और हरहालत में शुकराना मालिक का मुनासिब और लाज़िम है, और धीरज के साथ बग़ैर तंग होने मन के उस तकलीफ़ या दुख को सहना, और उस सहन में भी मालिक की दया उसको थोड़ी बहुत नज़र आवैगी। चौथे तसलीम यानी शौक़ के साथ मंज़ूर और क़बूल करना, कोई हालत ख़ुशी और आराम और सख़्ती और तकलीफ़ का, ऐसी समझ लेकर कि वह अपने प्यारे मालिक की भेजी हुई है, और किसी हाल में ख़ाली मसलहत और फ़ायदे से न होगी, यह हालत ऊँचे दरजे के प्रेमी भक्तों की है, कि वे

हमेशा ऐसी समझ रखते हैं कि जो कुछ होता है मालिक के हुकम और मौज से होता है, और जो अपने प्यारे के हुकम से कोई हालत अपने ऊपर आई तो उसका आदर करना यानी ख़ुशी से क़बूल और मंज़ूर करना वाजिब और लाज़िम है, और उसका निरादर करना यानी मन में दुखी और नाराज़ होना, ख़िलाफ़ क़ायदे और दस्तूर प्रेम और भक्ती के है। पाँचवाँ रज़ा यानी राज़ी होना मालिक की मौज और हुकम में-यह हालत पूरे प्रेमी भक्तों की है, कि वे कभी किसी बात का सोच और फ़िकर नहीं करते, और अपने सब कामों को मालिक की मौज और रज़ा पर छोड़ दिया है, यानी मामूली काररवाई और तदबीर भी चाहें करते हैं, लेकिन नतीजा उसका जैसा कुछ मौज से होवे उस पर राज़ी हैं, और किसी तरह की फुरना या ख़याल उन के मन में नहीं उठता, खुलासा यह कि किसी काम या उस के नतीजे और फल में उन का बंधन नहीं है, जो कुछ करते हैं, मौज के आसरे पर और जो नतीजा मौज से होवे, उस में ऐसे ही राज़ी और मगन रहते हैं जैसे बालक माता पिता के हुक्म और काररवाई में बे फ़िकर और खुश रहता है॥

१४—इन म से दो दरजों में दुनियाँ दारों का बर्ताव रहता है और बाक़ी के तीन दरजे भक्तों के हैं, यानी

वही लोग जो राधास्वामी मत में शामिल हो कर, प्रेमा भक्ती संत सतगुरु अथवा कुल्ल मालिक के चरनों में कर रहे हैं, ॥

१५—जो कोई राधास्वामी दयाल की सरन में आया उसकी सम्हाल और रक्षा वे अपनी दया से जिस क़दर कि मुनासिब और उसकी परमार्थी तरक़्क़ी के वास्ते ज़रूर है आप करते हैं, और जिस क़दर जिसकी प्रीत और प्रतीत चरनों में गहरी और मज़बूत है, उसी क़दर उनकी दया उसको प्रगट नज़र आती है, और तकलीफ़ और आराम के वक्त उसे सहारा और मदद मिलती है, और मौज के साथ मुवाफ़क़त करने में उसी क़दर उसको आसानी होती है ॥

१६—लेकिन जब तक जिस किसी की जिस क़दर आशक्ती और बंधन, संसार और उसके सामान में है, उसी क़दर उस के मन को संसार की हान लाभ में सुख दुख होवेगा, पर जो सरन और प्रीत प्रतीत चरनों में राधा-स्वामी दयाल के मज़बूत है, तो उसका असर उस क़दर उस पर नहीं होगा, जैसा कि संसारियों के दिल पर होता है, बल्कि जल्द मौज और मेहर और दया का ख़्याल करके, थोड़ा झकोला खा कर अपने मन को सम्हाल लेगा, और बदस्तूर प्रेम और भक्ती के घाट पर आ जावेगा ॥

१७—प्रेमी भक्तोँ को इन्ही तीन दरजोँ के मुवाफ़िक़ सुरत शब्द मारग के अभ्यास मेँ भी रस और आनंद आवेगा, और आहिस्ते २ तरक्की होती जावेगी; यानी मन मेँ उनकी प्रीत और प्रतीत चरनोँ की और चाह दर्शनोँ की बढ़ती जावेगी, और उसी क़दर दुनियाँ और उसके सामान की मुहब्बत कम होती जावेगी ॥

१८—हरएक प्रेमी भक्त को मुनासिब है कि अभ्यास के वक्त, बिरह या प्रेम अंग मन मेँ लावे, और नीचे से अपने मन और सुरत की धार को समेट कर ऊपर को चढ़ावे, और स्थान २ पर ठहरावे; और जो यह काररवाई थोड़ी बहुत दुरुस्ती के साथ बनती जावेगी यानी दुनियाँ और उसके सामान के ख़्याल मन मेँ नहीँ आवेँगे, तो थोड़ा बहुत रस और आनन्द अभ्यास मेँ ज़रूर मिलता रहेगा, और उसको ताक़त और शौक़ बढ़ते जावेँगे।

१९—जब कभी बिरह या प्रेम अंग का घाटा मालूम पड़े, तो उस वक्त प्रेमी अभ्यासी को मुनासिब है कि चरनोँ मेँ प्रार्थना करके राधास्वामी दयाल की दया माँगे तो भी उसका मन थोड़ा बहुत सिमटेगा, और इस सिमटाव और किसी अस्थान पर ठहराव का रस थोड़ा बहुत ज़रूर मालूम पड़ेगा, यानी अभ्यास मेँ जो

ऊपर को जुगती के मुवाफ़िक़ किया जावैगा, तौ कभी ख़ाली नहीं रहेगा ॥

२०—अब मालूम होवे कि हर एक जीव के अंतर में मन और माया का त्रिगुनआत्मक चक्कर हमेशा चलता रहता है, और उसके मुवाफ़िक़ मन और इन्द्रियों की हालत बदलती रहती है, यानी कभी सतोगुनी कभी रजोगुनी और कभी तमोगुनी ख़्याल या तरंगें पैदा होती रहती हैं, और इसी चक्र के साथ अगले पिछले और हाल के करमों के फल का असर भी, जैसे कि इस शख़्स ने किये हैं ज़ाहर होकर, मन और इन्द्रियों की हालत को बदलता रहता है ॥

२१—सिवाय इसके जीव के संगियों की दुख सुख की हालत का, जोकि वे अपने करमों के सबब से भोगते रहते हैं, इस शख़्स पर थोड़ा बहुत असर पहुंचता है, और उसके मन और इन्द्रियों की हालत को उसी मुवाफ़िक़ बदलता रहता है ॥

२२—अलावा इसके जो जो ख़्वाहशें या तरंगें संसारी यह शख़्स अपने या अपने संगियों के वास्ते उठाता है, और उनकी चिन्ता या गुनावन अपने मनमें करता है, या जतन और तदबीर सोचता और बिचारता है, उनका भी असर इसके मन और बुद्धि और इन्द्रियों पर पहुंच कर उनकी हालत को बदलता है ॥

२३—अब ख़्याल करो कि इतने झगड़े और बखेड़े मन और माया और करम और आसा और मंसा वग़ैरे के, इस जीव के पीछे लगे हुये हैं, सो जब तक इसके चित्त में संसार और उसके सामान की तरफ़ से थोड़ा बहुत बैराग न होगा, और चरनों में राधास्वामी दयाल के प्रीत और प्रतीत और चाह दर्शन की ज़बर न होगी, तब तक इसके मन और सुरत का अंतर में सिमटाव और चढ़ाई दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगी ॥

२४—इसवास्ते प्रेमी अभ्यासी को मुनासिब है, कि जहाँ तक मुमकिन होवे इन चक्रों को हटाकर और भुलाकर, और उमंग और प्रेम हिरदे में जगाकर अभ्यास किया करे, और चरनों में वास्ते प्राप्ती दया के जब तब अभ्यास के समय, और कभी २ दूसरे वक्तों पर भी प्रार्थना करता रहे, तो राधास्वामी दयाल की मेहर से, सब काम उसका आसानी के साथ बनता जावेगा, यानी दर्शन का शौक़ और चरनों में प्रेम बढ़ता जावेगा, और अगले पिछले करमों का असर घटता जावेगा, और संसारी ख़्वाहिशें सिवाय ज़रूरी और मुनासिब के घटती और कम होती जावेंगी, और अभ्यास में थोड़ा बहुत रस मिलता रहेगा, और दया और मेहर की अंतर और बाहर परख करके, मौज

के साथ मुवाफ़कत करने का इरादा बढ़ता जावेगा, और फिर संसारी दुख सुख की हालत, ऐसे प्रेमी भक्त पर कम आवेगी, और जब कभी आवेगी तो उसका असर बहुत कम ब्यापेगा ॥

२५—इस क़दर ख़याल रखना चाहिये कि यह हालत और कैफ़ियत पूरी २ एकदम प्राप्त नहीं हो सक्ती है, लेकिन जो कोई राधास्वामी दयाल की सरन में आया और अपनाया गया और वह चेतकर होशियारी के साथ अंतर और बाहर सतसंग करता है, और उनके दर्शनों की चाह दिन २ बढ़ाता जाता है, उसकी भक्ती रोज़ बरोज़ बढ़ती जावेगी, और वह सब दरजे आहिस्ते २ ते करता हुआ, एक दिन निजधाम में राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंच कर, परम और अमर आनंद को प्राप्त होगा, और जिस क़दर हालत उसकी बदलती जावेगी, उसी क़दर मन और माया और काल और करम और तीनों गुन वग़ैरा के चक्करों का असर उस पर कम होता जावेगा, और एक दिन इन सब से न्यारा हो जावेगा ॥

२६—यह सच है कि संसार यानी कुटुम्ब परवार धन माल और भोग बिलास वग़ैरा की प्रीत और आशक्ती छोड़ना और चरनों में गहरा प्रेम लाना यकायक मुशकिल

है, लेकिन जो भाग से कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु या साधगुरू और उनके सतसंग और अभ्यास की जुगती मैं प्यार आजावे, तौ जल्द और सहज मैं इन सब से बैराग अंतर मैं आसक्ता है ॥

२७—दुनियाँ मैं देखने मैं आता है कि जिस किसी की मुहब्बत या आशक्ती थोड़ी बहुत किसी इन्द्री भोग मैं हो गई तौ वह उसके रस मैं इस क़दर मस्त हो जाता है कि तमाम संसारी प्रीत और बंधनौं को चंदरोज़ मैं ढीला कर देता है, बल्कि अपनी देह और जान और इज़्ज़त का भी कुछ ख़याल नहीं करता, जैसे शराबी तमाशबीन और जुवारी वग़ैरा ॥

२८—इसी तरह जिस किसी दो शख़्सौं की गहरी मुहब्बत आपस मैं हो जाती है, तौ चाहे वह ग़ैर क़ौम के होवैं, लेकिन निहायत उनका आपस मैं खिलामिला हो जाता है, और इस क़दर अपने दोस्त की ख़ातिर एक दूसरे को मंज़ूर होती है, कि कुटुम्ब परवार और बिरादरी वग़ैरे से नाता बहुत ढीला कर देते हैं, और धन और माल वग़ैरे दोस्त की नज़र करके, जैसे वह रहे और रक्खे वैसे ही ख़ुशी से रहते हैं, और मरते दम तक दोस्ती को निबाहते हैं ॥

२६—इसवास्ते यह कुछ ज़रूर नहीं है कि जब मन और सुरत ऊँचे देश मैं अभ्यास करके चढ़ैं, तब ही चित्त मैं बैराग आवेगा, क्यौंकि यह लोग जिनका ज़िकर ऊपर हुआ, कुछ भी परमार्थ से ख़बर नहीं रखते, और न उनकी तवज्जह इस तरफ़ को होनी है॥

३०—लेकिन कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संतौं की जीवौं पर बड़ी दया है, कि वे एक दम संसार० क त्याग नहीं कराते हैं, बल्कि यह उपदेश है कि गृहस्त मैं रह कर और कारोबार और रोज़गार दस्तूर के मुवाफ़िक़ करते हुये अभ्यास संतौं की जुगत का करो, तो जिस क़दर मन और सुरत के सिमटाव और चढ़ाई से, अंतर मैं रस और आनंद मिलता जावेगा, और चरनौं मैं प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी, उसी क़दर चित्त संसार और उसके सामान और पदार्थों से अंतर मैं उपराम होता जावेगा, और यह अंतरी बैराग सच्चा और पक्का होवेगा॥

३१—बाज़े लोग परमार्थ के निमित्त छोटी या बड़ी उमर मैं, घर बार और रोज़गार छोड़कर भेष धारन कर लेते हैं, यानी फ़क़ीर बन जाते हैं, पर जो उनको सच्चे और पूरे गुरू से संतौं की जुगत नहीं मिली, तो उनका बैराग थोड़े दिनौं मैं ढीला पड़ जाता है, और अनुराग

यानी मालिक के मिलने की चाह भी बदल जाती है, फिर ऐसे त्याग से कुछ फ़ायदा नहीं होता है ॥

३२—इसमें शक नहीं कि ज़ाहरी त्याग करने में ऐसे लोगों ने बहुत मरदानगी की पर बसबब न मिलने पूरे गुरू और पूरी जुगत के, जो फ़ायदा कि उनको हासिल होना चाहिये था नहीं हुआ, बल्कि जो थोड़े दिन के पीछे जब कि वे भेष के रंग में रंग गये, और वहाँ की चाल ढाल में पक गये, उनके मन में बिल्कुल चाह अपने जीव के कल्यान की नहीं रहती, और जो पूरे गुरू मिलें और पूरी जुगत भी बतावें, तो वे उनका सतसंग करना और उपदेश लेना मंज़ूर नहीं करते, फिर ऐसे त्याग और बैराग से असली फ़ायदा हासिल नहीं हुआ, और मुफ़्त अपनी ज़िन्दगी सैर और तमाशे और खान पान और मान बड़ाई के लालच में बरबाद करी।

३३—संत सतगुरु जो कुल्ल रचना के भेद से वाक़िफ़ हैं, अति दया करके जीवों को समझाते हैं, कि सच्चा और पूरा बैराग बग़ैर मन और सुरत को आकाश में चढ़ाने के हासिल नहीं हो सक्ता, और ज़ाहरी त्याग करना जब तक कि मन में सच्चा और पूरा बैराग न आवे और अनुराग प्राप्ती दर्शन कुल्ल मालिक का

पैदा न होवे, महज़ फ़ज़ूल है, और वह सब से भारी बिकार अहंकार का पैदा करने वाला है, इसवास्ते क़तई हुक्म दिया कि पहिले भक्ती गृहस्त में रहकर शुरू करो, और जब अभ्यास करके मन और इन्द्रियों की हालत बदले, तब अंतर में अपने चित्त को सब भोग और पदार्थों की तरफ़ से, बल्कि कुल्ल संसार और उसके कारोबार से हटाते जाओ, तब रफ़्ते २ पूरा काम बनेगा ॥

३४—जिस किसी ने बे समझे बूझे और बग़ैर मिलने पूरे गुरू और उनकी पूरी जुगत के, घरबार और रोज़गार छोड़ दिया, उसने भारी ग़लती की और धोखा खाया, क्योंकि मन और इन्द्रियाँ और काम क्रोध लोभ मोह वग़ैरे की जड़ बहुत दूर और ऊँचे देश में है, सो जब तक अभ्यासी अभ्यास करके वहाँ तक नहीं पहुंचेगा, तब तक उसके त्याग और बैराग का पूरा ऐतबार नहीं हो सक्ता, और न उसको संतों के निज देश में, जहाँ कि मन और माया और काल और करम और कष्ट और कलेश बिल्कुल नहीं हैं, बासा मिलेगा, यौंही माया देश में चक्कर खाता रहेगा, इस वास्ते हर एक परमार्थी को जो गृहस्ती है या बिरक्त मुनासिब और लाज़िम है, कि संतों के उपदेश के मुवाफ़िक़ काररवाई करे, तब उसका सच्चा और पूरा उद्धार होगा, और जो गृहस्त में है तो उसके दोनों यानी

स्वार्थ और परमार्थ दुरुस्त बन जावेंगे ॥

३५—खुलासा यह है कि संसार और उसके सामान और पदार्थों से, बैराग चित्तमें आना बहुत कठिन नहीं है, पर शर्त यह है कि सच्चे मालिक के चरनों में प्रीत आजावे, और संतों की जुगत का अभ्यास दुरुस्ती के के साथ बन पड़े, कि जिससे मन और सुरत दिन २ ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ते जावें, और जो सच्चे मालिक का भेद और उससे मिलने की जुगत, संत सतगुरु या उनके सच्चे प्रेमी से न मिले, तो उस बैराग का पूरा २ ऐतबार नहीं हो सक्ता. और न उस का असली फ़ायदा यानी अंतर में रस और आनन्द का मिलना, और दिन २ मालिक के चरनों से मेल होना, हासिल होगा ॥

॥ बचन २६ ॥

राधास्वामी मत वालों को अपने उद्धार की निसबत किसी तरह शक और संदेह मन में नहीं लाना चाहिये क्योंकि जो कोई राधास्वामी दयाल की सरन लेकर, सुरत शब्द का अभ्यास करेगा, उसका पूरा उद्धार एक दो तीन हद्द चार जनम में ज़रूर हो जावेगा ॥

१—राधास्वामी मत में बाहर सतसंग और अंतर

में अभ्यास सुरत और मन के ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाने का कराया जाता है, और भेद कुल्ल मालिक के निज धाम का जो कि सुरत का निज देश है, और भी रास्ते की मंज़िलों का समझाया जाता है, कि जिस्से अभ्यासी रास्ते में कहीं न अटके, और हर एक मुक़ाम को तै करता हुआ धुर धाम में पहुंच कर, राधास्वामी दयाल का दर्शन और उन के चरनों में वासा पावे ॥

२—जोकि राधास्वामी मत के सतसंगी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का इष्ट बाँध कर और उनके चरनों की सरन दृढ़ करके, उनके निज धाम में पहुंचने की आसा रखते हैं, और उसको दिन २ बढ़ाते और मज़बूत करते जाते हैं, और जिस क़दर जिस किसी से बन सक्ता है, उसी मुवाफ़िक़ रोज़मर्रा अभ्यास सुरत और मन के उसी तरफ़ के चढ़ाने का करते हैं, इसवास्ते उनके मन में तड़प और बेकली ऊँचे देश की तरफ़ चलने और चढ़ने की बराबर लगी रहती है ॥

३—सुरत शब्द जोग का अभ्यास असल में जीते जी मरने का अभ्यास है, यानी जैसे कि सुरत अख़ीर वक़्त पर पैरों से आँखों तक खिंचती हुई मालूम होती है, ऐसे ही जीते जी अभ्यास के समय उसका खिंचाव और सिमटाव होता जाता है ॥

४—और जिस क़दर कि सुरत ऊँचे देश की तरफ़

चढ़ती जाती है, उसी क़दर संसार और संसार के भोगों और पदार्थों की तरफ़ से नफ़रत होती जाती है, और इन्द्रियों के रस फीके पड़ते जाते हैं, और निज घर की तरफ़ चलने और चढ़ने की चाह बढ़ती जाती है, और जब दया से शब्द साफ़ और रसीला सुनाई देता है, या कुछ परकाश और नूर नज़र आता है, तब प्रेम और उमंग वास्ते प्राप्ती दर्शन और ज़्यादा चढ़ाई के बढ़ता जाता है और उसी क़दर अभ्यास के समय देह सुन्न होती जाती है, और इस तरफ़ का होश कम होता जाता है ॥

५—और जिस क़दर कि मन और सुरत सिमटकर उमंग के साथ घट में चढ़ते हैं, उसी क़दर शब्द और रूप का रस और आनन्द मिलता है और उस के साथ शौक़ और उमंग भी ज़्यादा, और दुनियाँ के ख़्याल यानी गुनावन कम और दूर होती जाती हैं, और मन निश्चल और चित्त निर्मल होता जाता है॥

६—राधास्वामी मत में सब में भारी संजम शौक़ और प्रेम का है, और जब यह थोड़ा बहुत दिल में पैदा हुआ और अभ्यास करके थोड़ा बहुत रस और आनन्द पाकर बढ़ने लगा, तो दिन २ अभ्यास की तरक़्क़ी होती जावेगी, और दर्शनों के प्राप्ती की आसा और प्रतीत मज़बूत हो जावेगी ॥

७—मालूम होवे कि जिस क़दर मन और सुरत को रस और आनन्द अंतर में मिलता जाता है, उसी क़दर चित्त संसार के भोगों और पदार्थों से हटता जाता है, और ख़्वाहिश और चाह संसारी कम होती जाती है, और शौक़ दर्शन का बढ़ता जाता है, और बंधन देह और दुनियाँ के भी ढीले होते जाते हैं ॥

८—जब कि इस तरह अभ्यास करके मन और सुरत का झुकाव और खिंचाव घट में ऊपर की तरफ़ को होने लगा, तब अख़ीर वक़्त पर जब कि सुरत सर्व अंग करके, पिंड को छोड़कर ऊपर की तरफ़ क़ुदरती तौर पर खिंचेगी, उस वक़्त अभ्यासी को किस क़दर आसानी अपने घर की तरफ़ चलने की होवेगी, और कैसा भारी रस और आनन्द खुलने शब्द का और नज़र आने दर्शन का मिलैगा, कि जिसको पाकर सुरत निहायत उमंग के साथ ऊपर को चढ़ेगी, और जहाँ सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु मुनासिब समझैंगे, उसको ऊँचे और सुख स्थान में बासा देवेंगे ॥

९—यह हाल गहरे अभ्यासियों का होगा, और जो कम दरजे के अभ्यासी हैं, उनकी भी सुरत उसी तरह शब्द और स्वरूप की मदद पाकर, ऊपर की तरफ़ को उमंग के साथ, अख़ीर वक़्त पर मामूल से ज़्यादा चढ़ेगी और सुख अस्थान में यानी सहसदल कँवल और उसके

ऊपर बासा पावेगी, और जो ज़्यादा दरजे के अभ्यासी हैं, वह अपने दरजे के मुवाफ़िक़ त्रिकुटी में या दसवें द्वार में, और जो अव्वल दरजे के हैं, वह सत्तलोक और राधास्वामी पद में बासा पावेंगे॥

१०—ख़ुलासा यह है कि सुरत शब्द जोग का अभ्यासी चाहे जिस दरजे का होवे, और जिसने सच्चे मन से राधास्वामी दयाल की सरन ली है, वह सहस दल कँवल के नीचे नहीं ठहरेगा। वह राधास्वामी दयाल की मेहर और संत सतगुरु की दया से, इस मुक़ाम के ऊपर और ऊँचे से ऊँचे मुक़ामों में, अपनी २ भक्ती के मुवाफ़िक़ दरजे पाता हुआ, एक दिन धुर धाम में पहुंच जावेगा, और इसी का नाम पूरा उद्धार है॥

११—हरचंद मन और माया और काल और करम भक्ती की तरक्क़ी में अनेक तरह के बिघन डालते रहते हैं, पर जिस किसी के हिरदे में सच्चा शौक़ अपने जीव के उद्धार का दया से पैदा होगया है, उसका रास्ता रोक नहीं सक्ते, बल्कि कुछ अर्से के अभ्यास के बाद, वही बिघन अभ्यासी के मददगार होजाते हैं, और इस तौर पर राधास्वामी दयाल की दया से रास्ता सहज में तै हो जाताहै॥

१२—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल इस क़दर अपने भक्तों पर, जो सच्चे मन से सरन में आये हैं दया फ़र-

माते हैं, कि सिर्फ़ उन्हीं का नहीं बल्कि उनके निज़ कुटम्बियों का भी, जिस क़दर मुनासिब होता है उद्धार फ़रमाते हैं, यानी उनसे अपने भक्त की सेवा लेकर या उसमें प्रीत लगाकर, अख़ीर वक्त़ पर उनके मन और सुरत को सहज में थोड़ा बहुत चढ़ाते हैं, और चौरासी के चक्कर से बचाकर, और फिर नर देही में लाकर सतसंग और भजन वग़ैरा कराते हैं, इस तरह उनके उद्धार का रास्ता जारी हो जाता है ॥

१३—यह ख़ास दया किसी वक्त़ में जीवों पर नहीं हुई, जो कि अब कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु स्वरूप धारन करके जीवों पर आप फ़रमाई है, कि जिस किसी ने सच्चे मन से उनके चरनों में थोड़ी बहुत भक्ती करी, तो उसका और भी उसके निज रिश्तेदारों का बल्कि नौकरों तक का दरजे बदरजे उद्धार फ़रमाते हैं ॥

१४—माद्दे का ख़वास है कि जिस तरफ़ एक दफ़े रवाँ होवे, तो बार २ उसी तरफ़ को वक्त़ मुक़र्ररा पर रुजू करता है, जैसे एक बार मुसिल लिया जावे या फ़स्द खोली जावे, तो माद्दा या ख़ून उसी तरफ़ को वक्त़ मुक़र्ररा पर बारम्बार रुजू करते हैं, फिर सुरत और मन जिनका निज घर ऊँचे देश में है, अख़ीर वक्त़ पर जब कि क़ुदरती खिंचाव अंदर में कुल्ल पसारे का

ऊपर की तरफ़ को होगा, किस तरह और तरफ़ को जा सक्ते हैं, पर शर्त यह है कि मन और सुरत में चाह और आसा अपने घर में जाने और अपने मालिक से मिलने की पैदा होकर, जिस क़दर मुमकिन होवे जीते जी मज़बूत हो जावे ॥

१५—और जो घर का भेद नहीं मिला और जीते जी उस रास्ते पर चलना नहीं शुरू किया, और आसा और बासना देह और संसार और उसके भोगों और पदार्थों में रही, तो वह मन और सुरत ज़रूर अपनी चाह और करनी के मुवाफ़िक़ सहसदल कँवल के नीचे जो सुन्न है उसमें ग़ोता लगाकर, फिर नीचे की तरफ़ उतर कर किसी न किसी देश और जोन में बासा पावेंगे, यानी फिर जनमैंगे और शरीर धारन करेंगे ॥

१६—जो करनी अच्छी है तो स्वर्गादिक और मृत्यु लोक में नरदेही पावेंगे और सुख भोगेंगे, और जो नाक़िस करनी है तो नीचे देश और नीची जोनों में भरमैंगे ॥

१७—जिस वक़्त कि सुरत छठे चक्र के पार सुन्न में जाती है, उस वक़्त देह और दुनियाँ की काररवाई की याद भूल जाती है, लेकिन थोड़े अर्से बाद जो ज़बर बासना है उसकी फुरना होती है, और उसी के मुवाफ़िक़ उस सुन्न से जहाँ बासा मिलैगा, उस धार पर

जो उस देश या जोन से मिली हुई है; सवार होकर उतर जाती है ॥

१८—इस उतार का सबब यह है कि उस सुरत और मन का रुख़ ज़िंदगी में नीचे की तरफ़ रहा और भोगों की आशक्ती करके धार उसी तरफ़ को हमेशा जारी रही सो उसी स्वभाव और बासना के मुवाफ़िक़ मरने के बाद भी वैसी ही फुरना उठती है, और सुरत को खींच कर नीचे के देश और जोन में ले जाती है ॥

१६—इसवास्ते हर एक जीव को चाहे औरत होवे या मर्द मुनासिब और लाज़िम है, कि इसी ज़िंदगी में अपने निजघर और उसके रास्ते का भेद और जुगत चलने की, संत सतगुरु या उनके प्रेमी सेवक से दरियाफ़्त करके, जिस क़दर बन सके उस रास्ते पर चलना शुरू करे, और कुछ रस और आनन्द अंतर में पाकर आसा और चाह अपने निजघर में पहुंचने, और अपने सच्चे पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन के प्राप्ती की मज़बूत बाँधे, तो अलबत्ता उस को संत सतगुरु की दया से ऊँचे देश में बासा मिलेगा, और जब तक कि धुरधाम में नहीं पहुंचेगा, तब तक एक दो या तीन जनम धारन करके, और वही जुगत कमा कर ऊँचे से ऊँचे देश में बासा पावेगा, और हर एक जनम

पहिले जनम से बेहतर होगा, और संत सतगुरु भी हर जनम में मिलेंगे ॥

२०—राधास्वामी मत के हर एक सतसंगी को मुनासिब है, कि जिस क़दर अभ्यास बन सके राधास्वामी दयाल की सरन लेकर, हररोज़ बिला नाग़ा करता रहे, और सतसंग करके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता जावे, और शक और शुभा या किसी तरह का संदेह मन में न रक्खे, तो राधास्वामी दयाल मेहर से अपना बल देकर, जिस क़दर करनी मुनासिब और ज़रूर है कराकर एक दिन निजघर में पहुंचा देंगे, कि जहाँ सुरत परम आनन्द को प्राप्त होगी, और जनम मरन के दुख और देहियों के कष्ट और कलेश से बिलकुल छुटकारा हो जावेगा, इसी को पूरा उद्धार कहते हैं। और जो कोई इस तरह अभ्यास जारी रक्खेगा वह और जोनों में नहीं जावेगा यानी चौरासी का चक्कर उसका फ़ौरन कट जावेगा; इस बात में किसी को कभी शक और संदेह न लाना चाहिये ॥

॥ बचन २७ ॥

सच्चे परमार्थी को वास्ते अपनी तरक्क़ी के सात बातों की सम्हाल रखना ज़रूर है ॥

१—जो कोई कि सच्चा परमार्थी है और सच्चे मालिक

से उसके निज धाम में पहुंच कर मिलना चाहता है, उसको यह सात बातें ज़रूर माननी चाहियें, और उनके मुवाफ़िक़ अपने परमार्थ की काररवाई करना चाहिये, तब उसके हिरदे में प्रेम पैदा होगा, और उन सातों बातों की सम्हाल के साथ दिन २ बढ़ता जावेगा, यानी परमार्थी रंग चढ़ता जावेगा, और संसारी रंग उतरता जावेगा, यानी मन के अंग बदलते जावेंगे और बिकार दिन २ घटते जावेंगे ॥

२—वह सात बातें यह हैं ॥

(१)—पहिले कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत ॥

और यह सतसंग में निरनै और भेद के बचन सुन कर और उनका गहिरा मनन और बिचार कर के हासिल होगी। हर एक परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है कि जिस क़दर संसे और भरम और शक और शुभा निस्बत कुल्ल मालिक की मौजूदगी और उसकी सर्व समरतथता और क़ुदरत के उसके मन में धरे होवें या पैदा होवें, उनको सतसंग में बैठ कर साफ़ और दूर करावे, क्योंकि जो किसी क़िस्म का थोड़ा भी शक और संदेह इस मुआमिले में रहा, तो वह प्रीत और प्रतीत में बिघन डालेगा, और फिर अभ्यास में भी कसर पड़ेगी, और यह संसे और भरम

राधास्वामी मत के सतसंग में आसानी से दूर हो सक्ते हैं ॥

(२)—दूसरे संत सतगुरु और साध गुरू के चरनों में प्रीत और प्रतीत ॥

यह वास्ते दुरुस्ती से बन्ने अभ्यास और पूरी तौर पर समझने उसूल राधास्वामी मत के बहुत ज़रूर हैं। जो संत सतगुरु में थोड़ा बहुत भाव नहीं आवेगा, तो मत की भी समझ बख़ूबी नहीं आवेगी, और न जुगत दुरुस्ती से कमाई जावेगी, और न अंतर और बाहर मेहर और दया की प्राप्ती होगी। जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, उसको संत सतगुरु के चरनों में बचन सुनते ही भाव और प्यार आवेगा, क्योंकि उन बचनों को सुनकर और समझ कर, अपने प्रीतम कुल्ल मालिक का लखाव आवेगा, और उसके निज धाम और रास्ते का पता और भेद मिलेगा, और चलने की जुगत दरियाफ़्त होगी, फिर ख़्याल करो कि जो कोई अपने प्यारे माशूक़ और मतलूब का पता और निशान बतावे, वह किस क़दर प्यारा लगना चाहिये। दुनियाँ में जो कोई क़ासिद वग़ैरा अपने प्यारे की परदेश से ख़बर लाता है, वह निहायत प्यारा लगता है, और उसकी बहुत ख़ुशी के साथ ख़ातिरदारी और महिमानदारी करते हैं, फिर जो कि कुल्ल मालिक का

भेदी और मंत्री है उसका जिस क़दर भाव और प्यार और सेवा की जावे वह थोड़ी से थोड़ी है, क्योंकि वही सब तरह से मदद देकर एक दिन जीव को धुर घर में पहुंचा सकते हैं, और किसी तरह किसी का गुज़र महल में या उसके रास्ते पर नहीं हो सक्ता ॥

सच्चे परमार्थी को सतसंग और अभ्यास करने से दिन २ उनकी गतमत और ताक़त की ख़बर पड़ती जावेगी, और उसी क़दर उसकी प्रीत और प्रतीत उनके चरनों में बढ़ती और मज़बूत होती जावेगी ॥

(३) तीसरे शब्द और नाम में प्रीत और प्रतीत ॥ राधास्वामी मत में नाम की दो क़िस्में हैं—एक धुन आत्मक जिसको शब्द कहते हैं, और उसकी धुन घट २ में हरदम जारी है, और यह मुराद चेतन्य की धार रवाँ से है, जिसके साथ बराबर धुन होती है, और वही धारा कुल्ल रचना की करता और सम्हालने वाली है। और दूसरा वर्णात्मक, इससे मतलब उसी धुन्यात्मक नाम से है, जो कि बोलने और लिखने में आया, और धुन्यात्मक नाम को लखाता है। धुन्यात्मक नाम यानी शब्द ज्यों का त्यों बोलने और लिखने में नहीं आ सक्ता, लेकिन जहाँ तक कि मुमकिन था संत उसको तलफ़्फ़ुज़ में लाये हैं, और उसके वसीले से धुन्यात्मक नाम को लखाते हैं ॥

धुन्यात्मक नाम चेतन्य की धार है, और वही जान और सुरत की धार है, और उससे सब रचना हुई और उसी के आसरे क़ायम है। इसी धार यानी उस के साथ जो धुन हो रही है, उसको पकड़ के चलना सुरत शब्द जोग कहलाता है इसी जुगत से यानी सुरत को शब्द में लगाकर चढ़ाने से रास्ता ते करना, और एकदिन धुर घर में पहुंचना मुमकिन है। और कोई दूसरा रास्ता धुर घर का पहुंचाने वाला रचा नहीं गया। प्राण की धार और दूसरी धारें माया के घेर से निकसी हैं, सो वहीं उलट कर ख़तम हो जाती हैं, माया यानी भौसागर के बाहर कोई नहीं जाती है इस वास्ते सच्चे परमार्थी को मुनासिब है कि शब्द का भेद लेकर, यानी मुक़ाम २ की धुन को दरियाफ़्त करके और उसमें प्यार और भाव लाकर नित्त नेम से अभ्यास करे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करके, संत सतगुरु की दया संग लेवे, तब अभ्यास में पूरी मदद मिलेगी, और अगले पिछले करम और मन और माया के बिघन, सहज में आ-हिस्ते २ कटते और दूर होते जावेंगे॥

और मालूम होवे कि बर्णात्मक नाम के अभ्यास से सफ़ाई, और धुन्यात्मक नाम के अभ्यास से चढ़ाई होवेगी, और बिना शब्द के अभ्यास के मन और

किसी तरह बस में नहीं आवेगा, और बग़ैर मन के ज़ेर होने के माया के घेर से निकलना, और मालिक के धाम में पहुंचना ना मुमकिन है ॥

(४) चौथे प्रेमी और भक्त जन यानी राधास्वामी मत के सतसंगियों में प्यार और दया भाव ॥

जो सच्चे परमार्थी हैं उनके मन में सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल, और संत सतगुरु के चरनों में प्यार ज़रूर होगा, और उस प्यार को वे दिन २ बढ़ाने को कोशिश करेंगे, फिर जोकि अपने प्यारे को प्यार करते हैं, और आप भी उसके प्यारे होते जाते हैं, उनसे प्यार रखना ज़रूर मुनासिब है, बल्कि सच्चे प्रेमी के मन में ऐसों की प्रेम की हालत, और परमार्थी काररवाई देख कर, आपही आप उनकी तरफ़ प्यार और दया भाव पैदा होगा, जैसा कि किसी आशिक़ ने इन कड़ियों में कहा है। मुझे अपने प्रीतम से है यह क़रार-कि जब तक है जाँ देह में बरक़रार ॥ करूँ उसके भक्तों से हरदम पियार-रहूं उनको आपे के मुवाफ़िक़ निहार ॥

और जोकि हर एक सुरत राधास्वामी दयाल की अंस यानी बच्चा है, फिर सब सुरतें आपस में भाई और बहन हुईं, इस तरह सब के साथ दया भाव मन में रखना चाहिये, लेकिन जो कोई इन में से अपने प्रीतम

कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनौं मैं प्यार लावे और सेवा करे और उनका हुकम माने, तौ उनको अपने प्रीतम के प्यारे और प्यार करने वाले समझ कर, उन मैं सिवाय दया भाव के सच्चे मन से प्यार आना चाहिये, और परसपर यानी दोनौं तरफ़ से यही बर्ताव तहेदिल से जारी होना चाहिये, क्यौंकि उनके संग से कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनौं मैं प्रीत और भक्ती और सेवा बढ़ेगी, और अभ्यास भी सुखाला बन पड़ेगा ॥

जो कोई कहे कि मुझ को कुल्ल मालिक या संत सतगुरु के चरनौं मैं भाव और प्यार है, पर सतसंगियौं मैं (जो सच्चे प्रेमी हैं) उसको भाव नहीं आता तौ उसकी प्रीत का कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनौं मैं भी पूरा ऐतबार नहीं हो सक्ता, क्यौंकि जब उसको अपने प्रीतम के सच्चे प्यार करने वाले अच्छे नहीं लगते, तौ उसको कुल्ल मालिक और संत सतगुरु कैसे अच्छे लग सक्ते हैं, इस वास्ते ऐसे शख़्सौं की प्रीत का कुछ भरोसा नहीं हो सक्ता है, और न वे सतसंग मैं ज़्यादा अर्से तक ठहर सकैंगे ॥

ऊपर के कलाम से यह मतलब नहीं है, कि एक सतसंगी हर एक सतसंगी की प्यार भाव के साथ ख़ातिरदारी और सेवा करता फिरे, इसमैं उसके सतसंग और

अभ्यास और सतगुरु की सेवा में ख़लल पड़ेगा; हुकम यह है कि सब सतसंगी इसको प्यारे लगें, और जब ज़रूरत और मौक़ा होवे, तब यह उनकी ख़ातिरदारी और महिमानी अपने भाई के मुवाफ़िक़ करे, ख़ास कर जबकि कोई सतसंगी इत्तफ़ाक़ से इसके मकान पर आवे या चंद रोज़ को ठहरे ॥

(५)—पाँचवें निरख परख अपने मन और इन्द्रियों के हाल और चाल की ॥

यह काम वास्ते हर दम होशियार रहने और दूर करने भूल और भरम के बहुत ज़रूर है ॥

मन और इन्द्रियों का स्वभाव है कि हर वक़्त कोई न कोई तरंग उठा कर या किसी न किसी भोग और पदार्थ की तरफ़ तवज्जः करके चंचल बने रहते हैं, और इनकी चंचलता से परमार्थी की बृत्ती हमेशा डावाँडोल रहती है, और वास्ते सफ़ाई और दुरुस्ती अभ्यास के निश्चलता ज़रूर चाहिये, इसवास्ते परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने मन की चौकीदारी करता रहे, यानी फ़ज़ूल और बेफ़ायदा और ना मुनासिब तरंगें न उठावे, और न अपनी इन्द्रियों को किसी तरफ़ बेफ़ायदा और ना मुनासिब तौर तवज्जः करने देवे, और न इस किस्म की तरंगों या पदार्थों और भोगों की गुनावन में

अपने मन और इन्द्रियों को लिपटने देवे । इस तरह कुछ अर्से तक काररवाई करने से, यानी हर वक्त मन और इन्द्रियों की सम्हाल रखने से इस क़द्र ताक़त आवेगी, कि अभ्यास के वक्त थोड़ा बहुत अपने मन को निश्चल कर सकेगा, और तब कुछ रस अभ्यास का भी ले सकेगा, और मन की कुचाल को आहिस्ते २ दूर कर सकेगा, नहीं तो वह चंचल रह कर अभ्यास का रस नहीं आने देगा, और कुल्ल वक्त अभ्यास का तरह २ के ख़्यालों में ख़र्च करा के ख़ाली उठावेगा, और फिर नतीजा उसका यह होगा, कि कुल्ल मालिक और संत सतगुरु और शब्द की तरफ़ से अभाव पैदा हो जावेगा, और एक क़िस्म की निरासता तबीअत में आवेगी, कि जिससे कोई दिन में अभ्यास भी छूट जावेगा, और बे मुखता यानी मन मुखता बढ़ती जावेगी ॥

मन का क़ायदा है कि अपनी कसरों को नहीं देखता, और न उनके दूर करने का जतन, जो संत सतगुरु बार २ फ़रमाते हैं, करना चाहता है, और ऐसी आसा रखता है और बल्कि प्रार्थना भी करता है, कि दया से सब बिकार एक दम दूर हो जावें, और अंतर में शब्द खुल जावे । यह आसा और प्रार्थना कुछ बुरी नहीं है, लेकिन जो यह सच्चा परमार्थी है

तो इस को हुकम के मुवाफ़िक़ दया का बल लेकर अपना ज़ोर भी जिस क़दर बन सके वास्ते दुरुस्ती अभ्यास, और हटाने गुनावन और बिघनों के, लगाना ज़रूर चाहिये, तब दया इस की मदद करेगी, और जो मन और इन्द्रियों की तरंगों में बहता रहता है, और नित्त नई चाहें भोग बिलास की उठाता रहता है, और वक्त अभ्यास के भी इसी क़िसम के ख़्यालों में भरमता रहता है, तो ऐसी सूरत में दया क्या काररवाई कर सक्ती है, सिवाय इसके कि मौज से उसको कुछ डर दिखाया जावे, और दुख और तकलीफ़ वाक़े होवे, तब वह भोगों की तरफ़ से थोड़ा बहुत हट सक्ता है, लेकिन इस क़िसम की काररवाई जहाँ तक मुमकिन होवे, संत सतगुरु मंज़ूर नहीं करते हैं, सिर्फ़ बचन सुनाकर और समझौती देकर होशयार करते हैं, ताकि यह आप अपने नफ़े और नुक़सान को सोच कर दुरुस्ती से चाल चले, और जब हिम्मत बाँधकर यह ऐसी कारवाई शुरू करता है, तब उसको मदद देकर उसकी चाल बढ़ाते हैं, और अंतर में थोड़ा बहुत रस देकर शौक़ और प्रेम जगाते हैं, कि जिस्से अभ्यास सुखाला बनता जावे, और आहिस्ते २ तरक्क़ी होती जावे। इस तरक़्क़ी का हाल अभ्यासी अपने मन की हालत को परख कर जान सक्ता है, और दिन २ दया और मेहर को भी अंतर और बाहर परख सक्ता है,

अलबत्ता जिसने सच्ची सरन ली है, उसके अगले पिछले करम जिस क़दर जल्दी मुनासिब है काटते हैं, ताकि वह हलका होकर यानी बिघनों से बचकर सुखाला प्रेम पूर्वक अभ्यास में लगे ॥

खुलासा यह कि परमार्थी को जहाँ तक बने, भोगों की इच्छा नहीं उठाना चाहिये, और न उसकी गुनावन में अपना वक़्त ख़र्च करना चाहिये। जो भोग मौज से प्राप्त होवे, और बशर्ते कि वह नाजायज़ और ना मुनासिब और किसी तरह हारिज न होवे, तो उसमें अहतियात के साथ बर्तने में दोष नहीं है ॥

(६) छठे सच्ची दीनता कुल्ल मालिक और सतगुरु के चरनों में, और अपने तईं ओछा और कसर वाला समझ कर, प्रार्थना करना वास्ते प्राप्ती दया के ॥

जो कोई अपने मन की निरख और परख यानी चौकीदारी करता रहेगा, उसको अपनी कसरें हमेशा नज़र आवेंगी, तब उसके मन में सच्ची दीनता कुल्ल मालिक और सतगुरु के चरनों में पैदा होगी, और फिर वही शख़्स सच्ची प्रार्थना, वास्ते उनके दूर होने के करेगा, और जो जतन कि बताया जावेगा, उसकी काररवाई भी उससे बन पड़ेगी, और कुल्ल मालिक और सतगुरु की दया की परख और क़दर भी उसी के चित्त में आवेगी ॥

ऐसा जीव जो कि अपनी कसरों को निहारता रहता है, सब के साथ दीनता और ग़रीबी के साथ बर्ताव करेगा, यानी जो कोई उस पर किसी वक्त किसी क़िसम की तान मारेगा, तो वह उसका मुक़ाबिला नहीं करेगा, बल्कि अपनी कसरों का ख़याल करके तान के बचन की बरदाश्त करेगा, और तान मारने वाले से नाराज़ नहीं होगा, बल्कि उसको अपना हितकारी समझेगा ॥

जो कोई अपने तईं ओछा या अपने में कसरें देखता है, वह वास्ते दूर करने उनके और हासिल करने तरक़्क़ी के बराबर जतन करता रहेगा, पर जो कोई अपने तईं पूरा मानेगा, वह अभ्यास में ढीला हो जावेगा और उसकी तरक़्क़ी का रास्ता बंद हो जावेगा, इस वास्ते परमार्थी को चाहिये, कि जबतक अपना काम पूरा न बने, तब तक जतन करने से बाज़ न रहे, और दीनता और प्रार्थना का अंग न छोड़े ॥

(७) सातवें कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मौज के साथ, जहाँतक मुमकिन होवे, मुवाफ़िक़त करना ॥

यह भक्ती का एक ख़ास अंग है, कि जो कुछ अपना भगवंत कहे या करे, उसको अपने वास्ते बेहतर और मुफ़ीद समझे, और चाहे वह काररवाई मन के मुवाफ़िक़ होवे या नहीं, जहाँ तक मुमकिन होवे उसके साथ

मुवाफ़िक़त करे, यानी उसको अपने प्रीतम की मौज समझ कर क़बूल और मंज़ूर करे, क्योंकि जब यह बात मालूम है कि कुल्ल मालिक सर्व समरत्थ और सब से ज़बर है, और उसकी मौज में किसी को दख़ल नहीं है, फिर बिचारो कि उसके साथ मुवाफ़िक़त करना बेहतर है या नामुवाफ़िक़त, पहिली सूरत में भक्ती बढ़ेगी और अदब क़ायम रहेगा, और दूसरी सूरत में मन रूखा फीका होकर अपने प्रीतम से किसी क़दर बेमुख हो जावेगा, और अभ्यास में भी ख़लल डालेगा। इसमें सेवक का भारी नुक़सान होगा। मुनासिब यह है कि जब कोई काम ख़िलाफ़ मन के वाक़े होवे और उसको बरदाश्त न कर सके, तो चरनों में प्रार्थना वास्ते बदलने मौज या मिलने ताक़त और सहारे के वास्ते बरदाश्त के करे, तो राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु ज़रूर थोड़ी बहुत दया करेंगे या इफ़ाक़ा बख़्शेंगे, यानी ताक़त और सहारा अंतर में देवेंगे।

उनकी मौज अपने सेवकों के वास्ते कभी मसलहत से ख़ाली नहीं होती, पर उस मसलहत का समझना मुश-किल है, और कभी २ दया करके ख़ासों को मसलहत भी जना देते हैं। सेवक को हर हाल में यानी सुख और दुख के वक़्त, मुनासिब है, कि उन्हीं के चरनों की तरफ़ तवज्जः करके दया और सहारा चाहे, जैसे बालक, चाहे

माता कभी उसको ताड़ मार भी करे, तौ उसी की गोद की तरफ़ दौड़ता है, और दूसरे की तरफ़ चाहे वह सहारा भी देवे यानी बचावे, तो भी रुख़ नहीं करता ॥

यह बात सही है कि सब जीव एक ही बार पूरे तौर से इस घाट पर नहीं बर्त सक्के, यानी सर्व अंग करके मौज के साथ मुआफ़िक़त नहीं कर सक्के, लेकिन जो कोई कि राधास्वामी मत में शामिल होकर भक्ती में आया है उसको जानना चाहिये कि यह बात उस पर फ़र्ज़ और लाज़िम है, कि भक्ती के क़ायदों के मुवाफ़िक़ जिस क़दर बन सके अपने प्रीतम भगवंत की मौज के साथ मुआफ़िक़त करे। अलबत्ता जीवों के दरजे के मुवाफ़िक़ जैसे उत्तम मध्यम निकृष्ट इस बर्ताव में भेद रहेगा, लेकिन चाहे जिस दरजे का भक्त होवे उसको अपनी ताक़त के मुआफ़िक़ कोशिश इस बात की करना चाहिये, कि जो कुछ उसका भगवंत और मालिक उसकी निसबत कहे या करे, उसमें अपना हित और बेहतरी समझे ॥

इस बात की कारगवाई दुरुस्ती के साथ सिर्फ़ सुन्ने और समझने से नहीं हो सक्की, कुछ मदद अंदरूनी अभ्यास की भी दरकार है, यानी सेवक के मन और सुरत का घाट भी थोड़ा बहुत बदलना चाहिये, और अंतर में कुछ रस और आनन्द और दया और

रक्षा के परचे भी मिलने चाहियें, तब उसको थोड़ी बहुत ताक़त मुवाफ़िक़त करने की साथ मौज के सख़्ती और सुस्ती में हासिल होवेगी; सिवाय इसके कुछ दया भी संत सतगुरु और सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की दरकार है, कि जो सेवक को इस क़दर बल और ताक़त बख़्शेगी, कि जिससे वह आसानी के साथ मुवाफ़िक़ और नामुवाफ़िक़ मौज की बरदाश्त कर सके, सो जो कोई सच्चे मन से सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती में आया है, उसको यही तीनों बातें, यानी बाहर के सतसंग और अंतर अभ्यास की मदद और राधास्वामी दयाल की दया, थोड़ी बहुत अपने दरजे के मुवाफ़िक़ ज़रूर हासिल होंगी, और उसी क़दर उसको ताक़त मौज के साथ मुवाफ़िक़त करने की भी मिलेगी, और यह ताक़त जिस क़दर कि इसकी प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में और सुरत शब्द मारग के अभ्यास में बढ़ती जावेगी दिन २ ज़्यादा होती जावेगी, और एक दिन पूरे दरजे पर पहुंचा कर छोड़ेगी ॥

कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करने और उनकी मौज के साथ मुवाफ़िक़त करने में बड़े फ़ायदे हैं, और जीव का संसारी और देह के बंधनों से

जल्दी छुटकारा हो सक्ता है, और करमौं का असर जो थोड़े बहुत किये जावैं उसपर बिल्कुल नहीं पहुंचेगा, और हमेशा अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के आसरे और भरोसे देह और संसार मैं किसी क़दर निहचिंत होकर बर्ताव करेगा, क्यौंकि उसको अपनी हालत की रोज़मर्रा जाँच करने से अच्छी तरह से मालूम हो जावेगा, कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की नज़र दया और मेहर की उसपर है, और वे सब तरह से और हर हालत मैं उसकी दया और रक्षा फ़रमाते हैं, फिर संत सतगुरु और कुल्ल मालिक दयाल के चरनौं मैं किसी तरह का ख़ौफ़ नहीं है, यानी काल और करम और उसके दूत कुछ नुक़सान या तकलीफ़ इस क़िस्म की नहीं पहुंचा सक्ते हैं, कि जिससे यह जीव घबरा कर या निरास होकर बेमुख हो जावे, और मत को या उसके अभ्यास को छोड़ देवे ॥

इस वास्ते सब जीवौं को जो राधास्वामी दयाल की सरन मैं आये हैं, और उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का थोड़ा बहुत अभ्यास कर रहे हैं, मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने बल और पौरुख की तरफ़ से नज़र हटाकर, राधास्वामी दयाल की दया का आसरा और भरोसा लेकर ऐसी हिम्मत बाँधैं, कि अपना बर्तावा

संसार और परमार्थ में जहाँ तक मुमकिन है प्रेमा-भक्ती के क़ायदों के मुवाफ़िक़ जारी करें, और किसी तरह का फ़ज़ूल शक और शुभा या संदेह अपने नफ़े और नुक़सान की निसबत मन में न लावें, तो यक़ीन होता है कि राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से ज़रूर उनकी रक्षा और सम्हाल जिस क़दर मुनासिब होवेगी फ़रमावेंगे, यानी पहिले नम्बर तवज्जे वास्ते दुरुस्ती उनके परमार्थ के और दूसरे नम्बर तवज्जे वास्ते सम्हाल और दुरुस्ती उनके स्वार्थ यानी संसारी कारोबार के फ़रमावेंगे, अगले पिछले करमों का फल ज़रूर भोगना पड़ेगा, लेकिन उसमें दया से बहुत रक्षा और सम्हाल होवेगी, यानी दुखदाई करम के भोग में बहुत कमी हो जावेगी और सुखदाई करम का फल ज़्यादा मिलेगा ॥

॥ इति ॥